माअरेफत

- : प्रकाशक : -

हाजी नाजी मेमोरियल ट्रस्ट

माली टेकरा, आंबाचोक, भावनगर.

फोन नंबर : (0278) 2510056 / 2423746

… Kitab Downloaded from …

www.hajinaji.com

• LIKE US ON FACEBOOK •

www.facebook.com/HajiNajiTrust

नोंध.....

- ➔ दूसरी किताबे डाउनलोड करने के लिए www.hajinaji.com पर लोग ओन करे.
- ➔ इस किताबमें कोई गलती नजर आए तो पेज नंबर के साथ हमे जानकारी दीजिए. hajinajitrust@yahoo.com

माअरेफत

* अनुक्रमणिका *

क्रम	विषय	पेज
०१	एकेश्वरवाद	9
०२	हदीसे मुफज्ज़ल	28
०३	मनुष्य की पैदाइश में हिकमतें	60
०४	बालक नादान और नासमझ पैदा होने में हिकमतें	72
०५	बच्चे के रोने में समाई हिकमत	82
०६	बालक के मुँह से बहने वाली	85

	लार में समाई हिकमत	
०७	स्त्री तथा पुरुष के अंगों का विजातीय आकर्षण	88
०८	शरीर के सभी अवयवों के बनाने का उद्देश्य तथा प्रयोजन	92
०९	मनुष्य का शरीर एक विशेष अवधी तक ही क्यों बढ़ता है?	107
१०	पंचेन्द्रिय की रचना में रहस्य	110
११	कुछ लोगों के शरीर में कुछ अवयव क्यों नहीं होते ?	122
१२	मनुष्य को सिर क्यों होना	135

	चाहिए ?	
१३	दो हाथ बनाने विषयक	137
१४	मनुष्य की आवाज़ और स्वरयंत्र विषयक	138
१५	मनुष्य की जबान, दांत और होठों के विषय में	141
१६	मस्तिष्क, सिर तथा आँखों की पलकों के बारेमें	144
१७	ह्रदय, फेफड़े, तथा अमाशय के विषय में	146
१८	हड्डियों की नालियों में गूदा, रक्त शिराओं में रक्त, उँगलियों के सिरों पर नाखून	151

	आदि।	
१९	नर नारी और उन्हें प्रदान किये गए विशेष अवयवों की आवश्यकता	156
२०	मनुष्य को बुद्धि तथा समझ प्रदान करने का कारण	161
२१	हृदय की हिकमतें	167
२२	इंसान की कुदरती हाजत, दांत और नाख़ून विषयक, मनुष्य के थूंक और पेट के संबंध में	173
२३	खाने, पीने, सोने और ऊंघने के संबंध में	188

२४	शरीर कि चार शक्तियों के संबंध में	191
२५	शर्म, हया और वाणी के सन्दर्भ में	204
२६	ज्ञान और समझ शक्ति	213
२७	स्वप्न के विषय में	226
२८	कोई भी वस्तु बेकार न होने के विषय में	228
२९	खाने पीने के संबंध में	235
३०	सारे मनुष्य एक समान चेहरे वाले क्यों नहीं होते ?	238
३१	दूसरी बैठक में इमाम (अ.स.) की फरमाई हुईं बातें	248

३२	प्राणियों के विषय में	254
३३	कीड़े मकोड़ों के विषय में	296
३४	पक्षियों का विवरण	304
३५	तीसरी बैठक	340
३६	आग के लाभ	391
३७	वर्षा के लाभ	395
३८	पहाड़ का वर्णन	407
३९	झाड़ कृषि आदि का वर्णन	414
४०	फल, बीज और गुठली का वर्णन	423
४१	जड़ी बूटियों आदि का वर्णन	435
४२	चौथी बैठक	442
४३	हरडे से ईश्वर को समझो	530

प्रकरण - १

एकेश्वरवाद

संसार के समस्त लोग इस बात पर एकमत है कि हम नाशवंत हैं। गिने चुने हठधर्मियों को छोड़ कर हर व्यक्ति यह मानता है कि मरणोपरांत हमें हमारे कर्मों का बदला जरूर मिलेगा। हमें पैदा करने वाला हमसे अधिक बुद्धिमान तथा दीर्धद्रष्टिवाला है। कुछ तथाकथित आधुनिक लोग संदेह में है कि हमारा बनाने वाला कोई है या नहीं? किन्तु जो भी ज़रा सा बुद्धि का उपयोग कर के

विचार करे तो वह तुरंत इस निष्कर्ष पर पहुँच जाता है कि इस सृष्टि को बनाने वाला तथा सभी का सर्जन करने वाला कोई महान बुद्धिमान, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान, सर्वश्रेष्ठ तथा महान है।

संसार में जितने भी धर्माचार्य हो गए हैं चाहे वे किसी भी धर्म या संप्रदाय के हों, सभी का यह स्पष्ट मत है कि इस संसार का निर्माता कोई है। वह निर्माता कौन है इस में मतभेद थे और है, किन्तु यह सभी मानते हैं कि इस संसार का कोई न कोई निर्माता है।

पुरातन धर्मों में मजूसी (पारसी) धर्म का यह मत है कि इस संसार के निर्माता दो है। एक प्रकाश और दूसरा अंधकार। वे मानते हैं कि अच्छाई को प्रकाश ने और बुराई को अंधकार ने पैदा किया है। उन्हों ने प्रकाश का नाम यजदान और अंधकार का नाम अहरमन रखा किन्तु वे प्रकाश को अधिक शक्तिशाली मानते हैं इसलिए अग्नि की पूजा करते है।

हिंदू लोग यह स्वीकार करते हैं कि सबका सर्जनहार एक ही है किन्तु वे इस

के अनुसार नहीं चलते बल्कि वे पत्थर, लकड़ी की मूर्तियों को खुद अपने हाथ से बनाते हैं फिर उन्हीं की पूजा करते हैं।

ईसाई धर्म के धर्मगुरु बहुत ही सत्यवान, बहुत पवित्र, बहुत आरिफ, बहुत इबादत गुज़ार और ईश्वर के समक्ष मानवंत थे। उन्होंने एकेश्वरवाद को बहुत अच्छी तरह लोगों को समझाया किन्तु उनके अनुयायी उनका सही तात्पर्य समझने में असमर्थ रहे। उन्होंने, जनाबे ईसा के प्रेम में अतिरेक किया। यहाँ तक कि उन्होंने जनाबे ईसा

और रूहुल कुद्स को इस संसार के सर्जन में साथीदार मान लिया।

यहूदी लोग तो ईश्वर को समझ ही नहीं पाए और हज़रत उजैर पैगम्बर को ईश्वर का पुत्र मान लिया। अब उनकी मान्यता में कोई बदलाव हुआ या नहीं इसकी हमें जानकारी नहीं है। किन्तु उनका मत हिंदू, ईसाई, मजूसी और मुसलमानों से बिलकुल ही अलग है।

इस्लाम को माननेवाले जिन्हें मुसलमान कहा जाता है ईश्वर को एक मानने का दावा करते हैं। इस्लाम का

पवित्रग्रंथ एकेश्वरवाद की शिक्षा देता है। इसका एक अध्याय - सूरह (प्रकरण) “कुल हो वल्लाह” इसी की शिक्षा के लिए अवतरित हुआ है। मुसलमानों में ईश्वर के आकार को ले कर मतभेद है। कुछ मुसलमान उसे साकार मानते हैं, कुछ का मानना है उसके अंग हैं, कुछ का मानना है वह किसी मकान में है, कुछ का मानना है उसमें परिवर्तन होता है। किन्तु शिया इसना-अशरी मुसलमानों की मान्यता यह है कि वह निराकार है, उसका न कोई शरीर है और न कोई

अंग। न वह किसी स्थान में है, न उसमें कोई परिवर्तन संभव है। न उसे देखा जा सकता है।

जो वस्तु देखी जा सकती है उसके लिए रंग, रूप, लम्बाई, चौड़ाई, स्थान आदि सारी चीज़ें साबित हो जाती है। किसी भी चीज़ को देखने के लिए कुछ बातें आवश्यक है।

1. जिस वस्तु को देखा जाना है उसे हमारी द्रष्टि सीमा के अंदर होना चाहिए।

2. वह वस्तु अत्यंत सूक्ष्म न हो ताकि प्रकाश की किरणें उससे टकरा कर लौटें।

3. वह वस्तु हमारी आँखों के अत्यंत निकट न हो।

4. उस वस्तु का कोई रंग होना चाहिए।

5. वह वस्तु भौतिक होनी चाहिए, लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई, आदि तीनों आयाम हों।

6. उस वस्तु की कोई सीमा होनी चाहिए।

7. वह वस्तु अत्यधिक प्रकाशित न हो वरना हमारी आँखें चौंधिया जायगी और हम देख नहीं पाएँगे।

उपरोक्त सारे गुण जो ईश्वर की रचनाओं में है यही सारे गुण यदि ईश्वर में हों तो वह दिखाई दे सके किन्तु वह सर्जनहार तो इन बातों से पवित्र है। ईश्वर की पैदा की हुई अनगिनत वस्तुएँ इतनी सूक्ष्म (लतीफ़) है कि उन्हें देखा नहीं जा सकता। जैसे हवा, या आत्मा आदि। उनका न कोई आकार है न कोई रूप रंग। तो क्या उनका पैदा करने

वाला सूक्ष्मता में या लताफत में उनसे कम होगा जो दिखाई दे सके। उसकी तो तुलना भी वायु या आत्मा से नहीं की जा सकती क्योंकि ये वस्तुएँ तो पैदा की हुई है और वह तो सर्जनहार है। अनादि, अनंत।

हमारा तो विश्वास है कि अल्लाह– “वाहेदुन, अहदुन, लैसका मिस्लेही शैआ” है। अर्थात अल्लाह एक, मात्र एक, अतुल्य, है। दुसरे शब्दों में उसके समान कोई वस्तु नहीं जिससे उसकी तुलना की जा सके।

इसी लिए उसके लिए कहा गया है कि “ला यूसफो बे जौहरिन, वला जिस्मिन, वला सूरतिन, वला अर्जिन, वला खत्तिन, वला सत्हिन, वला सिक्लिन, वला खिफ्फतिन, वला लवनीन, वला कवनीन, वला हरकतिन, वला सुकूनिन, वला मकानिन, वला ज़मानिन .....आदि आदि।

उसे ऊर्जा नहीं कहा जा सकता, न उसका शरीर है, न उसकी कोई सूरत है, न आकार है, (अर्थात लम्बाई,

चौड़ाई, ऊंचाई या गहराई आदि,) न वह बिंदु है, न विशाल है, उसी प्रकार उसका कोई वज़न भी नहीं है, न वह हल्का है न भारी है, न उसका कोई रंग है, न यह कहा जासकता है कि वह गतिशील है, न उसे स्थिर कहा जा सकता है, न उसके लिए कोई समय या काल है, न स्थान है। यदि उसके लिए कोई स्थान माना जायगा तो वह स्थान का मोहताज ठहरेगा। अर्थात वह अपनी रचना के अपूर्ण गुणों से पवित्र है।

संसार में अनगिनत धर्म है। उन धर्मों ने ईश्वर के लिए योग्य तथा अयोग्य गुणों को स्वीकार किया है। कोई अग्नि को पूजता है कोई सूर्य या चन्द्र को। कई तो ईश्वर के सिफ़ाते सुबूतिया (वो गुण जो उसकी शान के योग्य है) को स्वीकार करते हैं फिर भी वे पत्थर या मनुष्य की पूजा करते हैं। इतिहास ने कई संस्कृतियों का सविस्तर वर्णन किया है जिसकी हम उपयुक्त स्थान पर चर्चा करेंगे।

यहाँ पुस्तक तौहीदुल अइम्मा का हिंदी अनुवाद दिया जा रहा है पाठकों को चाहिए कि इसपर गहन विचार कर के समझने का प्रयास करें।

इस संसार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक वस्तु केवल धर्म है। हर बच्चे को जब समझ आती है तो सबसे पहला विचार उसके मन में यही आता है कि मैं कौन हूँ और क्यों पैदा किया गया हूँ? यह विचार आते ही उसे यह समझना चाहिए मुझे मेरे वास्तविक सर्जनहार की मारेफत (संज्ञान) प्राप्त

करना चाहिए। यह भी जानना चाहिए कि उसने मुझे क्यों पैदा किया है और मुझे पैदा करने के पीछे उसकी इच्छा क्या है।

जब इतनी बात समझ में आजाय तो इस पर विचार करना चाहिए कि उस समग्र ब्रह्मांड के सर्जनहारने, जिसने किसी भी वस्तु को बेकार नहीं पैदा किया, किंतु उसे किसी विशेष प्रयोजन के लिए पैदा किया है। वह उससे कुछ कार्य चाहता है। वे कार्य ऐसे होने चाहिए

जिसके करने से वह सर्जनहार प्रसन्न हो और न करने से वह नाराज़ हो।

विचारों के इस स्तर तक पहुँचने के पश्चात मनुष्य यह तय करे कि वह सर्जनहार की इच्छानुसार कार्य करेगा। अब सर्जनहार की इच्छा जानने के लिए किसी एक धर्म का अनुसरण आवश्यक है। संसार में विभिन्न धर्म अस्तित्व रखते हैं। सभी धर्मों में मतभेद हैं। हर धर्म सही नहीं हो सकता। कोई धर्म कहता है ईश्वर अनादि, अनन्त व निराकार है, कोई उसकी संतान मानता

है; कोई उसे साकार मानता है; कोई ईश्वर की रचना जैसे आग, वृक्ष, सूर्य, चन्द्र, आदि की उपासना को सही समझता है। कोई ईश्वर को दिखाई देनेवाला समझता है; कोई कहता है उसे देखा नहीं जा सकता आदि आदि।

इतने मतभेद में कौनसा धर्म सत्य है कौनसा असत्य यह एक संशोधन का विषय है। सत्य और असत्य में अंतर करने के लिए मनुष्य के पास एक अप्रतिम तुला प्रदान की गई है वह है बुद्धि। बुद्धि के द्‌वारा जब हम इन धर्मों

की आपस में तुलना करते हैं तो पाते हैं कि सत्य धर्म में ऐसी पवित्रता होनी चाहिए कि अंश मात्र भी असत्य या खोट उसमें न हो। उसी प्रकार जिस शक्ति को हम अपना सर्जनहार मानते हैं उसमें भी किसी प्रकार के दुर्गुण या अवगुण नहीं होने चाहिए। उसके सदगुण ऐसे होने चाहिए जो उसे अपनी रचना से अलग करे।

उपरोक्त सभी बातों पर विचार करें तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि सत्य धर्म कौनसा है ? जो धर्म ईश्वर

को अनादि और अनंत माने, सर्वशक्तिमान, संपूर्ण सामर्थ्यवान, सर्वज्ञ, निराकार व निरंतर माने; एक और मात्र एक माने वही सत्य धर्म है।

प्रकरण - २

हदीसे मुफज्ज़ल

हदीसे मुफज्ज़ल एक मशहूर हदीस है जिसमें ऐसी बातें निहित है कि जिसके अध्ययन से ईश्वर द्वारा निर्मित हर वस्तु का विवरण उसका उद्देश्य तथा उसकी बारीकियां तथा उसकी विशेषताएं प्रकट होती है तथा स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी प्रबुद्ध कारीगरी, अदभुत कलात्मकता तथा अदभुत रचना सर्वसामर्थ्यवान, सर्वज्ञ, परमबुद्धिमान

ईश्वर के अतिरिक्त किसी के बस की बात नहीं।

मोहम्मद बिन सिनान कहते हैं कि मेरे पास मुफज्ज़ल बिन उमर ने बयान किया एक दिन मैं अस्र की नमाज़ के बाद मस्जिदे नबवी में रसूल स.अ.व. कि कब्र और रसूल स.अ.व. के मिम्बर के बीच बैठा विचार कर रहा था कि उस पूरे संसार के सर्जनहार ने हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व. को कैसी उत्तमता व श्रेष्ठता प्रदान की है परंतु उम्मत के सामान्य जन जानते

नहीं है। उनके सच्चे फ़ज़ाईल, कमाल मर्तबा और उच्चता से अवगत नहीं है। अभी मै इसी विचार में मग्न था कि एक व्यक्ति "इब्ने अबिल अवजा" जो नास्तिक और नेचरी था, आया और मुझसे इतनी दूर बैठा कि मैं उसकी बातें सुन सकता था। फिर उसके साथियों में से एक व्यक्ति आया और उसकी ओर ध्यान कर के उसके सामने बैठ गया। इब्ने अबिल अवजा ने उससे कहा इस कब्र में लेटे महानुभाव ने उच्च कक्षा का आदर व मान मर्तबा पाया है। शरफ व

बुज़ुर्गी का संपूर्ण अंश उन्होंने पाया तथा बहुत ऊंचे दर्जे पर पहुंचे हैं।

यह सुनकर उस दुसरे व्यक्ति ने कहा सच है वे (हज़रत मुहम्मद स.अ.व.) एक दार्शनिक थे उन्होंने उच्च मर्तबा का दावा किया और उस संबंध में ऐसे मोअजिज़े दिखाए कि जिसको देख कर लोग अभिभूत रह गए। बुद्धिजीवी लोगों ने उन्हें पहचानने के लिए विचार सागर में गोते लगाए किन्तु सफल न हो सके। जब उनके दावे को बुद्धिजीवी तथा विद्वान लोगों ने स्वीकार कर

लिया तो सामान्य लोग समूह के समूह उनके धर्म में आने लगे। जिन जिन शहरों तक उनकी नबुव्वत का निमत्रण पंहुंचा वहाँ वहाँ इबादतगाहो और मस्जिदों में अल्लाह के नाम के साथ साथ उनका नाम भी सम्मिलित कर लिया गया तथा ऊंची आवाजों में पुकारा जाने लगा। इसके लिए कोई स्थान निश्चित नहीं किया गया बल्कि ऊंची आवाज़ में नाम लेना कोई एक समय नहीं बल्कि रात और दिन में पांच बार अज़ान में और पांच बार अकामत में

पुकारा जाने लगा। उन्होंने अपना नाम ईश्वर के नाम के साथ इस लिए जोड़ दिया ताकि उनका नाम हमेंशा जीवित रह सके और उनके कामों में कोई रुकावट न पड़े।

यह सुनकर इब्न अबिल अवजा ने कहा कि मुहम्मद (स.अ.व.) की बात तो जाने दे। क्योंकि उनके विषय में मेरी बुद्धि आश्चर्य चकित है। मैं उसपर जितना भी विचार किया, किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचता बल्कि मेरी अक्‌कल चक्‌कर खा जाती है। अब इस बात पर

चर्चा करे जिसके कारण लोग मुहम्मद (स.अ.व.) के धर्म में प्रवेश करते जा रहे हैं। अर्थात अल्लाह की चर्चा कर कि उसका अस्तित्व हैं या नहीं। फिर खुद ही कहने लगा कि ये सभी चीज़ें जो हम देखते हैं किसी की पैदा की हुई नहीं है। इसका कोई बनाने वाला नहीं है। कोई इन चीज़ों को योग्य रीति से बनाने वाला नहीं कोई इनकी रचना करने वाला नहीं बल्कि ये तो खुद ब खुद पैदा हो जाती है। यह संसार इसी तरह चलता आया है और इसी तरह चलता रहेगा।

मुफज़्ज़ल कहते हैं कि उनकी ऐसी फालतू बातें सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आगया और मेरा धैर्य जवाब दे गया। मैंने उनसे कहा: ऐ ईश्वर के शत्रु !! तू सर्जनहार के धर्म का इन्कार करता है। तूने तो अपने सर्जनहार का ही इनकार कर दिया जिसने तुझे इतनी सुंदर शक्ल में पैदा किया और तेरे शरीर के अंग बनाए हैं। तू तो खुद शून्य था। उसीमें से उसने तुझे ऐसी हिकमत और कारीगरी से बनाया कि एक बूँद से भिन्न भिन्न स्थितियों में बदलते हुए

आज तू जवान हो कर इस अवस्था को पहुँचा है। यदि तू तटस्थ हो कर न्यायप्रियता से बुद्धि का उपयोग करे तो अपने सर्जनहार कि स्पष्ट दलील तू खुद अपनी आत्मा में और इसका स्पष्ट प्रमाण तू अपने शरीर के अवयवों में देख लेगा।

यह सुनकर उसने कहा “ओ महाशय यदि आपमें इस विषय में बात करने की शक्ति हो तो हम आप के साथ बात करें। यदि आपके पास कोई स्पष्ट और आधारभूत प्रमाण हो तो हम

मान लेंगे। यदि आपके पास बातचीत का ज्ञान न हो तो आपको बोलने का कोई अधिकार नहीं है। हमें नहीं लगता कि आप इमाम जाफर सादिक (अ.स.) के शिष्यों में से होंगे; क्योंकि उनकी बातचीत करने की शैली बहुत सौम्य होती है। आप उन जैसी बातचीत नहीं कर रहे हो। वे लोग आप जैसी दलीलों के द्‌वारा हम से चर्चा नहीं करते। उन्होंने हमारी बातें इससे बहुत ज्यादा सुनी है परंतु वे बातचीत में सख्ती नहीं बरतते; न उत्तर देने में एक सीमा से

आगे बढते हैं। वे बहुत सहनशील, शांत स्वभाव के, बुद्धिमान लोग होते हैं। इतना ही नहीं वे परिपक्व बुद्धि वाले, अच्छे स्वभाव वाले गंभीर लोग होते हैं। वे क्रोध नहीं करते, सख्ती भी नहीं करते। वे हमारी बात बहुत ध्यान से सुनते हैं। हमसे हमारी दलील पूछते हैं। यहाँ तक कि जब हम अपनी समस्त दलीलें प्रस्तुत कर चूके होते तब वे सबूतों और दलीलों से हमारे दृष्टिकोण को गलत साबित करके हम पर हुज्जत तमाम कर देते हैं। वे ऐसा उत्तर देते है

कि हम फिर कोई बहाना तलाश नहीं कर पाते और उन्हें उत्तर देने की शक्ति हम में नहीं होती। आप उनके शिष्यों में से हो तो वैसी ही चर्चा का प्रारंभ करे।

मुफज्ज़ल कहते हैं कि मैं वहाँ से दुखी और भारी मन से निकल आया। मै विचार में मग्न था कि इन अधर्मी लोगों के कारण इस्लाम को कितना नुक्सान पंहुंचा है। ये लोग किस बला में गिरफ्तार हैं? ये लोग ईश्वर को तो बिलकुल मानते ही नहीं। संसार को अपने आप पैदा हुआ और अपने आप

चल रहा मानते हैं। इन्ही विचारों में मग्न मैं अपने स्वामी इमाम जाफर सादिक अ.स. की सेवा में पहुँच गया।

उन्होंने मेरा उदास चेहरा देख कर पूछा तुम्हें क्या होगया है? तो मैंने जो नास्तिकों कि बातें सुनी थी और जिन दलीलों से मैंने उनकी बातें सुनी थी, बयान की। आपने फरमाया: क्या मैं तुम्हें उस महान ईश्वर की वे बुद्धिमत्ता की बातें जो समस्त संसार में पशु पक्षियों में, जीव जंतुओं में है, उसीप्रकार प्रत्येक वनस्पति तथा फूलों में

खाद्य व अखाद्य आदि में समाई हुई है उसका प्रयोजन और उससे होने वाले लाभ आदि बताऊँ जिससे शिक्षा ग्रहण करने वाले शिक्षा ग्रहण करें; आस्तिकों के हृदय प्रफुल्लित हों और नास्तिक आश्चर्य चकित रह जाएँ? इसके लिए तुम कल मेरे पास आना।

यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। हज़रत की सेवा से घर लौटा। हज़रत ने जो वादा किया था उसके इंतज़ार में रात मुझे बहुत लंबी महसूस हुई। मुझे जिज्ञासा थी कि कब सुबह हो और मैं

हज़रत की सेवा में पहुँच कर वे सारे विवरण सुनूं जिससे मेरे ज्ञान में वृद्धि हो।

सुबह हुई तो मैं हज़रत की सेवा में पहुँचा। अनुमति ले कर अंदर प्रवेश किया और नम्रता के साथ खड़ा हो गया। आपने मुझे बैठने का आदेश दिया तो मैं बैठ गया। इसके बाद आप उठकर एक कमरे की ओर बढे जिसमें अक्सर आप एकांत के लिए जाते थे। मैं भी उनके पीछे पीछे उस कमरे में पहुँच गया। अंदर पहुँच कर वे अपने बैठने के

स्थान पर बैठ गए; मै भी उनके समक्ष बैठ गया। आपने फरमाया ऐ मुफज़्ज़ल, मुझे लगता है कि आज सुबह के इंतज़ार में पिछली रात तुम्हें बहुत लंबी महसूस हुई। मैंने जवाब दिया हाँ मौला सही है।

फिर आपने फरमाया केवल ईश्वर का अस्तित्व था कोई वस्तु उससे पूर्व न थी। वह हमेशा रहेगा उसका अंत नहीं है। उसी के लिए समस्त स्तुति है कि उसने हमें अंतर्ज्ञान (इलहाम) दिया। उसी के लिए शुक्र (धन्यवाद) है कि उसने सर्वश्रेष्ठ ज्ञान हमें प्रदान किया। विशिष्ट

प्रकार का उच्च कक्षा का गौरव हमें प्रदान किया। समस्त सृष्टि से विशेष ज्ञान हमें प्रदान किया। अपनी हिकमतें हमें दी और हमें उसका अमानतदार बनाया।

मैंने निवेदन किया: मौला क्या आप मुझे अनुमति प्रदान करते हो कि आप जो कुछ कह रहे हो वह मैं लिख लूं? आप ने फरमाया हाँ लिखलो। मैं लिखने के साधन अपने साथ ले गया था।

आपने फरमाया शक व संदेह वाले लोग सृष्टि की संरचना के माध्यम तथा साधनों और उनकी बारीकियों को समझ नहीं पाए। उनकी समझशक्ति इन चीज़ों के रहस्य को समझ नहीं सकती। उस सर्जनहार मालिक ने जंगलों और समुद्र में विभिन्न प्रकार की रचनाएँ (सृष्टि) पैदा की है। उनमें अनगिनत हिकमत भरी है। पर ये शंकाशील लोग अपनी अज्ञानता के कारण इनकार करते हैं। और अपनी बुद्धि की सुस्ती के कारण झुठलाते हैं। इतना ही नहीं ये तो शत्रुता

पर उतर आए हैं। तथा संसार की समस्त चीज़ें किसी की बनाई हुई है इसका इनकार करते हैं और कहते हैं कि ये चीज़ें अपने आप पैदा हो गई इनमें किसी की कोई कलात्मकता नहीं है। इसी तरह किसी महा हिकमतवाले तथा बुद्धिमान ने कोई हिकमत नहीं रखी और हर चीज़ जिस स्थिति मैं है रंग, रूप, स्वाद, लज़्ज़त, लंबी, छोटी आदि सोच समझ कर बनाई गई हो ऐसा नहीं है बल्कि ये तो खुद ब खुद बन गई है। ये लोग जो कहते हैं वह महान

परमात्मा इससे बहुत श्रेष्ठ है। ईश्वर इन लोगों को क़त्ल करे!! कैसे भटक रहे हैं। वे अपनी गुमराही में अंधे हो गए है। इनकी मिसाल उन अंधो जैसी है जो एक आलिशान महल में प्रवेश करें जिसे बहुत मजबूत और अत्यंत सुंदर बनाया गया हो और उसमें विभिन्न प्रकार की सजावट की गई हो, तरह तरह के कीमती गालीचे बिछाए गए हों। यहाँ तक कि हर ज़रूरत की चीज़ यथा स्थान व्यवस्थित रूप से सजाई गई हो। ऐसे सुसज्जित महल में वे अंधे यहाँ वहाँ

भटकते और टकराते फिरें, कभी आगे बढ़ें, कभी पीछे हटें मगर उस सजावट को देख न पाएं और कभी कोई ज़रूरत की चीज़ जो अपने स्थान पर किसी विशेष प्रयोजन के अंतर्गत रखी हो उनसे टकरा जाय तो अपनी अज्ञानता के कारण खुश होने की बजाय नाराज़ हों। और अपने अंधेपन और मूर्खता को दोष देने की बजाय उस मकान के बनाने वाले और सजाने वाले को बुरा भला कहें।

बिलकुल यही हाल नास्तिकों का है जो अपनी आँखें खोल कर देखते नहीं और प्राप्त बुद्धि से निष्पक्ष विचार करते नहीं बल्कि दूसरों को गलत मार्ग पर चलने की सलाह देते है। वे वस्तुओं की बारीकियों और उसके पीछे के रहस्य को जानते नहीं इस लिए संसार में गुमराह रहते हैं। सर्वश्रेष्ठ कलात्मकता से बनी वस्तुओं की विशेषता को समझ नहीं पाते। कभी ऐसा होता है कि वस्तुओं की कलात्मकता को तो जानते हैं किन्तु उसकी रचना के प्रयोजन को समझ नहीं

पाते और अपनी नासमझी के कारण उसकी आलोचना करने लग जाते हैं, कि ये ठोस नहीं है, ये गलत है आदि।

ऐसा एक संप्रदाय मजूसी लोगों में 'मानविया' है। मानी नामक एक व्यक्ति ने इस संप्रदाय को जन्म दिया है इस कारण उस संप्रदाय के लोग मानवीया कहलाते है। यह व्यक्ति शापुर इब्न उरूशीर्षा के काल में एक धर्म की स्थापना करने चला था। उसका यह मानना था कि जनाबे ईसा (अ.स.) तो नबी थे किन्तु जनाबे मूसा (अ.स.) नबी

नहीं थे। यह संसार दो चीज़ों से बना है अच्छी चीज़ों को नूर (प्रकाश) ने पैदा किया है और बुरी चीज़ों तथा काटने फाड़ने वाले जानवरों को अंधकार ने पैदा किया है। प्रकाश और अंधकार दोनों खुदा हैं और ये दोनों लाभ तथा हानि की चीज़ों को पैदा करने वाले हैं।

उसी प्रकार मुल्हिद (नास्तिक) लोग ईश्वर के अस्तित्व ही से इनकार करते हैं; उनका देखा देखी दुसरे पथभ्रष्ट लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि यह कैसे हो सकता है, यह तो संभव

नहीं है आदि और वे ईश्वर से दूर हो गए।

जिस व्यक्ति को उस महान ईश्वर ने इन चीज़ों की मारेफत प्रदान की हो और अपने धर्म की ओर उसका मार्गदर्शन किया हो; इस सृष्टि की कलात्मकता तथा उसकी संरचना के पीछे उसके उद्देश्य पर विचार करने की, उनकी बारीकियों को समझ पाने की शक्ति प्रदान की हो; और उसकी विशेषताओं का वर्णन करने की सदबुद्धि प्रदान की हो तो उस व्यक्ति के लिए

आवश्यक है कि वह ईश्वर के इस अनुग्रह के लिए उसकी बहुत स्तुति करे और प्रार्थना करे कि वह इस मारेफत तथा वर्णन करने की शक्ति को बाकी रखे और अधिक मारेफत प्रदान करे।

अल्लाह कुरआन में फरमाता है कि “ल इन शकरतुम ल अजिदन्न कुम”

अर्थात: यदि तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें अधिक प्रदान करूँगा।

और यह भी फरमाता है कि “व लइन कफरतुम इन्न अज़ाबिल शदीद”

अर्थात: यदि तुम इन अनुग्रहों का शुक्र अदा करने की बजाय कुफ्र (इनकार) करोगे तो जानलो मेरी यातना बहुत सख्त है।

फिर आपने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल!! अल्लाह जल्ले जलालहु के अस्तित्व का पहला प्रमाण यह है कि यह संसार किस तरह बनाया गया है। किस तरह से गठन किया है कितनी सुंदरता से इस इसका व्यवहार चलाने का इंतज़ाम किया गया है। यदि तुम इस संसार की रचना पर गहन विचार करो, बुद्धिमत्ता से हर

वस्तु को पृथक कर के समझने का प्रयास करो तो तुम्हें पता चलेगा कि यह संसार एक ऐसे मकान के समान है जिसमें सभी आवश्यक वस्तुएँ मौजूद हों। उसके बन्दों को जिस चीज़ की आवश्यकता हो वे सारी चीज़ें यहाँ एकत्रित कर दी गई है।

आकाश को देखो कि यह छत के समान है। धरती को देखो वह फर्श के समान है। सितारे चारों ओर इस तरह सजाए गए हैं जैसे प्रकाश के लिए दीपक सजाए जाते हैं, जो अपने स्थान पर

प्रकाशमान हैं। हीरे खानो में इस तरह छिपा कर रखे गए हैं जैसे खजाने छिपाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त सारी वस्तुएँ यथास्थान हाज़िर और मौजूद हैं।

मनुष्य इस संसार में ऐसा है जैसे इस मकान का मालिक या स्वामी, जिसके अधिकार में मकान के अंदर की सारी वस्तुएँ हों। हर प्रकार की वनस्पति तरह तरह की आवश्यकताओं के लिए तैयार है। उनमें से कितनी ही वनस्पति चौपायों के लिए खुराक है, कितनी ही मानव जाति के लिए दवा के लिए है,

कितनी ही मनुष्य को खुश करने के लिए सुगंध के लिए है, कितनी ही मनोरंजन और मौजमस्ती के लिए है, कितनी ही मनुष्य की खुराक के लिए है, कितनी ही विशेष प्रकार के पक्षियों के लिए है। इसीप्रकार विभिन्न प्रकार के पशु पक्षी अनेक प्रकार के लाभ तथा उद्देश्य के अंतर्गत पैदा किये गए है।

ऐसा सुंदर और रौनक वाला संसार जिसे बहुत ही सुंदरता तथा कलात्मकता से एकत्रित किया गया है इसमें कोई चीज़ बेकार या गलत तरीके से बनाई

नही गई है यह स्पष्ट प्रमाण है कि किसी बुद्धिमान शक्ति ने इसे संपूर्ण बुद्धिमत्ता से किसी विशेष प्रयोजन के लिए बनाया है। इसकी व्यवस्था तथा इसका संचालन ऐसे किया गया है कि प्रत्येक का संबंध प्रत्येक के साथ जुड़ गया है। ये सारी बातें साबित करती है कि इस संसार का बनाने वाला एक ही है। जिसने इतनी सुंदरता से इन चीज़ों को एकत्रित किया कि हर एक का संबंध दुसरे से जुड़ा हुआ है। वही एक ईश्वर है; अल्लाह है; खुदा है। वह जलील

है, वह कुद्दूस है। वह अत्यंत उच्च मर्तबा रखने वाला है। वह करीम है। उसके सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं। उस अल्लाह का इनकार करने वाले और नास्तिक लोग उसके विषय में जो कहते हैं, वह उससे अधिक बुलंद और गरिमामय है।

प्रकरण - ३

मनुष्य की पैदाइश में हिकमतें

इसके पश्चात आपने फरमाया- ऐ मुफज़्ज़ल अब हम तुम्हारे सामने मनुष्य के जन्म का वर्णन करते हैं। इसे सुनो और इससे शिक्षा ग्रहण करो। देखो मनुष्य जन्म का पहला पड़ाव यह है कि मनुष्य को गर्भस्थान में बनाया जाता है। बावजूद इसके कि वह तीन पर्दों और तीन अंधकारों में कैद होता है। पहला पर्दा पेट का, दूसरा बच्चेदानी का, और तीसरा बच्चेदानी के अंदर कि झिल्ली

का। उस समय बच्चे की स्थिति ऐसी होती है कि वह अपने भोजन के लिए किसी भी प्रकार का प्रयत्न करने की स्थिति में नहीं होता। किसी भी प्रकार की तकलीफ अपने से दूर करने की शक्ति उसमें नहीं होती। किसी भी प्रकार का लाभ प्राप्त करने या हानि से बचने की शक्ति उसमें नहीं होती।

ऐसी स्थिति में अल्लाह, ने जिसप्रकार वृक्ष वनस्पति आदि को पानी द्वारा भोजन पहुँचाने का प्रबंध किया है उसीप्रकार उस बच्चे को मासिक धर्म के

रक्त के द्वारा (उसे भोजन में परिवर्तित कर के), भोजन पहुँचाता है। अर्थात माता का रक्त मासिक धर्म की आदत के अनुसार हर माह बाहर आने की बजाय गर्भ में पँहुचाया जाता है कि वह बच्चे का भोजन बने। इसी प्रकार उसके अंग आपस में बंधकर बढते जाते है और उसपर त्वचा मोटी होती जाती है यहाँ तक कि उसके समस्त अवयव संपूर्ण हो जाते हैं तथा उसकी त्वचा हवा को सहन करने लायक हो जाती है; उसकी आँखें प्रकाश को सहन करने लायक हो जाती

है, तब अल्लाह उसे प्रसूति द्‌वारा बाहर लाता है। जब बालक के बाहर आने का समय आता है तब उसकी माता को प्रसूति की पीड़ा होती है, उसे बहुत बेचैनी और घबराहट होती है; तब बालक शक्ति से गर्भस्थान से बाहर आता है। उस समय वह रक्त जो गर्भस्थान में उसके भोजन में परिवर्तित होने के लिए पहुँच रहा था उसका रास्ता बदल कर उसे माता के वक्ष की ओर पलटा दिया जाता है। उस समय उसके स्वाद और रंग में परिवर्तन कर के उसे

सफ़ेद दूध बना दिया जाता है जो बच्चे के लिए सर्वोत्तम भोजन माना जाता है। उसमें जो कलात्मकता रखी गई है उसे तो सब जानते हैं कि उसे समय समय पर पहुँचाया जाता है। जब बच्चा अपने होंठों पर जबान फेरता है और दोनों होंठों को हिलाता है उस समय उसको दूध पिलाया जाता है। उसके लिए दूध के दोनों झरने हमेंशा तैयार रहते है।

इसी प्रकार हमेंशा उसे वह भोजन मिलता रहता है। जब तक उसका शरीर नाज़ुक और कमज़ोर रहता है तब तक

उसका भोजन वही दूध रखा गया है; फिर जब वह चलने लगता है तब उसे सख्त भोजन (चबा कर खाए जाने योग्य) की आवश्यकता पड़ती है; जिससे उसके शरीर के अंग अधिक शक्तिशाली बने; तब उसे दांत और दाढ़ें निकलती है ताकि वह सख्त भोजन को चबा कर खा सके। चबाने से भोजन आसानी से पच जाता है। धीरे धीरे बढते हुए वह जवानी तक पहुँच जाता है; फिर उसमें खुदा की कुदरत देखो कि यदि वह बच्चा लड़का है तो उसके चेहरे

पर मर्दानगी की निशानियाँ अर्थात दाढ़ी मूंछ आदि उगना शुरू हो जाती है ताकि औरत और मर्द में फ़र्क ज़ाहिर हो जाय। दाढ़ी तथा मूंछ मर्द की इज्ज़त भी है। बच्चा यदि लड़की है तो उसके दाढ़ी या मूंछ बिलकुल नहीं उगती जिससे मर्द और औरत में फ़र्क दिखाई देने के अतिरिक्त उसका चेहरा एकदम साफ़ सुथरा होने से सुंदर दिखाई दे और मर्द उसकी ओर आकर्षित हों तथा मानव वंश में वृद्धि होने का कारण बने।

फिर आपने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल!! इन सभी स्थितियों में जिस सुंदरता से, जिस बुद्धिमत्ता से इंसान को बनाया जाता है, बढ़ाया जाता है, बाहर लाया जाता है, तो क्या तुम यह कह सकते हो कि किसी बुद्धिमान शक्ति ने इस कार्य को नहीं किया बल्कि यह तो खुद ब खुद बन गया है। यदि मासिक धर्म का रक्त बाहर बहने की बजाय बालक के पोषण के लिए अंदर नहीं पहुँचाया जाता तो जिस प्रकार बगीचे के झाड़ बिना पानी के सूख जाया करते हैं उसी

प्रकार यह भी सूख जाता। जब वह बाहर आने लायक हुआ तब यदि उसे बाहर आने की शक्ति न प्रदान की जाती तो वह वहीँ मुर्दा दफन न हो जाता ? उसके पैदा होने के पश्चात उसके शरीर के अनुसार बहुत नाज़ुक भोजन दूध न दिया जाता तो वह मर न जाता? यथा समय उसके दांत न निकलते तो खाने चबाने में मुसीबतों का सामना न करना पड़ता? यदि वह सख्त भोजन खाने योग्य न होता तो उसमें शक्ति भी नहीं आती और हमेंशा माँ के दूध पर निर्भर

रहता और उसकी माँ उसके लालन पोषण में ही व्यस्त रहती और दुसरे बच्चों की परवरिश न हो पाती। उसी प्रकार यथा समय दाढ़ी और मूंछों के बाल यदि न उगते तो औरत और मर्द में फ़र्क न दिखाई देता और बिन मूंछ दाढ़ी मर्दों का न रौब पड़ता न प्रभाव। जैसे हिजड़े लोग बिन दाढ़ी मूछ कितने बदसूरत दिखाई देते हैं।

जब मनुष्य का कोई अस्तित्व ही नहीं था उसे अस्तित्व में ला कर समय समय पर उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ

पहुँचा कर जिसने उसे बड़ा किया वह कौन है? निःसंदेह वही रचयिता अल्लाह है।

इससे सिद्ध हुआ कि मनुष्य को पैदा करने वाला कोई है। किसी के बनाए बगैर मनुष्य का खुद ब खुद बन जाना बुद्धि में आने वाली बात नहीं है। मनुष्य खुद ब खुद बन जाय, उसमें आश्चर्यचकित कर देने वाली कारिगरियाँ भी पैदा हो जाएँ और फिर उसे बनाने वाला कोई नही है यह कहना केवल मूर्खता है।

फिर कुछ लोग कहते हैं कि मनुष्य पैदा तो खुद ब खुद होता है परंतु उसका अपूर्ण होना या त्रुटिपूर्ण होना जिसके अंतर्गत होता है वह तकदीर बनाने वाला विधाता कोई है ! यह कहना बड़ी मूर्खता है; क्योंकि बगैर बनाने वाले के कोई चीज़ बनती ही नहीं; फिर यह कहना कि बनाने वाला नहीं है किन्तु बिगाड़ने वाला है; यह भी असंभव है।

नास्तिक लोग जो कहते हैं वह महान ईश्वर उससे अधिक महान है।

प्रकरण - ४

बालक नादान और नासमझ पैदा होने में हिकमतें

पहली हिकमत :

आपने फरमाया बालक के नादान और नासमझ होने का रहस्य यह है कि यदि बालक समझदार और बुद्धिमान पैदा होता तो पेट से बाहर आते ही वह ऐसी वस्तुओं और प्राणियों को देखता जो उसने कभी देखी न होती जैसे इंसान, मकान, पशु पक्षी आदि तो वह अचंभित होता, व्याकुल हो जाता और

किसी को पहचान नहीं पाता जैसे किसी व्यक्ति को पराये देश में ले जा कर कैद कर दिया जाय तो वहाँ के रीति रिवाज और वहाँ की भाषा न समझने के कारण व्याकुल हो जाता है घबरा जाता है क्योंकि वह उनकी भाषा एकदम तो नहीं सीख पाता।

किन्तु यदि किसी नासमझ बालक को किसी भी प्रदेश में ले जाया जाय तो उसे किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होती उलटे वह उस देश की भाषा और संस्कृति को बहुत जल्द सीख लेता है।

इसी प्रकार अपनी इसी नासमझी के कारण बालक पैदा होने पर डरता या घबराता नहीं बल्कि धीरे धीरे बोलना, चलना, रीति रिवाज आदि आसानी से सीख जाता है। यदि वह समझदार पैदा होता तो एकदम आश्चर्य में पड़ जाता और एक लंबी अवधी तक इसी विचार में पड़ा रहता कि मैं कहाँ था? अब कहाँ आ गया हूँ? ये जो देख रहा हूँ वह क्या होगा? आदि।

दूसरी हिकमत :

यदि वह समझदार होता तो उसका पालन पोषण करने वाली महिला उसे दूध पिलाती, उसे गोद में लेती, सुलाती, उसके कपडे बदलती, झूले में डालती, तो उस समझदार बच्चे को बड़ी असुविधा होती, शर्म महसूस होती, वह अपनी बे इज्ज़ती समझता। इसके उलट उसके नासमझ और मासूम होने से दूसरे लोगों के दिल में उसके प्रति वात्सल्य, प्रेम और मुहब्बत उमड़ती है जिससे वे लोग उसे खिलाते है कुदाते है। नासमझ

होने के कारण लोगों के ह्रदय उसकी ओर आकर्षित होते हैं जो समझदार होने की स्थिति में न होते।

तीसरी हिकमत :

उसे नादान और नासझ पैदा करने से वह संसार की किसी चीजों को पहले से पहचानता नहीं इसलिए विभिन्न चीज़ों को देख कर परेशान नहीं होता फिर धीरे धीरे उसे समझ आती रहती है और मारेफत बढ़ती जाती है वैसे वैसे एक एक वस्तु का उसे परिचय होता

जाता है और वह उसे पहचानता जाता है इसी कारण समझदार और बुद्धिमान होता जाता है। यही कारण है कि वह किसी नई चीज़ से डरता या घबराता नहीं और अपना गुज़ारा चलाने के साधन आसानी से प्राप्त कर लेता है। उसी प्रकार आज्ञापालन, गलतियों पर क्षमा माँगना, विद्रोह न करना आदि संस्कार प्राप्त करता जाता है।

चौथी हिकमत :

यदि बालक समझदार और बुद्धिमान पैदा होता तो अपने कार्यों का हेतु समझ लेता, इसकारण बच्चे की परवरिश का जो आनंद है वह चला जाता। माता पिता जो अपने बच्चे की परवरिश में व्यस्त रहते हैं वे न रहते, इस कारण बच्चों पर माता पिता की जो महेरबानी और जो एहसान हैं वे न रहते। बच्चों के लिए माता पिता जो तकलीफें बर्दाश्त करते हैं और उनकी परवरिश करते हैं इससे बच्चों के दिल

में माता पिता का जो आदर और प्रेम घर कर जाता है वह न होता। संक्षेप में यह कि परस्पर प्रेम और मुहब्बत न होती।

पाँचवी हिकमत :

यदि बालक अक्लमंद पैदा होता तो वह माता पिता की परवरिश का मोहताज न रहता तो जन्म पाते ही माता पिता से दूर हो जाता। किसी को किसी पर प्रेम न उमड़ता। इतना ही नहीं बल्कि एक दुसरे को पहचानना भी दूर

की बात हो जाती। इससे बुराई इतनी बढ़ जाती कि एक लंबी अवधी के बाद अपनी माता, पिता, भाई, बहन को न पहचान पाता तो अपने रक्त सम्बन्धियों से शादी कर बैठता। स्वाभाविक बात है क्योंकि जब रक्त सम्बन्धियों को पहचान ही नहीं पाए तो परहेज़ कैसे करे?

छठी हिकमत :

बालक यदि समझदार और बुद्धिमान पैदा होता तो उन अंगों

(गुप्तांग आदि) आदि को देखता जिसे देखना उसके लिए जायज़ और योग्य नहीं, और उसके लिए यह अनिच्छा की बात होती।

ऐ मुफज़्ज़ल !! क्या तुम नहीं देखते कि मनुष्य के निर्माण में हर वस्तु कितनी योग्य पद्धति से स्थापित की गई है, इसमें कोई भी वस्तु ऐसी नहीं कि जिसमें नुक्स निकाला जा सके।

प्रकरण - ५

बच्चे के रोने में समाई हिकमत

उसके बाद इमाम जाफर सादिक अ.स. ने फरमाया ऐ मुफज़्ज़ल, देखो बालक के रोने में कितने लाभ समाए हैं। बालक के मस्तिष्क में एक प्रकार का स्त्राव होता है। वह द्रव्य यदि वहाँ रहे तो उन्हें कई प्रकार की बीमारियाँ घेर लें, और वे बड़ी मुसीबतों में पड़ जाएँ। जैसे आँखें खराब हो जाएँ, आदि। जब बच्चा रोता है तो उसके मस्तिष्क से वह द्रव्य निकल जाता है और उसके अंग

तंदुरुस्त रहते हैं, आँखों को कोई नुक्सान नहीं होता।

बच्चों के रोने में जो फायदे छिपे हैं उनसे अनजान होने के कारण बच्चे के माता पिता उसे चुप करने की कोशिश करते हैं, और बच्चे की इच्छानुसार करते हैं ताकि बच्चे रोएँ नहीं। इसी प्रकार संभव है अनेक चीज़ों में अनगिनत लाभ छिपे हों जो ये नास्तिक लोग जानते नहीं। यदि वे इस बात को समझ पाते तो हरगिज़ ये न कहते कि फलां बात में फायदा नहीं। जिन बातों

को नास्तिक लोग समझते नहीं उन्हें मारेफत वाले लोग जानते हैं। अक्सर लोग ईश्वर की रचना के भेदों को जानते नहीं किन्तु अल्लाह संपूर्ण रूप से हर प्रकार का ज्ञान रखता है।

प्रकरण - ६

बालक के मुँह से बहने वाली लार में समाई हिकमत

बालक के मुंह से बहने वाली लार में यह हिकमत छिपी है कि इस कारण मनुष्य पागल या अर्धपागल होने से बचता है। इसके अतिरिक्त लकवा, अपाहिज होना आदि बीमीरियों से भी बचाव होता है। यदि लार बचपन में बह न जाय तो एक लंबी अवधी के बाद उपरोक्त बीमारियाँ हो सकती है। इसलिए अल्लाह तआला ने यह प्रबध

कर दिया है कि बचपन में ही वे हानिकारक द्रव मुंह से बह जाएँ ताकि आगे चलकर उनमें बीमारियों का खतरा न रहे।

ऐसी हिकमतों को ये नादान लोग समझते नहीं। उन्हें अभी तक मोहलत दी गई है शायद वे मारेफत हासिल करें और अल्लाह को पहचानें। यदि ये सारी नेअमतों को जानते तो इतनी अवधी अज्ञानता के अँधेरे में न भटकते।

सचमुच समस्त स्तुति और पवित्रता उसी संसार के स्वामी के योग्य

है जिसने अपनी रचना में सभी को अनुदान प्रदान किया है चाहे वह उसका अधिकारी हो या न हो। ये गुमराह लोग उसके विषय में जो अयोग्य बातें करते हैं अल्लाह सब से उच्च तथा पवित्र है।

प्रकरण - ७

स्त्री तथा पुरुष के अंगों का विजातीय आकर्षण

हाजी गुलाम अली नाजी साहब ने इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद करते समय (सन १९१२) मे लिखा है कि इमाम अलैहिस्सलाम ने इन दोनों के अवयवों (गुप्तांग) की बारीकियां तथा विभिन्न बनावट के पीछे का रहस्य तथा उद्देश्य जिस तरह विस्तार से बयान किया है, मैं उसका यथावत अनुवाद करने में अशक्त हूँ। क्योंकि कुछ

बुद्धिहीन लोग बिना समझे बूझे तिल का ताड़ बना कर हंगामा खड़ा कर देते हैं, जैसे विगत "आदाबे मुजामेअत" पुस्तक के प्रकाशन के समय किया था इसलिए हम यथावत अनुवाद के स्थान पर संक्षिप्त वर्णन प्रसुत कर रहे हैं।

नर को ऐसी शक्ति तथा अवयव प्रदान किये कि वह गर्भाशय में वीर्य को पहुँचा सके (उसके नियत स्थान पर) और नारी को वीर्य संचित रखने के हेतु गर्भाशय प्रदान किया। उसमें भी ऐसी सुविधा प्रदान की कि जैसे जैसे बच्चा

बड़ा होता जाय गर्भाशय भी उसी प्रमाण में विस्तृत होता जाय। आदि।

फिर उसके बाद इमाम ने फरमाया कि क्या इतनी बारीकियों को ध्यान में रखते हुए चीज़ों को बनाना और उसके इस तरह उद्देश्य और प्रयोजन नियत करना किसी महान बुद्धिमान तथा उच्च कक्षा की हिकमत वाले की तदबीर से बना हुआ नहीं है? ऐसी विस्मयकारी तथा आश्चर्यजनक चीज़ें स्वयं बन गईं? स्त्री और पुरुष में विजातीय आकर्षण क्या खुद ब खुद आ गया? नहीं। ऐसा

नहीं है। बल्कि इसे महान हिकमत वाले ईश्वर ने निर्माण किया है। जो लोग अल्लाह की जात में शिर्क करते हैं अल्लाह उन सभी दोषों से पवित्र तथा उच्च है।

प्रकरण - ८

शरीर के सभी अवयवों के बनाने का उद्देश्य तथा प्रयोजन

फिर इमाम ने फरमाया ऐ मुफज़्ज़ल !! मनुष्य के अवयवों के विषय में तथा उन अवयवों के उद्देश्य तथा प्रयोजन के विषय में विचार करो।

देखो दोनों हाथ कार्य करने के लिए है। दोनों पैर चलने के लिए है। दोनों आँखें देखने के लिए है। मुँह खाने के लिए, ज़बान बोलने के लिए और स्वाद चखने के लिए बनाई गई है। अमाशय

खूराक हज़म करने के लिए, जिगर खूराक में से जीवनदायी तत्व निकाल कर रक्त में मिलाकर शरीर के समस्त भाग में पहुँचाने के लिए है। उसमें छिद्र इसलिए बनाए गए हैं कि अनावश्यक तत्व दूर किये जाएँ। अंतडियां उसे उठाने के लिए बनाई गई हैं। यदि इन बातों पर विचार करोगे तो समझ जाओगे कि कोई भी अवयव बेकार नहीं बनाया गया। बल्कि तुम्हें पता चलेगा कि हर अवयव एक विशेष प्रयोजनार्थ बहुत ही बारीकी और अत्यंत कलात्मकता से यथा

स्थान बड़ी सुंदरता से आयोजित व एकत्रित किया गया है।

मुफज्ज़ल ने निवेदन किया – मेरे स्वामी ! कुछ लोगों का कहना है कि ये सारी बातें मनुष्य की प्रकृति से पैदा हुई है और वास्तव मे प्रकृति ही इस प्रकार बनाती है। अर्थात जैसी उसकी प्रकृति होती है वैसे उसके अवयव अपने आप बन जाते है।

इमाम ने फरमाया ऐसा कहने वालों से पूछो कि जो प्रकृति ऐसी चीज़ों हिकमत और प्रयोजन से बनाती है वह

प्रकृति ज्ञान और सामर्थ्य भी रखती है या नादान और नासमझ है?

यदि वे कहें कि प्रकृति ऐसी चीज़ है जिसके पास ज्ञान और हर कार्य करने का सामर्थ्य है तो उन्होंने प्रकृति को ज्ञानी और सक्षम माना और उसे हर वस्तु का रचयिता माना और वही तो अल्लाह है। फिर अल्लाह को मानने में उन्हें क्या आपत्ति है ? क्योंकि जिसमें इतना ज्ञान है, जिसमें हर कार्य करने का सामर्थ्य है वही तो सबका मालिक

है। जब वे कहते हैं कि अल्लाह नहीं है तो क्यों स्वीकार करते हैं?

यदि वे कहते हैं कि प्रकृति कोई ऐसी वस्तु नहीं कि जिसमें ज्ञान और हर कार्य करने की क्षमता हो। वह तो बिना ज्ञान और बिना सामर्थ्य के ऐसी चीज़ें अपने आप पैदा कर देती है। तो इससे साबित होता है कि प्रकृति जो करती है वह नहीं जानती कि वह क्या और क्यों कर रही है? उसी तरह उसमें कोई कार्य करने की क्षमता भी नहीं है। एक समझशक्ति से रहित प्रकृति इतनी

उच्च कक्षा की हिकमत और मस्लेहत से परिपूर्ण वस्तुओं का निर्माण करे यह असंभव है। और उसे रचयिता मानना एक बहुत बड़ी भूल है। भला इस बात को कौन स्वीकार करेगा कि जिसे किसी भी प्रकार की समझ न हो तथा शक्ति भी न हो वह क्या बना रही है और क्यों बना रही है इसका भी उसे पता न हो इसके बावजूद ये माना जाय कि वही बनाती है।

सारांश यह कि लोग जिसे प्रकृति, नेचर या नैसर्गिक कहते हैं इससे उनका

आशय वह नियम है जिससे चीज़ें बनती है। ये नियम अल्लाह ने अपनी रचना में अपनी हिकमत से कार्यरत किया है। दुसरे शब्दों में उसने हर वस्तु के पैदा करने की एक विशेष पद्धति तय कर दी है। जैसे ज़मीन पर बारिश होने से दाना उगता है। यदि वर्षा न हो तो दाना न उगे। नर और नारी के समागम से बच्चा पैदा होता है। यदि वे एकत्रित न हों तो गर्भाधान संभव न हो। भाप से बादल बनते हैं हवा उसे हिलाती है और बारिश होती है। यदि ऐसा न हो तो बारिश न

हो। ये नियम अल्लाह ने तय कर दिए है। ये नास्तिक समझते हैं कि नियम ही चीज़ों को बनाने वाला और पैदा करने वाला है। इसके सिवा कोई चीज़ वस्तुओं को बनाने वाली और पैदा करने वाली नहीं है। ये उनकी गलती और मूर्खता है। यदि पानी में किसी प्रकार की शक्ति नहीं है तो वह अनाज कैसे पैदा कर सकता है? किन्तु किसी महाशक्तिशाली ने पानी में वह प्रभावशीलता प्रदान की है जिससे अनाज उगता है। उसी प्रकार वीर्य में ऐसी शक्ति नहीं कि वह मनुष्य

को पैदा कर सके किन्तु किसी महानतम बुद्धिशाली ने उसमें विशेषता प्रदान की है कि वीर्य के किस हिस्से से सर बनेगा किस हिस्से से हाथ पाँव आदि किस हिस्से से दिल बनेगा किस हिस्से से कलेजा आदि।

(अनुवादक हाजी नाजी कहते हैं कि हम आधुनिक काल का एक उदाहरण लें- जितनी मशीनें जैसे रेल, स्टीमर, कपड़ा बुनने के सांचे मोटर गाडियां उनके आविष्कार कर्ता इंजिनीयरों ने बहुत मेहनत कर के बुद्धि की परिसीमा

तक पंहुच कर उसके एक एक पार्ट जैसे बेरिंग, व्हील, प्लेट्स, पाईप आदि को बनाया फिर इस सारे पार्ट्स को एकत्रित कर के दुसरे देश में भेज दिया। वहाँ कम जानने वाले कारीगरों ने उन विभिन्न पार्ट्स को असेम्बल कर के मशीन तय्यार कर दी। यदि हम उन्हीं असेम्बल करने वालों को मशीन का आविष्कार करने वाला समझें तो यह मूर्खता होगी। क्योंकि वे उन पार्ट्स की हकीकत को नहीं जानते वे तो सिखाए अनुसार उन्हें असेम्बल कर सकते है।)

उसी प्रकार ईश्वर ने हर चीज़ के होने के लिए साधन तय कर दिए हैं कि भूमि में दाना डाल कर उसपर पानी दिया जाय तो पेड़ उगता है। सारांश यह कि हर एक वस्तु के उत्पन्न होने के लिए साधन और प्रणाली एक नियम के अंतर्गत ईश्वर ने तय कर दिया है किन्तु वह नियम बनाने वाला मात्र ईश्वर है।

फिर आपने फरमाया के मुफज्ज़ल मनुष्य के शरीर में भोजन किस प्रकार पहुँचता है उसपर ज़रा विचार करो, और उसमें कैसी तदबीर और हिकमत रखी

गई है उसे समझने का प्रयत्न करो। देखो जब भोजन अमाशय में जाता है तो वह उसे बहुत पकड़ सकता है उसमें से वांछित तत्व जो बहुत महत्वपूर्ण है बारीक नसों द्वारा जो जाली के समान बनी है कलेजे में जाते है। अमाशय भोजन को पचाने और साफ़ करने के लिए है। वह नुकसानदेह तत्वों को दूर कर के बारीक़ तत्वों को कलेजे तक पहोचाते है ताकि वह सुरक्षित रहे। फिर कलेजा भोजन को रक्त में बदल देता है। फिर रक्त बारीक बारीक नसों द्वारा

संपूर्ण शरीर में पहुँच जाता है। जिस प्रकार बगीचे में चारों ओर पानी पहुँचाने के लिए नालियां बनाई जाती है उसी प्रकार इसकी बनावट है। भोजन में से अवांछित तत्व निकलते है उन्हें एकत्रित करने के लिए विशेष थैलियाँ बनाई गई है कि वहाँ वह कचरा जमा हो कर बाहर निकल जाता है। इसके अतिरिक्त वह गन्दा पानी जो निरर्थक या अतिरिक्त हो उसके लिए भी एक थैली (मूत्राशय) बनाई गई। इसके अतिरिक्त मनुष्य के शरीर में बगल आदि कि नीचे पसीने

द्वारा कचरा निकलने का प्रबंध किया गया है।

ऐ मुफज़्ज़ल तुम सोचो मनुष्य के अंगों तथा अवयवों की किस तदबीर तथा हिकमत से बनाया गया है? हर एक अवयव को उसकी जगह इस प्रकार रखा गया है कि शरीर का भोजन रक्त में रुपान्तरित हो कर उस अवयव तक पहुंचे। यदि शरीर का कचरा एक विशेष स्थान पर एकत्रित न हो कर शरीर में फ़ैल जाता तो विभिन्न बीमारियाँ फैलती और शरीर दुर्बल हो जाता।

वास्तव में वही वास्तविक मालिक, वही खुदा, वही ईश्वर है। जिसने बुद्धिमत्ता पूर्ण प्रणाली से मनुष्य को बनाया – सारी स्तुति, सारी प्रशंसा उसी के लिए मात्र है।

प्रकरण - ९

मनुष्य का शरीर एक विशेष अवधी तक ही क्यों बढ़ता है ?

मुफज्ज़ल ने निवेदन किया- स्वामी अब आप बयान फरमाईये कि मनुष्य का शरीर एक निश्चित अवधी तक लगातार बढ़ता जाता है ऐसा किस तरह होता है? इमाम (अ.स.) ने फरमाया : मनुष्य के शरीर की वृद्धि का पहला चरण ऐसे स्थान पर होता है कि कोई आँख उसे देख नहीं सकती। ऐसी अँधेरी जगह उसकी तदबीर होती जाती है यहाँ

तक कि मनुष्य का सारा शरीर बन कर तय्यार हो जाता है और वह बाहरी जगत में प्रवेश करता है। जब से वह बाहर आता है उसके शरीर में वृद्धि जारी रहती है। वह वृद्धि इस प्रकार होती है कि मनुष्य के सभी अंग उदा: हाथ, पैर, नाक, कान, आदि अपने प्रमाण में थोडा थोडा बढते जाते हैं और उसका आकार उसी प्रकार रहता है। इसमें विशेषता यह है कि जब वे बढते हैं तब न खुद मनुष्य को पता चलता है न दूसरों को। न उसके कोई जोड़ लगाया

जाता है न उसमें खिंचाव पैदा होता है बल्कि वह तो क्षण क्षण बढ़ता रहता है। जब वह ज्यादा बढ़ जाता है तब मनुष्य को पता चलता है कि यह बढ़ गया। जब उसके बढ़ने की अवधी पूर्ण हो जाति है उसके पश्चात उसमें वृद्धि नहीं होती और वह उतना ही रहता है। तो क्या ये बात कुछ कम बुद्धिमत्ता पूर्ण है। वास्तव में यह बहुत सूक्ष्मता से भरी बुद्धिमत्ता पूर्ण बात है।

प्रकरण - १०

पंचेन्द्रिय की रचना में रहस्य

ऐ मुफज्ज़ल !! मनुष्य को अन्य प्राणियों पर जो श्रेष्ठता दी गई है उसपर भी विचार करो। मनुष्य खड़ा हो सकता है। इसके बावजूद ठीक तरह से बैठ सकता है। इसपर भी सुंदरता यह है कि उसे किसी वस्तु के उठाने, रखने या उठने बैठने में किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती। वह सारे कार्य आसानी से कर सकता है। यदि उसे पशु के समान उल्टा या चौपाया बनाया जाता तो आज

जो काम वह कर सकता है वह न कर पाता।

ऐ मुफज़्ज़ल, उस मालिक ने मनुष्य को इन्द्रियाँ प्रदान कीं हैं। इसके द्वारा भी मनुष्य को उच्चता प्रदान की है। ऐसी इन्द्रियाँ प्राणियों को प्रदान नहीं की गई। प्राणियों को जो इन्द्रियाँ प्रदान की गईं उन में और इनमें बहुत अंतर है।

आँख की हिकमत देखो कि वह मनुष्य के हाथों में, पावों में, या माथे पर नहीं बनाई गईं। यदि ऐसी जगह

आँख बनाई जाती तो जल्द फूट जाती। उसी प्रकार शरीर के निचले हिस्से में आँखें नहीं बनाई गई वर्ना देखने में बहुत दिक्कत होती। आँख को माथे के नीचे एक विशेष स्थान पर रखा गया ताकि हर समय और हर स्थिति में देखने में आसानी हो तथा विपत्तियों में भी वह सुरक्षित रहें। तुम देखोगे कि पाँचों इन्द्रियाँ पास पास गर्दन के ऊपर जमा कर दी गई। आँख इस लिए बनाई गई है कि आजीविका के साधन आसानी से प्राप्त किये जा सकें। मनुष्य घूम

फिर सकें। नित्य कार्य किये जा सकें। विभिन्न रंग देखे जा सकें। रस्ते के बीच में आने वाली वस्तुएँ दिखाई दे सकें। जो जो रंग उस महान ईश्वर ने बनाए हैं उन्हें देख परख सकें। रंगों की परख आँखों ही से हो सकती है। विभिन्न रंगों को देख कर दिल खुश हो।

कान माथे के दोनों तरफ इस कारण बनाए गए है कि आवाज़ सुनी जा सके। यदि कान न होते तो आवाजें सुनाई नहीं देतीं। इसी प्रकार हर ईन्द्रीय को समझो हर वस्तु का मीठा कड़वा

स्वाद चखना, ठन्डे गरम का भेद जानना, खुशबू और बदबू का पता लगाना आदि के लिए जो इन्द्रीय बनाई गई है उनमें अद्भूत कारीगरी है।

जिसप्रकार इन्द्रियाँ न होतीं तो रंग रूप, अच्छी, बुरी, खुशबू, बदबू, गर्म, ठंडा की परख न होती उसी प्रकार यदि ये वस्तुएँ विभिन्न प्रकार की अर्थात विभिन्न स्वाद की, विभिन्न रंगों की, विभिन्न गंध की आदि न होती तो ये इन्द्रियाँ बेकार साबित होतीं। जिसने इन वस्तुओं को विभिन्न स्वरुप

में पैदा किया है उसीने इनके विभिन्न स्वरुप को परखने के लिए इन्द्रियाँ प्रदान कीं है। इसमें विशेषता तो यह है कि जिस इन्द्रिय को जो काम सौंपा गया है वह उसी कार्य के लिए विशिष्ट बना है। आवाजें केवल कान सुन सकते हैं, आँखें आवाजें नहीं सुन सकतीं। आँखें विभिन्न रंगों में अंतर समझ सकती हैं आवाजें नहीं सुन सकती। नाक केवल गंध का पता कर सकते हैं आवाजें सुनना या देखना उनका कार्य नहीं है।

इसके अतिरिक्त दूसरी हिकमत यह है कि इन्द्रीय तथा वस्तु के बीच में एक तीसरी वस्तु भी रखी गई है कि जिसकी अनुपस्थिति में इन्द्रियाँ निरर्थक हो जातीं हैं। उदाहरणार्थ प्रकाश यदि न हो तो आँखें वस्तुओं की विशेषता नहीं देख पाती। उसीप्रकार यदि हवा का माध्यम न हो तो कान आवाजें नहीं सुन पाएंगे।

ऐ मुफज़्ज़ल !! जिस मनुष्य की बुद्धि सही और अक्ल दुरुस्त हो और वह अपनी बुद्धि से काम ले तो जो कुछ मैं तुम्हारे समक्ष बयान कर रहा हूँ, जरूर

स्वीकार कर लेगा। ये इन्द्रियाँ अपने विशेष कार्य के लिए बनाई गई हैं इसे किसी दूरदृष्टी संपन्न महान बुद्धिमान शक्ति ने ही बनाया है। इन इन्द्रियों का स्वयं बन जाना कदापि संभव नहीं। भला ऐसी चीज़ें जिसमें इतनी बारीकियां हों, इतनी कलात्मकता हों, इतने रहस्य हों बिना किसी बनाने वाले के खुद ब खुद बन जायगी? उन्हें कैसे पता चलेगा कि कान ऐसे बने कि वे ये विशेष कार्य करें, आँखें ऐसी बनें कि वे यह विशेष कार्य करें। बीच में वहाँ वायु

माध्यम बने और यहाँ प्रकाश। जब तक कोई महा बुद्धिमान संपूर्ण सक्षमता का धारक इसे न बनाए ये चीज़ें बन नहीं सकतीं।

ऐ मुफज्ज़ल !! मनुष्य की स्थिति को देखो कि जिसे आँखें नहीं होतीं उसे कितनी तकलीफ उठानी पड़ती है। न तो वह अपने पैर रखने की जगह को देख सकता है कि वह ऊंची है या नीची, वहाँ गड्ढा है या कीचड़ आदि आदि। उसीप्रकार वह न तो रंग देख सकता है न अच्छी बुरी चीज़ों को जान सकता है।

न अच्छा बुरा आकार बना सकता है। यदि सामने गड्ढा आजाय या शत्रु सामने से तलवार ले कर आ जाय तो भी उसे पता नहीं चलता। उसी प्रकार लिखना, पढ़ना, नकाशी का काम करना उससे हो नहीं सकता। हाँ अंदाज़े से वह थोडा बहुत चल फिर लेता है। उसीप्रकार जिसके कान न हो उसे भी कई तरह की दिक्कतें होंगी। अच्छी बुरी बात, सुख और दुःख की आवाजों में तो वह फर्क कर ही नहीं सकता बल्कि वह तो दूसरों के साथ बात भी नहीं कर

पाएगा केवल कुछ संकेतों के सिवा। बल्कि वह तो एक मुर्दा समान हो जाएगा। और जिसे अक्लल न हो वह तो जानवर समान है बल्कि वह तो ऐसी बातें भी नहीं समझ पाएगा जिसे जानवर समझते हैं।

ऐ मुफज्ज़ल !! मनुष्य शरीर के अंग और उसमें ऐसे अवयव, बुद्धि और समझ ऐसी वस्तुएँ हैं कि जिसमें से एक भी न हो तो मनुष्य अपाहिज हो जाय; उसके कार्यों में उसे बड़ी असुविधा का सामना करना पड़े।

मनुष्य को जिसप्रकार बनाया गया है वह संपूर्ण है। उसमें किसी प्रकार की कोई कमी या त्रुटि नहीं है। तो क्या ये सारी चीज़ें ज्ञान और सामर्थ्य के बिना खुद ब खुद बन गईं ? नहीं ! हरगिज़ नहीं !! सचमुच किसी महाबुद्धिमान, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ने इसे बनाया है।

प्रकरण - ११

कुछ लोगों के शरीर में कुछ अवयव क्यों नहीं होते ?

मुफज्ज़ल ने पूछा किसी किसी मनुष्य के शरीर में कोई अवयव क्यों नहीं होता जिसे वैसे ही असुविधा और तकलीफ का सामना करना पड़ता है जैसे आपने फरमाया।

इमाम (अ.स.) ने फरमाया किसी मनुष्य को चेतावनी देने के लिए, सावधान करने के लिए, नसीहत प्रदान करने के लिए कोई कोई अवयव नहीं

दिया जाता ताकि दुसरे लोग इससे जान लें, समझ लें, कि ये चीज़ें खुद ब खुद या अपने आप नहीं बनीं हैं। यदि अपने आप बनी होतीं तो उसमें खोट न होती। मगर ये किसी इख्तियार वाले ने अपने इरादे और मर्ज़ी से बनाया है। उसने कुछ लोगों में त्रुटि रखी ताकि दुसरे संपूर्ण लोग शुक्र करें कि यदि हममें त्रुटि होती हमारा भी यही हाल होता। भविष्य में अपनी संतान में ऐसी त्रुटि न हो ऐसी दुआ मांगता रहे और अल्लाह के प्रकोप से डरता रहे।

अब वह व्यक्ति जिसमें त्रुटि रखी गई है उसका तो कोई दोष नहीं था इसलिए इस विपत्ति के लिए उसे बहुत सा पुण्य दिया जायगा। जब उसे इतना अधिक पुण्य मिलेगा तो उसकी भोगी हुई तकलीफें उसे बहुत मान्य होगी। यदि उस समय उसे विकल्प दिया जाय कि इन दो स्थितियों में से एक को चुने तो वह अपाहिज स्थिति को चुनेगा ताकि उसे उतना पुण्य मिले।

(हाजी नाजी कहते हैं कि कई लोग प्रश्न करते हैं कि ईश्वर ने किसी को

गरीब किसी को अमीर किसी को अपाहिज बनाया है वह क्यों?

हिंदू धर्मावलंबी इसका उत्तर यह देते हैं कि उन्होंने पिछले जन्म में अच्छे या बुर कर्म किये हैं उसका फल इस जन्म में पा रहे हैं। किन्तु इस्लाम धर्म पुनर्जन्म की परिकल्पना को नहीं मानता तो इस प्रश्न का उत्तर क्या होगा?

यदि यह कहा जाय कि ईश्वर की यही इच्छा है तो जिसे दुःख मिला उसपर अत्याचार हुआ मानना पड़ेगा।

तो इसका उत्तर यह होगा कि यदि पुनर्जन्म है और पिछले जन्म के कर्मों का फल इस जन्म में भोगना पड़ता है और इस कारण सुख दुःख आते हैं तो यह मानना पड़ेगा कि हर युग में ऐसा ही होता आया है। किन्तु पुनर्जन्म की भी कोई सीमा होना चाहिए। मान लें कि हज़ार पुनर्जन्म हुए हों और हर बार पिछले जन्म का फल भोगा गया हो तो जब पहला जन्म हुआ होगा उस समय भी सभी लोग समान स्थिति में नहीं होंगे। उस समय भी किसी को सुख,

किसी को दुःख, कोई सुंदर, कोई कुरूप, किसी को संतान कोई निसंतान आदि आदि होगा। तो इस प्रारंभकाल की स्थिति में इनका उत्तर क्या होगा?

ऐसे समय यह कहे बिना चारा नहीं कि ईश्वर ने इस संसार का कारोबार चलाने के लिए अपनी मस्लेहत से किसी को गरीब किसी को अमीर आदि बनाया है। तो यही उत्तर वर्तमान में भी सही है और पुनर्जन्म कुछ है ही नहीं।

अब रही यह बात कि जिन्हें दुःख देता है और मुसीबतों में डाल देता है

और जिन्हें गरीब बनाता है उनपर अन्याय होता है। इसका उत्तर यह है कि ईश्वर ने केवल संसार चलाने के लिए इस प्रकार अमीर गरीब बनाया है (एक दुसरे का काम चलाने के लिए)

किन्तु समग्र रूप से सभी को समान बना दिया है जैसे कोई व्यक्ति अमीर और लखपति हो किन्तु बीमार रहता है और दुखी रहता है जबकि जिसे गरीब बनाया है वह स्वस्थ और संतान सुख का धनी है। तो उस अमीर को धन का सुख है किन्तु स्वास्थ या संतान का

दुःख है और दुसरे व्यक्ति को धन का अभाव का दुःख तो है किन्तु स्वास्थ या संतान का सुख है। इसप्रकार दोनों बराबर हो गए। इसके अलावा जिसे इस संसार में बराबर बदला न मिला हो उसे मृत्युपरांत जीवन भरपाई कर दी जायगी।

उदा: एक अमीर और एक गरीब दोनों समान रूप से पापी हों दोनों एक एक हज़ार कोड़े लगाए जाने के पात्र हों तो अमीर आदमी को तो पूरे हज़ार कोड़े लगाए जायेंगे किन्तु गरीब इस संसार में

उस अमीर आदमी की तुलना में दुखी था इसलिए उसे पांच सौ कोड़े कम मारे जाएँगे तो उस समय उनका बदला बराबर हो जाएगा।

उसीप्रकार एक धनी और एक गरीब व्यक्ति किसी सद्कर्म में बराबर हों तथा एक समान पुरुस्कार तथा एक समान अच्छे प्रतिफल के हकदार हुए तो उस गरीब व्यक्ति को जिसने संसार में अभाव भोगा था उसे ४० वर्ष पहले जन्नत में भेजा जाएगा और उस धनी व्यक्ति को जो संसार में सुख भोग रहा

था उसे ४० वर्ष बाद जन्नत में भेजा जायगा ।

सारांश यह कि वह न्यायप्रिय ईश्वर किसी पर भी अन्याय नहीं करता चाहे वह यह संसार हो या मरणोपरांत जीवन।

अत्याचार या अन्याय वह करता है जिसमें न्याय करने की शक्ति न हो, अन्याय वह करता है जिसमें इच्छित कार्य करने की क्षमता न हो, अन्याय वह करता है जिसमें इच्छित वस्तु को प्राप्त करने की शक्ति नहीं होती आदि।

जो लोग यह कहते हैं कि इस संसार के सुख दुःख पिछले जन्म के कर्मों का फल है उनकी बात उपरोक्त दलील से अस्वीकार्य हो गई। इसके अतिरिक्त उसके अस्वीकार्य होने की बड़ी दलील यह है कि संसार का नियम है कि जब कोई राजा या न्यायाधीश जब किसी को सज़ा देता है या किसी अच्छे कार्य के कारण पुरस्कार देता है तो यह आवश्यक है कि वह उस व्यक्ति के समक्ष स्पष्ट करे कि उसे यह सज़ा किस कर्म के कारण मिल रही है या उसे

यह पुरस्कार किस अच्छे कार्य के कारण मिल रहा है।

यदि सुख दुःख लोगों के कर्मों के प्रतिफल में मिले है तो लोगों को यह याद रहना चाहिए था कि उसने पिछले जन्म में कौन कौन से अच्छे या बुरे कर्म किये हैं और उसे यह जानकारी भी होनी चाहिए थी कि कौन सी सज़ा उसे किस बुरे कर्म के बदले में मिली है और कौनसा सुख उसे किस अच्छे कर्म के बदले मिला है, किन्तु हम यह देखते हैं कि किसी मनुष्य को न तो पिछले

जन्म के कर्म याद है न उसे यह पता है कि उसे कौन सा सुख या दुःख किस कर्म के बदले मिल रहा है। तो हमें यह मानना पड़ेगा कि पुनर्जन्म की कहानी में कोई तथ्य नहीं है।

प्रकरण - १२

मनुष्य को सिर क्यों होना चाहिए ?

इमाम ने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल ! ईश्वर ने कुछ अवयव एक बनाए हैं कुछ दो बनाए हैं। एक बनाने में क्या रहस्य छिपा है और दो बनाने के क्या कारण हैं। सिर को देखो उसे एक ही बनाया है। यदि दो या अधिक बनाए जाते तो मनुष्य के लिए कदापि अनुकूल न होता। यदि मनुष्य एक सिर से बात करता तो दूसरा निरर्थक हो जाता। यदि दोनों सिर से एक ही बात करता तो भी दूसरा

निरर्थक हो जाता। यदि दोनों सिर से अलग अलग बात करता तो सुनने वाला किसकी बात सुनता और किस की बात पर ध्यान देता ऐसी कई मुश्किलें पैदा हो जातीं।

प्रकरण - १३

दो हाथ बनाने विषयक

अल्लाह ने दो हाथ बनाए। यदि मनुष्य को केवल एक हाथ दिया जाता तो बिलकुल योग्य न होता। वह कोई कार्य ठीक तरह से न कर पाता। जैसे सुनार, बढई, मिस्त्री आदि जो कार्य करते हैं, एक हाथ से करने में बड़ी कठिनाई होती। यदि वे कार्य एक हाथ से किये जाएँ तो मज़बूत और सुंदर न हो पाएं (और एक हाथ अच्छा भी नहीं लगता।)

प्रकरण - १४

मनुष्य की आवाज़ और स्वरयंत्र विषयक

ऐ मुफज्ज़ल !! मनुष्य की आवाज़ तथा बात करने के लिए जो अवयव बनाए गए हैं उस पर विचार कर के देखो। जिसमें से आवाज़ या स्वर निकलता है वह एक नली समान अवयव है। क्या तुमें पता नहीं कि जिसके दांत गिर जाएँ उससे 'स' नहीं कहा जा सकता है। जिसके होंठ कट जाएँ उससे

'फ' नहीं बोला जाता है। जिसकी ज़बान मोटी हो उससे 'र' नहीं बोला जाता।

मनुष्य के बोलने के लिए एक नली रखी गई है जिसे स्वरपेटी कहते हैं। फेफड़े हवा भरने के लिए बनाए गए हैं। फेफड़ों के समीप कुछ ऐसी चीज़ें बनाई गई है जिससे फेफड़े दबते हैं और हवा वहाँ से स्वरयंत्र में आकर होंठ और ज़बान की सहायता से आवाज़ बाहर निकालती है। बोलने के लिए जितने अवयव हैं और उनमें से जिन कुछ अवयवों का उल्लेख किया गया है वे

केवल एक विशेष कार्य के लिए नहीं बनाए गए हैं बल्कि अन्य कई कार्यों के लिए भी बनाए गए हैं। जैसे स्वरयंत्र से फेफड़े तक पहुँचने वाली नाज़ुक हवा के कारण दिल को ताज़ी हवा मिलती रहती है जिससे उसे आराम मिलता है। यदि थोड़े समय के लिए भी यह हवा मिलनी बंद हो जाय तो मनुष्य का दिल काम करना बंद कर दे और मनुष्य की मृत्यु हो जाय।

प्रकरण - १५

मनुष्य की जबान, दांत और होठों के विषय में

ऐ मुफज़्ज़ल ! मनुष्य की ज़बान में बोलने के अतिरिक्त यह विशेषता भी प्रदान की गई है वह विभिन्न प्रकार के स्वाद का संवेदन करे और विभिन्न प्रकार के स्वाद की परख करे जैसे खट्टा, मीठा, कड़वा आदि, इसके अतिरिक्त भोजन और पानी जीभ के संपर्क में आकार अधिक स्वादिष्ट भी हो जाते हैं। जीभ से भोजन में रस भरा

जाता है। दांत में यह विशेषता दी गई है कि वे भोजन को पीस कर नरम करें ताकि भोजन जल्द हज़म हो जाय।

इसमें यह सुंदरता भी है कि दांत होठों को मुँह के अंदर दब जाने से बचाते हैं। जिसके दांत गिर जाते हैं उसके होंठ ढीले पड़ जाते हैं।

होठों में यह हिकमत रखी गई है कि मनुष्य पानी को चूस कर पीता है। होठों के कारण पानी अपनी आवश्यकतानुसार अपनी मर्ज़ी से पिया जा सकता है। जब पानी होठों के द्वारा

नहीं पिया जाता तब पानी गले में एकदम उतर जाने से मनुष्य को असुविधा होती है और अंदर एकदम पानी पहुँच जाने से गले में खुजली होती है।

इसके अतिरिक्त दोनों होंठ मुँह के लिए द्वार के समान हैं। मनुष्य जब चाहे उसे खोल और बंद कर सकता है।

ऐ मुफज्ज़ल, हमने अवयवों के कितने कार्यों का वर्णन किया – देखो एक एक अवयव से कितने भिन्न भिन्न कार्य संपन्न होते हैं।

प्रकरण - १६

मस्तिष्क, सिर तथा आँखों की पलकों के बारेमें

ऐ मुफज्ज़ल, मनुष्य का मस्तिष्क कई परतों के अंदर छिपा है। यह सुरक्षा के लिए है कि वह स्थिर रहे। उसपर खोपड़ी का आवरण चढाया गया है ताकि वह मार से सुरक्षित रहे। खोपड़ी पर बालों का आवरण पहनाया गया है ताकि वह गर्मी और सर्दी से बचा रहे।

तो, ऐ मुफज्ज़ल, महान हिकमतवाला (बुध्धिवान) अल्लाह के

सिवा कौन है जिसने इतने महत्वपूर्ण अवयव को इतनी कड़ी सुरक्षा में सुरक्षित रखा है।

ऐ मुफज्ज़ल, आँखों की पलकों को देखो कि वे आँखों को ढांकने के लिए कितनी सुंदरता तथा कितनी कलात्मकता से बनाई गई है। आँखों को सुरक्षित रखने के लिए कैसे उसे गोल किले में रखा गया है और उसपर कैसे पलकों के परदे लगाए गए है।

प्रकरण - १७

हृदय, फेफड़े, तथा अमाशय के विषय में

ऐ मुफज़्ज़ल, दिल को खुदा ने छाती के अंदर किस सुंदरता से सुरक्षित रखा है। उसके ऊपर कितनी सुंदर झिल्ली रखी गई है। उसकी सुरक्षा के लिए उसके दोनों ओर पसलियां और मांस के थर रखे गए है। उसी प्रकार गले में दो नलियां बनाई गई हैं। एक में से तो आवाज़ निकलती है, जो फेफड़े के पास है वह स्वरनली, और दूसरी

अमाशय से जुड़ी है। जब मनुष्य खाना खाता है तो स्वरनली पर एक पर्दा पड़ जाता है ताकि खाना स्वरनली में न चला जाय। यदि स्वरनली में खाना चला गया तो मनुष्य मर जाय। देखो इतनी सावधानी बरतते हुए इतनी कलात्मकता से यह कारीगरी किसने की है?

उसी प्रकार फेफड़े को दिल के लिए एक ऐसा पंखा बनाया है जो कभी थकता नहीं है। यदि वह पंखा रुक जाय तो दिल में गरमी पैदा हो जाय और मनुष्य मर जाय।

मल और मूत्र जमा करने के लिए इतनी कलात्मकता से दो थैलियाँ बनाई गई हैं। जिन में ये वस्तुएँ जमा होतीं रहती है। उन थैलियों को खाली करने के लिए ऐसे छिद्र बनाए गए हैं कि उन थैलियों के भरने पर जब मनुष्य नित्य कर्म करने के लिए बैठता है, वे छिद्र खुल जाते हैं और थैलियाँ खाली हो जाती हैं। थैलियाँ खाली होने पर छिद्र अपने आप बंद हो जाते हैं।

तुमने देखा, इन बातों में कितनी कलात्मकता और बुद्धिमत्ता छिपी है।

यदि ऐसा न किया जाता तो ये वस्तुएँ बार बार बाहर निकलतीं और मनुष्य तंग आजाता। अमाशय को कितना सख्त बनाया है और भोजन को पचाने की उसे कितनी शक्ति प्रदान की गई है।

जिगर को कितना नाज़ुक और कोमल बनाया गया है वह बहुत नाज़ुक और नरम भोजन को हज़म करता है। क्या ये सारी बुद्धिमत्ता और कलात्मकता से बनाई गई वस्तुएँ स्वयं बन गई है ?

नहीं !! सर्वशक्तिमान तथा संपूर्ण बुद्धिमान ईश्वर के सिवा कोई ऐसी वस्तुएँ बना नहीं सकता। इसमें इतनी कलात्मकता है कि उसके बनने से पहले कोई समझ भी नहीं सकता। ये सभी बुद्धिमत्ता पूर्ण तथा कलात्मक कारीगरी करने वाला सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ ईश्वर ही है।

प्रकरण - १८

हड्डियों की नालियों में गूदा, रक्त शिराओं में रक्त, उँगलियों के सिरों पर नाखून आदि।

ऐ मुफज्ज़ल !! जरा सोचो। हड्डियों की नलियों के अंदर नर्म नर्म गूदा क्यों रखा गया है ? उसे नलियों में इसलिए रखा गया है कि उसकी रक्षा ठीक से हो सके। यदि नलियों में नहीं रखा जाता तो वह बाहर रह नहीं सकता था। गर्मी में पिघल जाता, सर्दियों में जम कर

सख्त हो जाता और मनुष्य जीवित रह नहीं पाता। हड्डियों में यह गूदा रहने से मनुष्य को बहुत शक्ति मिलती है। रक्त को शिराओं के अंदर इसलिए रखा गया है ताकि वह एक स्थान पर जमा न हो तथा आवश्यकता के समय हर स्थान पर पहुँच सके।

उँगलियों के सिरों पर नाखून इसलिए पैदा किये गए कि उँगलियों के सिरों की रक्षा हो सके और किसी काम में कठिनाई न आए। यदि नाखून न होते तो उँगलियों से कई वस्तुएँ उठाई

न जा सकती। उसीप्रकार दो उँगलियों से कोई वस्तु उठाई न जा सकती। कलम पकड़ कर न लिखा जा सकता, सूईं में धागा न पिरोया जा सकता।

कान को कितनी कलात्मकता से बनाया गया है, उसके अंदर का भाग टेढा मेढा बनाया गया है ताकि उसके अंदर स्वर गूंजे और कान के परदे तक पहुंचे ताकि आवाज़ साफ़ सुनाई दे। हवा पहुँचने का रास्ता इसलिए टेढा मेढा बनाया गया है कि यदि हवा जोर से चले तो उसमें रुकावट बने और

यथोचित हवा कान के अंदर पहुंचे। यदि हवा में रुकावट न हो और हवा जोर से अंदर जाय तो कान के परदे को हानि हो सकती है।

मनुष्य की जांघ के ऊपर और नीचे अधिक मांस इसलिए रखा गया है ताकि मनुष्य को ज़मीन पर बैठने में आसानी हो। यदि किसी बीमारी या किसी ओर कारण से किसी व्यक्ति का मांस कम हो जाय और वह अत्यधिक दुबला हो जाय तो उसे बैठने में बहुत तकलीफ होती है।

ऐसी हिकमत और बुद्धिमत्तापूर्ण चीज़ें किसने बनाई? किसी महाबुद्धिमान, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान शक्ति ने ही सही पूर्वानुमान से ये वस्तुएँ निर्माण की है, वही तो अल्लाह है।

प्रकरण - १९

नर नारी और उन्हें प्रदान किये गए विशेष अवयवों की आवश्यकता

ऐ मुफज्ज़ल ! देखो मनुष्य दो प्रकार के होते हैं। एक नर और दुसरे नारी। दोनों के चेहरे भिन्न प्रकार के होते हैं। दोनों के समागम से मानव वंश आगे बढ़ता रहता है। अल्लाह ने इनके दिलो में अपना वंश आगे बढाने की इच्छा प्रदान की है। संतान द्वारा नाम बने रहने की उम्मीद पैदा की है। समागम के लिए एक दुसरे के समीप

आने की इच्छा दोनों के दिलों में निर्माण की है। यह सब इसलिए कि मानव वंश आगे बढ़ता रहे। यदि ऐसी इच्छाएँ तथा आनंद आदि न रखे जाते तो नर-नारी समीप न आते, समागम न करते और मानव वंश आगे न बढ़ता।

अल्लाह ने कई प्राणी ऐसे पैदा किए हैं जिनमें नर और मादा की जोड़ी की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। बल्कि कुछ विभिन्न वस्तुओं के जमा हो जाने से उनमें एक विशेष शक्ति पैदा हो जाती है जिससे जन्म होता है। इसी

कारण उनमें नर और मादा में फ़र्क नहीं होता। जैसे मधुमक्खी कि जिसमें नर और मादा पहचाने नहीं जाते।

मनुष्य को इस तरह मोहताज बनाया गया है कि उसे कई प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता पड़े। ताकि वह काम करे। यदि उसे मोहताज न बनाता तो वह कोई काम न करता। जैसे उसे पेट भरने की आवश्यकता न होती तो वह कोई कार्य न करता, मेहनत मजदूरी न करता। यदि उसे ठंडी और गर्मी का एहसास न होता तो वह कपडा

न सीता न पहनता, सूई धागा न बनाता, न कपास बोता न उसमें से रूई निकाल कर धागा बनाता। न ही कपड़ा बुनता। जब इन वस्तुओं की आवश्यकता ही न होती तो उसके हाथ पैर आदि बेकार रहते।

मनुष्य को इतनी सारी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी और ये सारी ज़रूरतें इन अवयवों के बिना पूरी न होगी इसलिए ये सारे अवयव बनाए गए, हाथ, हाथ में पंजा, उंगलियां, पैर आदि इस लिए बनाए गए है।

तो क्या ये अंग अपने आप बन गए? उसे क्या पता था किस अवयव की कहा आवश्यकता पड़ेगी। और उसके लिए क्या करना चाहिए? नहीं ये सारी चीज़ें सर्वज्ञ, महान बुद्धिमान, ईश्वर द्वारा बनाई गई है जो चीज़ों के बनने के पहले से जानता था कि किसे किस चीज़ की आवश्यकता होगी।

प्रकरण - २०

मनुष्य को बुद्धि तथा समझ प्रदान करने का कारण

अल्लाह ने मनुष्य को सद्कर्मों तथा कुकर्मों का प्रतिफल देने के लिए पैदा किया; इसीलिए उसे बुद्धि और समझ प्रदान की। यदि इस कारण से न पैदा किया होता तो बुद्धि प्रदान करने की कोई आवश्यकता न थी।

देखो मनुष्येतर प्राणियों को कर्मों का प्रतिफल देने के लिए नहीं पैदा किया गया इसलिए उन्हें अच्छा और बुरा

समझने की शक्ति भी प्रदान नहीं की गई। वे नहीं जानते हलाल क्या है, हराम क्या है? वे ये भी नहीं जानते सुन्नत क्या है।

किन्तु उन प्राणियों को जीवित रहने के लिए, भोजन आदि की आवश्यकता की पूर्ती करने के लिए, दुसरे प्राणियों से अपनी रक्षा करने के लिए आवश्यक समझ प्रदान की है। ताकि वे अपना भोजन प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रयास करें और घातक प्राणियों से दूर रहें।

जैसे बाज़ नामक पक्षी को देखते ही दुसरे पक्षी समझ जाते हैं कि यह मुझे पकड़ेगा इसलिए अपने बचाव के खातिर उड़ जाते हैं।

तो जिसे जितनी समझ शक्ति या बुद्धि की आवश्यकता थी उतनी ही क्या उसे अपने आप मिल गई होगी? नहीं किसी महान बुद्धिमान, हिकमत तथा तदबीर के मालिक ने उसे बुद्धि तथा समझ प्रदान की है।

उसीप्रकार मनुष्य को प्रयास तथा व्यवस्था करने की शक्ति प्रदान की

जिससे वह अपने हर कार्य को आवश्यकतानुसार अच्छे तरीके से संपन्न कर सके। इसी के द्वारा अल्लाह तआला ने मनुष्य पर अपनी हुज्जत तमाम कर दी। अब यदि मनुष्य उसकी इबादत न करे अर्थात नमाज़ आदि न पढ़े तो उससे पूछा जायगा कि क्या हम ने तुम्हें उठने बैठने की शक्ति नहीं दी थी? फिर क्यों तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी?

उसी प्रकार तुम्हारे हाथों पैरों में शक्ति प्रदान की थी फिर क्यों किसी गिरते व्यक्ति को सहारा नहीं दिया?

यदि समझ और शक्ति न प्रदान की होती तो उसपर हुज्जत भी तमाम न होती। सुब्हानअल्लाह उस मालिक ने कैसी हिकमत और संपूर्ण तदबीर से मनुष्य को बनाया है। वास्तव में उसका शुक्र किसी भी प्रकार अदा नहीं हो सकता।

फिर आपने फरमाया ऐ मुफज़्ज़ल जो कुछ मैंने तुमसे कहा उसपर ठन्डे दिमाग से विचार करो। क्या सचमुच मनुष्य तथा दुसरे प्राणी बिना किसी महान बुद्धिशाली और हिकमत वाले के

बनाए खुद ब खुद बन सकते है? और इतनी कलात्मकता और सुंदरता से ये सारे गुण एक स्थान पर एकत्रित हो सकते हैं? नहीं हरगिज़ नहीं। तआलल्लाहो अम्मा यसेफून (ये नास्तिक लोग जो कहते हैं, अल्लाह उससे पवित्र और महान है।)

प्रकरण - २१

ह्रदय की हिकमतें

ऐ मुफज्ज़ल, अब मैं तुम्हें ह्रदय के बारे में कुछ बयान करता हूँ। सुनों, ह्रदय में छोटे छोटे बारीक छिद्र हैं। और उसके समकक्ष फेफड़े में भी छिद्र हैं। फेफड़ा दिल का पंखा है। वह दिल की गरमी और उष्मा को दूर करता है और दिल को आराम पहुँचाता है। यदि दिल और फेफड़े के छिद्र जो एक दुसरे के ठीक सामने हैं सरक कर एक दुसरे के सामने से हट जाएँ तो मनुष्य के ह्रदय

में हवा न पहुंचेगी और मनुष्य मर जायगा। क्या किसी मनुष्य की बुद्धि यह मान सकती है कि ये चीज़ें खुद ब खुद बन गई होगी? यदि कोई ऐसे कहता है तो क्या उसका दिल उसे यह कहने से नहीं रोकेगा? क्या उसका दिल इस बात की गवाही नहीं देगा कि ऐसी बात कहना नादानी है?

ऐ मुफज्ज़ल ! यदि तुम किसी दरवाज़े को देखो जिसके दो पल्लों में से एक पल्ले में एक नकूचा जड़ा है तो क्या तुम यह कह सकते हो कि यह

नकूचा बेकार है? नहीं !! तुम यह नहीं कह सकते, उलटे तुम्हें इस बात का यकीन होगा कि दुसरे पल्ले में जंजीर लगी होगी जो इस नकुचे में लगेगी। और तुम्हें इस बात का भी यकीन होगा कि यह दरवाज़ा किसी बुद्धिमान ने हिकमत से बनाया है ताकि दरवाज़ा बंद हो सके।

उसी प्रकार यदि तुम किसी पशु को देखो तो तुम यह समझोगे कि इसके लिए एक मादा भी ज़रूर है। और इसे नर इसलिए बनाया गया है ताकि यह

अपनी मादा से मिलकर संतानोत्पत्ति कर सके। इससे यही साबित होता है कि किसी महान हिकमत वाले बुद्धिमान ने नर व मादा का जोड़ा बनाया है।

हर प्राणी के संतानोत्पत्ति के विशेष अंग भी आवश्यकतानुसार भिन्न भिन्न प्रकार के बनाए हैं। यदि पुरुष का गुप्तांग आवश्यकता के कारण सदा उत्थान की स्थिति में रहता तो मनुष्य सो न पाता, लोगों के सामने बाहर न निकल पाता। और यदि उत्थान न होता और हमेंशा संकुचित अवस्था में रहता

तो संतानोत्पत्ति का साधन न बन पाता। उस महान ईश्वर ने उसमें कैसी हिकमतें रखी हैं कि जब आवश्यकता हो उत्थान हो जाए, और जब आवश्यकता न हो संकुचित अवस्था में रहे।

ऐ मुफज़्ज़ल !! अल्लाह उन लोगों को नष्ट करे जो खुद को तत्वज्ञानी कहते हैं इसके बावजूद उनके हृदय इन आश्चर्यचकित कर देने वाली सृष्टि की बातों को देखने से अंधे हैं। यहाँ तक कि उन्हों ने इस सृष्टि के बनाने वाले अल्लाह के अस्तित्व से ही इनकार कर

दिया और कहते हैं कि इस संसार के बनाने में किसी महान बुद्धिमान तथा हिकमत वाले का हाथ नहीं है। किसी इरादा करने वाले ने विशेष इरादा करके इसे नहीं बनाया बल्कि यह संसार बस स्वयं ही अपने आप बन गया।

प्रकरण - २२अ

इंसान की कुदरती हाजत, दांत और नाख़ून विषयक

ऐ मुफज्ज़ल ! ज़रा गहराई से विचार करो। मनुष्य जो खाता पीता है, शरीर में उसका जो कचरा जमा होता है उसको शरीर से बाहर निकालने के लिए कैसे स्थान बनाए गए है। उन्हें बहुत ही छिपा कर अंदर के हिस्से में बनाया गया है। उसके दोनों ओर जांघें हैं जिन पर बहुत सा जमा हुआ मांस है कि जिससे वह स्थान छिपा रहे। जिस समय

मनुष्य को उसकी आवश्यकता हो और वह उकडू बैठे तो वह गुदा का द्वार खुल जाता है अन्यथा बंद और छिपा रहता है।

ऐ मुफज़्ज़ल ! ज़रा दांत के बारे में विचार करो। उनमें से कुछ खुरदरे और चौड़े हैं जिन्हें दाढ़ कहा जाता है। उनमें दब कर भोजन पिस कर नरम हो जाता है। आगे के कुछ दांत पतले और धारदार हैं। वे बड़ी चीज़ को काटने के लिए है। तो क्या ये खुद ब खुद बन

गए? प्रकृति जिसमें बुद्धि नहीं है उसे कैसे पता कि दांत ऐसे होने चाहिए ?

ऐ मुफज्ज़ल !! नाखून और बालों का काटना क्यों ज़रूरी है? और इसमें कौनसी हिकमतें छिपी है कि दोनों बढते और लंबे होते जाते हैं। अतः अपनी आवश्यकता के अनुसार इन्हें काटा जा सकता है। इसी कारण इनमें जान नहीं रखी गई है ताकि इन्हें काटने में मनुष्य को तकलीफ न हो।

मुफज्ज़ल ने निवेदन किया : स्वामी ! नाखून और बाल काटने पड़ते

हैं तो ईश्वर ने इनमें बढते रहने की शक्ति क्यों रखी है? इन्हें भी दुसरे अवयवों के समान स्थिर क्यों नहीं रखा?

इमाम (अ.स.) ने उत्तर दिया : बालों और नाखूनों के बढ़ने में उस महान ईश्वर ने कितनी ही हिकमतें रखी है जिन्हें मनुष्य नहीं जानता। यदि जानता होता तो ईश्वर के प्रति बहुत कृतज्ञ होता। इसमें हिकमत यह है कि मनुष्य शरीर के रोग और तकलीफें इन्ही बालों के छिद्रों से निकल जाती है। जैसे

भाप और पसीना। और जो बाल हैं वो खुद भाप है। उँगलियों के रोग नाखूनों के द्‌वारा बाहर निकलते हैं। इसी कारण हर सप्ताह नाखून काटने का और आवश्यकता अनुसार सर के बाल काटने का आदेश है। उसीप्रकार गुप्तांगों तथा बगल के बाल साफ़ करने का आदेश दिया गया है जिसके काट देने से अधिक बाल तथा नाखून बाहर निकलते हैं और जिसके द्‌वारा अधिक से अधिक रोग भी दूर हो जाते हैं। जब लंबी अवधी तक नहीं काटे जाते तो लंबी अवधी तक रोग

शरीर के अंदर रहते हैं और उससे विभिन्न बीमारियाँ जन्म लेती हैं।

जिन स्थानों पर बालों के उगने से मनुष्य को तकलीफ हो उन स्थानों पर बाल नहीं उगाए गए। जैसे यदि आँख के अंदर बाल उगते तो कितनी तकलीफ होती? यदि मुँह के अन्दर बाल उगते तो खाने पीने में कितनी तकलीफ होती? यदि हथेली पर बाल उगते तो वस्तुओं के स्पर्श करने में कठिनाई आती। उसी प्रकार विशेष स्थानों पर बाल उगते तो बड़ी तकलीफ होती।

तुमने देखा ! जहां बालों के उगने में मनुष्य को तकलीफ हो उन स्थानों पर बालों के न उगने में कितनी मस्लेहत और हिकमत भरी है। तो क्या प्रकृति इन हिकमतों को समझ सकती है? ऐसे महान हिकमतों से भरे हुए कार्य प्रकृति द्‌वारा अपने आप होते हैं ऐसा कहा जा सकता है? हरगिज़ नहीं कहा जासकता। अफ़सोस है नास्तिकों और उनकी समझशक्ति पर।

जिस प्रकार मनुष्यों के लिए हिकमत और मस्लेहत से काम लिया

गया है उसीप्रकार प्राणियों के लिए भी किया गया है। उनके संपूर्ण अंग बालों से भरे होते हैं किन्तु कुछ विशेष स्थानों पर, जहां बालों के उगने से उन्हें परेशानी हों, उन विशेष स्थानों पर बाल नहीं उगते।

अतः मनुष्यों तथा प्राणियों की बनावट पर खूब गौर करो। देखो उनकी बनावट ऐसी है जिससे उन्हें असुविधा न हों, तकलीफ न हों। हर कार्य में सुविधा हो ऐसा ही उन्हें बनाया गया है।

मानविया ¬नामक एक पंथ है जिन्होंने ईश्वर की बनावट में एक त्रुटि ढूंढ़ निकाली है। उनका कहना है बगल और नाभि के नीचे बाल क्यों पैदा किये गए हैं? वे नहीं जानते जहां पानी बह कर जमा होता है वहाँ घांस उगती ही है। इसी प्रकार इन स्थानों पर पसीना एकत्रित होता है इस कारण वहाँ बाल उगते हैं।

इसके अतिरिक्त इसमें यह भी हिकमत है कि अल्लाह चाहता है कि मनुष्य अपने हाथों से कुछ कष्ट उठाए

इसलिए इन दो स्थानों पर बालों को साफ़ करने का कार्य उसने मनुष्य को सौंपा है। इस कार्य को सौंपने में यह भी मस्लेहत है कि मनुष्य अपने अंगों को साफ़ सुथरा रखने में, इन बालों को दूर करने में व्यस्त रहे। कम से कम इतना समय तो वह बुरे कार्यों से दूर रहेगा।

प्रकरण - २२ब

मनुष्य के थूंक और पेट के संबंध में

आप ने फरमाया : ऐ मुफज़्ज़ल ! थूंक के विषय में ज़रा विचार करो और सोचो कि उसे किसप्रकार बनाया गया है कि वह हमेशा थोड़ा थोड़ा निकलता रहता है। इसमें विशेषता यह है कि इसके हर समय निकलते रहने से मुँह और गले में नमी बनी रहती है। यदि गला और मुँह सूख जाए तो मनुष्य मर जायगा। इसके अतिरिक्त यह भी मस्लेहत है कि मुँह में लार बने रहने से

जिस वस्तु को चबाया जाय वह गले में आसानी से उतर जाती है। यह थूंक भोजन में मिल जाने से मनुष्य को बहुत से लाभ हैं। कभी कभी यह नमी पित्ताशय पर भी चली जाती है। यदि पित्ताशय सूख जाय तो मनुष्य जीवित नहीं रह सकता।

कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी और दार्शनिकता का दिखावा करने वाले लोग अपनी मूर्खता से कहते हैं कि मनुष्य का पेट जो बंद रखा गया है वह ठीक नहीं है। यदि उसे इस प्रकार बनाया जाता कि

आवश्यकतानुसार उसे खोल और बंद किया जासकता तो बहुत अच्छा होता। चिकित्सक उसमें हाथ डाल कर हर बीमारी का आसानी से इलाज कर पाते। पेट बंद रहने के कारण उसके अंदर की स्थिति को जानना बहुत मुश्किल कार्य है। और जो जानकारी मिलती भी है वह अपूर्ण होने से गलतियों की संभावना बहुत बढ़ जाती है।

ऐसे लोगों के लिए उत्तर यह है कि ऐसे मामले मनुष्यों को सौंप दिए जाते तो मनुष्य जल्दी स्वस्थ हो जाते

और इस कारण अधिक घमंडी हो जाते। उनमें बहुत अहंकार पैदा हो जाता। इसके अतिरिक्त पेट को खुलने वाला बनाया जाता तो अंदर का पानी आदि बाहर निकलता रहता; मनुष्य को सोने बैठने में तकलीफ होती; किमती कपडे खराब होते रहते और मनुष्य को आराम की बजाय तकलीफों का सामना करना पड़ता। इसके अतिरिक्त शरीर के अंदरूनी अंग कलेजा, दिल आदि जिन्हें काम करने के लिए गर्मी की आवश्यकता होती है, पेट के खुलते

रहने से गर्मी निकल जाती और वे अंग कार्य करना बंद कर देते जिससे मनुष्य मर जाता।

ऐ मुफज़्ज़ल, उस महान सर्जनहार ने जो महाबुद्धिमान और हकीम है अत्यंत बुद्धिमत्ता तथा हिकमत के साथ मनुष्य के शरीर की रचना की है। और उसके अंग प्रत्यंग बनाए हैं। यह रचना सर्वोत्तम है। इससे अच्छी रचना की कल्पना भी झूठी, गलत, बेकार और मूर्खता भरी है।

प्रकरण - २३

खाने, पीने, सोने और ऊंघने के संबंध में

ऐ मुफज्ज़ल, मनुष्य को खाने, पीने, सोने, तथा विशेष कार्य के लिए जो बातें तय की गई है उसमें भी बहुत हिकमत का उपयोग किया गया है। हर एक के लिए उसकी आवश्यकतानुसार तथा उसकी इच्छानुसार एक एक वस्तु एकत्रित की गई है। जैसे भोजन से शक्ति तथा सामर्थ्य आता है। इसलिए उसके भोजन के लिए भूख तथा रुचि को

नियत किया गया है। ताकि वह खुद ब खुद तथा रुचिनुसार भोजन प्राप्त कर ले। इसी प्रकार मनुष्य को काम काज तथा मजदूरी से हट कर आराम की आवश्यकता होती है अतः उसके लिए सुस्ती को नियत किया गया है ताकि मनुष्य सो जाय, उसे आराम मिले, और उसके अंगों की थकान दूर हो सके।

यदि इन चीज़ों को मनुष्य पर आधिपत्य न दिया जाता तो मनुष्य लालच आदि के कारण खाने और आराम में सुस्ती करता और कमज़ोर हो कर

मर जाता। उसी प्रकार सम्भोग की इच्छा न रखी जाती तो केवल संतान प्राप्ति के लिए यह कार्य कई लोग न करते तथा मनुष्य की सुस्ती के कारण मानव वंश में वृद्धि न हो पाती।

सारांश यह कि मनुष्य को जिस वस्तु की अत्यंत आवश्यकता है उसके लिए इच्छा, आनंद तथा रुचि को सुनिश्चित किया गया ताकि उसकी वह आवश्यकता पूर्ण हो सके।

प्रकरण - २४

शरीर कि चार शक्तियों के संबंध में

मनुष्य में चार प्रकार की शक्तियां होती हैं।

1। कुव्वते जाज़ेबा (भोजन ग्रहण करने की शक्ति) : यह शक्ति भोजन को ग्रहण कर के मनुष्य के अमाशय में पहुँचाती है।

2। कुव्वते मासेका (सुरक्षा शक्ति) : यह शक्ति भोजन को अमाशय में रोक रखती है ताकि प्रकृति अपना कार्य कर सके।

3। कुव्वते हाज़ेमा (पाचन शक्ति) : यह शक्ति भोजन को पाचन कर उसमें से आवश्यक तत्व निकाल कर निर्धारित स्थान तक भेज देती है।

4। कुव्वते दाफेआ (निवारण शक्ति) : भोजन से आवश्यक तत्व निकल जाने पर बचे हुए कचरे को शरीर से बाहर निकाल फेंकती है।

इन चार शक्तियों के संबंध में विचार करो कि मनुष्य के शरीर में कितनी कुशलता तथा हिकमत के साथ एकत्रित की गई है। यदि इन चार

शक्तियों में से एक शक्ति भी होती तो मनुष्य शरीर के व्यवस्था तंत्र में रुकावट पड़ जाती तथा कार्यशीलता बाधित हो जाती। यदि कुव्वते जाज़ेबा न होती तो मनुष्य भोजन प्राप्त करने का प्रयत्न न करता; कुव्वते मासेका न होती तो भोजन शरीर में रुक न पाता; कुव्वते हाज़ेमा न होती तो भोजन शरीर में पच न पाता; कुव्वते दाफेआ न होती तो अनावश्यक कचरा शरीर से बाहर न निकल पाता।

क्या तुम देखते नहीं कि उस महान पालनहार ने अपनी बहुत ही सूक्ष्म कारीगरी से इन चारों शक्तियों को बनाया और इन्हें कार्यरत किया।

अब मैं शरीर के संबंध में एक उदहारण देता हूँ। कल्पना करो कि शरीर एक राजा का महल है। इस महल में राजा के नौकर चाकर बाल बच्चे आदि सभी है। महल के सुसंचालन के लिए कई कर्मचारी नियुक्त किए गए हैं। प्रत्येक के जिम्मे एक नियत कार्य है। एक कर्मचारी को यह काम सौंपा गया है

कि महल में आवश्यकता की सारी वस्तुए बाहर से लाया करे। दुसरे कर्मचारी के जिम्मे भंडार है वह बाहर से लाई गई वस्तुओं को सम्हाल कर रखता है और आवश्यकता के समय उन्हें उपलब्ध कराता है। तीसरे कर्मचारी के जिम्मे यह कार्य है की खाना बना कर सभी महल वासियों में बाँट दे। चौथे कर्मचारी का कार्य साफ़ सफाई है। वह महल का सारा अनावश्यक कचरा बाहर निकाल फेंकता है।

इस महल का मालिक महान हिकमत तथा सामर्थ्य वाला रचयिता अल्लाह है जो समस्त संसार का मालिक है। और यह महल मनुष्य का शरीर है। घर के निवासी इस शरीर के अवयव है और कर्मचारी यही उल्लेखित चार शक्तियां है।

फिर आप ने फरमाया : ऐ मुफज़्ज़ल, चाहे तुम यह समझो कि यह जो चार शक्तियों का वर्णन हम ने किया वह निरर्थक है। किन्तु ऐसा मत समझना। मैंने जो वर्णन किया है वह

चिकित्साशास्त्र की पुस्तकों में इस प्रकार नहीं मिलेगा। वहाँ जो वर्णन किया गया है वह चिकित्सा के दृष्टिकोण से, रोग मुक्ति तथा स्वास्थ लाभ की आवश्यकता के अनुसार किया गया है। और हम जो वर्णन कर रहे हैं वह आत्मज्ञान के दृष्टिकोण से लोगों को अज्ञानता से निकाल कर सही मार्ग के मार्गदर्शन की आवश्यकता के अनुसार कर रहे है।

हमने जिस स्पष्टता से सत्य का वर्णन तदबीर तथा हिकमत का उदाहरण

दे कर किया उस पर गहन विचार करो कि मनुष्य के शरीर में कैसी कैसी शक्तियां एकत्रित की गई है। उसीप्रकार चिंतन, विचार, बुद्धि, तथा स्मरणशक्ति आदि कितनी सुंदरता से एकत्रित की गई है। यदि केवल स्मरणशक्ति की विशेषता न होती तो मनुष्य की क्या हालत होती? उसके काम धंधे, व्यापार रोज़गार आदि में कितनी तकलीफ होती? जब उसे याद ही न होगा कि उसे दुसरे लोगों से क्या क्या लेना है और दुसरे लोगों को क्या

क्या देना है? किस किस से क्या क्या लिया था? किस किस को क्या क्या दिया था? क्या सुना था? क्या कहा था? उसी प्रकार उसपर किसने उपकार किया था, किसने बुराई की थी। किस व्यवहार में लाभ हुआ था किस व्यवहार में हानि हुई थी तो इन सारी बातों में कितनी समस्याएँ खड़ी हो जातीं।

यदि स्मरणशक्ति न होती तो बार बार एक रास्ते पर चलने के बावजूद उसे रास्ता याद न रहता। मनुष्य शिक्षा ग्रहण न कर पाता इसलिए कि पाठ उसे

याद ही न रहता। दुसरे धर्मियों के सामने अपनी आस्था प्रकट न कर पाता। बीती बातें उसे याद न रह पाती। पड़ी या सुनी बातों का वर्णन भी न कर पाता।

ऐ मुफज्ज़ल, तुम विचार करो कि ये शक्तियां मनुष्य मात्र के लिए कितना बड़ा वरदान हैं। स्मरण शक्ति को ही देखो कि उसके अभाव से मनुष्य की क्या स्थिति होती?

जिसप्रकार स्मरणशक्ति एक बड़ा वरदान है उसी प्रकार विस्मरणशक्ति

(भूल जाने की शक्ति) भी एक बड़ा वरदान है। यदि भूल जाने की शक्ति मनुष्य में न होती तो मनुष्य को किसी मुसीबत से राहत न मिलती। दिल से द्वेष न निकल पाता। एक अवधी बीत जाने पर मनुष्य मुसीबत द्वेष आदि भूल जाता है। यदि ये बुरी बातें न भूल पाता तो उसे किसी भी चीज़ में आनंद न मिल पाता।

क्या तुम देखते नहीं कि मनुष्य में स्मरण शक्ति तथा विस्मरण शक्ति, एक दुसरे की विरोधाभासी शक्तियां कैसे

और कैसी कुशलता से एकत्रित की गई? प्रत्येक के लिए विशेषता बनाई गई है। तो क्या ऐसी हिकमत की बातें बिना किसी महा बुद्धिमान रचयिता के अपने आप पैदा हो सकती है भला?

संसार में ऐसे भी लोग हैं जो एक दुसरे से विरुद्ध चीज़ों को पैदा करने वाले दो भिन्न सर्जनहार की मान्यता रखते हैं। वे कहते हैं एक पैदा करने वाले ने बुराई जो जन्म दिया और दुसरे पैदा करने वाले न अच्छाई को जन्म दिया। वे मानते हैं कि बुराई को पैदा करने

वाला बुराई के सिवा कुछ पैदा नहीं कर सकता।

किन्तु यहाँ तो स्मरण शक्ति और विस्मरण शक्ति को पैदा करने वाला एक ही है। एक अच्छी और एक बुरी बात होने के बावजूद उस मालिक ने दोनों में मनुष्य के लिए लाभ रखे हैं। यदि दो अलग अलग पैदा करने वाले होते तो बुरी चीज़ में अच्छा असर कैसे पैदा हो पाता?

प्रकरण - २५

शर्म, हया और वाणी के सन्दर्भ में

आप ने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल, समस्त सृष्टि के जीवित प्राणियों में केवल मनुष्य को शर्म व हया प्रदान की गई है। यह वस्तु अन्य प्राणियों को प्रदान नहीं की गई।यह ऐसी चीज़ है जिससे अद्‌भूत लाभ होते हैं। यदि यह न होती तो कोई अतिथि का स्वागत न करता। कोई अपना किया वादा पूरा न करता। कोई पुण्य न करता, कोई बुराई से दूर न रहता। यहां तक कि मनुष्य

अपने कर्तव्य केवल शर्म व हया के कारण पूरे करते हैं। जब कोई व्यक्ति शर्म व लज्जा को तज दे वह न माता पिता की आज्ञा का पालन करता है, न सगे सम्बन्धियों से सद्व्यवहार करता है, न किसी की अमानत को लौटाता है, न बेशर्मी के कार्यों से बचता है। देखो शर्म व लज्जा कितने उत्तम गुण है जो केवल मनुष्य को प्रदान किये गए हैं जिसके कारण मनुष्य अच्छाई के कार्य करता है।

ऐ मुफज्ज़ल, मनुष्य को जो वाणी (बोलने की शक्ति) प्रदान की गई है इस अनुग्रह के बारे में विचार करो कि यह कितना आवश्यक गुण है कि जिसके द्वारा मनुष्य अपने दिल की बातें प्रकट करता है। यदि यह नेअमत न होती तो मनुष्य भी अन्य प्राणियों के समान अपने दिल की बातें अन्य लोगों पर प्रकट न कर सकता। उसी प्रकार अन्य लोगों के दिल की बातें भी न जान सकता।

उसी प्रकार लेखन भी है, कि जिसके द्‌वारा मनुष्य बीते काल का विवरण वर्तमान काल के लोग जान सकते हैं। वर्तमान काल का विवरण भविष्यकाल के लोगों के लिए लिखा जाता है। इसी के द्‌वारा मनुष्य एक लंबी अवधि पूर्व घटी घटनाओं से अवगत होता है। इसी के कारण ज्ञान, संस्कार की पुस्तकें हमेंशा बाक़ी रहती है। एक दुसरे से किये संधि करार आदि लिख कर याद रखे जाते हैं। यदि यह गुण न होता तो बीते युगों की बातें आने

वाले काल के लोगों को जानने को न मिलती।

जो लोग अपना देश छोड़ कर परदेश जाते हैं उनके समाचार जानने को न मिलते। विभिन्न प्रकार के ज्ञान का अस्तित्व न रह पाता तथा वे ज्ञान गतिमान न रह पाते। अदब, आदाब, साहित्य, संस्कृति, तथा नैतिकता की बातें नष्ट हो जातीं। सारांश यह कि लोगों के धार्मिक तथा सांसारिक सारे मामलों में बड़ी समस्या खड़ी हो जाती।

कहीं तुम यह न समझो कि ये सभी चीज़ें मनुष्य ने अपनी बुद्धि तथा तदबीर से प्राप्त की है और ये चीज़ें मनुष्य में पहले से स्वभावगत न थी। या यह कि वाणी (बात करना) आदि मनुष्य ने अपनी बुद्धि से खोज निकाला है और इसके द्वारा आपस में बात चीत करता है। एक दुसरे का मतलब समझता है, समझाता है। इसी कारण विभिन्न समाजों में विभिन्न भाषाएँ प्रचलित हैं। उसी प्रकार लेखन भी विभिन्न भाषाओं में विभिन्न जैसे अरबी, सुरयानी,

इबरानी, रूमी आदि विभिन्न प्रकार के हैं। यह भी बातचीत के माध्यम बना लिए गए हैं। इस विषय में कोई ऐसे आपत्ति करे कि इसमें सर्जनहार का क्या योगदान हैं? यह तो मनुष्य ने अपनी बुद्धि से खोज निकाला है।

इसका उत्तर यह है कि यद्यपि विभिन्न भाषाओं में बोलना लिखना आदि भिन्न है। लिखने पढ़ने, बोलने के साधन मनुष्य ने खोजे किन्तु उसके लिए आवश्यक गुण, शक्ति तथा बुद्धि मनुष्य ने नहीं बनाई है वह महान ईश्वर

ने प्रदान की है। बुद्धि और ज़बान के द्वारा ये चीज़ें बनती हैं यदि जीभ न प्रदान की जाती या जीभ में बोलने की शक्ति न दी जाती, आवश्यक उच्चारण करने की शक्ति न दी जाती तो मनुष्य कैसे बोल पाता? बुद्धि और समझ शक्ति न दी जाती तो तदबीरें कैसे खोजी जातीं? हथेलियाँ और उंगलियां न दी जाती तो मनुष्य कैसे लिख पाता?

इस विषय में प्राणियों का उदाहरण सामने रखो जिन्हें न बोलने की शक्ति

है न लिखने की, उन्हें ऐसे शक्तिशाली उपकरण नहीं प्रदान किये गए।

इससे यह साबित होता है कि ये बाते भी उस महान अल्लाह द्वारा हिकमत और मस्लेहत के कारण अर्पण की गई है। जो कोई इन नेअमतों का आभार अदा करेगा और कृतज्ञ रहेगा उसे अल्लाह पुण्य प्रदान करेगा और जो कृतघ्नता दिखाएगा तो अल्लाह इन बातों से बे परवाह है। (अर्थात उसे लोगों के आभार की आवश्यकता नहीं है।)

प्रकरण - २६

ज्ञान और समझ शक्ति

आप ने फरमाया : ऐ मुफज्ज़ल, उन चीज़ों के बारे में विचार करो जिनका ज्ञान अल्लाह ने मनुष्य को प्रदान किया है और जिनका ज्ञान नहीं दिया। जिन जिन बातों में मनुष्य के धर्म तथा संसार की भलाई है उसकी समझ मनुष्य को प्रदान की गई है जैसे सभी लोगों के साथ सद्व्यवहार करना, धरोहर लौटाना, गरीबों की मदद करना आदि।

जो कार्य कर्तव्य हैं तथा उत्तम हैं उसकी समझ हर मनुष्य को अल्लाह ने दी है। उसीप्रकार संसार के भलाई के साधनों की समझ भी उसे प्रदान की है, जैसे कृषि कार्य करना, मवेशियों का पालन, जड़ी बूटियों का पह्चानना कि जिससे बीमारियाँ दूर हों। खानों से किमती खनिज जैसे हीरे, आदि खनन कर के निकालना, सागरों में गोताखोरी कर के मोती आदि निकालना आदि तदबीरें तथा व्यापार रोज़गार की तथा कारीगरी की विशेषताएं ढूंढ निकालना।

ये सारी समझ ईश्वर ने मनुष्य को प्रदान की है।

इसके अतिरिक्त जिन बातों का जानना उसकी समझ शक्ति से बाहर की बात है अथवा जिन जानकारी की उसको आवश्यकता नहीं है ऐसी बातों की उसको समझ नहीं दी गई है। जैसे गैब का ज्ञान, जैसे भविष्य की बातें, जैसे अतीत में हुए दृष्टांत, जैसे आकाश के ऊपर या ज़मीन के नीचे क्या क्या हुआ आदि। उसीप्रकार दुसरे लोगों के दिलों की बातें जानने का ज्ञान मनुष्य को

नहीं दिया गया। इसके बावजूद जिन जिन लोगों ने ये बातें जानने का दावा किया उनकी कही बातों से झूठा साबित हो गया और इस प्रकार उनका दावा खोखला (अस्वीकार्य) हो गया।

ऐ मुफज्ज़ल, ज़रा सोचो, मनुष्य को आवश्यक ज्ञान दिया गया और जिन बातों की उसको आवश्यकता नहीं थी उसका ज्ञान उसे नहीं दिया गया। अपनी बेबसी और अज्ञानता द्वारा मनुष्य समझ जाय कि मनुष्य सारी बातों में लाचार है। यदि ऐसा न किया जाता और

संपूर्ण ज्ञान उसे दे दिया जाता तो वह अभिमानी तथा अहंकारी बन जाता। यह भी उसी मालिक की मस्लेहत है।

यदि रहस्य की बातें जानता होता तो कहाँ से कहाँ पहुंचना चाहता और उसके घमंड की सीमा न रहती। इतने थोड़े से ज्ञान से मनुष्य का घमंड इतना बढ़ गया है और अयोग्य बातें करने लगा है, यदि गैब तथा गुप्त बातों का उसे ज्ञान होता तो अपने को ईश्वर कहलवाता। जब वह इस प्रकार अधूरा और लाचार है तो उसे चाहिए कि अपने

पैदा करने वाले को पहचाने और समझने की कोशिश करे कि मुझपर काबू रखने वाला कौन है।

ऐ मुफज्ज़ल, अब सुनो, इस बात के बारे में कि ईश्वर ने मनुष्य को उसके जीवन की अवधि कितनी तय की है उसका ज्ञान क्यों नहीं दिया? उसकी उम्र कितनी है और वह कितना ओर जियेगा यह जानने से वंचित रखा। इसमें भी उस माबूद की बड़ी मस्लेहत तथा भेद यह है कि

१। यदि मनुष्य को उसके जीवन की अवधि का ज्ञान हो जिसकी अवधि बहुत कम हो उसे इतना समय जीवन जीना बहुत भारी पड़ेगा। जीवन कड़वा ज़हर के समान हो जायगा क्योंकि हर समय यही ख़याल उसके मस्तिष्क में रहेगा कि इतना समय अब बाक़ी बच गया है, अब थोड़े दिन है आदि। इसी हाय तौबा में गिरफ्तार रहता वह ऐसे विक्षिप्त बन जाता जैसे किसी का धन चला गया हो और वह मुफलिस और गरीब हो गया हो और वह गए हुए माल

के लिए अफ़सोस करे उससे भी अधिक यह अल्प जीवन के लिए दुखी और बेचैन रहा करता। छीन जाने वाले धन के फिर आने की आशा रहती है किन्तु इस मामले में तो आशा भी नहीं रहेगी।

२। यदि किसी मनुष्य के जीवन की अवधि लंबी हो और उसे इसका ज्ञान हो तो वह एकदम खराब कृत्य तथा पाप कर्म करने में वृध्धि कर देता। और कहता कि बहुत अवधि बाकी है अभी तो मौज कर लो जब मौत नज़दीक आएगी तब तौबा कर लेंगे, अच्छे कर्म करेंगे।

इसलिए अल्लाह तआला ने जीवन की अवधि गुप्त रखी ताकि मौत को नज़दीक समझ कर मनुष्य हमेंशा अच्छे कर्म करता रहे। आखेरत की तय्यारी करे और मौत का पक्का समय पता न होने से जीवन में कड़वाहट न आने पाए।

अब यदि कोई यह प्रश्न करे कि ऐसा नियम है कि सारी उम्र पाप करे और फिर प्रायश्चित कर ले तो ईश्वर उसके सारे पाप माफ कर देता है। तो क्या इसमें आपत्ति थी कि लंबे जीवन का ज्ञान होता तो पहले पाप कर लेते

तथा अंत में प्रायश्चित कर लेते। तो जानना चाहिए कि इसमें ईश्वर राज़ी नहीं है। क्योंकि उसने जान बूझ कर पाप किया कहलाएगा। यदि पता न हो तो गलती से पाप किया कहलाएगा। इसके उपरांत जीवन के अंतिम दिनों में तौबा कर सकने की गारंटी भी नहीं है क्योंकि जब लंबे समय तक पापों में लिप्त रहेगा तो उसे पाप छोडना बहुत तकलीफदेह महसूस होगा। फिर वृद्धावस्था में इतनी शक्ति भी कहाँ होगी कि तकलीफ को बर्दाश्त कर सके।

इबादतों की तकलीफें बर्दाश्त कर सके। जो सद्कर्म छूट गए उसे अदा करने की शक्ति भी तो नहीं होगी। किसी का क़र्ज़ होगा तो धन चले जाने पर कैसे लौटाएगा?

यदि कोई इस बात का विरोध करे कि मौत का समय पता नहीं होने पर भी कई लोग पाप तथा हराम कर्म किया करते हैं, गुनाहों में लिप्त रहते हैं, तो मौत का समय ज्ञात होने या न होने से कोई फर्क तो रहा नहीं। तो इसका उत्तर यह है कि अल्लाह ने हिकमत और

तदबीर से मनुष्य के हित में जो था वैसे इंतज़ाम किया तथा उसे शक्ति प्रदान की। फिर यदि मनुष्य सही रास्ते पर न चले तो उसकी ज़िम्मेदारी उसपर है।

जैसे कोई चिकित्सक मरीज़ को कोई दवा दे तथा परहेज़ भी बताए जिसमें मरीज़ की भलाई है। इसके बावजूद मरीज़ परहेज़ न करे, दवा न खाए इसमें चिकित्सक का कोई दोष नहीं। यह तो ऐसा है जैसे कोई जान बूझ कर विपत्ति मोल ले।

सारांश यह कि जीवन की अवधि का पता न होना मनुष्य के हित में है। जबकि कई लोग इसका लाभ उठा कर सद्कर्म न कर बुरे कर्म किया करते हैं। किन्तु कई लोग अचानक आने वाली मौत के भय से हमेंशा सद्कर्म किया करते हैं और बुरे कर्मों से बचते है। जीवन की निश्चित अवधि का अज्ञान मनुष्य के हित में है।

प्रकरण - २७

स्वप्न के विषय में

ऐ मुफज़्ज़ल, स्वप्न के विषय में ज़रा विचार करो। उसमें कितनी मस्लेहत निहित है। स्वप्न के भी दो प्रकार होते हैं। एक सच्चा और दूसरा झूठा। दोनों को आपस में मिला दिया गया है। यदि सारे स्वप्न सच्चे होते तो सारे लोग नबी बन जाते, और मनुष्य जो परीक्षा के लिए पैदा किया गया है वह हेतु पूरा न होता। और यदि सारे स्वप्न झूठे होते तो इसमें कोई फायदा न होता और यह

चीज़ संपूर्ण रूप से नाकारा हो जाती। कुछ स्वप्न के सच्चे होने का हेतु यह है कि लोग उनके आधार पर अपनी लाभ या हानि जान सकें। और झूठे होने का कारण यह है कि लोग उनपर संपूर्ण भरोसा न कर सकें और दम्भी न बनें कि हमने स्वप्न में जैसा देखा है वैसा ही होगा। और यदि ऐसा होता तो लोग ईश्वर के पास दुआ आदि मांगने की परवाह न करते।

ये सारी बातें इसलिए बनाई गई है कि मनुष्य को इसकी आवश्यकता है।

प्रकरण - २८

कोई भी वस्तु बेकार न होने के विषय में

ऐ मुफज़्ज़ल, अल्लाह ने कोई भी वस्तु बेकार पैदा नहीं की है। हर वस्तु किसी न किसी प्रयोजन के आधार पर बनाई गई है।

मिट्टी से मकान आदि बनते हैं, लोहे से हथियार बनते हैं, लकड़ी से नाव आदि बनते हैं, पत्थर से चक्की आदि बनते है, ताम्बा बर्तन के अतिरिक्त अन्य सामान बनाने के काम

आता है, सोना, चांदी लेन देन आदि के लिए, कारोबार चलाने के अतिरिक्त महिलाओं के श्रृंगार के लिए गहने आदि बनाने के काम आते हैं, हीरे जवाहरात कीमती धन संग्रह के लिए हैं, जानवर, पक्षी, फल फलादि, मेवे, आदि जिनका वर्णन संभव नहीं, विशेष हेतु के लिए बनाई गई है।

कोई व्यक्ति किसी घर में जाए और वहाँ की सजावट देखे कि घर की उपयोग की सारी वस्तुएँ वहाँ करीने से सजा कर रखी है तो देखने वाला क्या

ऐसा समझेगा कि ये सारी वस्तुएँ अपने आप उस स्थान पर जमा हो गई है? हरगिज़ नहीं। कोई बुद्धिमान ऐसा हरगिज़ नहीं मानेगा। अपितु कहेगा कि इस घर के मालिक ने सभी आवश्यक वस्तुए मस्लेहत अनुसार एकत्रित की है।

तो क्या इस संसार के भीतर सारी आवश्यक वस्तुओं को देख कर यह कहा जा सकता है कि सारी आवश्यकता की वस्तुएँ यहाँ अपने आप जमा हो गई? हरगिज़ नहीं। यही कहना पड़ेगा कि

इसका बनाने वाला संपूर्ण बुद्धिमान तथा सर्वशक्तिमान है।

ऐ मुफज्ज़ल, मनुष्य के लिए यहाँ जो वस्तुएँ बनाई गई है उस विषय में विचार चिंतन करो तथा शिक्षा ग्रहण करो कि इसमें क्या क्या हिकमत समाई है।

मनुष्य के भोजन के लिए अनाज बनाया है किन्तु उसे खाने से पहले पीसने पकाने की तकलीफ दी गई है। पहनने के लिए ऊन, कपास आदि पैदा किया गया है किन्तु उन्हें पहनने लायक

बनाने के लिए बुनने की तकलीफ दी गई है। झाड़ फल आदि मनुष्य के लिए पैदा किये गए हैं किन्तु उन्हें बोने, सींचने आदि की तकलीफ दी गई है। बीमारी इलाज के लिए जड़ी बूटी आदि पैदा की गई है किन्तु उन्हें एकत्रित करने, मिलाने कूटने, पीसने की तकलीफ दी गई है।

ये सारी वस्तुएँ ईश्वर ने बहुत उपयोगी तथा कीमती बनाई है। मनुष्य उन्हें मामूली वस्तुएँ न समझे इसलिए

उसे थोड़ी तकलीफ भी दी है इसमें भी उसकी विशेष कल्याण की भावना है।

जिस अल्लाह ने धरती को चीर कर अनाज पैदा कर दिया, क्या उसमें उसे पीसा हुआ पैदा करने की शक्ति न थी? जो कार्य बंदे से नहीं हो सकता था उसे ईश्वर ने कर दिया अब जो काम बंदे से हो सकता है उसके करने के लिए उसे बुद्धि तथा शक्ति प्रदान की।

इन कार्यों के करने की ज़िम्मेदारी मनुष्य पर इस लिए डाली कि यदि ये सारी चीज़ें बिना मेहनत अपने आप हो

जाती तो मनुष्य के अहंकार की सीमा न रहती। इसके अतिरिक्त बिना मेहनत प्राप्त की हुई वस्तुओं में वह आनंद कहाँ होता है और इसी कारण उन वस्तुओं की कद्र भी नहीं होती। मनुष्य किसी कार्य में व्यस्त रहे तो ठीक रहता है, और सारी बातें व्यवस्थित होती हैं। यदि उसे कोई काम न हो तो खाली दिमाग दूसरों को तकलीफ देता है। (खाली दिमाग शैतान का कारखाना होता है) सारांश यह कि मनुष्य के लिए जो उचित था वही बनाया है।

प्रकरण - २९

खाने पीने के संबंध में

ऐ मुफज्ज़ल, मनुष्य जीवन का आधार भोजन, पानी और हवा पर है। मनुष्य को भोजन की तुलना में हवा और पानी की अधिक आवश्यकता होती है। मनुष्य भूख और प्यास को अधिक सहन कर सकता है। भोजन की तुलना में पानी का अधिक मोहताज है, पानी की तुलना में हवा का अधिक मोहताज है। उसी प्रकार अन्य प्राणियों तथा

पक्षियों को हवा तथा पानी की अधिक आवश्यकता होती है।

इसलिए अल्लाह ने अत्यधिक आवश्यकता वाली वस्तुओं अर्थात हवा तथा पानी को एकदम मुफ्त कर दिया कि इसके लिए कुछ भी देना न पड़े। इन वस्तुओं की बार बार आवश्यकता पड़ती है अतः वह इन वस्तुओं के प्राप्त करने में व्यस्त न रहे इसलिए इन वस्तुओं को अधिक प्रमाण में तथा इन वस्तुओं का आधिक्य कर दिया।

भोजन की मनुष्य को आवश्यकता है किन्तु पानी से बहुत कम इसलिए उसे प्राप्त करने में मेहनत मुक़र्रर की। ताकि मनुष्य एकदम आलसी तथा बेकार न हो जाय तथा समाज में खराबी न पैदा करे। क्या तुमने नहीं देखा कि छोटे बच्चों को फ़ालतू घूमने नहीं दिया जाता और शिक्षक के पास भेज दिया जाता है। जो बच्चा बेकार रहता है वह तोड़ फोड मस्ती और हंगामा किया करता है। यदि मनुष्य बेकार रहता तो बड़ी खराबी में व्यस्त रहता।

प्रकरण - ३०

सारे मनुष्य एक समान चेहरे वाले क्यों नहीं होते।

आप ने फरमाया सारे मनुष्य एक समान चेहरे वाले क्यों नहीं दिखाई देते जैसे दुसरे जानवर जैसे हिरन आदि एक समान दिखाई देते है?

इसका कारण यह है कि यदि सारे मनुष्य एक समान दिखाई देते और कोई पहचाना न जा सके तो बड़ी समस्या पैदा हो जायगी। दो व्यक्तियों के दो बेटे

मिल जाएँ तो पता नहीं चल सकेगा कि कौनसा बेटा किसका है।

इसी प्रकार सज़ा देनी हो या इनाम देना हो तो एक के बजाय दुसरे को सज़ा या इनाम दे दिया जायगा।

तो ऐसी सूक्ष्मता से इतनी उत्तम विशेषता किसने एकत्रित की? निस्संदेह ऐसी सूक्ष्मता तथा युक्ति का मन में ख़याल भी नहीं आता। सचमुच ऐसी बारीकी उसीने एकत्रित की है जिसकी रहमत सभी पर फैली हुई है।

क्या नेचर या प्रकृति में ऐसी समझ है कि ऐसी कोमल समस्याओं को समझे और उनका ऐसा सुंदर समाधान प्रस्तुत करे ? हर वस्तु की रचना से पहले उसकी आवश्यकताओं से अवगत हो और समय से पहले उसकी व्यवस्था कर दे ? हरगिज़ नहीं। उसे क्या पता? ऐसे विचार से भी तौबा करो।

ऐ मुफज्ज़ल, यदि तुम किसी दीवार मे एक सुंदर चित्र बना हुआ देखो और कोई तुमसे कहे कि यह चित्र अपने आप स्वयं बन गया है, इसे किसी ने

बनाया नहीं है। तो क्या तुम उसकी बात को सच मान लोगे? नहीं कदापि नहीं मानोगे। बल्कि तुम उसकी ऐसी बात सुनकर हंसोगे और कहोगे कि ऐसा नहीं हो सकता।

जब हम एक निर्जीव चित्र (रंग या स्याही के बिना) स्वयं बन जाय यह नहीं मान सकते तो फिर मनुष्य जो जीता जागता, बोलता चलता, (बाह्य और आतंरिक शक्तियों का स्वामी) है उसे खुद ब खुद बना हुआ कैसे मान सकते हैं?

जीवित प्राणी (मनुष्य, प्राणी, पशु पक्षी आदि) खाते हैं पीते हैं और उनके अवयव बढते जाते हैं। किन्तु एक निश्चित सीमा तक बढ़ने के पश्चात आगे क्यों नहीं बढते? जबकि उन्हें खाना पानी यथावत मिलता रहता हैं। क्या इसमें कोई हिकमत छिपी नहीं है? बेशक इसमें हिकमत छिपी है। यदि उनके शरीर के अवयव हमेंशा बढते ही रहते तो उनकी लम्बाई इतनी अधिक बढ़ जाती कि जिससे विभिन्न समस्याएँ खडी हो जाती। उस हिकमत वाले महान

अल्लाह ने हर चीज़ अपनी हिकमत और मस्लेहत से पैदा की है।

उसने मनुष्य को जितनी आवश्यकता थी उतनी ही तकलीफ दी है। यदि बिलकुल ही तकलीफ न देता तो उसकी दी हुई नेअमतों की कद्र न होती। उसी प्रकार शरीर में दर्द, बीमारी आदि न देता तो लोग बुरे कामों से न बचते। और अल्लाह के आगे झुकते भी नहीं। अन्य लोगों से सम्मान जनक व्यवहार भी न करते। क्या तुमने नहीं देखा कि जब मनुष्य दर्द या तकलीफ में

होता है तो अल्लाह के आगे कैसे गिडगिडा कर दुआ मांगता है और सदका और खैरात करता है।

मनुष्य के शरीर को जब चोट लगती है तो उसे दर्द होता है। इसमें भी मस्लेहत है। कोई लुच्चा या बदमाश व्यक्ति अपराध करे तो न्यायाधीश उसे सज़ा दे सकता है। यदि किसी मनुष्य को दर्द न हो तो उसे सज़ा कैसे दी जा सकेगी? उसी प्रकार छोट बच्चे ज्ञान हुनर आदि की शिक्षा कैसे ग्रहण करते?

सेवक अपने स्वामी की आज्ञा का पालन कैसे करते?

अल्लाह ने जीवित प्राणियों में नर व मादा दोनों पैदा किये हैं। यदि केवन नर या मादा पैदा करता तो वंश वृद्धि न हो पाती और सभी लोग एक संक्षिप्त अवधि में नष्ट हो जाते। इसी कारण नर व मादा दोनों पैदा होते हैं। मनुष्य जब वयस्क होता है तो उसके दाढ़ी उगती है किन्तु स्त्री को दाढ़ी नहीं उगती। इसका क्या कारण है? और इसमें क्या मस्लेहत है? तो इस विषय में जानना

चाहिए कि ईश्वर ने मनुष्य को सत्तावान तथा स्त्री को ताबेदार बनाया है। वह उसकी जीवन संगीनी है। इस कारण मनुष्य को दाढ़ी प्रदान की कि उसका रौब तथा प्रभाव पड़े। स्त्री को दाढ़ी नहीं दी ताकि उसका चेहरा सुंदर तथा प्रिय रहे। (ताकि पुरष उसे पसंद करे) देखा तुमने, उस मालिक की रचना कितनी हिकमत से परिपूर्ण है। उसमें कोई त्रुटि दिखाई देती है? हरगिज़ नहीं। जिस वस्तु की जितनी आवश्यकता थी उसे उतनी ही बनाई या

प्रदान की। जिसे आवश्यकता न थी उसे वह वस्तु न दी। जैसे उपरोक्त उदाहरण में पुरुष को दाढ़ी की आवश्यकता थी इसलिए उसे दी, स्त्री को उसकी आवश्यकता न थी इसलिए उसे न दी।

मुफज्ज़ल कहते हैं कि यहाँ तक बात हुई थी कि ज़ोहर की नमाज़ का समय हो गया। इमाम नमाज़ पढ़ने के लिए उठ गए। मुझसे कहा कल सुबह इंशाअल्लाह मेरे पास आना। मै हज़रत के पास से ऐसी ईश्वरीय ज्ञान की बातें सुन कर बहुत खुश खुश लौटा।

प्रकरण - ३१

दूसरी बैठक में इमाम (अ.स.) की फरमाई हुईं बातें

मुफज्ज़ल कहते हैं कि जब सुबह हुई मैं अपने इमाम की सेवा में हाज़िर हुआ।

आप ने फरमाया - सारी स्तुति और प्रशंसा उसी अल्लाह के लिए है जो काल को गतिशील रखने वाला है। संसार के क्रम को एक श्रेणी के बाद दूसरी श्रेणी में तथा एक जगत के बाद दुसरे जगत (मरणोपरांत जीवन) को बनाने

वाला है ताकि उसके द्वारा सज्जनों को उनके सद्कर्म का तथा दुर्जनों को उनके कुकर्मों का प्रतिफल दे। क्योंकि वह अल्लाह आदिल (न्यायी) है। मनुष्यों पर ज़रा भी अत्याचार नहीं करता। अपितु मनुष्य खुद अपने ऊपर अत्याचार करता है। इस विषय में उस महान अल्लाह ने कुरआन में फरमाया है कि मैं किसी पर भी रत्ती बराबर ज़ुल्म नहीं करता किन्तु मनुष्य खुद अपने आप पर ज़ुल्म करता है। और इस विषय में अल्लाह ने फरमाया है कि जो कोई ज़र्रा बराबर भी

बुरा कर्म करेगा तो वह उसका प्रतिफल पाएगा।

उसी प्रकार उसकी किताब (कुरआन) में अन्य आयतें भी हैं जिनमें तमाम चीज़ों का विस्तार से वर्णन किया गया है। “उसमे सामने से या पीछे से बातिल प्रवेश नहीं कर सकता।” वह हकीम और स्तुति किये हुए की भेजी हुई किताब है। इसीलिए सय्यदे आलम हज़रत मुहम्मद स.अ.व. ने फरमाया है कि तुम्हारे कर्म तुम्हें लौटाए जाएंगे। (अर्थात तुम्हारे कर्मों से ईश्वर को कोई

नफा या नुक्सान नहीं है, उसका नफ़ा या नुक्सान तुम्हें ही मिलेगा।)

फिर इमाम अ.स. थोड़ी देर सिर झुकाकर बैठे रहे। फिर फरमाया ऐ मुफज़्ज़ल, यह मानव जाति दुःखी तथा मार्ग से भटकी हुई है। अंधी है दीवानी है। अपनी टेढ़ी चाल चलती है। ये लोग अपने शैतान और गुमराह करने वालों का अनुकरण करते हैं। आँखें होने के बावजूद अंधे हैं। ज़बान होने के बावजूद गूंगे हैं। कुछ समझते नहीं। कान होने के बावजूद बहरे हैं। कुछ सुनते ही नहीं।

अपनी बुरी स्थिति से खुश हैं। वे समझते हैं कि वे हिदायत पाए हुए हैं जबकि वे बुद्धिमत्ता के स्तर से विमुख गन्दे और अपवित्र लोगों का चारा चर रहे हैं। (अर्थात अज्ञानी अधर्मी लोग जैसे घुमाए वैसे घूम रहे हैं और कहते हैं कि अल्लाह है ही नहीं और सारी वस्तुएँ अपने आप बन गईं) जैसे वे अचानक आने वाली मौत से निर्भय है। बदला मिलने वाला ही नहीं है।

अफ़सोस !! कितने बदबख्त हैं। उनकी मुसीबत कितनी लंबी है। और वे

कितनी सख्त सज़ा भुगतेंगे। जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त को किसी प्रकार का लाभ नहीं पहुँचा पाएगा। उस दिन सिवा उन लोगों के जिन पर अल्लाह रहम करे, किसी की मदद नहीं की जायगी।

मुफज्ज़ल यह सुन कर रोने लगे। आपने फरमाया तू मत रो। क्योंकि तूने सत्य को स्वीकार कर लिया है इसलिए गुमराह होने से बच गया कि तूने मारेफत हासिल कर ली है।

प्रकरण - ३२

प्राणियों के विषय में

आपने फरमाया अब मैं तुम्हें प्राणियों के विषय में जानकारी देता हूँ। जिस तरह तुम अन्य विषयों से अवगत हुए हो प्राणियों के विषय में भी अवगत हों।

प्राणियों के सर्जन पर विचार करो कि उन्हें पत्थर के समान कठोर इसलिए नहीं बनाया गया कि उनके शरीर मुड़ सकें। यदि ऐसा न किया जाता तो उनके शरीर तथा शरीर के अंग मुड नहीं पाते

और वे काम नहीं कर पाते। उन्हें एकदम कोमल तथा पोचा भी नहीं बनाया गया। यदि उन्हें एकदम नर्म और पोचा बनाया जाता तो वे खड़े भी नहीं हो पाते और बोज भी नहीं उठा पाते। इस कारण उन्हें मध्यम दर्ज़े का बनाया गया है। उनमें मांस रखा तथा उन्हें हड्डियों से मज़बूत किया गया। पुट्ठे रखे गए, हड्डियों में जोड़ रखे गए ताकि वे मुड सकें। सारी वस्तुओं के ऊपर चमड़ा पहनाया गया ताकि उनके शरीर ढंके रह सकें।

लोग जब लकड़ियों का पुतला बनाते हैं उनपर सूईं धागे से कपडे सी कर पिन्हाते हैं। फिर पुतले को सजा कर रंग कर खड़ा रखते हैं तो क्या कोई कहता है कि यह पुतला खुद ब खुद बन गया। यदि कोई ऐसा कहे तो क्या लोग स्वीकार करेंगे? जबकि उनमें हिलने डुलने, चलने फिरने, बोलने आदि की शक्ति नहीं होती। ऐसी निर्जीव वस्तु को भी कोई यह स्वीकार करने को तय्यार नहीं है कि यह खुद ब खुद बनी है।

तो फिर यह हड्डी, चमड़ा, मांस से बने प्राणी कि जिनमें प्राण है, शक्ति है। वे चलते हैं फिरते हैं उन्हें कैसे कहते हो कि ये खुद ब खुद बन गए जबकि एक निर्जीव पुतला खुद ब खुद नहीं बन सकता। तो ये प्राणी तो खुद ब खुद बन ही नहीं सकते।

प्राणियों को आँख कान आदि इसलिए दिए गए हैं ताकि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं जैसे सफर, खेती, आदि के कार्य में उनका उपयोग कर सके। वे प्राणी भी अपना कार्य कर सके। यदि

आँख कान न दिए जाते तो मनुष्य उनसे अपने कार्य नहीं करा पाता।

मनुष्यों के समान गहरी समझ शक्ति उन्हें प्रदान नहीं की गई है। इसमें भी मालिक की विशेष मस्लेहत है। यदि अन्य प्राणियों में मनुष्य के समान गहरी बुद्धि होती तो वे मनुष्यों को आदेशों का पालन न करते तथा मनुष्यों के काम न आते। अक्ल न होने के कारण वे मनुष्यों के ताबेदार होते हैं मनुष्यों का भार उठाते हैं।

इस मामले में यदि कोई ऐसा सोचे कि गुलामों को अक्लल समझ आदि सभी कुछ है इसके बावजूद वे दूसरों की ताबेदारी करते हैं, बोझ उठाते हैं, तो यदि प्राणियों में भी अक्ल होती तो वे भी गुलामों के समान काम करते, इसमें क्या हर्ज था?

तो इसका उत्तर यह है कि गुलाम अधिकांशतः कोई खुशी से काम नहीं करते। इसके अतिरिक्त किसी के उकसाने से बहक जाते हैं और काम नहीं करते, बगावत करते हैं। यदि जानवरों

को बुद्धि होती तो वे भी ऐसा ही करते। और देखो एक प्राणी दस मनुष्यों जितना कार्य कर देता है जिससे मनुष्यों को दूसरा कार्य करने की फुर्सत मिलती है और अधिक कष्ट उठाना नहीं पड़ता। सारांश यह कि पशुओं को बुद्धि तथा समझ रहित पैदा किया ताकि वे मनुष्यों के सहायक हों और भारी बोझ उठाने आदि के काम आएं।

अब प्राणियों की रचना अलग अलग प्रकार से की है। इसमें भी उसकी मस्लेहत समाई हुई है।मनुष्य को

चुनना, बीनना, बुनना, सीना, बनाना आदि कार्य करने पड़ते हैं इसलिए उनकी हथेली चौड़ी बना कर उंगलियां जोड़ वाली बनाई गई ताकि वह वस्तुएँ पकड़ सके। मांसाहारी पशुओं का भोजन मांस होता है अतः उनकी बनावट उनके अनुकूल की गई। उनके दांत मज़बूत, पंजे, पंजे में लंबे नाखून, चौड़ा मुंह, हथेली मुड सके ऐसी बनाई गई। जिससे वह शिकार को पकड़ सके। उनसे सीने बुनने का काम नहीं हो सकता और उसकी उनको ज़रूरत भी नहीं है।

शाकाहारी घांस पत्ती खाने वाले पशुओं को नाखून और पंजे नहीं दिए गए। उन्हें खुर और मोटे पैर दिए गए क्योंकि उन्हें शिकार की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें ऐसा बनाया गया कि वे ज़मीन पर ठीक से चल सकें और उन्हें कष्ट न हों।

जो पक्षी शिकार कर के खाते हैं उनके लिए नाखून वाले पंजे बनाए गए। जो प्राणी घांस पत्ती आदि खाते हैं उन्हें नाखून वाले पंजे दिए जाते तो वे निरर्थक होते। शिकारी जानवरों को खुर

दिए जाते तो वे निरर्थक तो होते ही किन्तु वे जानवर उनके कारण शिकार भी नहीं कर पाते। हर प्रकार के प्राणियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार हाथ पैर मिले हैं जिससे वे अपनी जिंदगी आसानी से गुज़ार सकें।

मनुष्य के बच्चों और प्राणियों के बच्चों में यह अंतर रखा गया है कि प्राणियों के बच्चे जन्म पाते ही चलने लगते हैं। यदि वे न चलते तो उनको कौन उठाता? वे अपनी माँ के पीछे चलते हैं। प्राणियों को इतनी समझ या

ऐसे अवयव नहीं प्रदान किये गए है कि वे अपने बच्चों को उठाएँ। उसीप्रकार पक्षियों के बच्चे तो अण्डों में से निकलते ही खाने पीने, चलने फिरने लगते हैं।

पक्षियों का विवरण यह है कि कई पक्षियों के बच्चे मज़बूत होते हैं। अंडे में से बाहर निकलते ही खाने पीने, चलने फिरने लगते हैं किन्तु कई पक्षियों के बच्चे अशक्त होते हैं अंडे में से बाहर निकल कर तुरंत चल फिर नहीं सकते और अत्यंत कोमल होते हैं। इसलिए

उनके माता पिता के ह्रदय में ऐसा प्रेम डाला है कि वे भोजन ढूँढ कर लाते हैं और उनके मुंह में डाल कर उन्हें खिलाते हैं।

कई पक्षियों के बहुत सारे बच्चे होते हैं जैसे मुर्गी। और कई प्रकार के पक्षियों को दो ही बच्चे होते हैं जैसे कबूतर। मुर्गी को दाने ला कर खिलाना नहीं पड़ता। जैसे ही बच्चे अण्डों में से बाहर निकलते हैं तुरंत चलने फिरने और खाने पीने लगते हैं। इसी कारण उसे अधिक बच्चे होने पर भी तकलीफ नहीं

होती। कबूतर के बच्चों को एक अवधि तक भोजन ला कर खिलाना पड़ता है इस कारण दो ही बच्चे होते हैं। यदि अधिक बच्चे होते तो सबको कहाँ से ला कर खिलाते? इस लिए उस महान हकीम व सर्वज्ञ अल्लाह ने सभी को उनकी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ दीं।

प्राणियों के चार पैर बनाए। यदि दो होते तो उन्हें चलने में कष्ट होता। वे चल ही नहीं पाते। चलते समय वे एक ओर के दोनों पैर साथ नहीं उठाते,

बल्कि बायाँ दायाँ पैर उठाते हैं। यदि एक ओर के दोनों पैर उठाते तो गिर पड़ते।

जिसे जो कार्य सौंपा गया है उसे वह कर रहा है। यदि गधे पर भार लाद दिया जाय तो वह उठा कर चल पड़ता है। घोड़े पर सवारी की जाती है तो वह सवार को ले कर चल पड़ता है। ऊँट इतना काम करता है कि कई सारे लोग मिल कर करें तब ही हो सकेगा। यदि ऊँट मनुष्य के काबू में न होता तो यह कैसे सम्भव होता? किन्तु उसमें इतनी

नम्रता है कि किसी बच्चे के हाथ में भी उसकी रस्सी थमा दो तो भी वह चलता है। बैल कैसी अपने मालिक की आज्ञा का पालन करता है। जैसे ही उसके काँधे पर हल रखा जाता है वह खेत में चलने लगता है।

भेड़ बकरियां संख्या में अधिक रहने के बावजूद चराने वाले के आधीन रहती हैं। यदि एक एक अलग अलग बिखर जायं तो उन्हें कैसे चराया जाय? इसी प्रकार सभी प्राणी मनुष्य का आज्ञा पालन करते हैं; अपनी हैसियत के

अनुसार कार्य कर देते हैं। वह कैसे? यह इसलिए कि उन्हें बुद्धि तथा पूर्ण समझशक्ति नहीं दी गई यदि मनुष्य के समान बुद्धि दी जाती तो वे कभी मनुष्य के आधीन नहीं रहते और न उसका काम करते। पकड़ने जाएँ तो भाग जाते, हठ करते आदि।

इसी प्रकार हिंसक प्राणी जैसे सिंह, चीता, भालू में बुद्धि होती तो सब मिल कर मनुष्य पर हमला कर देते और उनके शिकार तक न पहुँचने देते और मनुष्य उनका सामना न कर पाता।

किन्तु देखो इतने शक्तिशाली होने के बावजूद उनमें मनुष्य के प्रति भय है कि वे जंगलों में छिपते फिरते हैं। अपना भोजन ढूँढने दिन में नहीं निकलते बल्कि रात में निकलते हैं। यदि इसप्रकार उन्हें डरपोक न बनाया जाता तो वे मनुष्यों की बस्तियों में आकर मनुष्यों को बहुत परेशान करते। लोगों के घरों में घुस कर उन्हें तकलीफ देते।

सभी प्राणियों में विशेषकर कुत्तों में एक विशेषता रखी गई है कि वह अपने मालिक पर बहुत मेहरबान रहता

है, उसकी मदद और उसकी रक्षा करता है। उसके घर की रक्षा के लिए रात के समय घर के चारों ओर घूमता रहता है और चौकीदारी करता है। यदि चोर आजाएं तो उनपर हमला करता है। अपने मालिक की जान, माल और बच्चों की रक्षा के लिए इतनी चिंता तथा प्रयत्न करता है कि अपनी जान भी उनपर न्यौछावर कर देता है। बहुत मुहब्बत रखता है। उनके साथ साथ भूख और प्यास की तकलीफ भी सहन करता है।

तो कुत्तों में ऐसे गुण क्यों रखे गए? इसलिए कि वे मनुष्यों की रक्षा करें। कुत्तों के दांत कड़े, पंजे मज़बूत और आवाज़ डरावनी इसीलिए रखी गई कि चोर इनसे डरें और जो चीज़ चुराना चाहें वह न चुरा सकें।

चौपाये प्राणियों के विषय में विचार करो कि उनके चेहरे कैसे बनाए गए हैं। उनकी आँखें सामने की ओर रखी गई हैं ताकि चलते समय उन्हें सामने की चीज़ें दिखाई देती रहें। उनके मुंह नीचे की ओर से चीरे हुए हैं ताकि भूमि पर से

चारा उठा सकें। यदि मनुष्य के समान मुंह बनाए जाते तो वे ज़मीन पर से किसी चीज़ को उठाकर खा न पाते।

मनुष्य को हाथ भी दिए गए हैं इसलिए उनके मुंह भिन्न प्रकार से बनाए गए हैं कि भोजन हाथ से उठा कर मुंह में रखें। और मनुष्य के लिए यह विशेषता है।

प्राणियों को बड़े बड़े होंठ इसलिए दिए गए हैं कि वे दूर की चीज़ें उठा सकें। उन्हें दुम दी गई इसमें भी कई मस्लेहत छिपी है। एक तो यह कि इससे

उनके दोनों गुप्तांग छिपे रहते हैं और दुसरे यह कि वे इससे अपने शरीर पर बैठने वाली मक्खियों आदि को उड़ा सकते हैं। इसके अतिरिक्त दोनों ओर दुम हिलाते रहने से उन्हें एक प्रकार का आराम मिलता है। इसके अलावा भी अन्य लाभ जैसे कीचड़ आदि में फंसने पर उन्हें पूंछ के द्‌वारा निकाला जा सकता है।

प्राणियों की पीठ गोल इसलिए बनाई गई है कि उसपर मनुष्य बैठ सके। इसीप्रकार उनमें मादाओं के

गुप्तांग पीछे की ओर बनाए गए हैं। इसमें भी विशेष मस्लेहत है। समागम की सुविधा के विवरण की ओर ध्यान देने से समझ में आजाते हैं इसलिए हम उसका अनुवाद नहीं करते।

हाथी की सूंठ के विषय में विचार करो और देखो कि उसमें कितनी बारीक हिकमत रखी गई है। सूंड के द्वारा वह पानी और भोजन लेता है। वह भोजन सूंड के द्वारा उठा कर मुंह में रखता है। सोचो यदि सूंड न होती तो हाथी कोई भी चीज़ ज़मीन पर से उठा न पाता।

दुसरे प्राणी के समान हाथी की गर्दन लंबी नहीं है। इस कारण उसे सूंड किसने प्रदान की? स्पष्ट है उसी ने जो अपने सर्जन पर अत्यंत दयालू है। तो ऐसे संपूर्ण हिकमत वाले के बनाए बगैर ऐसी चीज़ें किसी तरह बन सकती है? और ये नास्तिक लोग कहते हैं कि अपने आप बन गया।

यदि हाथी के विषय में कोई ये पूछे कि दुसरे प्राणियों के समान उसकी गर्दन लंबी क्यों नहीं बनाई गई तो इसका उत्तर यह है कि उसका सिर बहुत बड़ा

और वज़नदार होता है। इसके अतिरिक्त उसके कान भी बहुत बड़े और वज़नदार होते हैं। यदि इतने वज़नी सिर और कान को लंबी गर्दन के साथ जोड़ा जाता तो इतने अधिक वज़न के कारण उसकी गर्दन पर बहुत बोझ पड़ता और उसे बहुत तकलीफ होती। इसलिए उसके धड़ के साथ सर और कान को जोड़ दिया गया और उसे एक सूंड प्रदान की गई ताकि उसे सारे कामों में आसानी हो। फिर हथनी के गुप्तांग अन्य प्राणियों की तुलना में भिन्न स्थान पर बनाए गए हैं

और उसमें यह विशेषता रखी गई है कि आवश्यकता के समय उभर सकें।

जिराफ एक विचित्र बनावट का प्राणी है। उसके विषय में विचार करो किस प्रकार भिन्न भिन्न अंग बनाए गए है। सिर घोड़े के समान, गर्दन ऊँट के समान, पैरों के खुर गाय के समान, चमड़ा चीते के समान, ऐसे भिन्न भिन्न प्राणियों के अंगों वाले प्राणी को उस संपूर्ण सामर्थ्यवान अल्लाह ने अपनी कलात्मकता से बनाया है।

कई नासमझ अज्ञानी जिन्हें अल्लाह का संज्ञान नहीं है वे ऐसा अनुमान करते हैं कि एक मादा के किसी दुसरे किस्म के नर का मिलाप होने से ऐसा बच्चा पैदा होता है। वे कहते हैं जब भिन्न भिन्न प्रकार के प्राणी घाट पर पानी पीने आते हैं तब भिन्न भिन्न प्रकार के नर भिन्न भिन्न प्रकार की मादाओं से मिलते हैं तब ऐसा होता है। लेकिन यह बात सरासर झूठ और गलत है। भिन्न भिन्न प्रकार के नर और मादा आपस में मिलते ही नहीं। जैसे

घोडा गाय के साथ और ऊँट भैंस के साथ। ऐसा कभी नहीं होता।

हाँ जो प्राणी आपस में मिलते हैं जैसे घोडा गधी के साथ मिलता है तो खच्चर पैदा होता है आदि।

यदि हम मान भी लें कि चार भिन्न प्रकार के प्राणी आपस में समागम कर लिए हैं तो जो बच्चा पैदा होगा वह भिन्न प्रकार का होगा। ऐसा कभी नहीं होगा कि पैर घोड़े के, माथा ऊँट का, चमड़ा चीते का आदि। जिसप्रकार खच्चर के समस्त अंग घोड़े

और गधे दोनों से मिलते जुलते होते हैं यहाँ तक कि उसकी आवाज़ भी दोनों से मिलती जुलती होती है।

सारांश यह कि जिराफ को उस सक्षम अल्लाह ने अपनी क्षमता से इस विचित्र तथा अद्भूत कलात्मकता से बनाया है इसमें उसकी काफी मस्लेहत समाई हुई है कि बंदे जान लें कि अल्लाह किसी भी प्रकार से अशक्त नहीं है, वह जैसा चाहे वैसा पैदा कर सकता है।

यह भी ध्यान रहे कि वह मालिक ऐसा सामर्थ्यवान है कि वह जिस प्राणी को चाहे एक ही प्रकार के अंग प्रदान करे और जिसे चाहे भिन्न भिन्न प्रकार के अंग प्रदान करे। लोग जान लें कि अल्लाह किसी भी प्रकार या किसी भी कलात्मकता में अशक्त नहीं है।

अब जिराफ की यह बात कि उसकी गर्दन इतनी लंबी क्यों है? तो वह इसलिए है कि उसके जन्म और उसके चरने के स्थान के वृक्ष लंबे और

ऊंचे होते हैं। यदि गर्दन छोटी होती तो वह चारा न चर पाता।

अब बंदरों के विषय में जानों कि अधिकाँश रूप से उसके अंग मनुष्य से मिलते जुलते हैं। उसका सिर, काँधे, छाती तथा गुप्तांग मनुष्य के समान है। इसके अतिरिक्त उसमें थोड़ी समझ शक्ति भी प्रदान की गई है ताकि वह अपने पालने वाले के इशारे समझ सके। और वह मनुष्यों के कार्य देख कर उसकी नक़ल करता है।

मनुष्यों को उनसे यह नसीहत लेनी चाहिए कि मनुष्य भी उन्हीं के समान है। यदि मनुष्यों को बुद्धि और वाचा न प्रदान की जाती तो वह भी एक जानवर रहता। किन्तु ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि और वाचा प्रदान कर के श्रेष्ठता प्रदान की। उसने बंदरों के शरीर में थोड़ी बहुत वृद्धि की ताकि वे बिलकुल मनुष्य के समान न दिखें। जैसे लंबा मुंह, पूंछ और शरीर पर घने बालों को वस्त्रों के समान बनाया।

ऐ मुफज्ज़ल, इन प्राणियों पर अल्लाह की कृपा और मेहेरबानी देखो कि उनके शरीर पर वस्त्रों के समान विभिन्न प्रकार के बाल कैसे उगाए गए हैं ताकि उनका ठण्ड आदि से बचाव हो सके। पैरों में तलुओं के बजाय खुर दिए हैं। उसीप्रकार ऊँट तथा हाथी को गादी जैसी वस्तु प्रदान की गई है ताकि पैर घिसने से बचे रहें।

अल्लाह की कैसी हिकमत है कि उन्हें हाथ आदि नहीं दिए। उसीप्रकार उन्हें समझ भी नहीं प्रदान की कि वे

कपडे आदि सी कर पहनें। इसके बदले उनके शरीर में ऐसी चीज़ बना दी कि उन्हें बार बार कपडे पहनने और बदलने की आवश्यकता ही न रहे। इसीलिए ये वस्तुएँ उनके शरीर के साथ जोड़ दी ताकि मृत्यु पर्यंत साथ रहें।

किन्तु मनुष्य के लिए ऐसी चीज़ें नहीं बनाई। इसके बदले बुनना, सीना, पहनना, बदलना आदि की मेहनत इनके पीछे लगा दी। इसमें भी उसकी बड़ी मस्लेहत है कि मनुष्य बेकार न रह सके और इन कामों में व्यस्त रहे।

इसके अतिरिक्त यह सुविधा प्रदान की कि जब चाहे पहने जब चाहे उतार दे। इसके अतिरिक्त अपनी पसंद के शोभायमान वस्त्र बनाए जिससे उसे आनंद मिले। इतना ही नहीं इसे बनाने, बेचने, खरीदने के कारण व्यापार भी चले। इसे विभिन्न कलात्मकता के साथ बनाए ताकि वह अच्छी तरह बिके। इसी के द्‌वारा मनुष्यों के लिए व्यापार व्यवसाय बनाया कि इस प्रकार मनुष्य अपना तथा अपने बालबच्चों का गुज़ारा कर सके।

ऐ मुफज़्ज़ल, इन प्राणियों में अल्लाह ने ऐसी विशेषता भी रखी है कि अधिकांशतः वे खुद को गड्ढे आदि में छिपा देते हैं और वहीं मृत्यु को आत्मसात करते हैं। यदि ऐसा न होता तो अनगिनत जंगली जानवर जैसे हिरन, नीलगाय, चीता उसीप्रकार जंगली पक्षी जैसे कव्वे आदि जगह जगह मरते तो बड़े बड़े ढेर बन जाते, और दुर्गन्ध और बदबू चारों ओर फैल जाती, बीमारियाँ फ़ैल जाती और लोग तंग आ जाते।

तुम देखो तुम्हें कभी कभार ही जंगली पशु या पक्षी का शव दिखाई देता होगा जिसे किसी ने फाड़ खाया होगा या किसी शिकारी की चोट से घिसटता हुआ मरा होगा। बाक़ी नहीं दिखाई देते।

दफन करने की क्रिया मनुष्यों ने प्राणियों ही से सीखी है। इसके विषय में अल्लाह ने कुरआन शरीफ में उल्लेख किया है कि जब काबील ने हाबील की हत्या कर दी तब उसने देखा कि दो कव्वे लड़ते हुए आए। एक ने दुसरे को मार डाला। फिर उस कव्वे ने ज़मीन में

गढा खोद कर मरे कव्वे को दफन कर दिया। यह देख कर काबील ने भी गढा खोद कर हाबील के शव को दफन कर दिया।

अल्लाह ने प्राणियों को ऐसी समझ शक्ति प्रदान की है कि जिन कारणों से वे बीमार पड़े और उनकी तबियत खराब हो जाय ऐसे कारणों से बचने की समझशक्ति प्रदान की है। इसके विषय में एक उदहारण सुनों।

गव्ज़न (बारह सिंघा) नामक प्राणी जब गलती से सांप खा जाता है तब उसे

बहुत ज़ोरों की प्यास लगती है। और वह सरोवर या तालाब के किनारे आ खड़ा हो जाता है। अत्यधिक प्यास की तकलीफ से वह चीखता चिल्लाता रहता है किन्तु पानी पास रहने के बावजूद वह पानी नहीं पीता। यदि वह पानी पी ले तो उसके सारे शरीर में ज़हर फ़ैल जाएगा। मौत के डर से वह पानी नहीं पीता। देखो नुक्सान से बचने के लिए अल्लाह ने उसे कैसी समझ शक्ति और धैर्य प्रदान किया है कि इतनी अधिक प्यास

में भी और पानी के नज़दीक होने के बावजूद वह पानी नहीं पीता।

लोमड़ी को देखो, जब उसे शिकार नहीं मिलता तो खुद मरने का ढोंग रचाती है और पेट फुला कर ज़मीन पर पड़ी रहती है। जब पक्षी उसे मरा समझ कर मांस खाने आते हैं तो झपट कर खा जाती है।

डाल्फिन नामक प्राणी दरिया में रहता है उसका भोजन पक्षी है। वह ऐसी युक्ति करता है कि एक मछली को मार कर छोड़ देता है। वह उस मरी हुई

मछली के नीचे तैरता रहता है और पानी हिलाता रहता है ताकि पक्षी उसे न देख पाए। जब कोई पक्षी उस मरी मछली को खाने नज़दीक आता है तो वह खुद झपट कर उस पक्षी को पकड़ कर खा जाता है।

ऐसी युक्तियाँ, ऐसी तदबीरें इन प्राणियों को किसने बताईं? उसीने जिसने समस्त प्राणियों की ज़िम्मेदारी ली है। उसने इन प्राणियों को दौड़कर शिकार करने की शक्ति नहीं दी अतः ऐसी युक्तियाँ सिखा दी।

ऐ मुफज्ज़ल, प्राणियों को दी गई समझशक्ति पर विचार करो, उस संपूर्ण हिकमत वाले ईश्वर ने इन समझशक्तियों को उनके स्वभाव में ही समाहित कर दिया है। उसने अपनी रचना पर अपने अनुग्रहों की वर्षा की है। किसी को भी अपने अनुग्रह से वंचित नहीं रखा है।

मुफज्ज़ल ने अर्ज की मौला अज्दहा जो बादल क्यों उठा लेता है? यदि ऐसा न होता तो अज्दहा मनुष्यों को बहुत तकलीफ दे इसलिए अल्लाह ने

बादलों को उनपर नियुक्त कर दिया है कि जैसे ही अज्दहा को देखें तुरंत खींच लें। वह अब्दहा जमीन में छिपा रहता है। जब हवा साफ होती है बहार निकलता है।

प्रकरण - ३३

कीड़े मकोड़ों के विषय में

मुफज्ज़ल ने कहा मौला ! आपने प्राणियों की रचना का अद्भूत वर्णन किया, ये शिक्षा ग्रहण करने योग्य है। कृपया कीड़े मकोड़ों के विषय में बयान फरमाईये।

इमाम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया: ऐ मुफज्ज़ल, इन नन्हीं चींटियों को देखो। इनकी आवश्यकता की किसी भी वस्तु का इनमें अभाव नहीं है। इनके लिए जो वस्तुएँ अनुकूल हैं, वे इनके

शरीर में उपलब्ध हैं। बड़े बड़े प्राणियों के शरीर में जो जो वस्तुएँ हैं वे भी इनमें हैं।

चींटियाँ अपना भोजन एकत्रित करने के लिए एकत्रित हो जाती हैं। कई बार एक दाने को कई कई चींटियाँ मिल कर उठाती हैं और बिल में ले जाती है। इस काम में चींटियाँ एक दुसरे की मदद करती हैं। बिल में दाना ले जाने के बाद वे दाने को टुकड़े टुकड़े कर के रख देती है कि कहीं दाना उग न जाय और खाने योग्य न रहे। जब उस दाने तक नमी

पहुँच जाती है या वह भीग जाता है तो चींटियाँ उसे धुप में सुखाने के लिए रख देती है।

चींटियाँ अपने बिल ऊंची जगहों पर या टीलों पर बनाती हैं ताकि उसमें पानी न भरने पाए। ये सभी बातें अल्लाह ने चींटियों के स्वभाव में रख दी है कि वे अपनी सुरक्षा के लिए ऐसा करें। उन्हें मनुष्यों के समान बुद्धि नहीं दी। तो क्या इन चींटियों में ऐसी विशेषताएं अपने आप आगई? नहीं संपूर्ण सामर्थ्यवान अल्लाह ने उन्हें ऐसा बनाया है।

बड़ी मकड़ी को देखो। उनका भोजन मक्खियाँ है। वह अपना भोजन पाने के लिए कैसी युक्ति अपनाती है? जब मक्खियाँ आने वाली होती है तो वह खुद मुर्दा जैसी बन जाती है। मक्खी पास भी आती है तो वह उसे पकड़ने के लिए उतावलापन नहीं दिखाती। ऐसी पड़ी रहती है जैसे उसे कोई खबर ही नहीं। जब मक्खी शान्ति से बैठ जाती है तो वह सावधानी से धीरे धीरे उसके पास पहुँचती है और झपट्टा मार कर उसे पकड़ लेती है। मक्खी को पकड़ने पर

उस पर अपना सारा शरीर फैला देती है ताकि मक्खी छूटने न पाए। जब तक मक्खी का दम नहीं निकल जाता, उसके हाथ पैर ढीले नहीं पड़ जाते, और वह मुर्दे समान नहीं हो जाती तब तक यूं ही दबाए रखती है। फिर धीरे धीरे खाती है।

तो अब बताओ, मकड़ी ने ऐसी योजना और युक्ति कैसे सीखी? क्या अपने आप उसे यह युक्ति सूझी है? हरगिज़ नहीं परंतु महान सर्वज्ञ, शक्तिशाली अल्लाह ने उसके स्वभाव में

यह बात रखी है कि वह अपना भोजन इस युक्ति से प्राप्त करे। बाक़ी जाल बुनने वाली मकड़ियाँ शिकार के लिए पहले अपना जाल बुनती है और खुद छिप कर बैठ जाती है। जब जाल में कोई मक्खी फंस जाती है तो तुरंत पकड़ कर उसे काट लेती है। उसके काटने से मक्खी मर जाती है। फिर उसे वह खाती है।

मनुष्य बुद्धि तथा समझशक्ति से शिकार आदि को पकड़ने के लिए जाल आदि का उपयोग करता है। उन जीव

जंतुओं में बुद्धि नहीं है, किन्तु अपना भोजन प्राप्त करने के लिए उस मालिक ने उनमें ऐसी तदबीरें पैदा कर दी।

विचार करो कि इन अशक्त जीव जंतुओं में कैसी युक्ति रखी गई है कि उनके समान युक्ति और योजना मनुष्य हथियार व साधनों के सिवा नहीं कर पाता। तुम इन छोटे छोटे जीव जंतुओं को बेकार नहीं समझना। इन्हें बनाने में बड़ी कलात्मकता का उपयोग किया गया है। इन जीव जंतुओं से शिक्षा ग्रहण हेतु उदहारण दिये जाते हैं। इन हलकी

वस्तुओं का उदाहरण देने से बड़ी वस्तुओं की कद्र कम नहीं हो जाती। सोने को लोहे से तौला जाता है। लोहे से तौलने से सोने की कीमत कम नहीं होती।

प्रकरण - ३४

पक्षियों का विवरण

ऐ मुफज्ज़ल, पक्षियों के शरीर और उनकी बनावट का अवलोकन करो। उनके लिए धरती और आकाश के बीच उड़ना नियत किया गया है। इस कारण इनके शरीर हलके और शरीर के अंग जुड़े हुए बनाए गए हैं। चार पैरों की बजाय दो पैर, पांच उँगलियों की बजाय चार उंगलियां, पेट और माथे के दो छिद्रों की बजाय एक छिद्र बनाया गया कि उससे काम चले।

उनकी छाती पतली, धारदार और तेज़ बनाई गई है कि उड़ते समय आगे की हवा रुके नहीं बल्कि आसानी से निकल जाय। जैसे नाव के अगले भाग को पतला बनाया जाता है कि पानी को काट सके। पक्षियों के बाज़ू से लेकर दुम तक लंबे लंबे पंख और शक्तिशाली पर इस कारण बनाए गए हैं कि वे उनके शरीर को उठा कर उड़ सकें। पूरे शरीर में पर बनाए गए हैं ताकि उनमें हवा भरने से उन्हें उड़ने में आसानी हो।

उनका भोजन मांस और दाने नियत किये गए हैं इसलिए दांतों की आवश्यकता नहीं रही। भोजन उठाने और चुगने के लिए चोंच दी। मांस आदि को टुकड़े कर खा सकें इसलिए चोंच को कड़ी और धारदार बनाई। चबाए बिना मांस के टुकड़े और दाने निगल लिए जाएँ तो हज़म न हो सकेंगे इसलिए पेट में अत्यधिक गरमी रखी गई कि उससे वे गल कर हज़म हो जाएँ। तुमने देखा कि अंगूर आदि के बीज मनुष्यों के पेट से पूरे निकलते हैं और पक्षियों के पेट

में वे इतने गल जाते हैं कि उनका पता नहीं चलता।

इसके अतिरिक्त पक्षियों को ऐसा बनाया गया है कि वे अंडे दें। दुसरे पशुओं के समान बच्चे देने वाला इसलिए नहीं बनाया कि पेट में बच्चे रहें और बड़े हों तो उससे उड़ने में तकलीफ होती। अण्डों में से बच्चे पैदा होने की रीति ऐसी तय की गई कि अंडे जमा होने पर उन्हें सेने के लिए एक, दो या तीन सप्ताह उनपर बैठे और गरमी दे तब बच्चे अण्डों में से बाहर निकलें।

पक्षी उनके भोजन के लिए खाने की वस्तुएँ बाहर से ला ला कर धीरे धीरे उन्हें खिलाए।

इन पक्षियों को तो बुद्धि नहीं है, फिर उन्हें मनुष्यों के समान बच्चों की आवश्यकता भी नहीं कि वंश चलाए और उनका नाम बाक़ी रखे। उसी प्रकार बच्चे बड़े होने पर बुढापे का सहारा बनेंगे ऐसी भी कोई आशा उनसे होती नहीं है। किन्तु मालिक ने उनमें ऐसी विशेषता रखी है कि बच्चे पैदा होने के बाद जब तक वे खुद से अपना भोजन प्राप्त

करना न सीख लें तब तक उनकी परवरिश करें। तो यह उस मालिक की कितनी मस्लेहत तथा सामर्थ्य है और उन बच्चों पर कितनी कृपा और महेरबानी है।

मुर्गी को देखो। अंडे सेने और बच्चे पैदा करने की कितनी चिंता और उमंग रखती है। जबकि वह अंडे एक स्थान पर जमा नहीं कर सकती, न उसके लिए अंडे देने के लिए कोई व्यक्तिगत स्थान होता है। फिर भी जब उसके अंडे देने की अवधि समाप्त हो कर अंडे सेने

का समय आता है तो शरीर और पंखों को फुलाकर वह एक स्थान पर बैठ जाती है। खाना पीना एकदम कम कर देती है। अपने स्थान से स्वयं हटती नहीं। जबरदस्ती उसे हटाया जाय तो फिर अपने स्थान पर लौट आती है। एक विशेष प्रकार कि कुक कुक की आवाज़ निकालती है। जब अण्डों को एक स्थान पर एकत्रित कर के उसे दिखाया जाता है तो वह उन पर सेने बैठ जाती है। अण्डों में से बच्चे निकलने तक अधिकाँशतः खाना पीना छोड़ कर वहीँ बैठी रहती है।

अत्यधिक आवश्यकता के सिवा वहाँ से उठती नहीं है।

इन कामों में उसे इतनी दिलचस्पी और उत्सुकता क्यों है? भूखी प्यासी रहकर भी वह इन कामों को क्यों करती है? एक संपूर्ण हिकमत वाले संपूर्ण बुद्धिमान अल्लाह ने वंश बढाने और बाकी रखने के लिए उसके स्वभाव में ही यह उत्सुकता और दिलचस्पी रख दी है। यदि यह स्वभावगत न होती तो कौन उसे इन बातों के लिए प्रेरित कर सकता

था। कौन अंडे सेने के लिए उसे मजबूर कर सकता था?

अण्डों के विषय में ज़रा विचार करो कि वे कितनी उत्तमता और कितनी हिकमत से बनाए गए हैं। उसमें जमी हुई ज़र्दी (पीला भाग) और पतली सफेदी होती है। उसके एक हिस्से से उसका शरीर और उसके अंग बनते हैं और दूसरा भाग उसका भोजन होता है। ज़र्दी से बच्चा बनता है तरल सफेदी उससे मिलकर भोजन बनती है। बच्चा जब तक बाहर निकलने योग्य न हो जाय

तब तक मज़बूत छल में सुरक्षित रहता है। बाहर की कोई वस्तु अंदर प्रवेश नहीं कर सकती इस कारण उसके भोजन का प्रबंध अंदर ही कर दिया गया।

पक्षियों के शरीर में बने पोटे और संगदाना के विषय में विचार करो कि इसमें कितनी उत्तमता का प्रयोग किया गया है। संगदाने में भोजन जाने का रास्ता संकरा होता है और पक्षी दानों को जल्दी जल्दी निगल जाते हैं। यदि ये दाने संगदाने में पहुँच जाते तो हज़म न हो पाते। इस कारण इन दानों को जमा

करने के लिए उनके गले के पास एक विशेष थैली (पोटा) बनाई गई है कि जल्दी जल्दी निगला भोजन वहाँ जमा रहे। फिर ये दाने धीरे धीरे संगदाने में पहुँच कर हज़म हो जाते हैं।

पोटे के संबंध में दूसरी हिकमत यह है कि कई पक्षी दाना चुग कर अपने बच्चों के लिए लाते हैं। ये दाना अपने पोटे में जमा करते हैं फिर बच्चों के पास जाकर पोटे से दाने उगल कर बच्चों को खिलाते हैं। यदि पोटे न होते

तो दाने पेट से बाहर निकालना संभव न होता।

मुफज़्ज़ल ने निवेदन किया मौला ! मोअत्तला संप्रदाय के लोगों की मान्यता है कि पक्षी जो रंग बिरंगे होते हैं उन्हें किसी ने योजनाबद्ध तरीके से रंग बिरंगा नहीं बनाया बल्कि वे जिस चीज़ से बनते हैं उसके रंगों के अनुसार कम या ज्यादा रंगों में विविधता आ जाती है।

इमाम अ.स. ने फरमाया ऐसा नहीं है। यह तो महान हिकमत वाले बुद्धिमान ईश्वर ने इन्हें इस कलात्मकता से

बनाया है। देखो एक ओर के पंखों में जितना रंग, जितनी सुंदरता, जितनी कलात्मकता है उतनी ही दूसरी ओर के पंखों में भी है। तो क्या ये खुद ब खुद बन गया? उसे क्या पता था कि उस ओर यह रंग इतने प्रमाण में है इसलिए इसी प्रकार दूसरी ओर भी बनूँ।

फिर आपने फरमाया, पक्षियों के पंखों को देखो कितने महीन, साफ़, मिले हुए, एक समान और सुंदर बने हुए हैं। जैसे कपडा बनाया जाता है कि उसका एक धागा समान अंतर पर मिला

हुआ पास पास होता है। दूसरी विशेषता इसमें यह है कि पंखों को खोलने पर भी वह फट नहीं जाता। जितना खोलना हो उतना खुल सकता है कि उससे हवा को दबा कर वह उड़ सकता है। उसके पंख मुड न जाय इसलिए उसके पंखों के बीच में एक मोटी हड्डी होती है। वह हड्डी सारे पंखों को जोड़े रखती है और उन्हें मुड़ने नहीं देती। फिर उस हड्डी को पोली और हलकी रखा गया कि उसका वज़न न बढ़ जाय।

कई पक्षियों को लंबे पैरों वाला बनाया गया है। ऐसे पक्षी साधारणतः उथले पानी के पास रहते हैं। वे पानी में खड़े रहते हैं और पानी के अंदर की चीज़ें देख सकते हैं। जब वे अपने भोजन योग्य किसी वस्तु को देखते हैं धीरे से वहाँ जा कर उसे पकड़ लेते हैं। यदि उनके पैर लंबे न होते तो वे पानी में खड़े न हो पाते। संपूर्ण सामर्थ्यवान अल्लाह ने उनके पैर लंबे स्तंभ के समान बनाए ताकि वे सरलता से अपना भोजन प्राप्त कर सकें।

पक्षियों की बनावट में उस महान रचनाकार ने अद्‌भूत उत्तमता का प्रदर्शन किया है। हर पक्षी को उसकी आवश्यकता के अनुसार हर विशेषता प्रदान की है। जिन्हें लंबे पैर दिए उन्हें लंबी गर्दन या लंबी चोंच भी प्रदान की ताकि उन्हें अपना भोजन धरती पर से उठाने में दिक्‌कत न हों।

फिर हज़रत ने फरमाया क्या तुम देखते नहीं कि उसकी रचना में जिसे भी देखो उसे योग्य तथा अनुकूल हिकमत के साथ बनाया गया है। अर्थात सारे

संसार में ऐसी कोई चीज़ दिखाई नहीं देती कि उसमें उस अनुपम रचयिता ने अद्भूत कलात्मकता और उत्तम कारीगरी का प्रदर्शन न किया हो जो उसके लिए आवश्यक हो।

उन जड़ी बूटियों को देखो जो ये पक्षी खोज लाते हैं। और वे उन्हें मिल भी जाती है। ये अलग बात है कि ढेरों नहीं मिलती बल्कि थोड़ी थोड़ी भिन्न भिन्न स्थान पर मिलती है। उसके लिए दिन के हिस्से में जहां तहां उसे खोज

कर प्राप्त करते है और उससे अपना गुज़ारा चलाते हैं।

उसी प्रकार दूसरी रचनाओं (मखलुकात) को भी रोज़ी मिलती है। यदि उन्हें रोज़ी न मिल पाती तो उनका गुज़ारा कैसे चलता? यदि जहां वहाँ और अधिकाश बिना मेहनत के रोज़ी मिल जाती तो उसमें कोई भलाई न होती। यदि खाने पीने की वस्तुएँ एक ही स्थान पर ढेरों मिल जाती तो वहीं पड़े रहते और हज़म नहीं होती और वे मर जाते।

उसी प्रकार मनुष्यों में से जिन लोगों को आसानी से तथा अत्यधिक रोज़ी मिल जाती है उन में से कितनों को अहंकार और घमंड आ जाता है और वे झगडा फसाद और गुनाह के कार्य करते हैं।

सारांश यह कि प्राणियों की रोज़ी एक ही स्थान पर मुक़र्रर न होने से वे इधर उधर फिरते रहते हैं इससे उनके शरीर अच्छे रहते हैं।

ऐ मुफज्ज़ल, क्या तुम जानते हो कि जो पक्षी केवल रात में ही बाहर

निकलते हैं उन्हें रोज़ी कैसे मिलती है? मुफज्ज़ल ने अर्ज किया: नहीं मौला मुझे नहीं पता। आप ने फरमाया उनकी रोज़ी के लिए जगत के पालनहार ने छोटे छोटे कीट पतंगे पैदा किए हैं। ये कीट पतंगे धरती और आकाश के बीच बिखरे रहते हैं। इनसे कोई स्थान रिक्त नहीं रहता। इसका सबूत यह है कि रात के समय किसी छत पर दीप जलाओ, तुम देखोगे कि पतंगे तथा अन्य प्रकार के कीट वहाँ एकत्रित हो जाते हैं। और बहुत जल्दी जमा हो जाते हैं। यदि वे दूर

जंगल या मैदान से वहाँ आते तो इतनी जल्दी जमा न हो पाते। इसके अतिरिक्त यहाँ दीप जला है इसकी उन्हें खबर ही न हो पाती। इसका अर्थ यह है कि कीट पतंगे हर स्थान पर फैले होते हैं। रात में निकलने वाले पक्षी उन्हें पकड़ कर खाते हैं।

देखो उस महान अल्लाह ने उनकी रोज़ी किस प्रकार नियत की है? यदि कोई सोचे कि ये कीट पतंगे निरर्थक पैदा किये गए हैं तो यह उसकी

नासमझी है, वे निरर्थक नहीं है वे दूसरों का भोजन है।

तुमने देखा चमगादड़ नामक पक्षी को उसने कितनी आश्चर्यजनक कलात्मकता से पैदा किया है। उसे पशु और पक्षी के बीच का प्राणी बनाया है। उसका शरीर पशुओं से अधिक मेल खाता है। उसके दोनों कान बाहर निकले हुए हैं। उसी प्रकार दांत और बारीक बाल भी है। फिर वह पक्षी के समान अंडे भी नहीं देता बल्कि बच्चे देता है। उन्हें दूध पिलाता है। पेशाब व पाखाना भी करता

है। चलते समय पैरों से चलता है। इसके अतिरिक्त उड़ने के लिए पंख भी उसके पास है। यह रात में बाहर निकलता है और धरती और आकाश के बीच फैले कीट पतंगों को खाता है।

कुछ लोगों का मानना है कि चमगादड़ कुछ भी खाता नहीं है। बल्कि ठंडी हवा ही उसका भोजन है। यह बात नीरी झूठ है। इसके दो कारण है। एक तो वे पेशाब पाखाना करते हैं जो बिना भोजन नहीं होता, दूसरा यह कि अल्लाह ने उसे दांत दिए हैं यदि वह

कुछ नहीं खाता होता तो दांत निरर्थक साबित होते और अल्लाह कोई काम निरर्थक नहीं करता। चमगादड़ के लाभ तो बहुत प्रसिद्ध है। उसकी चरक तो कई दवाओं में काम आती है। इसके अतिरिक्त उसे अद्भूत कलात्मकता से बनाया गया है इससे उस महान अल्लाह का संपूर्ण सामर्थ्य प्रदर्शित होता है।

अल्लाह ने गोखरू (कांटे वाला एक फल) पैदा किया है। वह क्यों पैदा किया है इसका तो किसी को ज्ञान नहीं है किन्तु उसका एक लाभ तो यह है कि

इब्न तामरा (पिया) नामक पक्षी जब भी झाड़ पर अपना घोसला बनाता है तो अपने घोंसले में गोखरू का संग्रह करता है। जब उसके घोंसले की ओर कोई सांप आता है और उसे निगलने के लिए अपन मुंह खोलता है तो यह पक्षी एक गोखरू अपनी चोंच में उठा कर सांप के मुंह में डाल देता है। मुहं में गोखरू पहुँचने पर सांप तड़प तड़प कर मर जाता है।

देखो यह बात मैं तुम्हे न बताता तो तो तुम्हे कैसे पता चलती? इसलिए

इन बातों से नसीहत ग्रहण करो। ऐसी अनगिनत वस्तुएँ हैं जिनके लाभों से मानवता अवगत नहीं है किन्तु उनके लाभों को कभी कभी ही सुना जाता है।

मुफज़्ज़ल, मधु मक्खी को देखो। वे सब मिल कर कैसे शहद बनाती है। उसी प्रकार अपने छत्ते में शहद एकत्रित करने के लिए छह कोनों वाले खाने कैसी कलात्मकता से बनाती है। उसमें भी बहुत बारीकियां हैं। जब तुम उसकी कला को ध्यान से देखोगे तो तुम्हें उसमें

बहुत बारीक और अद्भूत उत्तमता दिखाई देगी।

वे फूलों में से पराग चूस कर मोम तथा शहद बनाती है। ऐसी उत्तम तथा हिकमत वाली चीज़ बनाने की समझ उस महान अल्लाह ने उसे प्रदान की है। इससे उस महान अल्लाह की महानता प्रदर्शित होती है कि मनुष्यों के लिए ऐसी विशिष्ट वस्तु बनाने के लिए उसे नियुक्त किया है। (शहद के लाभों से कोई अनजान नहीं है)

तुम टिड्डों को देखो, यह बहुत ही निर्बल पक्षी है। किन्तु जब झुण्ड बनाकर किसी बस्ती पर हमला करते हैं तो उन्हें हटाने के लिए मनुष्य निर्बल साबित होते हैं। इतना ही नहीं संसार के सम्राटों में से कोई राजा अपनी सेना ले कर उन्हें भगाना चाहे तो भी सफल नहीं हो पाता। तो यह बात क्या उस महान अल्लाह के संपूर्ण सामर्थ्य पर दलील नहीं है कि अपनी सब से निर्बल रचना को सर्वाधिक शक्तिशाली रचना पर भेज कर उन्हें असहाय साबित कर दे।

जब टिड्डों के झुण्ड समुद्र की शक्तिशाली बाद की भाँती आते है तब पहाड़, जंगल, मैदान और शहरों पर इस प्रकार छा जाते हैं कि सूर्य का प्रकाश भी छिप जाता है। ज़रा विचार करो कि इन टिड्डियों को हाथों से बनाया जाता तो कई दशक लग जाते। किन्तु उनको बनाने में अल्लाह का अनन्त सामर्थ्य प्रदर्शित होता है कि अल्लाह के सामर्थ्य के आगे कोई बात असंभव नहीं है बल्कि उसकी शक्ति के

आगे कोई चीज़ शक्तिशाली नहीं दिखाई देती।

तुम मछली को देखो, उसे किस प्रकार पैदा किया गया है। किस प्रकार उसके रहने का स्थान नियत किया गया है। उसे पैर इस कारण नहीं दिए गए है कि उसे चलने की आवश्यकता ही नहीं है। रहने के लिए पानी नियत किया गया इसलिए फेफड़े प्रदान नहीं किये गए। यदि फेफड़े दिए जाते तो वह सांस लेती और पानी भर जाने से तुरंत मर जाती।

पैरों के बदले उसे दो शक्तिशाली पंख प्रदान किये गए। जिसप्रकार नाविक चप्पुओं से पानी पीछे धकेल कर अपनी नाव बढ़ा ले जाता है उसी प्रकार पानी को पीछे धकेल कर वह पानी में जहां चाहे वहाँ जा सकती है। उसके शरीर पर एक पर एक चकत्ते बनाए गए है जो ढाल के समान उसके शरीर की रक्षा करते हैं। उसकी आँख में रौशनी कम है और पानी में देखने में असुविधा होती है इसलिए उसे सूंघने की शक्ति अधिक प्रमाण में दी गई है ताकि दूर से ही

भोजन की गंध मिलने से उस दिशा में प्रयाण करे।

मुंह से दोनों ओर कान तक रास्ता रखा गया है। वह मुंह से पानी पीती जाती है और कान के रास्ते पानी बाहर निकलता रहता है। अन्य प्राणी जैसे हवा से अपनी आत्मा को ठंडी रखते हैं, यह पानी से रखती है।

अल्लाह तआला ने कई प्राणियों का भोजन मछली को नियुक्त किया है। यहांतक की कई हिंसक प्राणी भी पानी कि किनारे छिप कर मछलियों का

शिकार करते है। उसी प्रकार पक्षी भी मछलियाँ खाते है, मनुष्य भी मछलियाँ खाते है, इतना ही नहीं कई बड़ी मछलियाँ भी छोटी मछलियों को खाती है। जब पशु, पक्षी, मनुष्य आदि कई प्राणी मछलियों को खाते हैं तो उस पालनहार ने अनगिनत मछलियों को पैदा किया है। इसीलिए एक मछली से कई मछलियाँ पैदा होती है। यदि तुम एक मछली के पेट के अण्डों को देखोगे तो वे इतने अधिक होंगे कि तुम गिन नहीं सकोगे।

यदि तुम उस हिकमत वाले महान ज्ञानी रचयिता की अद्भूत रचनाओं को देखना चाहो तो समुद्रों में पैदा किए गए अद्भूत प्राणियों को देखो। उनको तुम इतना अधिक पाओगे कि उनकी प्रजातियों को भी गिन नहीं पाओगे। उनसे होने वाले लाभ का भी ज्ञान नहीं है। जब कोई वस्तु उपयोग में आती है तब उसके लाभ का पता चलता है।

किरमिजी रंग (गहरा लाल) का पता इस प्रकार चला कि एक कुतिया समुद्र के किनारे थी। उसने हल्जुन

नामक एक कीड़े (जो ऊंटों की विशेष चरागाहों में पैदा होता है) को खा गई जिससे उसका मुंह रंगीन हो गया। लोगों को वह रंग पसंद आया और लोगों ने उस कीड़े से रंग बनाना शुरू कर दिया। इसीप्रकार विभिन्न प्राणियों की विशेषताएँ मानवता को ज्ञात होती गई और उसने उनसे लाभ उठाना प्रारंभ कर दिया।

मुफज्ज़ल कहते हैं ज़ोहर की नमाज़ का समय समीप आने के कारण इमाम नमाज़ की तय्यारी के लिए उठ

खड़े हुए और मुझ से फरमाया कल सुबह इंशाअल्लाह मेरे पास आना। मैं वहाँ से लौट आया मैं बहुत खुश था कि मुझे इतनी ज्ञान की बातें सुनने को मिली मैंने अल्लाह का बहुत शुक्रिया अदा किया।

प्रकरण - ३५

तीसरी बैठक

मुफज्ज़ल कहते हैं कि जब तीसरा दिन हुआ मैं सुबह जल्दी मौला की सेवा में हाज़िर हुआ। आपने मुझे पास बैठा कर अल्लाह की स्तुति और प्रशंसा करने के बाद फरमाया मैंने तुम्हारे समक्ष मनुष्य तथा प्राणियों की रचना का क्रमागत वर्णन किया; उनसे जो शिक्षा ग्रहण करनी है उसका भी उल्लेख किया।

अब मैं तुम्हारे समक्ष आकाश, सूर्य, चन्द्र, तारे, रात, दिन, गर्मी,

सर्दी, हवा, पानी, आग, बारिश, गारा, छोटे मोटे पत्थर, धातु, वनस्पति, वृक्ष, आदि का सविस्तर वर्णन करता हूँ और इनसे कैसी नसीहत लेना चाहिए यह बताता हूँ।

आसमान को देखो, उसका रंग कैसा है? इस रंग की यह विशेषता है कि उसे देखने से आँखों के तेज और दृष्टी में वृद्धि होती है। यही कारण है कि जिसकी आँखों में कोई बीमारी हो उसे चिकित्सक हरियाली को देखने को कहते हैं। या जो चीज़ हरे या आसमानी

रंग से मिलती जुलती हो उसे; या हरे रंग के बर्तन में पानी भर कर उसे देखने की सलाह देते हैं। उस महान ईश्वर ने आसमान का रंग ऐसा इसलिए बनाया कि लोगों की नज़र बार बार उसपर पडती है तो उसे अधिक देखने से लोगों की आँखों में कोई खराबी पैदा न हो।

देखा तुमने, अल्लाह तआला ने शिक्षा ग्रहण करने के लिए कैसी कैसी वस्तुएँ बनाई। किन्तु नास्तिक लोग इन निशानियों से भागते फिरते हैं। ईश्वर उनका नाश करे।

रात और दिन के होने में, सूर्योदय और सूर्यास्त के होने में विचार करो कि उसमें कितनी हिकमतें समाई है। यदि सूर्य उदय न होता तो लोगों के काम काज बर्बाद हो जाते। अन्धकार के कारण लोग अपनी रोज़ी प्राप्त करने के साधन हासिल न कर पाते। उसीप्रकार प्रकाश का आनंद तथा तृप्ति न मिलने से उनका जीवन सुखमय व्यतीत न होता। सूर्य उदय होने के लाभ सर्वविदित है इसकारण इस विषय में अधिक विस्तार में जाने की आवश्यता नहीं है

किन्तु उसके अस्त होने में जो लाभ है उसपर विचार करो। यदि वह अस्त न होता तो लोगों को राहत व आराम न मिलता।

मनुष्यों को आराम व राहत की अत्यंत आवश्यकता है। इससे समस्त इन्द्रीयाँ जमा होती है। समस्त अवयवों को शक्ति प्राप्त होती है। यदि सूर्य अस्त न होता तो मानव जाती कार्य करने में लालच करती और उसे शरीर में बहुत सी खराबी पैदा हो जाती। कई लोगों को धन संग्रह का अत्यधिक

लालच होता है। लोभ इनके स्वभाव में समा जाता है जिससे वे सतत कार्य करते रहते; यदि रात न होती तो वे बिलकुल आराम न लेते।

इसके अतिरिक्त सूर्य कभी अस्त न होता तो धरती सतत गर्म रहती। इससे प्राणियों तथा वनस्पति को नुक्सान होता, पेड़ पौधे मुरझा जाते।

अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत के अनुसार समय को रात और दिन इन दो हिस्सों में बाँट दिया। एक समय सूर्य अस्त होता है एक समय सूर्य उदय होता

है। प्रकाश और अन्धकार एक दुसरे के विरुद्ध है इसके बावजूद दोनों संसार की भलाई तथा सुविधा के लिए आज्ञा पालक है।

इसके पश्चात वर्ष की ॠतुओं गर्मी सर्दी आदि पर चिंतन करो कि उसमें कैसी मस्लेहत और तदबीर छिपी है। हर ॠतु में सूर्य नीचे ऊपर होने में भी हिकमत छिपी है जिस ओर सूर्य अधिक झुका होता है उस ओर गर्मी होती है और जिस ओर से दूर होता है उस ओर ठण्ड होती है।

ठण्ड के दिनों में वृक्षों और वनस्पति में गर्मी आने से फूल पैदा होते हैं। ठंडी के दिनों में वनस्पति को गर्मी मिलने का उदाहरण देखना चाहो तो कुवें को देखो कि ठण्ड में कुवें का पानी गर्म रहता है जबकि गर्मी के दिनों में ठंडा रहता है। इसका कारण यह है कि ठंडी के कारण धरती के बारीक छिद्र बंद हो जाते हैं इस कारण धरती की गरमी बाहर निकल नहीं पाती और इस गर्मी के कारण पानी गर्म रहता है किन्तु गर्मी के दिनों में इन्हीं छिद्रों से गर्मी बाहर

निकल जाती है इसीलिए पानी ठंडा रहता है। ठण्ड के दिनों में झाडों में फूल और फल लगते हैं और गर्मी के दिनों में फल पकते है।

एक वर्ष तब पूरा होता है जब सूर्य हमल नामक बुर्ज में प्रवेश कर के अन्य ग्यारह बुर्जों में यात्रा कर के पुनः हमल नामक बुर्ज में प्रवेश करता है। जब से अल्लाह तआला ने इस संसार की रचना की है उसी समय से उम्र, क़र्ज़ आदि का हिसाब किताब रखने के लिए वर्ष (महीने, सप्ताह) की गणना की जाती

रही। पुरातन काल में सभी लोग इसी प्रकार हिसाब रखते थे।

सूर्य एक वर्ष में बारह बुर्जों मे यात्रा करता है। सूर्य के इस प्रवास में चारों ॠतुएँ आ जाती है। इसी से हर ॠतु के अनाज फल फलादि पैदा होते है और मनुष्य का हेतु पूरा होता है। जब वर्ष का चक्र पूर्ण होता है तो दूसरा चक्र प्रारम्भ हो जाता है और नए वर्ष के फल फलादि पैदा होते है।

सूर्य एक स्थान पर स्थिर न रह कर जो गतिमान है उसमें भी अल्लाह

की महान हिकमत तथा मस्लेहत समाई हुई है। यदि सूर्य एक ही स्थान पर जमा रहता तो उसका लाभ संसार के हर हिस्से पर पहुँच नहीं पाता। कई स्थानों पर पहाड़ दीवारें बीच में आने से लोग सूर्य की किरणों के लाभों से वंचित रह जाते हैं। इसलिए योजना ऐसी बनाई गई कि दिन के पूर्वार्ध में सूर्य का उदय पूर्व की ओर से हो और सारे संसार को प्रकाशित करते हुए पश्चिम दिशा तक पहुँच जाय ताकि इस धरती का कोई हिस्सा सूर्य की किरणों से वंचित न रहे।

मनुष्य ऐसी बड़ी बड़ी चीज़ों पर गौर नहीं करता। क्या ये सारी चीज़ें नियमबद्ध तथा योजनाबद्ध तरीके से अपने आप एकत्रित हो गई? तथा आवश्यकतानुसार गतिमान है और सुस्ती नहीं करते। क्या सूर्य को इतनी बुद्धि और समझ है कि वह इतना नियमबद्ध और योजनाबद्ध रीति से अपने पथ पर गतिमान रहे। क्या सूर्य का धरती की वस्तुओं से कोई संबंध है जिससे वह मनुष्यों, प्राणियों, वनस्पति आदि को

लाभ पहुँचाने के लिए खुद गतिमान रहे? नहीं कदापि नहीं।

उस महान सर्जनहार ने धरती तथा धरती के जीवों को अपनी हिकमत तथा अपनी मस्लेहत से पैदा की है तथा उसी ने सूर्य को इन्हीं को लाभ पहुँचाने के लिए पैदा किया है। सूर्य के गतिमान रहने का उद्देश्य ही यह है कि वह धरती और धरती के जीवों को लाभ पहुँचाए।

अल्लाह तआला ने चन्द्र को भी एक दिशा दर्शक बनाया है। कई लोग चन्द्र द्वारा महीने का हिसाब रखते हैं।

उसे चन्द्र वर्ष (lunar year) कहते हैं। चन्द्र चारों ऋतुओं को पूर्ण नहीं करता इसलिए महीने ऋतु के अनुसार नहीं आते।

रात्रि के समय चन्द्र के दिखाई देने से तथा प्रकाश की वर्षा करने का कारण यह है कि रात्रि को सभी प्राणियों तथा मनुष्यों के आराम के लिए अंधकारमय बनाया गया है किन्तु घटाटोप अंधकार होना भी योग्य नहीं था। यदि खेती बाड़ी का कोई कार्य रात में करना हो तो घटाटोप अन्धकार में तकलीफ होती।

उसी प्रकार रात में प्रवास करना होता तो भी अंधकार में मुश्किल होती इसलिए चन्द्र को बनाया गया किन्तु सूर्य की तुलना में उसका प्रकाश कम रखा गया ताकि लालची लोग दिन के समान रात में भी कार्य न करने लगें। इसी कारण चन्द्र कर प्रकाश को संपूर्ण रात्रि एक समान नहीं रखा गया। चन्द्र को बढ़ने घटने वाला बनाया गया। इसमें भी कई मस्लेहत समाई है विशेष नसीहत इसमें यह है कि कोई महासत्तावान व महान सामर्थ्यवान उसे

इस प्रकार छोटा बड़ा कर रहा है यह सब लोग जान लें।

ऐ मुफज़्ज़ल, अब तुम सितारों के विषय में विचार तथा चिंतन करो और जानो कि कई सितारे ऐसे हैं कि आसमान में उनके लिए जो स्थान नियत किया गया है वे वहाँ से आगे पीछे नहीं होते। यदि वे चलते हैं तो सब साथ में चलते हैं। कई सितारे ऐसे हैं जो चलते फिरते रहते हैं किन्तु उनका चलना एक समान नहीं है। (अर्थात कोई सितारा बारह महीने में, कोई अठारह

महीने में, कोई एक महीने में अपना चक्र पूरा करता है) सितारे दो प्रकार से चलायमान होते हैं। एक तो वे आकाश के साथ घुमते हैं अर्थात वे एक स्थान पर रहते हैं और क्योंकि आकाश घूमता हैं इसलिए वे भी घुमते हैं। दूसरा प्रकार यह कि आकाश में सितारे खुद भी घुमते हैं।

उदाहरणार्थ यह कि चक्की घूमती है और चक्की पर कोई चींटी कभी खड़ी है कभी वह भी घूमती है। फिर भी दो प्रकार का घूमना तभी कहा जायगा जब

चक्की दाईं ओर घूम रही हो और चींटी बाईं ओर चल रही हो।

अब वे लोग जो कहते हैं कि ये सितारे जो दिखाई देते हैं उसीप्रकार अपने आप बने हैं। किसी हिकमत वाले तथा किसी कारीगर ने इन्हें नहीं बनाया। इनसे पूछो कि सब सितारे एक समान स्थिर या सभी सितारे चलायमान क्यों नहीं बने? जब अपने आप बने है तो सभी एक समान होना चाहिए। किन्तु ये तो नियम बद्ध मस्लेहत और हिकमत के अनुसार एकत्रित किये गए हैं। इससे

यह स्पष्ट होता है कि सितारों का ऐसा बनना, बराबर हिकमत के साथ ठहरना, और चलायमान होना किसी हिकमत वाले ने बनाया है और नास्तिकों के कथनानुसार अपने आप नहीं बने हैं।

यदि कोई पूछे कि कुछ सितारों को एक ही स्थान पर स्थिर रखा गया तथा कुछ सितारों को घूमने वाला बनाया गया इसमें क्या मस्लेहत है? तो इसका उत्तर यह है कि यदि सभी सितारों को उनके स्थान पर स्थिर रखा जाता तो

जो सितारे यात्रा कर के एक बुर्ज से दुसरे बुर्ज जाते हैं उनसे जो निशानियाँ पता चलती है वह न मिलती। जैसे संसार कि कई घटनाएं सूर्य तथा अन्य ग्रहों के अपने स्थान से आने या जाने के कारण ज्ञात होती है। यदि चलायमान सितारे न होते तो इन घटनाओं का पूर्वाभास न होता। यदि सभी सितारे चलायमान होते तो सितारे कितनी दूर गए इसका पता न चलता। यदि सभी सितारे एक समान गति से घुमाए जाते तो जिस कारण घुमाए जाते हैं वह

कारण समझ में नहीं आता। यदि ऐसा होता तो आलोचकों को बहाना मिल जाता और वे कहते कि इनका कोई बनाने वाला नहीं है। ये खुद बने हैं इसलिए एक ही रीति से गतिमान हैं।

किन्तु ऐसा नहीं है। कुछ अपने स्थान पर स्थिर हैं, कुछ गतिमान हैं, कुछ धीमी गति से और कुछ तेज़ गति से घूम रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि किसे बुद्धिमान शक्ति ने किसी विशेष योजना के अंतर्गत इन्हें बनाया और गतिमान किया है।

इन सितारों पर गौर करो। कुछ सितारे वर्ष के किसी विशेष महीने में दिखाई देते हैं। और अन्य महीने में छिप जाते हैं। जैसे सुरय्या, जवज़ा आदि। यदि ये सितारे एक साथ प्रकट होते तो लोग इन्हें पहचान न पाते, और इनसे जो बातें पता चलती हैं वे पता न चलती। जैसे सुरय्या जवज़ा आदि सितारों के उदय या अस्त होने के कारण कई घटनाओं का पता चलता है। इसीलिए प्रत्येक सितारे का उदय या

अस्त होना विशेष अवसर पर नियत किया गया है।

इसी प्रकार बनातुन्नास (ध्रुव तारा) कि लिए ऐसा इंतज़ाम किया गया है कि वह हमेशा प्रकट रहे, कभी अस्त न होने पाए। इसका लाभ यह है कि लोग जंगलों तथा समुद्रों में इसके द्‌वारा रास्ता खोज निकालते हैं, और जहां जाना हो वहाँ जाते हैं।

सितारों कि विशेष स्थिति से विशेष जानकारी मिलती है। जैसे खेती बाड़ी, समुद्र यात्रा के बारे में जानकारी मिल

सकती है। जैसे बारिश, हवा की गति, गर्मी या ठंडी आदि इन सब की जानकारी मिल सकती है। कई ग्रहों का आगे बढ़ना, कुछ का पीछे हटना, पूर्व की ओर चलना या पश्चिम की ओर चलना इन सब का एक विशेष अर्थ है। यह अध्ययन का विषय है।

सूर्य या चन्द्र के बहुत ऊंचे रहने में यह लाभ निहित है कि यदि वे निकट होते, उनकी गति जैसी है वैसी ही दिखाई देती, उनकी चमक जैसी है वैसी नज़दीक से दिखाई देती तो मनुष्य की

आँखें उन पर स्थिर न रह पाती और खराब हो जाती। जैसे कभी कभी बिजली की चमक से आँखे अंधिया जाती है। यदि ऐसा होता तो मनुष्य धरती पर औंधे मुंह गिर पड़ता। देखो कि उस महान तदबीर और हिकमत वाले ईश्वर ने अपने बन्दों को विभिन्न संकटों से बचाने के उद्देश्य से सूर्य, चन्द्र और सितारों को अत्यधिक दूरी पर स्थित किया है। सितारों चन्द्र की तुलना में कम प्रकाश दिखाई देता है। यह इसलिए कि जब चन्द्र न हो तब लोगों को बाहर

जाने में कोई अड़चन न आए। इसमें भी विशेष मस्लेहत है। अर्थात आकाश, सूर्य, चन्द्र, सितारे विभिन्न प्रकार की हिकमत और मस्लेहत से एकत्रित कर के और उनकी भिन्न भिन्न गति तथा स्थिरता, कम तथा अधिक प्रकाश, कम वा अधिक गति उस मालिक ने प्राणियों तथा मनुष्यों के अनगिनत लाभ के लिए बनाए हैं।

क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा मान सकता है कि ऐसे अंदाज़ तदबीर और हिकमत भरे कार्य जो हो रहे हैं,

किसी महान शक्ति सम्पन्न या किसी महान हिकमत वाले के किये बिना संभव है? यदि कोई यह कहता भी है कि ये सब किसी ने बनाया नहीं है बल्कि संयोग से अपने आप बन गया; तो क्या इतनी कठिन व क्लिष्ट रचना के लिए भी यह कहने की हिम्मत रखता है कि खुद ब खुद बन गया?

एक पनचक्की कि जिसके द्वारा बाग बगीचों की सींचाई की जाती है उसके विषय में तो कोई नहीं कहता कि अपने आप बन गई है और अपने आप

पानी खिंच कर बाग बगीचों में जा रहा है। वह पानी के चरखे को इसलिए अपने आप बना हुआ नहीं कहता क्योंकि वह देख रहा है कि चरखे के जोड़ व बंद आपस में आवश्यकतानुरूप बने हुए है और आवश्यकतानुसार पानी खिंच कर बगीचे में जा रहा है यह वस्तु अपने आप बनने योग्य नहीं है।

यदि कोई इस चरखे को अपने आप बना हुआ कहेगा तो दुसरे लोग उसे बेवक़ूफ़ और मूर्ख कहेंगे। क्योंकि चरखा, जिसमें किसी प्रकार की

समझशक्ति नहीं है कैसे अपने आप इतनी विशेषताओं से भरपूर कारीगरी से बन जायगा?

जब एक निकृष्ट लकड़ी से, एक निकृष्ट कारीगरी से बने चरखे को जो एक छोटे से बगीचे के लाभ के लिए बनाया गया है; खुद से बना हुआ नहीं माना जाता तो फिर इतने बड़े आसमान के चरखे को जो ऐसी हिकमतों से परिपूर्ण है कि जिसे समझने में मानव बुद्धि असहाय है, जिससे संसार की समस्त वस्तुओं को अनगिनत लाभ

प्राप्त होते हैं उसके बारे में यह कैसे कहा जासकता है कि यह संयोग की बात है कि यह अपने आप बन गया है और किसी बुद्धिमान ने इसे नहीं बनाया।

लकड़ी से बनी हुई वस्तु का कोई पुर्ज़ा बिगड जाय तो मनुष्य उसे सुधार लेता है किन्तु आसमान का कोई पुर्ज़ा बिगड़ जाय तो कोई ऐसी शक्ति है जो उसे सुधार सके?

फिर आप ने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल, अब तुम रात और दिन को देखो आम तौर पर जिसकी अवधि पंद्रह

घंटो से लंबी नहीं होती। सर्जनहार ने अपनी रचना के लाभ के लिए किस प्रकार कायम किया है। यदि वह दिन को सौ दो सौ घंटों का बनाता तो सभी सजीव प्राणी मर जाते। प्राणियों को इतना लंबा दिन रहने के कारण आराम और राहत न मिल पाती, मनुष्य इतना लंबा दिन रहने के कारण काम करते रहते तथा जंगल में रहने वाले प्राणी भी चरते रहते औए इन कारणों से लंबी अवधि न जी पाते।

वृक्ष और वनस्पति पर इतनी लंबी अवधि प्रकाश और गर्मी पड़ने से वह जल कर सूख जाती। यदि रात को इतनी लंबी बनाता तो प्राणी अपना भोजन न मिलने के कारण मर जाते, वनस्पति में दुर्गन्ध आ जाती और वह सड़ जाती।

वर्ष के मौसमों में बदलाव से, ठण्ड, गर्मी, के कारण मानव शरीर को लाभ पहुँचता है। यदि एक के बाद दूसरा मौसम न होता और हमेंशा एक ही प्रकार का मौसम होता तो शरीर दुबले

और खराब हो जाते। ठण्ड या गर्मी का मौसम अचानक नहीं बदल जाता बल्कि धीरे धीरे बदलता है। जैसे सर्दी के बाद गर्मी आती है तो धीरे धीरे ठण्ड कम होने लगती है और थोड़ी थोड़ी गर्मी बढ़ने लगती है। उसी प्रकार गर्मी के बाद सर्दी भी इसी तरह आती है। हर मौसम अपनी सीमा तक पहुँच कर रुक जाता है।

यदि सर्दी के बाद एक दम गर्मी आ जाती या गर्मी के बाद एक दम सर्दी आ जाती मानव शरीर को कड़ी हानि

पहुँचती और वह बीमार हो जाता यदि कोई व्यक्ति गर्म हम्माम (पानी के ताल) में से एकदम ठंडी में चला जाय तो उसे हानि होती है।

यदि कोई इस प्रकार युक्तिवाद करे कि ठण्ड के बाद गर्मी और गर्मी के बाद ठण्ड जो धीरे धीरे आती है वह सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन के कारण है। फिर सूर्य के दक्षिणायन और उत्तरायण के क्या कारण है? तो कहा जायगा कि पूर्व तथा पश्चिम के अंतर के कारण है। इसी प्रकार प्रश्नों के उत्तर देते देते अंत

में यही कहना पड़ता है कि किसी हिकमत या तदबीर वाले ने इसकी इसी प्रकार रचना की है।

देखो यदि गर्मी न होती तो सख्त कड़वे, खट्टे फल न पकते। यदि ठण्ड न होती तो खेतों में इतना अनाज न पकता। गर्मी तथा ठंडी में बहुत से लाभ समाए हुए हैं। गर्मी तथा सर्दी में शरीर को तकलीफ भी होती है तो उसी के साथ उसमें लाभ भी समाए हैं। इस विषय में अन्वेषण करने वालों के लिए काफी गुंजाइश है।

अल्लाह ने हवा को पैदा किया है। इसमें भी कई हिकमतें छिपी हुई हैं। जब हवा स्थिर हो जाती है तो मनुष्य मुरझा जाता है। स्वस्थ व्यक्ति बीमार हो जाता है। फल फूल दुर्गन्धित हो जाते हैं। इसी प्रकार अन्य बहुत सी हानि होती है। इससे यह सिद्ध होता है कि हवा में बहुत लाभ हैं और वह एक हिकमत और तदबीर वाले की बनाई हुई है।

हवा की अन्य विशेषता यह है कि विशेष वस्तु हवा के साथ टकराने से ध्वनि पैदा होती है और उस ध्वनि को

हवा कान तक पहुँचा देती है। मनुष्य सारा दिन और रात का कुछ हिस्सा अपने कार्यों के लिए आपस में जो बातचीत करता है, हवा के माध्यम से वह ध्वनि कानों तक पहुँचने के तुरंत बाद उसका नादश हो जाता है। यदि वातावरण में उस ध्वनि तरंगों का नाश नहीं होता और वे कागज़ पर लिखाई के बाक़ी रहने के समान ध्वनि की तरंगे वातावरण में बाकी रहती तो समस्त विश्व ध्वनि तरंगों से भर जाता जिससे लोग बेचैन हो जाते, नई और पुरानी

बातों में फर्क न रहता। कागज़ पर लिखाई की अपेक्षा वातावरण में इस ध्वनि तरंगों का नष्ट हो जाना अत्यंत आवश्यक था। इसलिए उस महान हिकमत वाले पवित्र अल्लाह ने ध्वनि तरंगों को धारण करने वाली हवा को इतना महीन बनाया कि एक व्यक्ति के मुख से निकली आवाज़ को वह दुसरे व्यक्ति के कान तक पहुँचने तक बाकी रखती है और उसके तुरंत बाद नष्ट कर देती है।

इस हवा में बहुत सी मस्लेहत समाई हुई है जो बोध ग्रहण करने के लिए पर्याप्त है। यह हवा शरीर को स्वस्थ रखती है और उसका जीवन बाक़ी रखती है। जब व्यक्ति हवा को अपने शरीर के अंदर खींचता है तो वह अंदर जा कर उसकी आत्मा से मिलती है और उसे जीवित रखती है। यही हवा ध्वनि तरंगों को दूर दूर पहुँचा देती है। उसी प्रकार गंध को धारण कर के एक स्थान से दुसरे स्थान पर ले जाती है। इतना ही नहीं बल्कि ठंडी और गर्मी जो

संसार के लाभ के लिए आती जाती है उसे भी हवा ही उठाती है। हवा मानव शरीर की खराबियों को दूर करती है। उसी प्रकार बादलों को उठा कर फिरती है तथा यथोचित बारिश बरसाती है, फिर बादलों को छितरा कर हल्का फुल्का कर देती है।

हवा के कारण फल फूल पैदा होते हैं, यह पानी को ठंडा करती है, खाने को गर्म तथा स्वादिष्ट करती है। गीली वस्तुओं को सुखाती है, पाल नौकाओं को समुद्र में चलाती है। सारांश यह कि

धरती की समस्त वस्तुओं को कायम तथा जीवित रखती है। यदि हवा न होती तो वनस्पतियां सूख जाती, प्राणी मर जाते, मनुष्य जी नहीं पाते।

ऐ मुफज्ज़ल, अल्लाह तआला ने जो चार मुख्य तत्व (हवा, पानी, आग तथा मिट्टी) पैदा किये हैं उनपर गौर करो कि उनके द्वारा आवश्यकताएं पूरी होती है। इन चार मुख्य तत्वों में एक ज़मीन है। यह ज़मीन इतनी विशाल है कि लोग इसमें खेती बाड़ी करते हैं, घर बार बनाते हैं। यदि ज़मीन इतनी विशाल

न होती तो लोगों को मकान बनाने, खेती करने, मवेशियों को चराने में बहुत दिक्कत होती। उसे प्रकार खदानों में से कीमती वस्तुएँ निकालने में मुश्किल होती।

यदि कोई नासमझ यह सवाल करे कि बड़े बड़े भयानक जंगल और रेगिस्तान बेकार बनाए गए हैं तो उसका उत्तर यह है कि जंगली जानवरों के रहने और उनके चरने के लिए बनाए गए हैं। वैसे भी मनुष्यों को इतनी बड़ी जगह की आवश्यकता है ही। जैसे जैसे

जनसंख्या बढती जाती है लोग दूर दूर बस्तियां बसाते हैं। उन्हें भी ज़मीन की आवश्यकता है। देखो कई रेगिस्तानों को मनुष्यों ने आबाद किया फिर वहाँ बाग बगीचा और खेती बाड़ी हुई। यदि ज़मीन इतनी चौड़ी न होती तो मनुष्यों को बहुत तकलीफ का सामना करना पड़ता। यदि कोई किसी व्यक्ति पर सख्ती कर अपना स्थान छोड़ने पर मजबूर करता तो जगह न होने के कारण वह कहीं न जा पाता।

आप ने फरमाया। इस धरती की स्थिति को देखो कि यह किस तरह स्थिर की गई है कि सभी के लिए रहने की सुविधा हुई है। मनुष्य अपनी आवश्यकता के लिए उसपर चलता फिरता है, खेती बाड़ी करता है, मकान बनाता है। यदि ज़मीन हिलती रहती, स्थिर न रहती या ऊपर नीचे होती रहती तो लोग उसपर मज़बूत मकान न बना पाते। मनुष्य अपना काम ठीक तरह से न कर पाते बल्कि मुश्किलों में फंसे रहते। तुमने भूकंप नहीं देखा? जो बहुत

ही थोड़े समय के लिए होता है। उस समय जो लोग जागते रहते हैं वे घर छोड़ कर भाग लेते हैं।

यदि कोई यह आपत्ति करे कि भूकंप क्यों हुआ करते हैं? तो इसका उत्तर यह होगा कि भूकंप तथा इस प्रकार की घटनाएं जैसे तूफानी हवाएं, सूर्य चन्द्र ग्रहण, तारों का टूटना, आकाश में भयंकर लालिमा का दिखाई देना आदि घटनाएं एक प्रकार की नसीहत तथा लोगों में भय पैदा करने के लिए है ताकि लोग पाप करने से रुकें।

उसीप्रकार वे विपत्तियां तथा मुसीबतें जो मानव शरीर तथा संपत्ति पर आती हैं उनमें भी यही हिकमत भरी है। ऐसी बातों से शिक्षा ग्रहण कर सद्पुरुष बन जाय कि जिससे मरणोपरांत जीवन सफल हो जाय कि उसकी तुलना में यह जगत तुच्छ है। कभी कभी जब अल्लाह की मस्लेहत हो तो वह सद्कर्मों का प्रतिफल इस संसार में भी प्रदान कर देता है।

यह धरती खुद ठंडी और सूखी है। इसके ऊपर के पत्थर भी ठन्डे और सूखे

हैं। ज़मीन की अपेक्षा पत्थर में शुष्कता अधिक है। यदि अल्लाह धरती का सूखापन बढ़ा कर पत्थर के समान बनादेता तो उसमें कृषि कार्य न हो पाता, उसमें कुछ भी न उग पाता जिससे मनुष्यों तथा प्राणियों का जीवन बहुत कठिन हो जाता। उस पर मकान बनाना भी कठिन हो जाता।

धरती के निर्माण में भी उस संपूर्ण सामर्थ्यवान अल्लाह ने यह विशेषता रखी है कि दक्षिणी भाग की तुलना में उत्तरी भाग ऊंचा रखा गया है। इसका

कारण यह है कि समस्त संसार में पानी पहुँचाने के पश्चात अतिरिक्त पानी अंत में बह कर समुद्र में चला जाय। जैसे घरों की छत कि उसका पानी उतरने का स्थान नीचा रखा जाता है। उसी प्रकार धरती का उत्तरी भाग ऊंचा रखा गया है। यदि इस प्रकार योजना बद्ध कार्य न किया जाता तो यहाँ वहाँ पानी जमा रहता और लोगों का रास्ता बंद हो जाता।

[स्मरण रहे कि पृथ्वी गोल है। किन्तु उसे पानी के नीचे रखा गया है

तथा वास्तव में पानी ज़मीन के ऊपर है। अल्लाह को ज़मीन पर बस्ती बसानी थी इसी अपनी शक्ति से धरती के उत्तरी भाग को दक्षिणी भाग से ऊंचा कर दिया ताकि लोग आबाद हो सकें। उसी प्रकार समुद्र में द्वीप इस कारण पानी से ऊंचे किये गए ताकि लोग उन पर बस्ती बसा सकें। वरन साधारण नियमानुसार पानी ही हर स्थान पर ऊपर होना चाहिए था।]

आवागमन बाधित होता, माल ढोना कठिन हो जाता और इस कारण

वस्तुओं की कीमतें बहुत अधिक हो जाती। लोग एक शहर से दुसरे शहर माल का परिवहन न कर पाते और इस कारण दो प्रकार की हानि होती। एक तो यह कि वस्तुओं को अभाव स्थाई हो जाता दुसरे यह कि लोग व्यापार का व्यवसाय न कर पाते।

उसीप्रकार हवा में भी कई प्रकार के लाभ समाए हुए हैं। जैसे ऊपर विवरण हो चुका है। यदि इतनी अधिक मात्रा में हवा न होती तो हवा में मिश्रित धुंए और प्रदूषण के कारण सांस लेने में

कठिनाई होती। किन्तु अधिक मात्रा में हवा होने के कारण धुँआ तथा प्रदूषण धीरे धीरे बादल के स्वरुप में बदल जाता है और हवा फिर से स्वच्छ हो जाती है।

प्रकरण - ३६

आग के लाभ

आग भी उस महान अल्लाह ने मनुष्यों के लाभ के उद्देश्य से ही बनाई है किन्तु उसे हवा तथा पानी के समान अधिक प्रमाण में नहीं बनाई। यदि वह अधिक प्रमाण में बनाई जाती तो वह सारी चीज़ों को जला देती। किन्तु उसे छिपा कर रखा गया है तथा आवश्यकतानुसार उसे उपयोग में लाया जा सकता है। समस्त सजीव प्राणियों में आग केवल मनुष्य के उपयोग के लिए

बनाई गई है। आग से केवल मनुष्य ही लाभ उठा सकता है। कृषि कार्य, मकान, कारखानों, आदि के लिए लोहे के औज़ार बनाए जाते हैं। यदि आग न होती तो मनुष्यों को बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता। आग से चूना, ईंट, उसीप्रकार बर्तन, ज़ेवर आदि बनाए जाते हैं। विशेषकर भोजन पकाने के लिए उसकी आवश्यकता होती है।

उस महान अल्लाह ने आग प्राणियों केलिए इसलिए नहीं बनाई

क्योंकि उनको उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। आग का उपयोग करने के लिए हाथ, उंगलियां आदि की आवश्यकता होती है जो केवल मनुष्यों को प्रदान की गई है।

आग का एक बहुत प्रशंसनीय कार्य दीपक है। दीपक की मनुष्यों को रात के समय बहुत आवश्यकता पड़ती है। यदि यह गुण आग में न होता तो मनुष्य घने अँधेरे के कारण ऐसा घबरा जाता जैसे जीवित व्यक्ति को मिट्टी में दफ़न कर दिया जाय तो घबरा जाता है। यदि

आग का साधन न होता तो रातों में लिखना, सीखना तथा अध्ययन का कार्य न हो पाता। उसीप्रकार बीमारी आदि में भी उसकी आवश्यकता होती है। उसीप्रकार शरीर को गर्मी पहुँचाने के लिए, गीली वस्तुओं को सुखाने के लिए, कड़ी धातुओं को पिघलाने की विशेषता आग में रखी गई है। (उस ईश्वर ने एक ही वस्तु में भिन्न भिन्न विशेषता रखी है। वह कुछ वस्तुओं को कोमल बनाती है तो कुछ वस्तुओं को कठोर।)

प्रकरण - ३७

वर्षा के लाभ

ऐ मुफज्ज़ल, बादलों के चले जाने के पश्चात आकाश के स्वच्छ दिखाई देने में और वर्षा के बरसने में विचार करो कि आवश्यता के समय बादलों का निर्माण होता है तथा वर्षा होती है वर्षा के पश्चात बादल चले जाते हैं तथा आकाश स्वच्छ दिखाई देता है। इस ऋतु चक्र में ही मनुष्य की भलाई है।

यदि सदा बादल जमें रहते अथवा आकाश सदा स्वच्छ रहता तो मनुष्य

की बहुत हानि होती। जब लगातार बादल घिर कर वर्षा होती है तब वातावरण में नमी तथा गंध फैलती है और प्राणियों में भिन्न भिन्न रोग पैदा होते हैं। रास्तों में गड्ढे पड़ जाते हैं। उसीप्रकार जब लंबे समय तक वर्षा न हो; बादलों रहित आकाश साफ़ रहे तो धरती की मिट्टी सूख जाती है, खेती बाड़ी के पौधे जल जाते हैं, पानी की कमी के कारण झरने और नदियाँ सूख जाती है और मनुष्यों को नुक्सान पहुँचता है। हवा शुष्क होने से विभिन्न

रोग फ़ैल जाते हैं। किन्तु ॠतु चक्र के कारण जब ॠतुएँ बारी बारी से बदलती है तो एक ॠतु दूसरी ॠतु की हानि को कम कर देती है तथा मनुष्य को हर ॠतु का लाभ प्राप्त होता है। यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार प्रश्न करे कि किसी वस्तु से हानि होती है तो पहले से ऐसी योजना क्यों न की गई कि हानि हो ही नहीं ताकि उस हानि को रोकने के लिए दूसरी वस्तु की आवश्यकता ही न पड़े।

तो इसका उत्तर यह है कि हर योजना इसलिए बनाई गई ताकि मनुष्यों

को थोड़ी बहुत तकलीफ पहुँचती रहे ताकि वह पाप करने से रुके। जैसे मनुष्य बीमार हो जाता है और उसे कड़वी तथा अनिच्छा पैदा करने वाली दवाएं पीनी पड़ती है और उससे उसकी तबियत ठीक हो जाती है।

अर्थात जब मनुष्य अतिरेक करता है तथा घमंडी हो जाता है तो उसे ऐसी तकलीफें पहुँचाना आवश्यक हो जाता है ताकि वह अभिमान करने से बचे तथा स्वतः के लिए लाभकारी स्थिति स्वीकार

करे तथा बुरे कर्मों तथा पापों से परहेज़ करे।

कोई सम्राट अपनी प्रजा में लाखों करोड़ों रूपये बाँट दे तो प्रजा के दिलों में उस सम्राट के प्रति कितना प्रेम उपजेगा? वे उसका कितना सम्मान करेंगे? उसकी दानशीलता की कितनी ख्याति होगी? इस अनुग्रह की तुलना में वर्षा का अनुग्रह कितना महान है। इससे देश आबाद होते हैं। लोगों के खाने पीने के लिए अनाज फल आदि उगते

हैं।प्राणियों के लिए घांस चारा आदि पैदा होता है।

तुम देखते नहीं वर्षा कितनी कीमती है? यह अल्लाह का कितना बड़ा अनुग्रह है? किन्तु लोग इस महान तथा अप्रतिम अनुग्रह से विमुख हैं। किसी का क्षुण्ण कार्य वर्षा के कारण रुक जाता है तो वह शिकायात करता है, नाराज़ होता है। किन्तु वह समझता नहीं कि उसका तो छोटा सा नुक्सान हुआ है किन्तु मानवता का कितना बड़ा फायदा इस वर्षा से जुड़ा हुआ है। लोगों के ऐसे

व्यवहार का कारण यह है कि उन्हें इस अनुग्रह की महानता का ज्ञान नहीं। तथा उसके लाभों से वे अनभिज्ञ है।

अब तुम वर्षा की ऊंचाई से धरती पर पड़ने में निहित हिकमत के बारे में चिंतन करो कि ऊंची तथा उसीप्रकार कड़ी ज़मीन पर पड़ती है ताकि वह योग्य प्रकार से तृप्त हो जाय।

यदि वर्षा आकाश की बजाय किसी निचले स्थान से या किसी कोने से बरसती तो धरती की ऊंचाई वाले स्थान उससे छूट जाते तथा वहाँ की जगह

सूखी रह जाती। ऐसे स्थानों में कृषि कार्य नहीं हो पाते। सींचाई वाले खेत अत्यधिक कम हैं। यदि सारे खेत सींचाई वाले होते तो बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता। इतना ही नहीं लोग पानी के लिए एक दुसरे से झगड़ते, एक दुसरे पर अत्याचार करते, शक्तिशाली लोग जबरन पानी छीन लेते तथा कमज़ोर लोग पानी से वंचित हो जाते। किन्तु आकाश से वर्षा होने से ये सारे झगडे पैदा होने से बच गए।

पानी के ऊपर से बरसने के अतिरिक्त उसमें ऐसी विशेषता रखी गई है कि वह पानी के छिडकाव के समान बूँद बूँद हो कर ज़मीन पर पड़े जिससे धरती तृप्त हो। यदि नल के पानी के समान एक धार से पानी आकाश से गिरता तो पानी एक नदी के समान बह जाता और भूमि में अंदर तक सोख पाता। और उसके बहाव के कारण उगे हुए वृक्ष टूट जाते। इसलिए इस तरह किया गया कि धीरे धीरे फुहार के समान बरसे ताकि धरती में समाजाए।

अनाज उग सके और उगा हुआ अनाज गिर कर खराब न हो जाय।

इसके अतिरिक्त वर्षा के अन्य कई लाभ हैं। जैसे मिट्टी की भीनी भीनी सुगंध से मनुष्य की प्रकृति को आनंद प्राप्त होता है। वातावरण में फैला प्रदूषण दूर होता है कृषि तथा वृक्ष में होने वाली यर्कान (पीलिया) नामक बीमारी से भी मुक्ति मिलती है।

यदि कोई कहे कि कभी कभी ओले पड़ते हैं या घनी मूसलाधार बारिश होती है जिससे लाभ की अपेक्षा कृषि का बड़ा

नुक्सान होता है तथा वातावरण दूषित होता है और कई रोग उत्पन्न होते हैं। तो लाभ कहाँ रहा? तो इसका उत्तर यह है कि मनुष्य की प्रकृति को व्यवस्थित करने तथा पापों से विमुख करने के लिए ऐसा किया जाता है और ऐसी बातों में मृत्युपरांत जगत के बहुत से लाभ निहित है। उन महान लाभों की तुलना में इस भौतिक संसार की थोड़ी सी हानि की कोई हैसियत नहीं है।

आखिर नास्तिकों को इतनी तो चेतावनी मिले कि कोई शक्तिशाली

शक्ति है जो इस संसार को चला रही है जो इस प्रकार व्यवहार कर रही है। जो लोग यह समझ कर कि उनके पापों के कारण ऐसा नुक्सान हो रहा है, अपने पापों को त्याग दें तो उनके लिए मृत्युपरांत जीवन में बहुत बड़ा लाभ हो जायगा।

प्रकरण - ३८

पहाड़ का वर्णन

आप ने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल, तुम इन पहाड़ों को देखो जिन्हें मिट्टी और पत्थरों से बनाया गया है। जो लोग गफलत में पड़े हैं वे समझते हैं कि ये पहाड़ बेकार बनाए गए हैं किन्तु वे जानते नहीं कि इनमें अनगिनत लाभ निहित है।

जैसे पहाड़ों पर बर्फ गिरती है वह पहाड़ों की चोटियों पर जमी रहती है। वह गर्मियों में पिघल कर झरने और

नदियों के स्वरुप में बहती है। बड़ी बड़ी नहरें चारों ओर जाती हैं। जिन्हें बर्फ की आवश्यकता हो वह वहाँ से बर्फ भी ले जा सकता है।

पहाड़ों पर ऐसी ऐसी जड़ी बूटियाँ होती हैं जो सपाट ज़मीन पर नहीं होती। जंगली विकराल प्राणियों के लिए वहाँ गुफाएं बनी हैं। शत्रुओं से बचने के लिए वहाँ बड़े बड़े किले भी बनाए जाते है। पहाड़ों को छील कर वहाँ मकान भी बनाए जाते हैं। इतना ही नहीं उनमें कीमती रत्न की खदानें भी हैं। इसके

अतिरिक्त अन्य अनेक लाभ हैं जो महान रचयिता भलीभांति जानता है। उसने पूर्व योजना अंतर्गत उन लाभों को इन पहाड़ों में एकत्रित कर रखा है।

इन पहाड़ों में से बहुत सारी वस्तुएँ जैसे चूना, पारा, हड़ताल, जस्ता, ताम्बा, कथील, सोना, चांदी, जवाहरात तथा विभिन्न प्रकार के उच्च कोटि के पत्थर, गंधक आदि प्राप्त होते है। ये सारी वस्तुएँ मनुष्य के काम आती है। मनुष्य उन्हें वहाँ से निकाल कर एकत्रित करता है, उनका व्यापार

करता है तथा अपनी आवश्यकतानुसार उपयोग करता है। ज़रा इस पर विचार करो कि किसी महान कारीगर के बनाए बगैर अनेक लाभों वाले पहाड़ खुद ब खुद कैसे बन सकते हैं।

लोगों ने अधिक लाभवश यह चाहा कि सोना तथा चांदी खुद बना लें। किन्तु अत्यंत सघन प्रयासों के बावजूद न बना सके। यदि वे अपनी इच्छानुसार बना पाते तो सोना तथा चांदी बहुत बनाते यहाँ तक कि उनकी कद्र व कीमत बाकी न रहती तथा उनकी खरीदी

व बिक्री में जो लाभ समाया है बाक़ी न रहता तथा संसार का व्यवहार रुक जाता। इसके बावजूद मनुष्य को इतनी तो शक्ति प्रदान की हैं कि वह ताम्बे में जस्ते के मिश्रण से पीतल बनाता है। रेती से शीशा बनाता है। कलई में से चांदी बनाता है, चांदी में से सोना बनाता है, किन्तु इन्हें बनाने वाले अत्यंत कम हैं। इस कारण व्यवहार में विघ्न नहीं पड़ता।

सारांश यह कि अल्लाह तआला ने ऐसा प्रबंध किया है कि मनुष्य सोना

तथा चांदी को बहुत थोड़ा प्राप्त कर सके जिससे संसार के आर्थिक व्यवहार सुचारू रूप से चल सके। इन्हें बनाना आसान इसलिए नहीं रखा कि कहीं आर्थिक व्यवहार में रुकावट न आ जाए।

अल्लाह सुब्हानहु ने सोना चांदी को कम नहीं पैदा किया है। खानों के अंदर चांदी के बड़े बड़े पहाड़ बने हुए हैं। किन्तु उसकी मस्लेहत यह है कि मनुष्य उसे थोड़े प्रमाण में बाहर निकाल पाए। चांदी के पहाड़ इसलिए बनाए गए हैं कि बंदे समझे कि उनके मालिक के पास

किसी चीज़ की कमी नहीं है। किन्तु उपरोक्त वर्णित उद्देश्य के कारण इस प्रकार योजना की गई है।

इसका दूसरा उदाहरण यह है कि जब कोई वस्तु नई बनाई जाती है तो इनकी मांग तथा कीमत अधिक रहती है किन्तु जब उसका उत्पादन अधिक मात्रा में होता है तो उसका मूल्य तथा मांग कम हो जाती है। यदि सोने और चांदी का उत्पादन अधिक होता तो उनकी भी कद्र व कीमत गिर जाती।

प्रकरण - ३९

झाड़ कृषि आदि का वर्णन

फिर आपने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल, इन विभिन्न प्रकार के वृक्षों को देखो, इनके फल खाए जाते हैं। इनके पत्ते चौपायों के भोजन बनते हैं। इनकी लकडी जलाने के काम आती है। पट्टियां और तख्ते घर बनाने के काम आते हैं। इनकी छाल, पत्तियाँ, जड़ आदि उसीप्रकार इनसे झड़ने वाला गोंद आदि समस्त वस्तुएँ काम आती है।

तुम देखो, हम जो फल खाते हैं उनके बीज या गुठली से दूसरा पेड़ उगता है। यदि ऐसा न होता और एक ही स्थान पर झाड़ मिलते तो दुसरे स्थान पर झाड़ तथा झाडों से होने वाले लाभ कैसे प्राप्त होते?

किन्तु उस अल्लाह ने अपनी मस्लेहत से एक झाड़ में अनेक लाभों का समावेश किया है। इसके अतिरिक्त धरती वृक्षों के उगने से अत्यंत सुंदर दिखाई देती है। इससे आँखों में ठंडक महसूस होती है, मन में प्रसन्नता का

भाव उत्पन्न होता है, अवसाद नष्ट होता है।

फिर आपने फरमाया तुम खेती की ओर नज़र करो। तुम देखते हो कि एक दाने से असंख्य दाने उत्पन्न होते हैं। बुद्धि तो कहती है कि एक दाने से एक ही दाना पैदा होना चाहिए। इसके बावजूद एक दाने से अनेक दाने पैदा होते हैं। उसमे यह भेद निहित है कि कृषक को लाभ मिले। उसी प्रकार खजूर, सूखे गीले मेवों के पेड़ों में भी ऐसी ही बरकत प्रदान की गई है कि

एक दाने से असंख्य दाने पैदा होते हैं। एक शाखा से असंख्य शाखाएं उत्पन्न होती है। इससे मनुष्यों के खाने के अतिरिक्त रोपण के भी काम आते हैं। यदि एक से अनेक न पैदा होते तो अनेकों मुश्किलें पैदा होतीं। यदि एक ही वृक्ष और एक ही फल पैदा होता तो फिर इस वृक्ष के नष्ट होने पर दुसरे वृक्ष कैसे पैदा हो पाते?

ऐ मुफज्ज़ल, मूंग मसूर आदि को देखो जो एक फल्ली के अंदर पैदा होते हैं ताकि मज़बूत होने तक उस फल्ली के

अंदर सुरक्षित रहें। किन्तु गेहूं और जव आदि फल्ली के बजाय बालियों में पैदा होते है। उनकी रक्षा के लिए उनके ऊपर काँटों के समान रोएँ न होते तो पक्षी सारे दाने खा जाते। और यदि पूर्णतः सुरक्षित कर दिया जाता तो पक्षी उनसे वंचित रह जाते। इसलिए हिकमत से इस प्रकार का आयोजन किया गया है। यदि अधिक दाने पक्षियों को मिलते तो बदहज़मी के कारण वे बीमार हो जाता और कृषक बेचारा पूर्णतः वंचित रह

जाता जबकि अधिक और बड़ा हक तो बेचारे कृषक का है।

हर पेड़ को प्राणियों के समान पानी की आवश्यकता होती है किन्तु प्राणियों के समान वनस्पति को मुंह नहीं होता। उसीप्रकार भोजन प्राप्त करने के लिए चलने की शक्ति नहीं होती। इसीकारण वनस्पति के लिए ज़मीन में जड़ें बनाई गईं जिससे वे उन जड़ों के द्‌वारा ज़मीन में से अपना भोजन पानी खींच कर तने, डालियाँ, पत्ते और फूलों तक पहुँचाता है। झाड़ की जड़ें उनके मुख

समान हैं। जैसे प्राणी का बच्चा दूध पी कर अपना भोजन प्राप्त करता है उसी प्रकार झाडों की जड़ें धरती के भीतर से नमी को खींच कर अपना भोजन प्राप्त करती हैं।

जिस प्रकार किसी तम्बू को चारों ओर रस्सी बाँध कर खड़ा किया जाता है उसी प्रकार झाड़ अपनी जड़ों के सहारे खड़ा रहता है। यदि ऐसा न किया जाता तो खजूर व नारियल आदि के लंबे झाड़ आंधी तूफ़ान या तेज़ हवा के कारण उखड जाते। इसलिए उस महान अल्लाह

ने पहले से ही हर एक की आवश्यकतानुसार प्रत्येक का इंतज़ाम किया है।

ऐ मुफज्ज़ल, इन पत्तियों की उत्पत्ति के बारे में थोड़ा चिंतन करो। देखो कि पत्तियों में बारीक बारीक नसें फैली होती हैं। उनमें भी मोटी और पतली होती हैं। ये पत्तियाँ यदि हाथों से बनाई जातीं तो एक वृक्ष की पत्तियाँ शायद एक वर्ष में भी मनुष्य बना न पाता। इसके अतिरिक्त उन्हें बनाने के लिए उपयुक्त औजारों के आवश्यकता

होती। जब झाड़ वनस्पति उगने का मौसम आता है तो अत्यंत अल्प अवधि में बिना किसी हलचल या शोरशराबे के सभी स्थानों में सभी झाडों में अनगिनत पत्तियाँ उगने लग जाती है।

अब उन पत्तियों में जो बारीक बारीक नसें बनाई गई हैं उनका उद्देश्य समझ लो वे इसलिए बनाई गई है ताकि पत्ते के चारों ओर पानी पहुँच जाय। उनमें की मोटी नसें बनाने का यह भी एक उद्देश्य है कि वे पत्तों को कटने फटने से बचाती है।

प्रकरण - ४०

फल, बीज और गुठली का वर्णन

फलों के अंदर बीज तथा गुठलियों में समाई हिकमत को देखो कि उसे फल के अंदर के भाग में रखा गया है। इसका कारण यह है कि अंदर रहने से वह खराब न होने पाए। उसकी रक्षा हो सके। जैसे उत्तम तथा महत्वपूर्ण वस्तु को अंदर के भाग में छिपा कर रखा जाता है ताकि वह सुरक्षित रहे। उसीप्रकार एक फल में नहीं बल्कि हर फल में बीज रखे गए हैं। यदि किसी

कारणवश कुछ बीज खराब हो जाएँ तो दुसरे बीज काम आएं।

दूसरी हिकमत यह है कि बीज या गुठली खुद कड़े होने से फल को नरम हो कर खराब होने से रोकते हैं। यदि बीज अंदर के भाग में न होते तो फल सड़ जाते और खराब हो जाते।

कई बीज ऐसे हैं जो खाने के काम आते हैं, और उनमें से तेल भी निकलता है। यह निकला हुआ तेल कई काम आता है। कई बीज एक दुसरे से भिन्न होते हैं। जैसे खजूर की गुठली

उसके बीचोबीच होती है और उसके ऊपर खजूर होता है जबकि अंगूर में बीज होते हैं। यह सब मनुष्य के आनंद और लाभ प्राप्ति के लिए होता है।

झाडों के विषय में दूसरी हिकमतें सुनों कि वर्ष में एक समय ऐसा मौसम आता है कि वृक्षों के सारे पत्ते झड़ जाते हैं, और उनकी डालियों में एक प्रकार की उष्मा पैदा होती है जिसकारण से अंदर से फल पैदा होते हैं। फिर मौसम बदलते ही पत्तियां फिर निकल आतीं हैं। देखो उनमें विभिन्न प्रकार के कैसे

कैसे फल लगते हैं और ये डालियाँ मनुष्यों को फल देती प्रतीत होती है।

उसी प्रकार फूलों को देखो, वे भी डालियों में उग कर मनुष्यों के समक्ष प्रस्तुत होते हैं। तो इस प्रकार की कलात्मकता किसने आयोजित की? सचमुच उस महान हकीम और बुद्धिमान ने पूरी हिकमत से इन वस्तुओं का आयोजन किया है। इस प्रकार आयोजन करने का यही कारण है कि मनुष्य फलों फूलों को देख कर उस महान मालिक की महान बुद्धिमत्तापूर्ण हिकमत के

विषय में विचार करे। बहुत आश्चर्य होता है उन लोगों के व्यवहार पर कि इतने अनगिनत अनुग्रहों के प्रति आभारी रहने के स्थान पर ये कृतघ्न लोग उन अनुग्रहों के प्रदाता का ही इनकार कर देते हैं।

अब तुम अनार पर गौर करो। देखो उसमें कितनी उत्तम युक्ति तथा हिकमत समाई है। उसके ऊपर की छाल दीवार के समान बनी होती है। अंदर के भाग में पतले पतले बारिक पर्दों के बीच दाने एकत्रित रहते हैं। जैसे किसी ने

अपने हाथों से इन्हें जमाया है। हर दाने पर भी पतली छाल लिपटी होती है। इस लिपटी हुई छाल में हिकमत यह है कि यह दाने के लिए भोजन के समान है। इसी के द्वारा दाने मोटे होते हैं। इतना ही नहीं इस झिल्ली के कारण दाने अलग अलग और सशक्त रहते हैं। इन सभी के ऊपर मोटा छिलका इस लिए रखा गया है ताकि फल सभी प्रकार की विपत्तियों से सुरक्षित रहे। अनार फल में अनेक प्रकार की विशेषताएं समाई है किन्तु जितनों का वर्णन मैंने किया है,

शिक्षा ग्रहण करने के लिए इतना ही काफी है।

फिर आपने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल, हर बेल या लता पर ध्यान दो। वे बहुत कमज़ोर और अशक्त झाड होने के बावजूद उनमें बड़े बड़े फल जैसे कद्दू, ककडी आदि लगते हैं। इनमें कितनी हिकमत रखी गई है। इतने कमज़ोर और दुबले पतले झाड़ में जब इतने बड़े फल उगाने का इरादा किया गया तो इन झाडों को धरती पर बिछा दिया गया। जिससे फल पकने तक बराबर सुरक्षित

रहें। यदि दुसरे वृक्षों के समान सीधा खड़ा वृक्ष होता तो ये फल अधिक बड़े होने या पूर्णतः पकने से पहले ही ज़मीन पर गिर पड़ते।

इसलिए ये वृक्ष ज़मीन पर बिछ जाते हैं। ताकि फलों का बोझ ज़मीन उठाले। तुम देखोगे कि कद्दू, तरबूज आदि की बेलें भी ज़मीन पर बिछी होती हैं। जैसे बिल्ली ज़मीन पर सोती है और उसके बच्चे आजू बाजू से उसका दूध पीते हैं।

इन बेल या लताओं वाले झाडों के लिए भिन्न ॠतुएँ नियत की गई है। इसलिए कि मनुष्य को उन ॠतुओं में इनके फल प्रिय लगते हैं और वह इन्हें शौक से खाता है। जो फल गर्मी के मौसम में उगते हैं और लोग उन्हें शौक से खाते हैं यदि वे फल ठण्ड के मौसम में उगे तो लोग उन्हें उतने शौक से नहीं खाते। यदि खाते भी तो उनमें बीमारी पैदा हो जाती है। कभी ठण्ड में ककड़ी उग आती है तो लोग उसे खाते नहीं है। जो लोग खाते हैं, नुक्सान उठाते है।

ऐ मुफज्ज़ल, तुम खजूर के वृक्षों को देखो इनमे दुसरे झाडों की अपेक्षा भिन्न हिकमत रखी है। इसमें नर और मादा की आवश्यकता पड़ती है। इन वृक्ष में कुछ वृक्ष नर होते हैं, उनमें फल नहीं लगते। मादा वृक्ष में फल लगते हैं। जब तक नर वृक्ष के फूल मादा वृक्ष पर छिडके नहीं जाते उच्च गुणवत्ता के फल पैदा नहीं होते।

खजूर के वृक्ष के तने को ऐसा बनाया गया है जैसा कपडा बुना जाता है। यह इसलिए कि यह अधिक कड़ा

और मज़बूत बने ताकि खजूर के बड़े बड़े गुच्छों का बोझ उठा सके। तूफानी हवाओं से टूटे नहीं। बेकार होने पर मकान आदि बनाने के काम आए। यदि उनमें पत्थरों के समान कड़ाई रखी जाती तो लकड़ी के समान उनकी घडाई न हो पाती और वे अधिक उपयोग में न आ पाते।

लकड़ी में भी बहुतसी विशेषताएं समाई है। लकड़ी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह पानी पर तैरती है। जिससे नाव और पानी के जहाज़ बनाए

जाते हैं। इन जहाज़ों में पहाड़ों के समान भारी बोझ भर कर ले जाया जाता है। उसी प्रकार मनुष्य को जहाज़ों में एक शहर से दुसरे शहर आने जाने में तथा व्यापार की वस्तुएँ लाने ले जाने में आसानी होती है।

प्रकरण - ४१

जड़ी बूटियों आदि का वर्णन

अब तुम जड़ी बूटियों के संबंध में विचार करो। हर जड़ी बूटी में भिन्न भिन्न विशेषता रखी गई है कि शरीर के जोड़ आदि में उतर कर व्याधि को ठीक कर रोगों को दूर कर देती है। कोई सूजन को दूर करती है तो कोई दर्द को दूर करती है।

तो इन जड़ी बूटियों में ऐसे गुण ऐसी अद्भूत विशेषता किसने प्रदान की? सचमुच उसी ने प्रदान की जिसने इनकी

रचना की। उसीने मनुष्य को इनकी विशेषताओं की जानकारी दी। क्या खुद ब खुद जड़ी बूटियों में ऐसी विशेषताएं पैदा हो सकती है? कदापि नहीं। यदि कोई यह समझे कि मनुष्य ने यह वस्तु अपनी बुद्धि और चातुर्य का प्रयोग कर के खोज निकाली है तो भला प्राणियों को इनकी विशेषताओं का पता कैसे चला? क्योंकि कितने ही शाकाहारी प्राणी ऐसे हैं जो जब वे ज़ख़्मी हो जाते है तो खुद अपना इलाज जड़ी बूटियों से करके ठीक हो जाते हैं। कई पक्षियों को कब्ज

हो जाता है तो वे समुद्र के खारे पानी की पिचकारी ले कर ठीक हो जाते हैं।

अन्य कई वनस्पतियां हैं जो जंगलों या मैदानों पर उगती हैं वे मनुष्य के काम नहीं आती। क्या वे बेकार हैं? नहीं वे वनस्पतियां जंगली प्राणियों के भोजन हेतु हैं। उनकी लकडियाँ जलाने के काम आती हैं। कई वृक्षों की छालों से रंग बनता है। इनमें बहुत से लाभ समाए हुए हैं।

कई वनस्पतियां बहुत हलकी तथा बेकार दिखाई देती हैं। उनमें भी कई

प्रकार के लाभ समाए हुए हैं। उनमें से कई वनस्पतियां कागज़ बनाने के काम आती हैं। कई से चटाई टोकरी आदि बनती है। कुछ वनस्पतियां कांच की सुरक्षा के लिए पेटी में भरी जाती है।

ऐ मुफज्ज़ल, इन वनस्पतियों में निहित लाभों से उपदेश ग्रहण करो। कई वृक्ष बड़े हैं कई छोटे हैं। इनमें से कई महत्वहीन तथा मूल्यहीन दिखाई देते हैं। कई बेकार प्राणी सूअर आदि हैं जिनमें मल तथा अपवित्रता भरी है इसके बावजूद ऐसी तुच्छ तथा हलकी वस्तु में

कैसे लाभ निहित है इसका विचार करो। उनका खाद खेती बाड़ी में डालने से खेती बहुत अच्छी होती है। यह लाभ इतना महत्वपूर्ण है कि ये वस्तुएँ अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती हैं। जब तक खेतों में खाद न डाला जाय उपज उतनी अच्छी नहीं होती। जिस वस्तु को मनुष्य दुर्गन्ध वाली तथा तुच्छ समझता है, मनुष्य जिनका तिरस्कार करता है उनमें ऐसे महत्वपूर्ण लाभ समाए हैं।

यह भी ध्यान रखो कि कितनी ही वस्तुएँ हैं जिनका महत्व उनकी कीमत

से सिद्ध नहीं होता बल्कि उनका महत्व अन्य प्रकार के लाभों से सिद्ध होता है। कई वस्तुएँ ऐसी हैं कि बाज़ार में उनका अधिक मूल्य नहीं होता किन्तु उन्हें ज्ञान की सभाओं में रखा जाय तो कोई ज्ञानी उसका मूल्य सारे संसार से अधिक आंक सकता है। सारांश यह कि तुम किसी भी वस्तु को मूल्य हीन या महत्वहीन न समझो। यदि रसायन शास्त्र के विद्‌वान को यह पता चल जाय कि मानव के मल में क्या

विशेषताएं छिपी है तो वह अत्यधिक कीमत दे कर उसे खरीद ले।

मुफज्ज़ल कहते हैं कि यहाँ तक बातचीत हुई तो ज़ोहर की नमाज़ का समय हो गया। मेरे स्वामी नमाज़ के लिए उठ खड़े हुए। और मुझ से फरमाया इंशाअल्लाह कल सुबह हमारे पास आना। मैं बहुत खुश खुश अपने घर गया। हज़रत ने कितना उत्तम ज्ञान मुझे प्रदान किया यह सोच कर मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया। वह रात बहुत खुशी से बीती।

प्रकरण - ४२

चौथी बैठक

मुफज्ज़ल अपने वादे के अनुसार इमाम की सेवा में उपस्थित हो गए। उन हज़रत ने उस महान अल्लाह की स्तुति बयान करना शुरू किया। एक दीर्घ स्तुति बयान करने के पश्चात फरमाया :

ऐ मुफज्ज़ल, मैंने तुम्हारे समक्ष सृष्टि की उत्पत्ति तथा उसमें एकत्रित वस्तुओं में निहित हिकमत का वर्णन विस्तार पूर्वक किया। और यह भी सिद्ध

किया कि कोई भी वस्तु खुद ब खुद निर्मित हो जाय यह सम्भव नहीं है। किसी महाबुद्धिमान शक्ति ने बहुत हिकमत तथा मस्लेहत के अनुसार इन सारी वस्तुओं का निर्माण किया है। मनुष्य, प्राणी, वनस्पति आदि की बनावट तथा उसमें निहित विशेषता तथा हिकमत का वर्णन किया कि यह उपदेश ग्रहण करने वालों के लिए आदर्श है।

अब मैं तुम्हारे समक्ष आपदाओं और विपत्तियों का वर्णन करता हूँ जो कभी कभी घटित हो जाती है। इन

आपदाओं के संबंध में नादान लोग समझते हैं कि ये किसी के भी काबू में नहीं है और ये दुर्घटनावश घटित होती है। अर्थात यदि ये आपत्तियां या आपदाएं किसी पैदा करने वाले की ओर से घटित होती है तो वह इन आपत्तियों को आने क्यों देता है। खुद अपनी बनाई हुई रचना पर मुसीबतें क्यों आने देता है?

मुअत्ताला और मानविया संप्रदाय वाले लोगों की मान्यता है कि ये आपत्तियां तथा आपदाएं सर्वशक्तिमान

अल्लाह की ओर से नहीं घटित होती। इस संप्रदाय वाले लोग मौत को बुरी घटना समझते हैं। इसीप्रकार नेचरी या नास्तिक लोग कहते हैं कि ये चीज़ अपने आप दुर्घटनावश घटित हो गई है।

मैं इन सारी बातों का खंडन करता हूँ तथा इन बातों की सूक्ष्मताओं का वर्णन कर के समझाता हूँ। सुनों, यदि कोई पैदा करने वाला न हो, कोई इस संसार को आयोजन पूर्वक बनाने वाला न हो, आपत्तियां और आपदाएं अपने आप आतीं हों तो ये थोड़े प्रमाण में और

अत्यंत कम समय के लिए क्यों आतीं है? एकदम बड़ी आपत्ति क्यों नहीं आती? जैसे आकाश धरती पर क्यों नहीं गिर पड़ता? धरती धंस क्यों नहीं जाती? सूर्य किसी दिन उदय हुए बिना क्यों नहीं रहता? नदी नाले इतना क्यों नहीं सूख जाते कि होंठ भिगाने के लिए भी पानी न रहे? हवा पूर्णतः बंद क्यों नहीं हो जाती? समुद्र का पानी धरती पर फ़ैल कर धरती को डूबा क्यों नहीं देता?

तो ऐसा कोई है जो इन बड़ी बड़ी विपत्तियों तथा आपदाओं को आने से रोके हुए है और तदबीर से काम लेता है। थोड़ी थोड़ी विपत्तियां थोड़े थोड़े समय के लिए आती हैं तो ये कहते हैं कि इनपर नियंत्रण रखने वाला तथा इन पर सत्ता रखने वाला कोई नहीं है। किन्तु अपनी व्यापक द्रष्टि का उपयोग कर के यह क्यों नहीं कहते कि इन बड़ी बड़ी विपत्तियों को रोकने वाला कोई है।

इसके बावजूद कि यह खुली बात है कि इस जगत रुपी बड़े कारखाने को

नियम पूर्वक चलाने वाला कोई होना चाहिए जो बड़ी विपत्तियाँ आने नहीं देता। यदि ऐसी एक भी विपत्ति आती तो यह संसार नष्ट हो जाता। जितनी भी विपत्तियां या आपदाएं आतीं हैं वे मनुष्य को डराने के लिए है कि जिससे वह बुरे कृत्य करने से रुकें और बड़ी विपत्ति के डर से पाप कर्म कने से बचें।

अब मैं तुम से पूछता हूँ कि हैजा तथा अन्य महामारियां हमेंशा क्यों नहीं रहतीं? कभी कभी आकर तुरंत लुप्त

क्यों हो जाती हैं? यदि इन बीमारियों कि हवा हमेंशा चलती रहे तो संसार नष्ट हो जाता। ये तो कभी कभी आती है वह भी नसीहत करने और डराने के लिए। यह इसलिए है कि सभी वस्तुओं तथा घटनाओं पर संपूर्ण सत्ता तथा प्रभुत्व रखने वाला सर्वशक्तिमान अल्लाह इन सारी घटनाओं को नियंत्रित किए हुए है और बड़ी विपत्तियों को रोके हुए है।(उदा: धरती के गुरुत्वाकर्षण शक्ति का नष्ट हो जाना, अंतरिक्ष में घुमते अनगिनत आवारा ग्रहों का धरती

से टकरा जाना आदि।) इन विपत्तियों में से एक भी विपत्ति आ जाय तो संसार हमेंशा हमेंशा के लिए नष्ट हो जाय और यदि कभी विपत्ति न आए तो मनुष्य घमंडी हो जाए।

पृथ्वी वासियों को डराने के लिए तथा नसीहत करने के लिए कभी कभी थोड़े समय के लिए विपत्तियाँ भेजी जाती है। जब मनुष्य उन बलाओं से घबरा जाता है और उन बलाओं से मुक्ति की आशा छोड़ देता है तो वे बलाएं और आफतें दूर हो जाती हैं। इस

प्रकार इन विपत्तियों का आना नसीहत के लिए है तथा उनका दूर हो जाना रहमत के लिए है।

जिस प्रकार मानविया संप्रदाय वाले लोग इन आपदा और विपत्तियों को बुरा समझते हैं उसी प्रकार मोअत्तला संप्रदाय के लोग भी इन्हें निरर्थक समझते हैं। वे इन विपत्तियों और आपदाओं की वास्तविकता और उनके रहस्य को समझते ही नहीं है। वे यूं ही कहते रहते हैं कि यदि इस संसार का कोई रचयिता या मालिक होता और वह

दयावान होता तो संसार में ऐसी अनहोनी दुखदायी घटनाएं घटित न होती। ऐसा अभिप्राय रखने वालों का आशय यह है कि संसार में किसी भी प्रकार की विपत्तियां, दुखदायी घटनाएं होनी ही नहीं चाहिए। किन्तु वे जानते नहीं कि उनकी धारणा के अनुसार किया जाता तो मनुष्य की स्थिति अधिक बुरी हो जाती, मनुष्य स्वार्थी तथा घमंडी बन जाता अपना लोक व परलोक बिगाड़ बैठता।

जैसे तुम ऐसे बहुत से ऐशो आराम में परवान चढ़े लोगों को देखते हो कि उनकी स्थिति कितनी बुरी हो जाती है। कई तो (घमंड तथा अहंकार में इतने ग्रस्त हो जाते हैं कि) खुद मनुष्य है यह भी भूल जाते हैं। यह भी भूल जाते हैं कि किसी ने उन्हें जन्म दिया और उनका पालनपोषण किया है।

कई घमंडी धनवान स्वार्थ में इतने ग्रस्त हो जाते हैं कि दूसरों से सम्मान पाना अपना अधिकार समझते हैं, कुछ तो खुद को भगवान तक कहलवाते हैं।

क्या ऐसे उदाहरण तुम्हें याद नहीं है। ऐसे घमंडी लोग अपनी वास्तविकता भूल जाते हैं। नहीं सोचते कि उनपर भी मुसीबत आ सकती है। विपत्तियां उनपर भी पड़ सकती हैं। दीन हीन गरीब का ध्यान नहीं रखते, उनपर दया नहीं दिखाते, किसी वृद्ध और कमज़ोर व्यक्ति को सहारा नहीं देते। किसी विपत्ति से ग्रस्त व्यक्ति की मदद नहीं करते। ऐसे लोगों को शिक्षा तभी मिलती है जब खुद उनपर विपत्ति आती है। जब वे खुद विपत्तियों का मज़ा चखने

लगते हैं तब उनको दूसरों की तकलीफ का एहसास होता है और वे दूसरों सहायता करना सीखते हैं। यदि उनपर विपत्तियां नहीं आती तो वे घमंडी ही रहते, किसी पर दया नहीं दिखाते। ऐसी स्थिति में उनका सांसारिक जीवन तथा परलोक का जीवन दोनों बर्बाद हो जाते। लोग उनसे घृणा करने लगते, उनके वैभव के नष्ट होने की कामना करते, इतनी अधिक शत्रुता करते कि खुद उनको हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते। ऐसे स्वार्थी और घमंडी लोगों के कारण

व्यापार व्यवसाय में रुकावटें आतीं और संसार की व्यवस्था में खराबी पैदा होती।

जो लोग इन विपत्तियों तथा आपदाओं से होने वाले लाभों से इनकार करते हैं और इन्हें निरर्थक समझते हैं वे लोग उस बच्चे के समान है जो कड़वी दवा को खराब कहता है। बीमारी में स्वादिष्ट भोजन से उसे रोका जाता है तो वह क्रोधित होता है, असभ्यता तथा अवज्ञा करता है, मौज मस्ती और खेलकूद पसंद करता है। अच्छा अच्छा खाना पीना चाहता है। ऐसे व्यवहार से

बहुतसी खराबियां पैदा होती है। गरिष्ठ भोजन अधिक खाने से बीमारियाँ पैदा होती हैं, ज्ञानार्जन करने के लाभ तथा कडवी दवा के गुण नहीं समझते।

जो नास्तिक कहते हैं कि मनुष्य को पापों से मुक्त क्यों नहीं रखा गया? यदि पाप करने की शक्ति ही इनमें नहीं रखी जाती तो इन्हें डराने के लिए शिक्षा देने के लिए ऐसी विपत्तियां भेजने की आवश्यकता न पड़ती। तो इस बात का उत्तर यह है कि यदि मनुष्य को स्वतंत्र नहीं रखा जाता, मजबूर तथा लाचार

बना कर अच्छे कर्म करवा लिए जाते तो यह कोई तारीफ़ के काबिल बात तो न हुई।

(जब मनुष्य स्वतंत्र हो, पाप करने की शक्ति भी हो, पाप करने के साधन भी उपलब्ध हों, इन सब के बावजूद ईश्वर की प्रसन्नता के उद्देश्य से पाप कर्म न करे तब वह तारीफ़ के काबिल है। किन्तु यदि पाप करने की शक्ति ही न हो और पाप न करे तो वह तारीफ़ के पात्र न होगा।)

यदि वे लोग कहें कि किसी भी प्रकार के परिश्रम के बिना लोगों को सुविधा मिले इसमें क्या आपत्ति है? अच्छा कार्य करके प्रशंसा का पात्र न हुआ तो क्या हुआ? इसका उत्तर यह है कि किसी संपूर्ण बुद्धिमान तथा स्वस्थ मनुष्य से पूछ कर देखो कि बिना कोई कार्य किये, बिना किसी प्रयत्न के, बिना किसी अधिकार के आवश्यक वस्तुएँ मिलती रहें तो उसको स्वीकार्य होगा? उसे बहुत सी वस्तुएँ बिना किसी अधिकार के मिले इसकी बजाय अपनी

मेहनत से थोड़ी वस्तुएँ मिले इसमें अधिक खुशी होगी।

इसी प्रकार आखेरत की नेअमतें (मरणोपरांत जीवन में) इस संसार में की गई थोड़ी मेहनत के बदले मिले उसीमें लोग खुश रहेंगे।

मनुष्य को दो प्रकार की नेअमतें प्रदान की गई है:इस संसार में जिसने प्रयत्न किये हों उसके लिए बहुत सा सवाब (पुण्य) नियत किया गया है।जिसका मार्गदर्शन किया गया वह प्रयत्न तथा मेहनत कर के प्राप्त करे।

खुद मेहनत करके प्राप्त करे। खुद मेहनत करने पर उसे जो प्रतिफल मिलेगा तो उसे संपूर्ण प्रसन्नता होगी।

(यह तो स्वाभाविक बात है कि किसी व्यक्ति को बिना मेहनत के वह वस्तु प्राप्त हो तो उस वस्तु की कद्र नहीं होती। किन्तु मेहनत और अत्यधिक प्रयत्न करने पर जो वातु प्राप्त होती है व्यक्ति उसकी अत्यधिक कद्र करता है।)

पाप कर्म से बच कर सद्कर्म तथा उपासना की तकलीफें सहन करने के बाद जो नेअमतें प्राप्त हों उनकी कद्र

बहुत होगी। किन्तु यदि मनुष्य कोई प्रयत्न न करे, कोई तकलीफ न उठाए, और उसे आखेरत की नेअमत प्राप्त हों तो उसकी कोई कद्र न होगी।

फिर आपने फरमाया कि यदि ये लोग कहें कि कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्हें किसी भी प्रकार के अधिकार के बिना कोई अच्छी वस्तु मिले तो उन्हें खुशी होती है तो उसी प्रकार आखेरत की नेअमतें मुफ्त मिलने से उन्हें खुशी नहीं होगी क्या?

तो इसका उत्तर यह है कि जब मनुष्य को यह विश्वास हो जायगा कि उसे बिना किसी मेहनत और तकलीफ के आखेरत की नेअमतें मिलेगी ही तो वह हराम कामों से नहीं बचेगा। खराब कृत्य करने से नहीं झिझकेगा। इससे संसार में बहुत खराबी फ़ैल जायगी। एक दुसरे को अपनी जान, माल, बच्चों के विषय में ज़रा भी भरोसा नहीं रहेगा। क्योंकि जब किसी सज़ा या पुरस्कार मिलने की कोई आशा नहीं रहेगी तो किसी भी प्रकार का कोई लाभ या डर

नहीं रहेगा। लोग बहुत तकलीफ में पड़ जाएँगे। न्याय, इन्साफ की बात ही नहीं रहेगी। सारे काम बुद्धिमत्ता और क़ानून के विरुद्ध होने से लोग धिक्कारने लगेंगे।

ये (नास्तिक) लोग दोनों तरफ से ऐतेराज़ करते हैं। इनका एक ऐतेराज़ यह भी है कि संसार में नैसर्गिक आपदाएं तथा विपत्तियां सामान्य रूप से सभी लोगों, सज्जन दुर्जन दोनों प्रकार के लोगों को आहत करती हैं। कई बार तो ऐसा होता है कि सज्जन लोग उन बलाओं में गिरफ्तार हो जाते हैं और

दुर्जन लोग बच जाते हैं। यह कार्य कोई हिकमत और तदबीर से पुर नहीं कहा जा सकता। (अर्थात यदि यह मान लिया जाय कि यह संसार किसी महाबुद्धिमान शक्ति ने बनाया है और वह इसे चला रहा है तो इसमें इन्साफ और हिकमत कहाँ है?)

इसका उत्तर यह है कि यह आपदा तथा विपत्ति सज्जन और दुर्जन दोनों प्रकार के दोनों प्रकार के लोगों पर आने पर उस महान अल्लाह और हकीम ने

इन दोनों प्रकार के लोगों की भलाई को ध्यान में रखा है।

सज्जनों को जो विपत्तियां या मुसीबतें आती हैं उनका उन्हें बहुत अच्छा प्रतिफल दिया जाता हैं और कई बार उनकी नष्ट हुई संपत्ति भी लौटाई जाती हैं ताकि वे अनुग्रहित तथा कृतज्ञ हों। दुर्जनों पर विपत्तियां आने से उनका अहंकार थोड़ा कम हो जाता है। कुकर्म करने से वे थोड़ा रुकते हैं। उसीप्रकार जो लोग इन विपत्तियों या मुसीबतों से बच जाते हैं वह भी उनकी भलाई के लिए

है। उनमें से सज्जन लोग मुसीबतों से बचने के कारण खुदा का शुक्र अधिक प्रमाण में करते हैं तथा उनकी श्रद्धा में वृद्धि होती है और बुरे लोग जो विपत्तियों से बचते हैं तो यह उनके नसीहत ग्रहण करने का कारण बनता है कि खुद बुरे होने के बावजूद उस महान दयावान अल्लाह ने उन्हें मुसीबतों से बचाया ताकि वे बुरे कर्म छोड़ने पर तत्पर हो जाएँ इसके अतिरिक्त जैसे अल्लाह ने उनके बुरे कर्मों के अनदेखा

कर दिया, वे भी दूसरों की गलतियों को क्षमा करने को तय्यार हो जाएँ।

शायद कोई ऐतराज़ करने वाला यह भी कह सकता है बलाएं तो माफी संबंधित बयान हुई है किन्तु कई बलाएं व्यक्ति के शरीर पर भी आतीं हैं जिससे वह नष्ट हो जाता है। जैसे जल जाता है, डूब जाता है, ज़मीन में दब जाता है तो ऐसी स्थिति में उपदेश ग्रहण करने की गुंजाईश ही कहाँ रह जाती है?

इसका उत्तर यह है कि इसमें भी दोनों प्रकार के लोगों के लिए भलाई

और लाभ है। यदि सज्जन लोग ऐसी विपत्ति में ग्रस्त हो कर इस संसार से चले गए तो उनका यह लाभ हुआ कि वे सभी सांसारिक दुखों और तकलीफों से छुटकारा पा गए।(अब वे हमेंशा आराम और आसाईश में रहेंगे) और बुरे लोगों का यह लाभ है कि वे अधिक बुरे कर्म कर के अधिक बड़ी सज़ा के पात्र बनने से बच गए।

अर्थात उस महान अल्लाह ने जो कुछ यहाँ योजनाबद्ध किया है वह सारे

का सारा अपने बन्दों की अधिकाधिक भलाई के लिए ही है।

जैसे किसी आंधी में कोई बड़ा पेड़ उखड जाय तो कई बुद्धिमान लोग उससे विभिन्न प्रकार के लाभ प्राप्त करते हैं उसी प्रकार लोगों के जान माल पर विपत्ति आने पर भी मानवता को विभिन्न प्रकार के लाभ होते है।

कोई यह प्रश्न करे कि विशेषकर मनुष्यों पर ही विपत्तियां क्यों आती है? तो इसका उत्तर यह होगा कि मनुष्य यदि लंबी अवधि तक बिना विपत्ति के

जी ले तो पाप कर्मों की ओर भटक जाता है। बुरे लोग बुरे कर्म अधिक प्रमाण में करते हैं तथा सज्जन लोग सद्कर्म करने में आलस करते हैं। इसी कारण मनुष्य अमन चैन में हो तभी विपत्ति आ पड़ती है और मनुष्य चौंक पड़ता है, और पाप कर्मों से बचता है। सारांश यह कि यदि किसी प्रकार की तकलीफ न दी जाय तो मनुष्य अवज्ञा में सीमा पार कर जाता है और पाप कर्मों में उलझ जाता है। जैसे पुरातन लोगों ने किया। यहाँ तक कि उन्हें

संपूर्ण रूप से नष्ट कर संसार को उनसे पाक करने की आवश्यकता पडी।

इन नास्तिकों के दिलों में यह बात बैठ गई है। इनकी आकांक्षा यह है कि मौत और जीवन का अंत चाहिए ही नहीं। सभी लोग को हमेंशा के लिए जीवित रहना चाहिए और किसी पर भी कोई बला या विपत्ति आना नहीं चाहिए थी।

किन्तु ऐसा तभी हो सकता था यदि उन्हें पैदा करने वाला कोई न

होता। (किन्तु ऐसा नहीं है इसलिए मनुष्य मरता है।)

इसका उत्तर यह है कि यदि समस्त मनुष्य हमेंशा के लिए जीवित रहते और उनमें से कोई नहीं मरता तो यह संसार लोगों के रहने के लिए बहुत छोटा पड़ता। यहाँ तक कि लोगों के रहने तथा खेती बाड़ी आदि के लिए जगह नहीं बचती। अभी वर्तमान में इतनी विशाल धरती उसमें बहुत जगह होने के बावजूद, लोगों के मरते रहने और उनके स्थान खाली होते रहने के

बावजूद लोग जगह के लिए आपस में लड़ते भिड़ते रहते हैं यहांतक कि खूँरेजियाँ होती रहती है। तो कल्पना करो यदि मनुष्य न मरते और सिर्फ बढते रहते तो उनकी क्या स्थिति होती? वे कहाँ मकान बनाते और कहाँ खेती बाड़ी करते? ऐसी स्थिति में उनके हृदय में लोभ अत्यधिक बढ़ जाता, हृदय कठोर हो जाता। (एक तो मौत का डर नहीं और फिर रहने के लिए जगह का कम पड़ना-फिर बाक़ी क्या रह गया?)

यदि लोगों को यह जानकारी हो जाय कि अब मरना तो है ही नहीं तो कोई व्यक्ति थोड़ी वस्तु पर संतोष न करता। किसी मांगने वाले को कुछ देना भी पसंद नहीं करता। यदि कोई आफत या मुसीबत आती तो धैर्य न रख पाता। अर्थात हमेंशा जीवन के बहुत बुरे परिणाम आते, लोग लंबे जीवन जीने से तंग आजाते और मरने की तमन्ना करते।

यदि नास्तिक कहें अनिच्छा वाली बात न होती और लोग बीमार न पड़ते

तो मौत न मांगते (अर्थात केवल बुढापे और बीमारी के कारण मारना चाहते हैं) तो इसका उत्तर वही है जो हम ऊपर दे आए हैं। कि वे सख्त घमंडी और अहंकारी बन जाते और ऐसे कुकृत्य करते कि धार्मिक व सांसारिक जीवन दोनों बर्बाद कर बैठते।

यदि वे कहते कि क्योंकि संतानोत्पत्ति नहीं होती तो उनके लिए स्थान की समस्या नहीं पैदा होती तो इसका उत्तर यह है - थोड़े से लोग अल्लाह के अनुग्रह का लाभ लेते तथा

अधिक लोग अल्लाह के अनुग्रह से वंचित रह जाते। उसी प्रकार वह मालिक केवल एक समय के कुछ विशेष व्यक्तियों को पैदा करे फिर उसमें वृद्धि न करे यह उसके कमाल तथा हिकमत के विरुद्ध है। दर्शन शास्त्र में संसार के उद्‌भव के विषय में अवलोकन करो कि इसकी चर्चा बहुत गहरी और विषय अत्यंत नाज़ुक है।

यदि वे कहें कि समस्त रचना को, जितनी उसने पैदा की है, और जो उसे पैदा करनी है सभी को एक ही काल में

पैदा करता तो कोई रचना उसके अनुग्रह से वंचित नहीं रहती।

इसका उत्तर यह है कि यदि ऐसा किया जाता तो वही समस्या फिर खडी होती अतः मकानों तथा कृषी कार्य के लिए स्थान की कमी हो जाती। एक दुसरे के वंश में पैदा करने की बजाय सबको एक साथ पैदा किया जाता तो एक दुसरे के रिश्ते नाते के कारण जो प्रेमभाव है वह कहाँ से आता? मुसीबतों में कौन एक दुसरे की मदद करता?

संतानोत्पत्ति और उनके पालनपोषण में जो आनंद है वह कहाँ से मिलता?

सारांश यह कि इस चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि उस जगत के स्वामी ने अपनी हिकमत और संपूर्ण सामर्थ्य से जो वस्तुएँ एकत्रित की है उसके विरुद्ध चाहे जैसी कल्पना तथा विचारों के घोड़े दौड़ा लें सारी कोशिशें बेकार, मूर्खता भरी और गलत है।

यदि कोई आलोचक इस प्रकार प्रश्न करे कि कैसे पता चले कि इस संसार को कोई बनाने वाला और चलाने

वाला है? क्योंकि हम देखते हैं कि बाहुबली लोग सफल हो जाते हैं; सत्ताधारी अनाचार से दूसरों के अधिकारों का हनन करते हैं, अशक्त व कमज़ोर लोग पीड़ित और वंचित रहते हैं। जो लोग प्रामाणिकता से रहते हैं वे विपत्ति में फंस जाते हैं। जो किसी चीज़ की परवाह नहीं करते वे मज़े में रहते हैं। जो लोग अत्याचार व कुकर्म करते हैं उन्हें तुरंत सज़ा नहीं मिलती। ऐसे ऐसे दृश्य देखने को मिलते हैं कि यदि इस संसार को चलाने वाला कोई होता तो

ऐसा नहीं होता। जो लोग प्रामाणिकता से चलते, सद्कर्म करते, उन्हें रोज़ी देता, और कुकर्म करने वालों को रोज़ी से वंचित रखता। असहाय लोगों पर अत्याचार होने से रोकता, और गलत काम करने वालों को जल्द सज़ा देता।

इसका उत्तर यह है कि इस प्रकार सख्ती की जाती तो नेक लोगों की कद्र न रहती। यह विशिष्ठता तो केवल मनुष्यों को प्रदान की गई है कि वह अपने सच्चे रचयिता को पहचान कर उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने हेतु खुद

को बुरे कामों से बचाता है। यदि उसे बलपूर्वक बुरे कामों से रोका जाता तो यह विशिष्ठता बाक़ी न रहती। ऐसी स्थिति में मनुष्यों और अन्य प्राणी में कोई अंतर न रहता। जानवरों को अंकुश में रखने के लिए भोजन आदि की लालच तथा यातना आदि की धमकी का उपयोग किया जाता है। (यदि ऐसा ही व्यवहार वह पालनहार मनुष्यों के साथ करता तो मनुष्य प्राणियों से श्रेष्ठ न रहता तथा अच्छे कर्मों के अच्छे प्रतिफल तथा बुरे कर्मों के बुरे प्रतिफल

का वादा निरर्थक हो जाता तथा मनुष्यों की उत्पत्ति निरर्थक हो जाती।) उपरोक्त स्थिति में कोई भी व्यक्ति सवाब या अज़ाब के उद्देश्य से कर्म न करता तथा जानवरों ही के समान अल्लाह की मरणोपरांत की नेअमतों को पहचान न पाता; लालच व भय से सारे कर्म करता। अच्छे और बुरे प्रतिफल का रास्ता बंद हो जाता, तुरंत प्रतिफल के उद्देश्य से अच्छे कर्म किये जाते, तुरंत सज़ा के डर से अत्याचार करने से रुकते। यदि ऐसा होता तो मरणोपरांत

की नेअमतों का कोई पात्र (हकदार) न होता।

ऐसा भी नहीं है कि अच्छे और बुरे कर्मों का बदला इस संसार में कभी नहीं मिलता। विशेष स्थिति में मस्लेहत के अनुसार अच्छाई और बुराई का बदला कुछ प्रमाण में इस संसार में भी दिया जाता है ताकि अच्छे कर्म करने वालों की हिम्मत बढ़े और बुरे कर्म करने वाले लोग डरें। जैसे फिरऔन को डुबो दिया गया, बख्तनसर को मस्ख कर दिया गया (शक्ल बिगाड़ दी गई) आदि।

कई दुष्ट तथा अत्याचारियों को किसी विशेष मस्लेहत के कारण सज़ा देने में देर की जाती है। उसी प्रकार कई सज्जनों को उनके सद्कर्मों का बदला इस संसार में नहीं दिया जाता। इन बातों से यह साबित नहीं होता कि इस संसार का कोई बनाने वाला और चलाने वाला नहीं है। ऐसे उदाहरण तो इस संसार में भी मिल जाते हैं। (कि सांसारिक राजा किसी अपराधी को सज़ा देने में ढील करते हैं या किसी अच्छे

कार्य करने वाले को इनाम देने में देर करते हैं।)

जब इस संसार के लोग अच्छाई और बुराई का बदला देने में अपनी मस्लेहत से देर या जल्दबाज़ी करते हैं तो उनके लिए कहा जाता है कि वे मस्लेहत अनुसार योग्य व उचित कर रहे हैं तो फिर इस सृष्टि का सम्राट (अल्लाह) सज़ा या इनाम देने में देर करे तो यह क्यों नहीं कहा जा सकता कि वह मस्लेहत अनुसार सही कर रहा है।

जब बड़ी बड़ी निशानियाँ गवाही दे रही है और बुद्धि भी स्वीकार कर रही है कि इस संसार को बनाने वाला कोई तो होना ही चाहिए जो अपनी रचना के साथ मस्लेहत अनुसार व्यवहार करे, उसकी तदबीर से उसे कोई रोक या हटा न सके। बुद्धि भी यही कहती है कि वह अलौकिक कारीगर जो बनाता है उसे अपूर्ण नहीं रहने देता, पूर्ण करता है। अज्ञानी या असमर्थ ही अपनी कलाकृति को अपूर्ण और अधूरा छोड़ सकता है किन्तु उस मालिक के लिए ऐसी कोई

समस्या नहीं है। और वह परिपक्व है किसी को अकारण तकलीफ नहीं देता।

जो अशक्त या असमर्थ हो उससे ऐसी महान कलाकृति (संसार) की रचना संभव नहीं है, और जो अज्ञानी हो (अर्थात संपूर्ण ज्ञानी तथा ज्ञान की चरम सीमा तक पूर्णतः अवगत न हो) उसे हिकमत के ऐसे गुप्त और सत्य के रास्ते मिल नहीं सकते।

उपरोक्त चर्चा से यह ज्ञात होता है कि इस संसार का रचयिता सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ, तथा संपूर्ण सामर्थ्यवान है। वह

जो भी कार्य करता है हिकमत तथा मस्लेहत से परिपूर्ण करता है। यह बात और है कि सामान्य लोग उसकी मस्लेहत को समझ नहीं पाते कि वह फलां फलां कार्य क्यों करता है किन्तु जब उसकी मस्लेहत और तदबीर की जानकारी होती है तब बुद्धि गवाही देती है कि जो कार्य अल्लाह ने किया वह अत्यंत सही कार्य था। जैसे परीक्षा। परीक्षा समाप्त होने के बाद सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

यदि तुम्हे किसी दवा के संबंध में कोई संदेह हो और किसी रीति से यह स्पष्ट हो जाय कि उसका गुण गर्म है या ठंडा है तो तुम्हारा संदेह दूर हो जायगा और उस दवा की विशेषता की संपूर्ण खात्री हो जायगी। उसीप्रकार उस महान अल्लाह के कार्यों की मनुष्य को खात्री हो जाती है क्योंकि उसके कार्य हिकमत तथा मस्लेहत से परिपूर्ण हैं। अल्लाह के अस्तित्व तथा उसके कार्यों के समुचित बुद्धिमत्तापूर्ण तथा योग्य होने के इतने अधिक प्रमाण है जिनकी

गिनती भी संभव नहीं है इसके बावजूद ये अज्ञानी (नास्तिक लोग) हैं कि बुद्धिमान तथा सामर्थ्यवान अल्लाह के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते।

सुनों यदि आधी सृष्टि और उसमें की वस्तुएँ भी यदि स्पष्ट करें कि ये चीज़ें योग्य तथा पद्धतिनुसार नहीं है तब भी ज्ञान व बुद्धि यह स्वीकार नहीं कर सकती कि इस संसार का बनाने वाला और चलाने वाला कोई नहीं है; इसलिए कि सृष्टि का दूसरा आधा हिस्सा यह तकाजा करेगा कि इस संसार का बनाने

वाला और चलाने वाला है वह भी संपूर्ण बुद्धिमान, सर्वज्ञ तथा सामर्थ्यवान है।

जबकि सृष्टि का आधा भाग ही नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि गवाही देती है कि उसे हिकमत व तदबीर से बनाया गया है। हर वस्तु से यह स्पष्ट होता है कि इस संसार का कोई रचयिता और पालनकर्ता है। ये ऐसे अटूट प्रमाण है जो हमें यह मानने पर मजबूर करते है। जब विचार और चिंतन किया जाता है तब दिखाई देता है कि ये समस्त वस्तुएँ कितनी सुंदरता और कलात्मकता से

एकत्रित की गई है। यहाँ तक कि हमें एक भी वस्तु ऐसी नहीं दिखाई देती कि जिसमें कोई अपूर्णता या विकृति दिखाई दे।

ऐ मुफज्ज़ल, सुनों, यूनानी भाषा में इस संसार का प्रसिद्ध नाम कास्मोस है जिसका अर्थ सुंदरता या शोभा होता है। इसीप्रकार दार्शनिक और जो विद्‌वान दार्शनिक होने का दावा करते हैं उन्होंने भी धरती के ऐसे ही नाम रखे हैं। जब सारी वस्तुएँ हिकमत और तदबीर की श्रेष्ठ रीति से एकत्रित की गई है तो उस

स्थान का नाम ऐसा ही रखा जाना चाहिए।

मुझे उन लोगों पर बहुत आश्चर्य होता है जो चिकित्सा शास्त्र के नियमों को स्वीकार करते हैं और उनमें खामियां नहीं निकालते। जबकि उनमें खामियां देखते हैं। इस संसार की वस्तुओं के बारे में कहते हैं कि ये अपने आप बन गई। जो लोग दार्शनिक होने का दावा करते हैं उनपर तो और अधिक आश्चर्य होता है कि वे सृष्टि की रचना के नियमों को तो जानते नहीं और रचयिता की

आलोचना करते हैं। इससे अधिक आश्चर्यचकित मैं उन लोगों से होता हूँ जो ज्ञान के रहस्यों को जानने का दावा करते हैं और कहते हैं इस सृष्टि की रचना में कई भूल तथा खामियां हैं। ऐसा कह कर वे उस महान तथा अधिकतम सम्मानित ईश्वर को अज्ञानी प्रमाणित करना चाहते हैं।

इन सभी लोगों की अपेक्षा मैं उन लोगों से अधिक आश्चर्य चकित होता हूँ जो अल्लाह को बुद्धि से तो पहचान नहीं पाते और आँखों से देखने की इच्छा

रखते हैं। जब वह आँखों से दिखाई नहीं देता तो कहते हैं कि अल्लाह है ही नहीं। कहा करते हैं कि हमारी समझ में क्यों नहीं आता? हमारी बुद्धि यह बात क्यों स्वीकार नहीं करती? वे लोग यह जानते नहीं कि ईश्वर इस बात से अधिक महान तथा श्रेष्ठ है कि उनकी बुद्धि में आ जाय। जैसे आँख अपनी सीमा से बाहर की वस्तुओं को नहीं देख पाती।

फिर आप ने फरमाया, तुम किसी पत्थर को हवा में तैरता हुआ देखोगे तो ज़रूर यही समझोगे कि इस पत्थर को

किसी ने फेंका है। जबकि आँखों से तो तुमने केवल पत्थर को देखा है, फेंकने वाले को नहीं। आँख इससे आगे जान नहीं पाती किन्तु जब उसके साथ बुद्धि जुड़ जाती है तो वह कहती है कि पत्थर भारी होने के कारण किसी के फेंके बगैर हवा मे तैर नहीं सकता। इसलिए निश्चित रूप से इसका फेंकने वाला कोई होना चाहिए। इसी प्रकार बुद्धि भी उस रचयिता अल्लाह के संज्ञान (मारेफत) में अपनी सीमा तक पहुँच कर रुक जाती है। आगे नहीं बढ़ सकती। बुद्धि कहती है

शरीर में आत्मा है। किन्तु उसने आत्मा को आँख से देखा नहीं है। उसी प्रकार दूसरी किसी चीज़ से आत्मा का अस्तित्व जाना नहीं जा सका। इसके बावजूद बुद्धि कहती है शरीर में आत्मा है। वही बुद्धि आँख से देखे बगैर संसार के रचयिता को जान और पहचान सकती है और कह सकती है कि सृष्टि का कोई रचयिता है।

आलोचना करने वाले कहते हैं कि कमज़ोर बन्दों को उसने क्यों ऐसी तकलीफ दी कि बुद्धि की बारीकी से

उसका संज्ञान प्राप्त करें, जबकि बंदा अपनी बुद्धि के संपूर्ण उपयोग के बावजूद अल्लाह को संपूर्ण से पहचान नहीं सकता। उसने अपने बन्दों को अपने पहचानने की उतनी ही तकलीफ दी है जितनी उनमें शक्ति है। जहाँ तक उनकी बुद्धि पहुँच सकती है और वह यह है कि उसकी कुदरत की निशानियों को देख कर, उनपर चिंतन कर, उसपर आस्था रखे फिर उसके आदेशों तथा सूचना के अनुसार कर्म करे। बन्दों को

ऐसा कर्तव्य नहीं सोंपा गया है कि अल्लाह को सम्पूर्ण पहेचाने।

कोई सम्राट अपनी प्रजा से यह अपेक्षा नहीं करता कि प्रजा यह देखे और जाने कि राजा लंबा है या ठिंगना, गोरा है या सांवला, बल्कि वह तो केवल यह चाहता है कि प्रजा उसे सत्ताधारी समझे और उसके आदेशों का पालन करे।

यदि कोई व्यक्ति राजा के महल के दरवाज़े पर आकर कहे कि ऐ राजा तू बाहर आ मैं तुझे सही तरीके से देख

लूं, पहचान लूं, फिर तेरे आदेशों का पालन करूँगा। तो वह व्यक्ति दंड का पात्र ठहरेगा। यही स्थिति उस व्यक्ति की है जो यह कहता है जब तक अल्लाह को आँख से देख नहीं लूँगा तब तक उसके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करूँगा।

यदि वह तुम पर ऐतराज़ करे कि कि तुम जो अल्लाह के गुणों का वर्णन करते हो कि वह दयावान है, करीम है, कृपावान है आदि वह किस तरह? तो इसका उत्तर यह है कि हम अल्लाह के

गुणों को संपूर्ण रूप से जानते नहीं है किन्तु उसकी निशानियों को देख कर यह स्वीकार किये बिना भी नहीं रह सकते। जैसे हम जानते हैं कि वह विद्वान है किन्तु वह किस तरह ज्ञानी है हम संपूर्ण रूप से नहीं जानते। उसीप्रकार हम जानते हैं कि वह दया करने वाला है, संपूर्ण सक्षम है आदि। जैसे आसमान को देखते हैं किन्तु हमें उसकी बारीकियों का पता नहीं कि वह कैसे बना है, किस वस्तु से बना है। उसी प्रकार हम समुद्र को देखते हैं

किन्तु उसके अंदर क्या क्या है? उसका अंत कहाँ है? नहीं जानते।

वह महान अल्लाह तो इन ऐसे तुच्छ उदाहरण की तुलना में कई दर्ज़ो बुलंद और श्रेष्ठ है। ऐसा कोई उदाहरण नहीं कि जो संपूर्ण रूप से उसके लिए दिया जा सके। ये उदाहरण तो बुद्धि को उसके संज्ञान की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

यदि वे कहें कि जब बुद्धि उसके संज्ञान (मारेफत) की और मार्गदर्शन करती है तो फिर उसके विषय में आपस

में मतभेद क्यों है? तो इसका उत्तर यह है कि मनुष्य अपनी बुद्धि की सीमा तक उसपर विचार नहीं करता बल्कि अपनी सीमा से आगे बढ़ जाता है और इस कारण उसकी महानता और बुज़ुर्गी को जान नहीं पाता। यद्‌यपि मानव बुद्धि उस महान अल्लाह की बुज़ुर्गी के छोटे से छोटे दर्ज़े को भी समझने में असमर्थ है। इसके बावजूद मनुष्य पूरी वास्तविकता से अल्लाह को जानना चाहता है।

इस विषय में सूर्य का उदाहरण लो। जिसे तुम देखते हो कि वह समस्त संसार को प्रकाशित करता है। किन्तु सूर्य क्या है उसकी वास्तविकता से कोई अवगत नहीं। इसी कारण सूर्य की वास्तविकता जानने में बहुत मतभेद है। विद्वानों ने तथा दार्शनिक लोगों ने उसकी वास्तविकता का विभिन्न रूप से वर्णन किया है।

○ कुछ कहते हैं कि वह एक खोखला आकाशीय पिंड है जिसके अंदर आग भरी है। उसका एक मुख रखा गया है

जिसमें से किरणें निकल कर फ़ैल जाती है।

• कुछ कहते हैं कि वह एक बादल है।

• कुछ कहते हैं कि वह कांच का एक गोला है उसमें आग खिंच जाती है, उस आग की गर्मी और प्रकाश धरती पर पड़ता है।

• कुछ कहते हैं कि पानी जम कर बहुत ही साफ़ और लतीफ़ बन गया है।

• कुछ का कहना है कि अग्नि के कई हिस्से एक स्थान पर एकत्रित हो गए हैं।

• कुछ कहते हैं जैसे चार मुख्य तत्व हैं (आग, मिट्टी, पानी और हवा) वैसा वह पांचवां मूल तत्व है।

उसके रूप के विषय में भी कई मतभेद हैं।

• कुछ कहते हैं वह बहुत चौडी थाली के समान है।

• कुछ कहते हैं कि गोले के समान है।

उसके आकार के विषय में भी कई मतभेद है।

• कुछ कहते हैं कि वह पृथ्वी जितना बड़ा है।

• कुछ उसे पृथ्वी से छोटा बताते हैं।

• इस विषय पर अनुसंधान करने वाले विद्वान मानते हैं कि वह पृथ्वी से १७० गुना बड़ा है।

दिखाई देने वाले सूर्य के विषय में इतना मतभेद है और वे उसकी वास्तविकता से पूर्णतः अवगत नहीं हो पाए हैं तो वे न दिखाई देने वाले सर्वशक्तिमान ईश्वर को कैसे जान पाएंगे जबकि बुद्धि उसकी वास्तविकता तक पहुँचने में असमर्थ है। इतना ही

नहीं वह तो विचार और कल्पना से भी अधिक छिपा हुआ है।

यदि कोई पूछे कि वह क्यों छिपा हुआ है? तो इसका उत्तर यह है कि वह किसी कोशिश या किसी हीले बहाने से नहीं छिपा है। उसी प्रकार कोई वस्तु किसी दरवाज़े या परदे के पीछे छिपी रहे कि लोग उसे नहीं देख सकें, अल्लाह इस प्रकार नहीं छिपा है। हम जो कहते हैं कि वह आँखों से अदृश्य है इसका अर्थ यह है कि हमारी कल्पनाएँ, हमारे विचार भी उस तक नहीं पहुँच सकते

क्योंकि वह उपरोक्त वस्तुओं से अधिक सूक्ष्म है। जिस प्रकार आत्मा सूक्ष्म है कि दिखाई नहीं देती जबकि वह पैदा की हुई रचनाओं में से एक रचना है।

यदि कोई हम से यह पूछे कि वह सूक्ष्म क्यों है तो यह प्रश्न ही झूठा और निरर्थक है क्योंकि जो सबको पैदा करने वाला हो उसे तो विलक्षण और श्रेष्ठतम होना ही चाहिए।

यदि वे प्रश्न करें कि ईश्वर सब से जुदा सबसे श्रेष्ठ है यह किस आधार पर कहा जा सकता है तो इसका उत्तर यह

है कि किसी भी वस्तु को जानने की चार पद्धतियाँ है।

1। निरिक्षण से

2। वास्तविकता जानने से

3। उसकी रचना और गुणधर्म जानने से

4। वह वस्तु क्यों है और किस कारण है यह जानने से

इन चार चार रीतियों में से किसी भी पद्धति से मनुष्य अपने रचयिता को संपूर्ण प्रकार से जान नहीं सकता। वह केवल इतना ही समझ सकता है कि अल्लाह का अस्तित्व है। अब वह किस

तरह है? कैसा है? यह जानना मनुष्य के लिए न तो आवश्यक है न संभव है।

अब यदि कोई यह पूछे कि वह क्यों है और किसलिए है? तो यह प्रश्न ही पूर्णतः निरर्थक है इसलिए कि हर वस्तु का अस्तित्व अल्लाह के कारण है किन्तु अल्लाह का अस्तित्व किसी भी वस्तु पर नहीं है।

जब मनुष्य इतना समझ ले कि इस सृष्टि को पैदा करने वाला अल्लाह है उसके लिए इतना जानना पर्याप्त है। यह आवश्यक नहीं कि वह यह जानने

का प्रयत्न करे कि वह क्या है? क्यों है? आदि। जैसे मनुष्य आत्मा के विषय में जानता है कि वह है किन्तु यह नहीं जानता कि वह क्यों है? कैसी है? आदि।

यदि कोई कहे कि तुम उसका संज्ञान (मारेफत) नहीं रखते इसलिए ऐसी बातें कर रहे हो। कहते हो कि वह ऐसी वस्तु है जिसे जाना नहीं जा सकता तो इसका उत्तर यह है कि यह बात एक प्रकार से सही भी है कि मनुष्य

वास्तव में उसका संज्ञान (मारेफत) नहीं रखता।

एक बात और भी है कि वह हर निकट वस्तु से अधिक निकट है। पर वह कब? जब मनुष्य सच्चे मन से उसपर आस्था रखते हुए उसे समझने की कोशिश करे (जब मनुष्य दलीलों से उसके प्रति विचार करेगा तो उसे महसूस होगा कि अल्लाह उसके निकट ही मौजूद है। और वास्तविकता भी यही है।) तो एक प्रकार से वह किसी से छिपा हुआ नहीं है बल्कि सभी पर प्रकट

है। जबकि दूसरी रीति से वह ऐसा छिपा हुआ है कि उसे कोई जान नहीं सकता। अर्थात बुद्धि उसके अस्तित्व को तो स्वीकार करती है किन्तु उसके व्यक्तिगत विवरण को जान नहीं पाती।

जो लोग प्रकृति को स्वीकार करते हैं वे मानते हैं कि प्रकृति ऐसे काम नहीं करती जो बेकार और निरर्थक हों। और उसकी वह रचना यदि किसी कारक के द्‌वारा अपनी सीमा तक संपूर्ण होने वाली होती है तो उसे वह अधूरी नहीं रहने देती। उनका इस विषय में दावा है

कि यह बात उन्होंने अपने अनुभव से जानी है।

तो उन्हें यह उत्तर दिया जायगा कि यदि प्रकृति को इतनी ही उत्तम समझते हैं तो उसे ऐसी हिकमत और समस्त वस्तुओं की सीमा किसने बताई? इसलिए कि कई बातें ऐसी है कि जिनका बार बार अध्ययन करने के बावजूद बुद्धि उसे पूर्णतः नहीं स्वीकार करती। जब बुद्धि जैसी वस्तु भी एक वस्तु की मर्यादा जान नहीं पाती तो प्रकृति जिसमें कोई भी समझ शक्ति

नहीं है, किस प्रकार बिना परीक्षा और बिना अध्ययन के ऐसी शक्तिशाली तदबीरें और परिपूर्ण वस्तुएँ बना सकती है?

यदि वे कहें कि प्रकृति जो है वह हकीम (विद्वान) है और ऐसे कार्य करने में सक्षम है तो उस समय यह प्रमाणित हो जायगा कि जिन बातों का वे इनकार करते हैं वही बातें उन्होंने स्वीकार कर ली है। जिसे वे प्रकृति कह रहे हैं वह प्रकृति नहीं बल्कि इतने उत्तम गुणों वाला अल्लाह है।

यह सृष्टि जिसमें विभिन्न प्रकार की हिकमतें प्रयोग की गई है, चीख चीख कर कह रही है कि यह बनावट, यह विलक्षण कलात्मक निर्माण, निसंदेह किसी ऐसे रचयिता ने किया है जो बहुत ही महान हिकमत वाला और सर्वशक्तिमान है।

पुरातन युग में भी कई ऐसे लोग थे जो अपने रचयिता का इनकार करते थे और कहते थे कि संसार की ये वस्तुएँ किसी के बनाए बगैर और किसी के उस विषय पर विचार किये बगैर

संयोगवश खुद ब खुद बन गई है। जैसे कोई व्यक्ति बिना कारण ज़मीन खोदता हो और उसे संयोगवश खजाना मिल जाय (जबकि उसका इरादा खजाना प्राप्त करने का न था)

उन लोगों की दलील यह थी कि जब बच्चे पैदा होते हैं तो कोई एक समान पैदा नहीं होते। जैसे किसी कि एक ऊँगली अधिक होती है, किसी का चेहरा अधिक कुरूप होता है। यह सब इसलिए होता है क्योंकि वस्तुएँ अपने आप बन रही हैं। यदि कोई योजनाबद्ध

रीति से बनाने वाला होता तो उसमें कोई खोट नहीं होंना चाहिए थी। कि किसी में पांच की बजाय छह उंगलियां बनाए, एक हाथ की बजाय दो हाथ बनाए। इन कारणों से वे मानते थे कि वस्तुएँ अपने आप बन गई है। किन्तु उनके काल के महान तत्वज्ञानी अरस्तु ने उनकी इस मान्यता का खंडन किया है। उसका कथन था कि किसी वस्तु में बदलाव हो जाता है वह किसी कारण से प्रकृति मे बदलाव के कारण हो जाता है। (जैसे गर्भाशय में किसी प्रकार की दुर्बलता के

कारण सर्जन की परिपूर्णता में रुकावट आ जाती है। उसी प्रकार अधिक उष्णता के कारण एक अंग के स्थान पर दो अंग हो जाते हैं आदि।)

तो ऐ मुफज्ज़ल, एकाध समय नियम से उल्टा हो जाने से यह तय नहीं किया जा सकता कि वस्तुएँ अपने आप बनती हैं। तुम विभिन्न प्रकार के प्राणियों को देखते हो कि एक ही नियम तथा एक ही परम्परा से पैदा होते हैं। जैसे मनुष्य जब पैदा होता है तो दो हाथ, दो पैर, पांच उँगलियाँ वाला पैदा

होता है। अधिकांशतः नहीं बल्कि लगभग सभी लोग इसी प्रकार पैदा होते हैं। कभी किसी की बनावट में जो अंतर आ जाता है वह गर्भाशय की खराबी के कारण आ जाता है।

जैसे कोई कारीगर किसी वस्तु को बनाने लगता है तो सारी वस्तुएँ बेदाग़ और एक समान बनाना चाहता है। कभी कभी उसके औजारों में खराबी आजाने से किसी वस्तु में खराबी आजाती है। उसीप्रकार प्राणियों के बच्चों में भी

खराबी आती रहती है। बाक़ी अधिकाँश बच्चे एक समान पैदा होते हैं।

तो जब कोई कारीगर सभी वस्तुओं को समान रूप से बनाना चाहता है और अपवाद स्वरुप एकाध वस्तु में कोई विकृति रह जाय तो यह माना नहीं जा सकता कि सारी वस्तुएँ अपने आप पैदा हो गईं।

तो यह स्पष्ट हो गया कि किसी विकृति को साक्ष्य दिखाकर यह कहना कि सारी वस्तुएँ अपने आप बन गई और उनका बनाने वाला कोई नहीं यह

महाभूल तथा असत्य कथन है। (बल्कि कोई खराबी न तो लोग कहते कि वस्तुएँ अपने आप बन रही है इसलिए कोई खराबी नहीं आती। यदि कोई बनाने वाला होता तो कम या अधिक कर सकता था।)

यदि लोग कहें कि जब इनका बनाने वाला है, और वह सामर्थवान है तो क्यों खराबी आती है। तो इसका उत्तर यह है कि लोगों को पता चल जाय कि वस्तुएँ अपने आप नहीं बनतीं बल्कि इनका कोई बनाने वाला है जो

इनकी बनावट में कोई कमी भी कर सकता है। जो इनकी बनावट में कोई बदलाव भी कर सकता है। वह इनके सर्जन पर संपूर्ण सत्तावान है वह जो चाहे वह करने की क्षमता रखता है।

ऐ मुफज्ज़ल, मैंने जिन जिन चीज़ों का तुम्हें ज्ञान प्रदान किया है उसे याद रखो। अपने पालने वाले का आभार प्रदर्शित करो। उसका हक़ अदा करो। उसके भेजे हुए मार्गदर्शकों की आज्ञा का पालन करो। मैंने तुम्हें इस संसार के रचयिता के अस्तित्व के अनंत प्रमाणों

में से थोड़े से प्रमाण दिखाए। उसकी तदबीर तथा इरादो के प्रमाण की कुछ निशानियाँ दिखाईं इनमें चिंतन करो और इनसे उपदेश ग्रहण करो।

मुफज़्ज़ल कहते हैं कि मैंने निवेदन किया : इंशाअल्लाह आप की मदद से मैं अपने हेतु को पूर्ण कर सकूंगा।

फिर इमाम अ.स. ने अपने हाथ को मेरी छाती पर रख कर फरमाया : अल्लाह की इच्छा से याद रखना और इंशाअल्लाह भूलना नहीं। उसी समय मैं बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया तो

आपने फरमाया : अब तुम्हारा स्वास्थ कैसा है? मैंने निवेदन किया : आका आप की सहायता से मैं अपने लेखन से बे परवाह हो गया हूँ। जो बातें आप ने मुझे सिखाईं वो मुझे ऐसे याद हो गई है जैसे मेरी हथेली पर लिखी है। मै जब चाहूँ उसे पढ़ सकता हूँ। ऐ मेरे स्वामी, मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूँ, जिसका वह अधिकारी है।

फिर आप ने फरमाया ऐ मुफज्ज़ल, अपने दिल को शांत और स्थिर करो। यदि तुम अपनी अपनी बुद्धी

और स्वास्थ को एक स्तर पर रखोगे तो इंशाअल्लाह मैं तुम्हें आकाश और धरती के नियंत्रण और जो कुछ इनमें हैं, उस महान अल्लाह की अद्भूत रचना, विभिन्न प्रकार के फ़रिश्ते, यहाँ तक कि सिद्रतुल मुन्तहा तक के स्थान, उनके पद तथा ओहदे, जिन्नात और मनुष्य से लेकर धरती के सातवें स्तर तक। इतना ही नहीं उनके नीचे की बातें भी बयान करूँगा। तब तुम जानोंगे कि अभी मैंने तुम्हें बहुत थोड़ी बातें ही बताई है। अब तुम जब चाहो तब

जाओ, अल्लाह तुम्हारा रक्षक और सहायक है। हमारी दृष्टी में तुम्हारा उच्च स्थान है। जैसे प्यासे की द्रष्टि में पानी का स्थान होता है वैसा ही तुम्हारा स्थान आस्तिक लोगों की द्रष्टि में हैं। जिस वस्तु का मैंने तुम्हें वादा किया है उस विषय में तुम हम से निवेदन नहीं करोगे बल्कि जब उपयुक्त समझेंगे हम ही बयान करेंगे।

मुफज़्ज़ल कहते हैं मैं खुशी खुशी घर लौटा।

प्रकरण - ४३

हरडे से ईश्वर को समझो

बिस्मिल्ला हिर रहमा निर् रहीम

मुफज्ज़ल बिन उमर जोअफ़ी ने इमाम जाफर सादिक अ.स. को पत्र लिखा कि हमारे धर्म में कई ऐसे लोग पैदा हुए हैं जो ईश्वर के अस्तित्व का इनकार करते हैं। अर्थात वे नास्तिक हैं और इस संबंध में वाद विवाद करते हैं। जिसप्रकार आपने अन्य लोगों की गलत मान्यताओं का अनेक बार खंडन किया है, आप से निवेदन है कि इन

नास्तिकों की गलत मान्यताओं को भी खंडन करें।

इस पत्र के उत्तर में इमाम अ.स. ने निम्न लिखित लेख भेजा।

बिस्मिल्ला हिर रहमा निर् रहीम

वह सत्य अल्लाह व पालनहार हमें और आपको उसकी आज्ञापालन और उपासना की सद्बुद्धि प्रदान करे और उसकी अनुकम्पा से आपके दिन खुशी और आराम से बीते। आपका पत्र मिला। आपने लिखा है कि अल्लाह का इनकार करने वालों की संख्या बढ़ गई है। उनके

वादविवाद और तकरारें सख्त होती हैं। आपने निवेदन किया है कि दूसरों की दलीलों के खंडन से समान मैं उनकी दलीलों का भी खंडन करू अथवा कोई पुस्तक लिखूं।

हम अल्लाह की, संपूर्ण अनुग्रहों तथा बख्शिशों के लिए, संपूर्ण सीमा तक पहुंची हुई उसकी दलीलों तथा प्रमाणों के लिए, उसकी स्तुति करते हैं तथा उस परीक्षा के लिए जो वह अपने विशेष तथा सामान्य बन्दों की लेता है, उसका आभार मानते हैं।

अपने महान अनुग्रह तथा बख्शिशें जो उसने प्रदान की है उनमें से एक यह है कि उसने अपने विशेष तथा सामान्य बन्दों के अंतःकरण में अपने अस्तित्व का विश्वास रख दिया है। (अर्थात मनुष्य चाहे जितना नास्तिक हो किन्तु हृदय की गहराईयों में वह यह विश्वास ज़रूर रखता है कि इस जगत का निर्माता ज़रूर कोई होना चाहिए। इस प्रकार अपने अस्तित्व को उसने हर किसी के हृदय में डाल दिया है।) तथा (ऐसी स्थापना के द्वारा) उसने सभी से

अपने संज्ञान (मारेफत) तथा परिचय का वचन ले लिया है। उसने सभी पर एक ऐसी पुस्तक (कुरआन) अवतरित की है जिसमें अंतःकरण की बीमारियों (मन की शंकाओं तथा वहमों) को दूर करने के उपाय हैं। उसने अपने विशेष तथा सामान्य बन्दों को, सिवा अपने, किसी का मोहताज नहीं बनाया। वह खुद सभी से स्वतंत्र तथा बेपरवाह है। और सचमुच अल्लाह गनी, बेपरवाह तथा वह है जिसकी सर्वाधिक स्तुति की गई है।

मैं अपने प्राणों की सौगंध खा कर कहता हूँ कि ये अज्ञानी तथा मूर्ख लोग अल्लाह के अस्तित्व की स्पष्ट दलीलें, प्रमाण और उसके प्रकट चिन्ह जो अल्लाह की रचना में प्रकाशित हैं देख रहे हैं, आकाश तथा पृथ्वी की अद्भूत कलात्मकता को देख रहे हैं जो यह सिद्ध कर रही है कि इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है। इन सब के बावजूद वे लोग अल्लाह के अस्तित्व का इनकार करते हैं और कहते हैं कि इस सृष्टि का बनाने वाला कोई नहीं है। इन बातों से

खुद उन्हीं का नुक्सान है। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आगे पापाचार का बड़ा दरवाज़ा खोल लिया है। इसी कारण वे अपने मनोविकार तथा मनेच्छाओं के प्रभाव में आ गए हैं।

अल्लाह के अस्तित्व का इनकार कर अपनी ज़ात पर ज़ुल्म करने के कारण शैतान ने उनपर काबू पा लिया है। इसी प्रकार अल्लाह जानबूझ कर टेढ़ी चाल चलने वालों के हृदयों पर ठप्पा लगा देता है।

मनुष्य जो स्वयं रचित है, अपने शरीर की रचना को देख रहा है, उसकी उत्तम कलात्मकता को देख कर उसकी बुद्धि चकित है, वही मनुष्य दावा कर रहा है कि इस जगत के निर्माता का अस्तित्व अभी सिद्ध नहीं हुआ है। कितने आश्चर्य की बात है। खुद उसके शरीर में पैदाइश के चिन्हों की उपस्थिति खुद उसके दावे का खंडन कर रही है।

मेरे अपने प्राण की सौगंध ! यदि लोग इन बड़ी बड़ी बातों में ज़रा भी गौर करते तो सृष्टि में प्रकट स्पष्ट योजना,

निर्विवाद उत्कृष्टता और उत्तम युक्ति को ज़रूर देख लेते।

इसके अतिरिक्त वस्तुओं का एक स्थिति से दूसरी स्थिति में तथा एक रचना का दूसरी रचना में परिवर्तन यह दर्शाता है कि कोई कर्ता या बनाने वाला है। सृष्टि में एक भी वस्तु योजना या युक्ति रहित नहीं है। ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो कर्ता को न दर्शाए। ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसके निर्माण में विवेक बुद्धि के साथ साथ युक्ति का प्रयोग न किया गया हो और वह उस विवेकी तथा

महाबुद्धिमान अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण न हो।

तुम्हारा पत्र मिला ! तुम्हारे लिए मैंने एक लेख लिखा है। नास्तिकों में के एक व्यक्ति के साथ मेरी चर्चा हुई थी वह इसप्रकार है:

एक भारतीय वैद्‌य मेरे पास आता रहता था। वह हमेशा अपनी पथभ्रष्टता के विचार और अपनी अधार्मिकता की मान्यताओं के विषय में मेरे साथ वाद विवाद किया करता था। एक दिन वह मेरे लिए दवा बना रहा था। दवा में

मिलाने के लिए वह हिरड (हरड, हरीतकी, अभया, Terminaliya chebula) को कूट रहा था। कूटते कूटते वह एक ऐसी बात बोल उठा कि जिसके संबंध में वह हमेंशा मुझ से विवाद किया करता था। उसकी मान्यता थी कि यह संसार हमेशा से है और हमेंशा रहेगा। एक वृक्ष उगता है और दूसरा नष्ट हो जाता है। एक जीव पैदा होता है तो दूसरा मर जाता है। (इसीप्रकार संसार का अनंत क्रम चलता रहता है) उसका यह भी कहना था कि

मैं जो अल्लाह को पहचानने का दावा करता हूँ वह बिना दलील है। और मेरे पास उसकी कोई दलील नहीं है। उसका कहना था कि यह वह बात है जो बाद में आने वालों ने चले जाने वालों से जानी है, और छोटों ने बड़ों से सीखी है। (अर्थात केवल अल्लाह है इतना ही सुना है बाक़ी ईश्वर विश्वर कोई है नहीं) उसका यह भी कहना था कि विभिन्न पदार्थ तथा वस्तुएँ चाहे दृश्य हों या अदृश्य मात्र पंचेंद्रीयों के द्‌वारा ही पहचानी जाती है। (सभी वस्तुएँ) या तो

आँख से देख कर, या कान से सुन कर, या नाक से सुगंध ले कर, या ज़बान से चख कर, और हाथ या पैर से छू कर ही पहचानी जाती है। (और क्योंकि अल्लाह इन पंचेंद्रीयों से पहचाना नहीं जाता इसलिए उसका अस्तित्व नहीं है)।

इसीप्रकार मनगढंत विचारों द्‌वारा विवाद खड़े कर उसने मुझ से कहा ईश्वर किसी भी इन्द्रीय से पहचाना नहीं जाता इसलिए मैं उसके अस्तित्व को नहीं मानता। उसने आगे कहा : यद्‌यपि

मन (दिल) उन्हीं वस्तुओं को जान या पहचान सकता है जो इन्द्रियों द्वारा उस तक पहुंचती है फिर भी जिन दलीलों के द्वारा आप अल्लाह को पहचानने का दावा करते हो और जिन दलीलों के आधार पर आप उसके सामर्थ्य तहत उसकी परवरिश करने की शक्तियों का वर्णन करते हो वह मुझे सुनाइये।

मैंने कहा (अर्थात इमाम जाफर सादिक अ.स. ने कहा): मेरे पास बुद्धि है। उसी के द्वारा मैं ईश्वर के अस्तित्व

को सिद्ध करता हूँ। उसी के द्वारा मैं उसकी पहचान साबित करता हूँ।

उसने कहा: यह आप कैसे कह सकते हो? आप जानते हो कि मन किसी भी वस्तु को इन्द्रीय की सहायता के बिना पहचान नहीं सकता। क्या आपने अपने रचयिता को आँख से देखा है? उसकी आवाज़ को कान से सुना है? क्या आप ने उसे सूंघा है? क्या ज़बान से उसे चखा है? क्या हाथ से उसे छुआ है? उसकी पहचान आपके मन में कहाँ से आई?

मैंने कहा: तुमने अपनी इन्द्रियों के द्वारा, जो वस्तुओं के जानने का साधन है, उसे जाना नहीं इसलिए उसके अस्तित्व को मानते नहीं हो। और मैं उसके अस्तित्व को मानता हूँ। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि हम दोनों में से एक सच्चा है और एक झूठा?

उसने कहा : हाँ क्यों नहीं?

मैंने कहा : यदि तुम सच्चे हो तो मैं जो तुम्हें अल्लाह के प्रकोप से डराता हूँ उसमें मेरे लिए कुछ डरने जैसा है?

उसने कहा : नहीं

मैंने कहा : यदि मैं सच्चा हूँ तो क्या तुम उसके अस्तित्व को न मानने के कारण दंड के पात्र नहीं होंगे? और जो मैं तुम्हें डरा रहा हूँ तो मैं उसके प्रकोप से सुरक्षित नहीं रहूँगा?

उसने कहा : सच है।

मैंने कहा : तो हम दोनों में अधिक बुद्धिमान कौन है? किसके पास मुक्ति है? (मैं या तुम)

उसने कहा :आप। किन्तु आप जो कहते हो वह वहम जैसी बात है। और मैं जो कहता हूँ वह निश्चित बात है।

क्योंकि मैंने अपनी किसी भी इन्द्रीय से अल्लाह को जाना नहीं है। और जो वस्तु इन्द्रीय से जानी नहीं जाती उसका अस्तित्व होता नहीं है।

मैंने कहा : जहां तुम्हारी इन्द्रीयाँ ईश्वर को जान नहीं सकीं इसलिए तुमने उसे माना नहीं। और जहां मेरी इन्द्रियाँ अल्लाह को जान नहीं सकी इसलिए मैंने अल्लाह के अस्तित्व को मान लिया। (जिस आधार पर तुम अल्लाह के अस्तित्व को मानते नहीं हो उसी आधार से मैं अल्लाह को मानने की प्रेरणा पाता

हूँ।) जो कारण तुम्हें न मानने के लिए प्रेरित करते हैं वही कारण मुझे मानने के लिए प्रेरित करते हैं।

उसे कहा : वह किस तरह?

मैंने कहा : जिस वस्तु में योजना के चिन्ह हैं। (अथवा जो वस्तु स्वयं मिश्रण है या योजनापूर्वक एकत्रित की गई है) वह वस्तु निश्चित रूप से भौतिक है। जिस वस्तु पर द्रष्टि पड़ती है और जो वस्तु हमारी द्रष्टि में समाती है उसमें निश्चित रूप से रंग है। इस कारण जो वस्तु आँख से देखी जा

सकती है या और किसी इन्द्रीय द्‌वारा जानी जा सकती है वह निश्चित रूप से अल्लाह नहीं हो सकता। अल्लाह के सिवा कुछ भी हो सकता है। इसलिए कि अल्लाह किसी बनाई गई या पैदा की गई वस्तु के समान नहीं हो सकता। और दूसरी कोई भी वस्तु अल्लाह के समान नहीं हो सकती।

यदि दिखाई दे या किसी और इन्द्रीय द्‌वारा जाना जा सके तो वह रंग या शरीर माना जायगा। यदि वह दिखाई दे या किसी और ईन्द्रीय से जाना जाय

तो वह रंग या शरीर माना जायगा। यदि वह रंग और शरीर हो तो वह कई वस्तुओं का मिश्रण माना जायगा क्योंकि संसार की समस्त वस्तुएँ मिश्रण होती हैं और मिश्रित वस्तुएँ किसी और के द्वारा मिश्रित की जाती हैं। अन्य वस्तुओं का मिश्रित करने वाला तो स्वयं अल्लाह है। (फिर ईश्वर को मिश्रित कौन बनाएगा?)। फिर उत्पन्न की गई वस्तुएँ कम अधिक या नाश के अधीन होती है। जो कम अधिक या नाश के अधीन वस्तुओं के समान हो वह भी

कम अधिक या नाश के अधीन होगा। (और ईश्वर कम अधिक या नाश के अधीन नहीं हो सकता।)

याद रखो, उत्पन्न की गई वस्तु पैदा करने वाले और सृष्टि के सर्जनहार के समान नहीं हो सकती। (अतः ईश्वर ईन्द्रीयों द्वारा नहीं जाना जा सकना चाहिए। अब तुम कहोगे कि ईन्द्रीयों के द्वारा नहीं जाना जा सकना समूल रूप से नहीं होने की दलील कैसे हो सकती है?)

उसने कहा : यह तो एक बात है। किन्तु जो वस्तु मेरी इन्द्रियों के द्वारा नहीं जानी जा सकती उसके अस्तित्व को मैं स्वीकार नहीं कर सकता।

जब उसने यह बात कही और हठ पकड़ कर बैठ गया तो मैंने उससे कहा : तुम मूर्खता के लिए तैयार हो चुके हो और विवाद के लिए दलील बनाते हो। तुम जो आरोप मुझ पर लगाते थे वही आरोप तुम पर लग रहा है। जिस बात को तुम नापसंद करते हो वही बात तुम खुद कर रहे हो।

उसने कहा : वह कैसे?

मैंने कहा : तुमने कहा था कि आप अल्लाह को मानने का दावा ही कर करते हो उसके अस्तित्व की आपके पास कोई दलील नहीं है। अब तुम क्या कहते हो? तुमने जिस वस्तु को पूर्ण रूप से जाना नहीं उस वस्तु के संबंध में बिना सोचे समझे, बिना किसी दलील के तुम यह कहते हो कि जो वस्तु मेरी इन्द्रियों द्वारा नहीं जानी जा सकती उसे मैं नहीं मान सकता। अल्लाह के अस्तित्व को नहीं मानने के लिए तुमने कितना बड़ा

दावा किया है? नबुव्वत के चिन्हों और स्पष्ट हुज्जत को भी को भी महत्व नहीं दिया। (अस्तु।) अब कहो। क्या तुम संसार की सभी दिशाओं में जाकर आए हो।

उसने कहा : नहीं।

मैंने कहा : तुम जो इस आकाश को देखते हो उस आकाश पर चढ़े हो? अथवा पृथ्वी के अंतिम हिस्से तक गए हो? उसके ईर्द गिर्द परिक्रमा कर आए हो? समुद्र में गोताखोरी कर आए हो? आकाश के ऊपरी भाग में या पृथ्वी के

अंदर उसके अंत तक, अंतरिक्ष में उसके विस्तार तक जाकर आए हो और ठीक से देख आए हो कि इनमें से किसी स्थान पर भी कोई महान योजक व विवेकी बुद्धिमान निर्माता नहीं रहता?

उसने कहा : मैं तो इन स्थानों में से कहीं भी नहीं गया?

मैंने कहा : फिर तुम्हें क्या पता? जहां तुम्हारी इन्द्रियों में से कोई इन्द्रीय पहुँच नहीं सकती शायद उन स्थानों में से किसी स्थान पर, वह, जिसके

अस्तित्व को तुम नहीं मानते, रहता हो?

उसने कहा : मैं जानता नहीं। जिन स्थानों के नाम आपने लिए हैं उन स्थानों में शायद वह रहता हो, शायद नहीं भी रहता हो, मैं कुछ कह नहीं सकता।

मैंने कहा : जब तुम साफ़ इनकार करने स्थिति से निकल कर शंका की सीमा में आ गए हो तो मुझे आशा है कि तुम उसे पहचानने की सीमा में भी आ जाओगे।

उसने कहा : मैं जिन स्थानों में गया नहीं हूँ उन स्थानों के नाम आपने लिए इस कारण मैं शंका में पड़ गया किन्तु जिस वस्तु को मैंने अपनी इन्द्रीय के द्वारा जाना नहीं है उसके अस्तित्व को कैसे मान लूं?

मैंने कहा : इस हिरडे के द्वारा।

उसने कहा : यह तो बहुत अच्छी बात है। क्योंकि यह तो आयुर्विद्या से जुड़ी बात है जिसमें मैं प्रवीण हूँ।

मैंने कहा : अल्लाह के अस्तित्व के प्रमाण मैं तुम्हें इस हिरडे के द्वारा ही

दूंगा क्योंकि यह तुमसे निकट है। इससे अधिक तुम्हारे निकट कोई और वस्तु होती तो मैं उसके द्वारा अल्लाह के अस्तित्व को सिद्ध करता क्योंकि हर वस्तु में योजना और विवेक अवश्य होता है। उस योजना और विवेक के द्वारा हर वस्तु अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के साथ साथ अपने निर्माता को भी सिद्ध कर देती है। जब उस वस्तु का अस्तित्व न था तब उसने उसे पैदा किया और उसी प्रकार नाश भी कर देगा। ऐसा नाश कि कुछ बचेगा ही नहीं। अच्छा चलो।

क्या तुम इस हलीले (हिरडे) को देखते हो?

उसने कहा : हाँ ! देखता हूँ।

मैंने कहा : जो कुछ इस हलीले के अंदर है क्या उसे भी देख रहे हो?

उसने कहा : नहीं

मैंने कहा : क्या तुम कह सकते हो कि इस हलीले के अंदर एक ऐसा बीज है जिसे तुम नहीं देख सकते या रंगने की दूसरी कोई चीज़ है।

उसने कहा : यह नहीं कह सकता। क्योंकि शायद उसमें कुछ भी न हो।

मैंने कहा : तुम जानते हो कि इस हलीले के छिलके के नीचे गूदा है जिसे तुम नहीं देख सकते या दूसरी कोई रंगने की चीज़ है।

उसने कहा : मैं नहीं कह सकता। शायद उसके अंदर कोई रंगीन वस्तु या बीज या कुछ भी न हो।

मैंने कहा : यह हलीला जिसे सब लोग जानते हैं भारत में मिलता है। यह तुम स्वीकार करते हो। भिन्न भिन्न मत के लोगों ने इसका वर्णन किया है।

उसने कहा ; मैं जानता नहीं। ये सभी लोग जिस बात पर एकमत हुए हों हो सकता है वह बात झूठी हो।

मैंने कहा : हलीला किसी भी ज़मीन पर उगते हैं यह तो मानोगे?

उसने कहा : यह और वह ज़मीन एक ही है। और हाँ वह जहां उगता है उसे मैंने देखा है।

मैंने कहा : इस हलीले के अस्तित्व पर से दूसरे ऐसे ही हलीले जिन्हें तुम देख नहीं सकते (संसार में) होंगे ऐसा तो मानोगे।

उसने कहा : मैं जानता नहीं। शायद इस हलीले के सिवा संसार में अन्य किसी स्थान पर हलीला न हो।

जब उसने इस प्रकार अज्ञानता की बातें की तथा हठधर्मिता अपनाई तो मैंने उससे पूछा : ठीक है। यह हलीला किसी झाड़ में से पैदा हुआ है यह तो स्वीकार करते हो या नहीं? या वह अपने आप पैदा हुआ है यह कहते हो?

उसने कहा : मैं यह नहीं कहता कि वह खुद से पैदा हुआ है अपितु यह

कहता हूँ कि यह उस झाड़ में पैदा हुआ है।

मैंने कहा : लो। जिस झाड़ को तुमने अपनी किसी इन्द्रीय से नहीं जाना उस झाड़ के अस्तित्व को स्वीकार करते हो।

उसने कहा : यह सत्य है। किन्तु मेरी मान्यता है कि हलीला हो या दूसरी कोई अन्य वस्तु हो। अनादि काल से ऐसे ही चली आरही है और चलते रहेगी। क्या आप मेरी इस मान्यता को गलत सिद्ध कर सकते हो?

मैंने कहा : हाँ ! क्यों नहीं? अब इस हलीले के संबंध में कहो इस हलीले के पैदा होने से पहले तुमने उस झाड़ को देखा था ? क्या तुम उसे पहचानते हो?

उसने कहा : हाँ।

मैंने कहा : क्या तुम इस हलीले को उस झाड़ में (इसके पैदा होने से पहले) देखते थे?

उसने कहा : नहीं

मैंने कहा : एक समय ऐसा था। तुमने देखा कि हलीला का झाड़ है

किन्तु हलीला नहीं है। दूसरी बार जब तुमने देखा तो झाड़ में हलीला थे। क्या इस पर से तुम यह नहीं समझ सकते कि पहले हलीले का अस्तित्व नहीं था यह बाद में पैदा हुआ।

उसने कहा : इसका इनकार नहीं कर सकता। (अर्थात मैं यह मानता हूँ कि हलीला पहले नहीं थे बाद में पैदा हुए) किन्तु मैं यह मानता हूँ कि इन हलीला का प्रमाण अंश भाग उस झाड़ में बिखरे हुए फैले हुए थे। (जब सारे

अंश एक स्थान पर मिले तब यह फल पैदा हुआ।)

मैंने कहा : जिस हलीला में से यह झाड़ उगा उस हलीला तो तुमने बोने से पहले देखा था?

उसने कहा : हाँ। देखा था।

मैंने कहा : तो क्या उस झाड़ की जड़ें, तने, डालियां, छाल, सारे फल जो उससे तोड़े जाते हैं, सारी पत्तियाँ जो उसमें से सूख कर गिर गईं, ये सारी हज़ारों किलो की वस्तुएँ एक छोटे

से हलीला में छिपी थी यह बात तुम्हारी बुद्धि में आती है।

उसने कहा : यह बात बुद्धि में तो आती ही नहीं और अंतःकरण भी स्वीकार नहीं करता।

मैंने कहा : तो अब ।।।।।ये सारी वस्तुएँ पहले नहीं थीं। फिर बनी (शून्य में से अस्तित्व में आईं) यह तुमने मान लिया?

उसने कहा : हाँ। यह तो मान लिया । किन्तु इन वस्तुओं को किसी ने बनाया है यह नहीं मानता। क्या आप

यह सिद्ध कर सकते हो कि ये वस्तुएँ किसी की बनाई हुईं हैं?

मैंने कहा : यदि मैं तुम्हें कोई योजना दिखाऊँ तो उसका कोई आयोजक है यह मानोगे? अथवा कोई चित्र दिखाऊं तो उसका कोई चित्रकार है यह स्वीकार करोगे?

उसने कहा : हाँ ! अवश्य मानूंगा।

मैंने कहा : तो फिर देखो। क्या यह हलीला मांस के लोथड़े जैसा नहीं है? जिसे हड्डी पर बिठाया गया है; और वह हड्डी (बीज) ऐसी नाली पर है जो

डाली से जुडी हुई है। डाली तने से और तना अपने नीचे की बारीक जड़ों के आधार पर जमा हुआ है। (इसी कारण उसमें जमें रहने की शक्ति है)

उसने कहा : यह सब मैं जानता हूँ।

मैंने कहा : इस हलीले की आकृति (रूप) एक विशेष अंदाज़ से और योजना से बनाई गई है तुम देखते नहीं? उसका एक भाग दूसरे भाग के अंदर है। उसमें थर के ऊपर थर, अंग के ऊपर अंग, रंग के ऊपर रंग है। पीले रंग के ऊपर

सफ़ेद रंग है। कड़ी वस्तु के ऊपर एक नरम वस्तु है (बीज कड़ा है और गूदा नरम)। भिन्न भिन्न स्वभाव की भिन्न भिन्न वस्तुओं को एकत्रित कर के मिश्र कर के उसकी योजना बनाई गई है। उसपर छिलका है जो उसे सुरक्षित रखे हुए है। छिलके में मूलियाँ और नसें है जिससे पानी पहुँचता है ताकि धुप उसे जला न दे सर्दी नाश न कर दे, हवा उसे पतला न बना दे इसलिए पत्ते भी दिये गए है।

उसने कहा : मेरे ख़याल से वह पत्तों से ढंका रहता तो अधिक अच्छा होता।

मैंने कहा: अल्लाह सर्वसामर्थ्यवान है। तुम जैसे कह रहे हो वैसा होता तो ताजगी पैदा करने वाली हवा उसे न लगती, मजबूती पैदा करने वाली ठंड उसे न लगती। और जब ताजगी उसमें न रहती तो उसमें दुर्गन्ध पैदा हो जाती और हलीला सड़ जाता। जैसे हम सैंकड़ों फलों फूलों को देखते हैं कि जब पत्ते उनपर से झड़ जाते हैं तो वे सड़ जाते

हैं। और यदि धूप उनको न लगे तो फल पकते नहीं। इसलिए उस महान रचयिता ने उसे ऐसा बनाया है कि कभी उसे पकाने वाली गर्मी मिले, कभी ताजगी लाने वाली पवन लगे, कभी मजबूती लाने वाली ठण्ड लगे। किस प्रकार उस सत्येश्वर ने अपनी संपूर्ण विवेक बुद्धि से उस हलीला की उन्नति सुनिश्चित करने लिए यथोचित प्रमाण में सारी वस्तुओं को योजनाबद्ध किया है। हलीला संपूर्ण रूप से सुरक्षित और ताज़ा रहे ऐसा प्रयोजन किया है।

उसने कहा : मैं उस हलीला के रूप रंग के संबंध में तो पूर्ण रूप से समझ गया, किन्तु उसकी योजना के संबंध में स्पष्ट वर्णन करो तो ठीक। (अर्थात उसमें मुझे ऐसी योजना दिखाओ जिससे उसका योजक का होना अनिवार्य रूप से सिद्ध हो।)

मैंने कहा : तुमने हलीला के बनने से पहले, जब वह अपने स्थान पर पानी ही पानी था, न उसमें बीज था, न गूदा था, न छिलका था, न रंग

था, न स्वाद था, न वह कड़ा था तब तुमने उसे देखा था?

उसने कहा: हाँ।

मैंने कहा : यदि वह रचयिता इस निर्बल पानी को, जो अपनी तुच्छता में एक राई के दाने बराबर था, अपनी अपार शक्ति द्वारा मज़बूत न बनाता, उसमें अपनी बुद्धिमत्ता के द्वारा (हलीला) की आकृति रूप उत्पन्न न करता, उसमें सभी अंशों की प्रमाणानुसार योजना न करता, तो क्या यह पानी अपने आप खुदसे अपने शरीर

में कोई भी भिन्न अंशों और अंगों के मिश्रण के बिना बढ़ सकता था क्या? और यदि बढ़ता तो पानी पर पानी बढ़ता। उसमें हलीला का रूप न होता, उसमें धारियां न होतीं, उसका गूदा न बढ़ता, उसमें कोई योजना न होती। उसीप्रकार उसमें हर एक अनुपम युक्ति व अनोखी योजना न होती। (जबकि तुम देखते हो कि उसमें हर प्रकार की योजना रंग, स्वाद, लाभ आदि प्रमाणबद्ध रूप से उपस्थित है। यदि

योजक न होता तो योजना कहाँ से आती?)

उसने कहा : आपने उस झाड़ के रूप का, उसकी बनावट का, उसकी योजना का, उसके बढ़ने और फल आदि लगने का स्पष्ट वर्णन कर के उसके योजक को, बनाने वाले को सिद्ध कर दिया और अब मैं यह मानता हूँ कि सारी वस्तुएँ किसी की बनाई हुई हैं। किन्तु इस हलीला ने अथवा जगत की सारी वस्तुओं ने स्वयं खुद को बनाया हो तो?

मैंने कहा : (मैंने ऊपर जो कुछ वर्णन किया है उस पर से) जिसने हलीला और जगत की अन्य सारी वस्तुओं को अति उत्तम योजना तथा यथोचित प्रमाणानुसार रचा है वह रचयिता महाबुद्धिवान और अत्यंत ज्ञानी होना चाहिए ऐसा तुम्हें नहीं लगता? (क्योंकि जिसमें ज्ञान व बुद्धि न हो वह ऐसी अनुपम रचना कर ही नहीं सकता।)

उसने कहा : अनुपम योजना और सर्वोत्तम विवेक जो उसने रचना में

प्रयोग किया है वह उसका बुद्धिमान और ज्ञानी होना सिद्ध करता है।

मैंने कहा : तो क्या जो ऐसा हो वह नश्वर होगा?

उसने कहा : ऐसा तो नहीं होगा।

मैंने कहा : क्या तुमने नहीं देखा कि जब हलीला अपने झाड़ में उगा तो उससे पहले वह नहीं था फिर हुआ और हो कर ऐसा नष्ट हुआ जैसे कभी था ही नहीं।

उसने कहा : हाँ क्यों नहीं? किन्तु मैंने आप से केवल यही स्वीकार किया

था कि हलीला एक नश्वर वस्तु है। यह नहीं कहा था कि बनाने वाला नश्वर नहीं हो सकता। वह स्वयं को नहीं बना सकता। (हलीला को जिसने बनाया वह नश्वर हो शून्य से अस्तित्व में आया हो यह मानने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।)

मैंने कहा : तुमने अभी कहा था कि बनाने वाला रचयिता नश्वर नहीं हो सकता और तुम हलीला को नश्वर मान चुके हो। (तो फिर हलीला स्वयं को बनाने वाला कैसे हो सकता है?) और

जब हलीला स्वयं खुद को बनाने वाला नहीं तब उसे बनाने वाला वही है जो हम सब को बनाने वाला पालनहार ईश्वर है।

और यदि तुम अब भी यही कहो कि नहीं !! हलीला ने स्वयं को स्वयं ने बनाया है, अपनी रचना की योजना खुद की है। तो तुम जिस बात को नहीं मानते थे वह अब मानते हो। इससे अधिक कुछ न करना। तुम्हारा इन्साफ खुद तुम्हारी ज़बान से हुआ है। तुमने एक महान योजक रचयिता को मान

लिया है। तुमने उसके गुणों का वर्णन किया है, किन्तु उसे जानते नहीं इसलिए दूसरा नाम लिया।

उसने कहा : वह कैसे?

मैंने कहा : (जब तुमने कहा हलीला खुद खुद को बनाने वाला है) तब तुमने एक महाबुद्धिमान, महाज्ञानी और योजक के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया। किन्तु जब मैंने तुमसे पूछा कि वह कौन है तो तुमने कहा वह हलीला है। चाहे वह हलीला ही क्यों न हो किन्तु तुमने एक बुद्धिमान और ज्ञानी रचयिता

के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया मात्र उसका नाम अल्लाह कहने के स्थान पर हलीला कहा। (अब नाम का फेर समाप्त होने में देर नहीं लगेगी क्योंकि हलीला को तुम बुद्धिमान और ज्ञानी नहीं कह सकोगे) यदि तुम कुछ और विचार करते तो तुम्हें पता चलता कि इस हलीला में खुद को पैदा करने की ज़रा भी शक्ति नहीं है क्योंकि उसमें न तो बुद्धिमत्ता है और न समझ।

उसने कहा : इसके अतिरिक्त कोई और दलील आप के पास है?

मैंने कहा : हाँ !! है । जितनी चाहिए उतनी दलीलें हैं। तुम्हें कहना चाहिए था कि यह हलीला एक छोटी से तुच्छ वस्तु है। उसमें शक्ति नहीं है। खुद को तोड़ने से, निचोड़ने से, कूटे जाने से, खाए जाने से खुद को बचा नहीं सकता। एक अदना सा कड़वा, बदसूरत और शक्ति हीन है। वह स्वयं स्वयं को कैसे बना सकता है।

उसने कहा : कैसे उसने खुद को बनाया? उसमें खुद को बनाने जितनी

शक्ति है। अथवा वह खुद को उतना ही बनाता है जितना वह चाहता है।

मैंने कहा : यदि तुम्हारी इच्छा एक निरर्थक बात पर ज़िद करने की है तो वैसा ही सही। अच्छा यह बताओ, हलीला ने स्वयं ही अपने को कब बनाया? पैदा होने से पहले या पैदा होने के बाद? यदि तुम कहो कि उसने खुद को पैदा होने के बाद पैदा किया तो यह एक निरी मूर्खतापूर्ण बात है। एक वस्तु बनी हुई मौजूद हो और वह खुद को बनाए यह निरर्थक बात है। ऐसा कैसे हो

सकता है? तुम्हारा कहने का अर्थ यह हुआ कि हलीला दो बार बना। एक बार स्वयं खुद के द्वारा बना दूसरी बार स्वयं खुद को बनाया। यह तो प्राप्त वस्तु की प्राप्ति कही जायगी। जो वस्तु प्राप्त हो उस वस्तु की प्राप्ति असंभव है।

अब यदि तुम कहो कि उसने खुद को पैदा होने से पहले बनाया तो यह भी एक बड़ी मूर्खतापूर्ण और झूठ बात है। क्योंकि वह खुद पैदा होने से पहले कुछ था ही नहीं। जो वस्तु खुद अस्तित्व में

न हो वह दूसरी किसी वस्तु को अस्तित्व में ला सकती है? अस्तित्व रखने वाली वस्तु अस्तित्व न रखने वाली वस्तु को अस्तित्व में ला सकती है ऐसा मेरे कहने को तुम झूठ मानते हो। किन्तु तुम खुद को, यह कहने पर कि जिस वस्तु का अस्तित्व न हो वह कब से अस्तित्व में आ चुकी वस्तु को पैदा करती है या अस्तित्व में लाती है, झूठा नहीं मानते। खुद ज़रा विचार करो। तुम्हारा कहना सत्य और तर्कसंगत है या मेरा।

उसने कहा : साहब आपका कहना सत्य है।

मैंने कहा : यदि मेरा कहना सत्य है तो तुम मानते क्यों नहीं?

उसने कहा : मैंने मान लिया कि भिन्न भिन्न वस्तुओं ने खुद को, और हलीला ने स्वयं खुद को पैदा नहीं किया। उसी प्रकार खुद देख रेख नहीं कर सकती। किन्तु मुझे लगता है कि शायद उस झाड़ ने हलीला को पैदा किया होगा। क्योंकि आखिर हलीला झाड़ ही से तो निकला है।

मैंने कहा : ठीक !! फिर उस झाड़ को किसने बनाया?

उसने कहा : दूसरे हलीला ने।

मैंने कहा : मैंने कहा विवाद की एक सीमा निश्चित करो। (क्योंकि अब तो यही कहते जाओगे झाड़ ने हलीला को और हलीला ने झाड़ को पैदा किया) या तो यह मान लो कि जहां ये कड़ियाँ समाप्त हो वह अल्लाह है। अथवा हलीला है। यदि तुम कहो कि हलीला है तो मैं पूछूँगा,

उसने कहा : हाँ, पूछो।

मैंने कहा : हलीला से झाड़ कब पैदा होता है? जब वह खुद नष्ट हो जाय तब न?

उसने कहा : हाँ !

मैंने कहा : वृक्ष तो हलीला के नष्ट हो जाने के बाद सौ सालों तक जीता है। तुम हलीला को पैदा करने वाला और सम्हालने वाला कहते हो। तो कहो, वृक्ष को कौन संभाल रहा है? हलीला तो है ही नहीं। वृक्ष को कौन बचा रहा है? कौन उसे बढ़ा रहा है? कौन उसकी स्थिति के अनुसार उसे सुधार रहा है?

कौन उसका पालन पोषण कर रहा है? कौन उसमें पत्ते उगा रहा है?

तुम्हें कहना ही पड़ेगा कि वही उसका जतन कर रहा है जो उसका पैदा करने वाला है। और अब भी यही कहो कि वह हलीला है जिसने नष्ट होने से पहले उसे पैदा किया था अब नष्ट होने के बाद उसका जतन कर रहा है तो यह एक विचित्र और हास्यास्पद बात मानी जायगी। बनाने वाला और पालन पोषण करने वाला एक है। जब उसका अस्तित्व हो तब वह बनाए और जब वह नष्ट हो

जाय तब पालन पोषण करे यह कैसे हो सकता है?

उसने कहा : मैं ऐसा तो नहीं कहता

मैंने कहा : तब मानो कि उसका पैदा करने वाला वह है जिसे हम अल्लाह तआला कहते हैं। और यदि और कोई शंका रह जाय तो कह दो।

उसने कहा : अभी मेरे मन में बैठ जाय ऐसी बात नहीं हुई है।

मैंने कहा : यदि अभी भी तुम अपनी अज्ञानता से चिपके रहना चाहते

हो तो मैं कहूँगा कि तुम्हारा यह कहना कि संसार की वस्तुएँ इन्द्रीय के द्वारा जानी जाती है यह बात साफ़ झूट और निराधार है। दिल (मन) के बिना इन्द्रीयाँ बेकार है। दिल ही इन्द्रियों का मार्गदर्शन करता है। दिल ही इन्द्रियों से वस्तुओं का परिचय कराता है। तुम्हारा यह कहना कि दिल इन्द्रियों के बिना जान नहीं सकता झूठ है। (जिस मनुष्य का दिल जागृत न हो इन्द्रियाँ उसे कुछ बता नहीं सकतीं।) देखो जब दिल में आत्मा नहीं रहती तब इन्द्रियाँ मनुष्य

को कुछ बता नहीं सकती। मनुष्य मर जाता है और इन्द्रियाँ सही भी हों तो उनसे कोई काम नहीं हो सकता। दिल काम न करें तो इन्द्रियाँ बेकार हो जाती है।

इस बात से यह सिद्ध होता है कि जब तक दिल इन्द्रियों का मार्गदर्शन न करे तब तक इन्द्रियों को कुछ पता नहीं चलता। वास्तविकता जानने वाला दिल है। इन्द्रियाँ तो साधन मात्र हैं।

उसने कहा : आप जो कह रहे हो उसे मैं संपूर्ण दलीलों के बिना मानने वाला नहीं।

मैंने कहा : तो मैं शुरू करता हूँ। कई बार ऐसा होता है कि कई इन्द्रियाँ पंगु हो जाती है। बेकार हो जाती है। (जैसे कान बहरे हो जाते हैं, आँखें अंधी हो जाती है, सूंघने की शक्ति बेकार हो जाती है) तब दिल सारी चीज़ों पर हुकूमत करता है। जिसमें लाभ या हानि है बताता है चाहे चीज़ें छिपी हो या ज़ाहिर हों। उसका बताना सच होता है।

उसने कहा : आप ऐसी बातें कर रहे हो जो स्वयं दलील लग रही है। किन्तु मैं किसी दूसरी तरह से स्पष्ट रूप से समझना चाहता हूँ।

मैंने कहा : इन्द्रियाँ बेकार हो जाने के बाद भी दिल कायम रहता है। क्या तुम जानते नहीं?

उसने कहा : दिल कायम रहता है यह बात सच है किन्तु वह किसी वस्तु को (इन्द्रियों के बताए बिना) जान नहीं सकता। (जैसे कान बहरे हो जाने के बाद दिल सुन नहीं सकता)

मैंने कहा : माता बालक को जन्म देती है तब बालक एक मांस का लोथड़ा होता है, क्या तुम जानते नहीं? सुनने, देखने, चखने, छूने, और सूंघने की क्रियाओं में से कोई बात उसकी इन्द्रियाँ बता नहीं सकती क्योंकि उसकी इन्द्रियों में वह शक्ति नहीं होती।

उसने कहा : यह सत्य है।

मैंने कहा : तब उसे किस इन्द्रीय ने बताया कि जब भूख लगे तो दूध मांगे। और जब दूध पी कर तृप्त हो जाय तो रोना बंद कर के हँसने लगे।

शिकारी और दाना चुगने वाले पक्षियों को किस इन्द्रीय ने बताया कि अपने बच्चों के आगे मांस और दाना डालें जिससे शिकारी पक्षियों के बच्चे मांस पर और दाना चुगने वाले पक्षियों के बच्चे दानों पर टूट पड़ें।

और मुझे पानी में रहने वाले पक्षियों के संबंध में कहो- क्या तुम यह जानते नहीं कि जब उन्हें पानी में डाला जाय तो वे तैरने लगते हैं। (उदा। बदक और पानकोमडी के बच्चे) और जब ज़मीन पर रहने वाले पक्षियों को पानी

में डाला जाय तो वे डूबने लगते हैं जबकि इन्द्रियाँ दोनों में समान हैं। तो फिर पानी के पक्षी अपनी इन्द्रियों से कैसे लाभ उठा रहे हैं जबकि ज़मीन के पक्षी क्यों लाभ नहीं उठा पाते? इसके अतिरिक्त ज़मीन के पक्षी पानी में थोड़ी देर रखे जाएँ तो मर जाते हैं और पानी के पक्षी ज़मीन पर अधिक देर रखे जाएँ तो मर जाते है। (इसका क्या कारण है?) इससे यह सिद्ध होता है कि इन्द्रियों द्वारा ही सब कुछ होता है यह तुम्हारा दावा सही नहीं है। विचार करने

से यही लगता है कि किसी महा बुद्धिमान, अनुपम आयोजक रचयिता के बिना जिसने पानी के पक्षी अलग बनाए हैं और ज़मीन के पक्षी अलग बनाए हैं, ऐसा होना असंभव है। (अर्थात इस बात से यह सिद्ध होता है कि किसी सर्वशक्तिमान, महाबुद्धिमान आयोजक ने अपनी इच्छानुसार पानी के पक्षियों को अलग प्रकार के और जमीन के पक्षियों को अलग प्रकार के बनाया है और उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार अवयव और साधन प्रदान किये हैं। वर्ना

दोनों से एक ही प्रकार के कार्य होने चाहिए थे।)

मुझे यह बताओ कि चींटी जिसने कभी पानी न देखा हो उसे पानी में डाला जाय तो तैरने लगती है और पचास वर्ष का बुद्धिमान अनुभवी मज़बूत मनुष्य को पानी में डाला जाय तो डूबने लगता है। इसका क्या कारण है? यदि इन्द्रियों द्वारा ही सारे कार्य होने होते तो फिर बुद्धिमान व्यक्ति के अनुभव ने, उसकी बुद्धि ने, उसकी इन्द्रियों ने उसे क्यों नहीं बचाया? और चींटी जो

अशक्त है उसे कैसे तैरना है कैसे पता चला ?

क्या तुम जानते नहीं कि दिल जो बुद्धि की खान है वह जिस मनुष्य का मैंने वर्णन किया उस मनुष्य के बालक के पास है, उसीप्रकार प्राणियों के बच्चों के पास भी है। वही दिल जो बालक के पास है दूध मांगता है, दाना खाने वाले पक्षियों को दाना और मांस खाने वाले पक्षियों को मांस खाना सिखाता है।

उसने कहा : मैं तो इतना जानता हूँ कि दिल इन्द्रियों के द्वारा ही जान पाता है। (यह उसकी नीरी हठधर्मी थी)

मैंने कहा : तुम तो यह मान चुके थे कि जब तक दिल न कहे, दर्शाए, या सूचना न दे इन्द्रियों से कुछ हो नहीं सकता। इसके बावजूद इन्द्रियों के संबंध में तुम अपने दावे को छोड़ते नहीं।

मैं तुम्हें सिद्ध कर देता हूँ कि इन्द्रियाँ केवल प्रत्यक्ष व ज्ञेय वस्तुओं को ही पहचान सकती हैं। इन्द्रियाँ ईश्वर को नहीं पहचान सकतीं क्योंकि वह

अदृश्य और छिपा है। (जब इन्द्रियों में से कोई भी इन्द्रीय, चाहे वह देखने वाली हो या सूंघने वाली, रूह या आत्मा को देख या सूंघ कर नहीं पहचान सकती, तो परमात्मा को कैसे पहचान पाएगी।)

अब मैं इस प्रकार सिद्ध करता हूँ कि इन्द्रियों को बनाने वाले ने इन्द्रियों के लिए एक दिल बनाया है। उस दिल को प्रदान कर के उसने मनुष्य पर अपनी हुज्जत (दलील) स्थापित की है। प्रत्यक्ष वस्तुओं को पहचानने के लिए

उसने इन्द्रियाँ बनाई है और उसके द्वारा भी उसने अपने रचयिता होने की दलील स्थापित की है।

द्रष्टि, प्रकट वस्तुओं को, जो निश्चित है, देखती है और देखी हुई बात दिल को बताती है। द्रष्टि ने आकाशीय सत्ता को चारों दिशाओं में देखा कि आकाश किसी भी प्रकार के प्रत्यक्ष खम्भों के बिना स्थिर है। वह अपनी गति में न कभी पीछे रहता है न कभी आगे बढ़ता है, न टूट फूट जाता है, न ऊपर चढ जाता है कि अपने से

दूर चला जाय, न नीचे उतर आता है कि अपने पास आ जाय, बल्कि सदा एक ही नियम से एक ही स्थिति में रहता है। दीर्ध काल से भी उसकी स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता, रात दिन के फेर से भी वह पुराना नहीं होता, उसका कोई कोना गिर नहीं पड़ता, उसकी कोई किर्च नहीं गिरती।

फिर उसने सात सितारों को देखा कि वे भी आकाश की गति के साथ फिरते हैं। एक बुर्ज़ से दूसरे बुर्ज़ में रोज, हर महीने, हर वर्ष फिरा करते

हैं। कुछ सितारों की गति मध्यम हैं। कुछ एक रास्ते पर जाते हैं फिर उसी पर लौटते हैं। कुछ तेज़ गति से चलते हैं, कभी उत्तर की ओर जाते हैं कभी दक्षिण की ओर। सूर्य प्रकाश के समय अदृश्य हो जाते हैं, सूर्यास्त के बाद फिर दिखाई देते हैं।

सूर्य और चन्द्र नियमित रूप से एक बुर्ज़ से दूसरे बुर्ज़ में यात्रा करते हैं और इनकी गति में कोई अंतर नहीं पड़ता। ये बात वे ही लोग जान सकते हैं जो समझते हैं। सरल भाषा में ये वस्तुएँ

अत्यंत बुद्धिमत्ता से बनाई गई हैं। बुद्धिमान लोग जानते हैं कि यह कार्य किसी मानव बुद्धि के बस की बात नहीं है, न किसी अनुपम कल्पना शक्ति ने उसकी योजना की है।

जब ये सारी बातें खुली आँखों ने देखी तो दिल के समक्ष प्रस्तुत की। दिल समझ गया कि इन सारी चीज़ों का कोई बनाने वाला है जो अद्धर स्थिर आकाश को थामे हुए है। फिर उसने यह भी जान लिया कि जिसने सूर्य और

चन्द्र को आकाश में बनाया है वही आकाश का भी बनाने वाला है।

फिर आँख ने देखा कि पृथ्वी खड़ी है तो उसने दिल को इसकी जानकारी दी। दिल समझ गया कि पथराई हुई पृथ्वी को नीचे गिरने से या ऊपर चढ़ने से रोकने वाला वही है जो आकाशों को ऊपर स्थिर रखने वला है। उसने यह भी निष्कर्ष निकाला कि यदि इन वस्तुओं का रोकने वाला कोई न होता तो यह पृथ्वी अपने ऊपर स्थित पहाड़ों, समुद्रों, झाडों और रेगिस्तानों के वज़न

से धंस जाती। आँखों के बताने से दिल ने जाना कि पृथ्वी का रचयिता भी वही है जो आकाशों का योजक व रचयिता है।

फिर कानों ने सख्त आँधियों की और नर्म और मंद गति से बहने वाली वायु की ध्वनियाँ सुनी। और आँखों ने देखा कि वह बड़े बड़े झाड़ों को उखाड़ फेंक देती है। मज़बूत महलों और अटल इमारतों को गिरा देती है। रेत के बड़े बड़े ढेर उड़ा देती है। एक ओर से उड़ा कर दूसरी ओर जमा देती है। यह सब

ऐसी स्थिति में होता है कि उठा कर ले जाने वाला दिखाई नहीं देता, सुनाई नहीं देता, किसी इन्द्रीय से जाना नहीं जाता। वायु ऐसी वस्तु है कि उसे रोका नहीं जा सकता। और वह असीम होने के कारण दिखाई नहीं देती।

जब ये सारे गतिशील कार्य आँखों ने देखे, कानों ने सुना और अन्य इन्द्रियों ने जाना तो उन्होंने सब मिल कर दिल को यह सुझाने से अधिक, कि इन सारी वस्तुओं का कोई रचयिता है, कुछ नहीं किया।

दिल अपने अंदर स्थित बुद्धि से विचार करता है कि जब तक वायु को कोई चलाने वाला न हो वह खुद से नहीं चल सकता। निसंदेह उसे चलाने वाला कोई है ही। यदि वायु अपने आप चलती होती तो उसने रुकना नहीं चाहिए था।

वायु एक को तो गिरा देती है, दूसरे को छोड़ देती है। एक वृक्ष को उखाड़ फेंकती है दूसरे को यथा स्थान रहने देती है। (दोनों वृक्ष एक दूसरे के निकट होने के बावजूद एक को उखाड़ फेंकना एक को छोड़ देना इसमें "इच्छा"

दिखाई देती है। हम जानते हैं वायु में "इच्छा" नहीं होती। तब हमें मानना पड़ेगा कि यह कार्य किसी और ने अपनी "स्वेच्छा" से किया।) एक प्रदेश पर आंधी आती है अन्य स्थान पर नही आती।

जब दिल ने वायु के संबंध में विचार किया तो उसने निष्कर्ष निकाला कि उसे चलाने वाला कोई है जो उसे अपनी इच्छा से चलाता है अपनी इच्छा से रोक लेता है। जहां चाहता है भेज

देता है जहां नहीं चाहता वहाँ से बुला लेता है।

फिर दिल ने विचार किया वायु का संबंध धरती व आकाश के साथ है। अतः जो धरती व आकाश का बनाने वाला है वही वायु का भी बनाने वाला और चलाने वाला है।

इसी प्रकार आँखों ने और कानों ने दिल को भूकंप का समाचार सुनाया। दिल ने अन्य इन्द्रियों से भी इस खबर की पुष्टि की। जब इन्द्रियों ने इतनी बड़ी पृथ्वी को उसके वृक्ष, पर्वत,

समुद्र, बस्ती और बस्ती वासियों के वज़न सहित कांपती हुई बताया और यह भी बताया कि पृथ्वी एक गेंद के समान गोल है और संपूर्ण गोले में कहीं भी कोई जोड़ नहीं है। उसके प्रभाग एक दूसरे से अलग नहीं है। इन सब के बावजूद एक क्षेत्र हिल रहा है अन्य स्थान स्थिर है। एक स्थान इमारतों को गिरा रहा है, धरती को धंसा रहा है, अन्य क्षेत्र स्थिर और शांत है। तब दिल ने निष्कर्ष निकाला कि धरती का जितना हिस्सा कांपा उसका हिलाने वाला

और जितना क्षेत्र स्थिर रहा उसका स्थिर रखने वाला एक ही है। और वह भी वही है जो इस पृथ्वी और आकाशों का तथा जो कुछ इस धरती और आकाशों में है उन सब का योजक तथा रचनाकार है।

उसने यह भी विचार किया कि यदि धरती स्वयं खुद को हिलाती होती तो हिलाती नहीं क्योंकि उसका स्वभाव हिलने का हो या स्थिर रहने का। दूसरे शब्दों में- उसका स्वभाव स्थिर रहने का है हिलने का नहीं। यदि उसका स्वभाव

हिलने और कांपने का होता तो सदा हिलती कांपती रहती, कभी स्थिर न रहती। जैसे हम उसका स्वभाव बदलते हुए देखते हैं; स्थिर देखते हैं वैसे न दिखती, सदा भूकंप रहता। क्योंकि किसी भी वस्तु के स्वभाव में (बिना किसी सशक्त कारण के) बदलाव नहीं आता। इसपर से उसने निष्कर्ष निकाला कि जिसने पृथ्वी को बनाया है वही उसका हिलाने वाला भी है। वह जिस हिस्से को चाहता है हिलाता है, जिस हिस्से को चाहता है स्थिर रखता है।

फिर आँखों ने उन बड़ी बड़ी निशानियों को देखा, अतः उसने बादल को देखा कि जो आकाश और पृथ्वी के बीच ईश्वरीय आदेश से धुंए के समान रहता है। उसने देखा कि उसका शरीर पृथ्वी और पर्वतों के साथ टकराने लायक नहीं है। वह तो वृक्षों के बीच से भी गुज़र जाता है। वह न तो झाड़ों को हिलाता है न उसकी किसी डाल को तोड़ता है न नुक्सान पहुँचाता है। न तो वह पेड़ों के किसी बाग से चिपका रहता है। वह तो अपने धुंए समान स्थूलता

सहित कारवां में चलने वाले मुसाफिरों के समान आता है और चला जाता है।

यूं तो वह हल्का और सूक्ष्म है किन्तु इसके बावजूद इतने अधिक पानी का बोझ उठाता है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। फिर वह अपने अंदर इतनी तो वस्तुएँ जैसे जला देने वाली बिजली। गर्जना, बर्फ, ओले, आदि रखता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

अंतःकरण उसके आश्चर्यजनक भेद को नहीं समझ सकता। आकाश में ऊंचा

चढ जाता है। अलग अलग रहता है फिर आपस में मिल जाता है। एक बादल खुद बिखर जाता है फिर दूसरों के साथ जा कर मिल जाता है। अल्लाह के आदेश से चलने वाली हवा जहाँ चाहती है वहाँ उसे ले जाती है और फैला देती है। हवा के कारण कभी नीचे आजाता है कभी ऊंचे चढ़ जाता है पर वह अपने अंदर पानी को कभी गिरने नहीं देता। जब बरसाता है तो दरिया बहा देता है।

कई स्थानों तथा कई बस्तियों पर से गुज़रता है पर उसमें से कुछ कम

नहीं होता। जब असीम विस्तार में फ़ैल जाता है तो अपने अंदर के पानी को बूँद बूँद और मूसलाधार बरसाता है यहांतक कि हौज़ और तालाबों को छलका देता है। रास्तों में पानी की रेलम पेल कर देता है। नहरों और नदियों को ऐसा लबालब भर देता है जैसे पानी के पर्वत खड़े कर दिए गए हों। और उनके बहने से इनती ध्वनि पैदा होती है कि कान बहरे हो जाएँ।

फिर वह वर्षा मृत पड़ी धरती को जीवन प्रदान करती है। हरियाली से

उसका मिट्टी जैसा रंग हरा हो जाता है। घांस उग आती है। जबकि वह पहले सूखी हुई होती है फिर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां उग कर प्राणियों का चारा बनती है। बादल अपने अंदर का पानी बरसा कर बिखर जाते हैं और ऐसे स्थान पर चले जाते हैं कि दिखाई भी नहीं देते कि कहाँ गुम हो गए।

जब आँखों ने यह सब देख कर दिल के समक्ष प्रस्तुत किया तो दिल ने विचार किया कि यदि ये सब अपने आप से होता या बादल खुद से करते होते तो

अपने वज़न से आधा वज़न भी उठा नहीं पाते। यदि बादल ही बारिश बरसाते होते तो हज़ारों मील तक पानी को उठा कर न ले जाते बल्कि पास ही में बरसा देता। बूँद बूँद योजना पूर्वक बरसाने की बजाय एक साथ बरसा देते। (क्योंकि बादल में कैसे बरसना चाहिए इसकी समझ शक्ति तो हैं नहीं) यदि वे सारा पानी एक साथ बरसा देते तो सारी इमारतें गिर जाती, वनस्पति का नाश हो जाता। यदि वे खुद से यह काम

करते तो एक शहर में जाते और दूसरे में बिलकुल ही नहीं जाते।

इन सारी स्पष्ट और सच्ची दलीलों से दिल ने निष्कर्ष निकाला कि इन सारी बातों का योजक और रचनाकार एक ही है। यदि ऐसा न होता, अर्थात रचनाकार दो होते तो इतनी लंबी कालावधि से जो नियम चला आ रहा है वह न होता, इस नियम में कुछ न कुछ अडंगे अवश्य पड़ते। पहले होने वाली घटना बाद में होती, बाद में होने वाली घटना पहले घटित हो जाती। जो

वस्तु नीचे है वह ऊपर चली जाती, जो ऊपर है वह नीचे चली आती। अस्त होने वाला उग आता, उगने वाला अस्त हो जाता। (सारी घटनाएं नियम और क़ानून के विरुद्ध होती) नियमित रूप से जो सारे कार्य होते हैं उनमें अंतर पड़ जाता।

इन सब से दिल ने निष्कर्ष निकाला कि सारी प्रकट तथा गुप्त वस्तुओं का योजनाकार वही रचयिता है जो सब से पहला है। आकाश को पैदा करने वाला और कायम रखने वाला, धरती को पैदा करने वाला और बिछाने

वाला। जिन वस्तुओं का वर्णन मैंने किया है उन सब का बनाने वाला और चलाने वाला वही है इसके अतिरिक्त अन्य वस्तुओं का बनाने और चलाने वाला भी वही है।

इसी प्रकार जब आँखों ने देखा कि रात और दिन जो रोज क्रमानुसार आते हैं और जाते हैं, रोज आने से पुराने नहीं होते। लंबी कालावधि बीत जाने के बावजूद उनकी स्थिति में कोई अंतर नहीं आता। एक दूसरे के विरोधाभासी होने से भी उनमें कोई अंतर नहीं आता।

उनकी स्थिति कोई घटती नहीं है। दिन, रोज की तरह, पूर्ण प्रताप से अपने प्रकाश सहित और रात्रि हमेंशा की तरह अपने अंधकार सहित, एक दूसरे में प्रवेश करते रहते हैं यहाँ तक कि उनमें से हर एक अपनी लम्बाई में कमी और अधिकता की निश्चित सीमा के अनुसार एक समान अंदाज़ को पंहुच जाते हैं। इतना होने के बाद भी जो रात स्थिर रहती है वह स्थिर ही रहती है, जो जो दिन व्याकुल रहते हैं वे अंधकारमय रहते हैं, रात अँधेरी होती है वह अँधेरी

ही होती है, जो दिन स्थिर रहते हैं वे स्थिर ही रहते हैं। उनकी (तारों आदि की) स्थिरता या गति का रात या दिन पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता।

फिर ठंडी और गर्मी को देखा कि वे एक के बाद एक नियमानुसार आते हैं और जाते हैं। दिल को समाचार पहुँचाया तो दिल ने निष्कर्ष निकाला कि जिसने ये सारी वस्तुएँ एक नियम से रची है वह निश्चित रूप से एक, सर्वसत्तावान, महाबुद्धिमान होना चाहिए। जो हमेंशा से है और हमेंशा

रहेगा। यदि पृथ्वी और आकाश के रचनाकार एक से अधिक होते तो हर रचनाकार अपनी रची वस्तुओं का ध्यान रखता और एक दूसरे पर प्रभुत्व प्राप्त करने का प्रयत्न करता। इससे उनमें फूट पड़ती। उनमें फूट पड़ती तो रचना और रचना के नियमों में भी फूट पड़ती। भिन्न भिन्न नियम निकलते, भिन्न भिन्न व्यवस्थाएं चलतीं और अंत में सारी रचनाओं का नाश हो जाता।

किन्तु हम देखते हैं कि न तो भिन्न नियम हैं और न भिन्न क़ानून।

सब एक ही नियम, एक ही क़ानून एक ही नीति, एक ही व्यवस्था के अंतर्गत हमेंशा से चल रहा है इसलिए इसका बनाने वाला और चलाने वाला एक ही होना चाहिए और है।

जो निष्कर्ष दिल ने निकाला था और अपनी बुद्धि से समझा था उसके समर्थन में उसे एक और वस्तु मिल गई। वह थी उस रचनाकार की भेजी हुई पुस्तकें और पैगम्बरों की बातें। उसने इन लोगों से सीखा कि उस रचनाकार मालिक की न तो कोई पत्नी है और न

पुत्र। उसका न कोई साथी है न कोई भागीदार। जब ये सारी बातें दिल के समक्ष प्रस्तुत हुईं तो दिल ने स्वीकार कर लिया।

उसने कहा : आज तक किसी ने मेरे पास ऐसी बातों का वर्णन नहीं किया जैसी बातों का वर्णन आप ने किया है। किन्तु जब तक आप अपनी बातों के समर्थन में अकाट्य दलील प्रस्तुत नहीं करोगे, मैं स्वीकार नहीं कर सकता।

मैंने कहा : बहुत अच्छा !! जब तुम कुछ बोल नहीं सकते और जब तुम्हारी पहले की और अब की बातों में अंतर आगया है तो अभी ही तुम्हारा दिल तुम्हें ऐसी बाते बताएगा जिससे तुम्हें विश्वास आ जाएगा कि इन्द्रियाँ दिल के बिना कुछ नहीं जान सकतीं।

अच्छा, क्या तुमने कभी स्वप्न में देखा है कि तुम कुछ खा रहे हो और खाने का स्वाद और लज़्ज़त तुम्हार दिल तक पहुंच रही है?

उसने कहा : हाँ।

मैंने कहा : क्या तुमने कभी देखा है कि तुम स्वप्न में रो रहे हो, या हंस रहे हो? ऐसे ऐसे शहरों में यात्रा कर रहे हो जिन्हें तुमने कभी देखा नहीं था, या देखा था और स्वप्न में देखी निशानियों को समझ लिया हो। क्या ऐसा हुआ है?

उसने कहा : ऐसे तो मैंने कई स्वप्न देखे हैं।

मैंने कहा : तुम्हारे रिश्तेदारों में से किसी रिश्तेदार को, पिता को या भाई को जो मर चुके हों, स्वप्न में देखा है? और जिस प्रकार तुम उन्हें मृत्यु से

पहले पहचानते थे पहचान लिया हो। क्या ऐसा हुआ है?

उसने कहा : ऐसा कई बार हुआ है।

मैंने कहा : तो फिर बताओ तुम्हारी इन्द्रियों में से किन इन्द्रियों ने वस्तुओं को देख कर, उनकी बातों को सुन कर, खाने का स्वाद ले कर, शहरों की यात्रा कर के, हँसने को रोने को जान कर वे बातें दिल को पंहुचाई जिससे ये बातें दिल को पता चली?

उसने कहा : मेरी इन्द्रियों में से किन इन्द्रियों ने ये बाते जानी यह मैं

कह नहीं सकता। नींद में तो मनुष्य मुर्दों के समान रहता है। ऐसी स्थिति में इन्द्रियाँ कैसे जान सकती हैं? न कान सुन सकते हैं न आँखें देख सकती हैं।

मैंने कहा : जब तुम स्वप्न में से झटके से जागे तब तुमने स्वप्न में जो कुछ देखा था तुम्हें याद था कि नहीं ? और याद था तो तुमने जैसे का वैसा अपने मित्र या रिश्तेदार को बताया था या नहीं?

उसने कहा : ऐसा कई बार हुआ है। बल्कि कई बार तो ऐसा हुआ है कि

सपने में मैंने एक वस्तु देखी फिर उसी दिन शाम से पहले मैंने जागृत अवस्था में उसी वस्तु को वैसे का वैसा ही देखा जैसा मैंने सपने में देखा था।

मैंने कहा : फिर बताओ तुम्हारी किस इन्द्रीय ने यह जाना और याद रखा और दिल में स्थापित किया कि तुम जागने के बाद भी भूले नहीं और जैसा देखा था वैसे ही याद रखा।

उसने कहा : इसमें इन्द्रियों का कोई संबंध नहीं।

मैंने कहा : जब इनमें इन्द्रियों का कोई संबंध नहीं और उस समय इन्द्रियाँ बेकार थीं; तब सपने में इन वस्तुओं को जिसने देखा, अनुभव किया, याद रखा, वह कोई और नहीं तुम्हारा दिल था ऐसा तुम नहीं समझ सकते? दिल में बुद्धि है और उसके द्वारा वह परमात्मा अपनी हुज्जत (दलील) अपने बन्दों पर जारी करता है।

उसने कहा : मैंने सपने में जो कुछ देखा था उसका सच में कोई अस्तित्व नहीं था। सपने में देखी वस्तुएँ मृगजल

के समान होती है। जिसे देख कर मनुष्य समझता है, विश्वास करता है कि वहाँ पानी है किन्तु जब उसके पास जाता है तो देखता है कि वहाँ पानी तो क्या पानी का निशान भी नहीं है। स्वप्न भी मृगजल के समान एक भ्रान्ति है।

मैंने कहा : तुम मृगजल को, और खुद को सपने में खट्टा मीठा खाते पीते देखने को, खुशी और गमी के अनुभव को एक समान कैसे कह सकते हो?

उसने कहा : जब मैं मृगजल के स्थान पर पानी समझ के गया तो मुझे

पता चला कि वहाँ कुछ भी नहीं है। उसी प्रकार जब मैं स्वप्न देख कर उठा तो देखा वहाँ कुछ भी नहीं है।

मैंने कहा : यदि मैं तुम्हारे समक्ष ऐसा उदाहरण दूं कि जिसका स्वाद तुमने स्वप्न में लिया हो और तुम्हारा दिल बेचैन हुआ हो तो फिर तुम्हें मेरे कहने का विश्वास होगा या नहीं?

उसने कहा : अवश्य होगा।

मैंने कहा : क्या तुम्हें कभी स्वप्न में वीर्यपात हुआ था? अथवा तुमने

तुम्हारी परिचित या अपरिचित स्त्री के साथ सहवास किया था?

उसने कहा : हाँ ! ऐसा कई बार हुआ है।

मैंने कहा : तो क्या जागृत अवस्था में तुम्हें जो आनंद मिलता है वैसा ही आनंद तुम्हें स्वप्न में नहीं मिला ? यह बात तुम्हारे मृगजल वाले दावे का खंडन करती है। (क्योंकि मृगजल का कोई प्रभाव तो होता नहीं है। पास जाकर देखो तो रेत ही दिखाई देती है। किन्तु यहाँ तो प्रभाव दिखाई दे रहा है)

उसने कहा : वीर्यपात हुआ है आदि। जागृत अवस्था में उसकी इन्द्रियाँ उसकी बताई बातों को देखती है।

मैंने कहा : तुम्हारे इस उत्तर से मेरी बात को समर्थन मिलता है। और यह बात तय हो गई कि इन्द्रियाँ बेकार हो जाने के बाद भी दिल सारी बातों को समझता है, पहचानता है। तुमने यह किस आधार पर कहा कि जागृत अवस्था में समस्त अवयव अच्छी स्थिति में एकत्रित होने पर भी दिल सभी वस्तुओं को समझ नहीं सकता वह

केवल इन्द्रियों द्वारा ही जान सकता है। तो जो बात तुम स्वीकार कर चुके कि इन्द्रियाँ (नींद के कारण) बेकार होने के बावजूद भी दिल समझ सकता है।

दिल को कौन समझाता है? किस आधार पर दिल को पता चलता है? वह न तो सुन सकता है न देख सकता है। तो तुमने जो इनकार किया वह इनकार नहीं करना चाहिए था बल्कि स्वीकार करना चाहिए था कि दिल को इन्द्रियों के द्वारा ही सभी बातों के समाचार मिलते हैं। दिल सारी इन्द्रियों का शासक

है। सारी युक्तियाँ दिल के द्‌वारा ही होती है। सभी इन्द्रियाँ उसके अधीन हैं। इस बात से कोई अज्ञानी भी इनकार नहीं कर सकता। हाथ को इतनी समझ या सत्ता नहीं है कि वह खुद से किसी को मारे। उसीप्रकार अन्य अवयवों को भी समझ और अधिकार नहीं है कि खुद कुछ करें। किन्तु जब दिल हाथ को आदेश देता है कि वह मारे तभी हाथ उठेगा। दिल के कहे बिना या युक्ति समझाए बिना इन्द्रियाँ या अवयव कुछ भी नहीं कर सकते।

उस सर्जनहार ने दिल को ही शरीर के लिए योजना करने वाला बनाया है। मनुष्य दिल के द्वारा ही देखता या सुनता है। दिल शरीर का शासक और अभिभावक है। यदि दिल पीछे हटना चाहे तो शरीर आगे नहीं बढ़ सकता। उसीप्रकार दिल आगे बढ़ना चाहे तो शरीर पीछे नहीं हट सकता। समस्त इन्द्रियाँ और अवयव दिल का आदेश मानते हैं। दिल जो आदेश देता है वह काम वह करते हैं। जिस काम से मना करता है वह काम नहीं करते। सुख और

दुःख दिल ही को होता है। तकलीफ और दर्द दिल ही को होती है। यदि कोई अंग या अवयव खराब हो जाय तो दिल को कोई अंतर नहीं पड़ता, किन्तु यदि दिल खराब हो जाय तो सारे अंग बेकार हो जाते हैं। देखना सुनना निरर्थक हो जाता है।

उसने कहा : मैं तो समझता था कि आप इस गूढ़ प्रश्न में उलझ जाओगे। किन्तु आपने तो ऐसी ऐसी बातों का वर्णन किया जिसका खंडन करने में मैं असमर्थ हूँ।

मैंने कहा : अब मैं तुम्हें यहीं बैठे बैठे सारी बातों को सिद्ध कर देता हूँ। और जो कुछ तुमने स्वप्न में देखा उसका भी वर्णन कर देता हूँ।

उसने कहा : आप जो चाहो करो। इस मामले में मैं चकित हूँ।

मैंने कहा : तुम कभी अपने दिल में किसी व्यापार व्यवसाय करने का, कोई मकान बनाने का, या कोई चीज़ बनाने का ख़याल कर के काम शुरू करने का आदेश देते हो या नहीं?

उसने कहा : जब कोई काम करना होता है, मैं ऐसा ही करता हूँ।

मैंने कहा : जब दिल में ऐसा ख़याल करते हो तो क्या किसी अवयव को उसमें शरीक करते हो?

उसने कहा : नहीं ऐसा नहीं करता।

मैंने कहा : तुम यह तो मानते हो कि तुम्हारा दिल जो कहता है वह सच है?

उसने कहा : दिल जो कहता है उस पर विश्वास तो होता ही है। किन्तु आप

ऐसी बात करो कि मेरे दिल का संदेह दूर हो जाय।

मैंने कहा : तुम्हारे देश में ज्योतिष्य विद्या जानने वाले लोग हैं?

उसने कहा : क्या आप नहीं जानते कि हमारे देश में ज्योतिष्य विद्या जानने वाले इतने लोग हैं कि उससे अधिक दूसरे किसी स्थान पर नहीं होंगे।

मैंने कहा : वे ज्योतिष्य का ज्ञान कैसे जानते हैं? क्योंकि ज्योतिष्य का ज्ञान शरीर के किसी अंग से प्रकट नहीं

होता उसीप्रकार विचार और अभ्यास से भी नहीं मिलता।

उसने कहा : विद्वानों ने एक गणित ढूंढ निकाला है। उस प्रकार गणित करने से पता चल जाता है। वैसे ही दूसरे लोग भी सीख कर जो चाहते हैं बताते हैं। वे उस गणित के द्वारा सूर्य और चन्द्र किस घर में हैं? उस व्यक्ति के भाग्य का कौनसा ग्रह खराब है? शुभ ग्रह कहाँ छिपा है? जांच कर बता देते हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी लड़के को ज्योतिषी के पास ले जाय तो वह गणित

कर के उस लड़के की मृत्यु तक की घटनाएं बता देगा। यदि ज्योतिषी निपुण होगा तो उसकी बताई बातों मे ज़रा सा भी अंतर नहीं आ सकता।

मैंने कहा : ज्योतिष्य विद्या का उस लड़के से क्या संबंध है?

उसने कहा : सभी मनुष्यों के जन्म का ग्रहों से संबंध होता है। इसी कारण ग्रहों के द्वारा मनुष्य के साथ घटने वाली घटनाओं का पता चलता है। यदि ग्रहों से संबंध न होता तो ग्रहों के द्वारा मनुष्य के साथ घटने वाली घटनाओं का

पता कैसे चलता? इसी कारण जिस वर्ष में, जिस महीने में, जिस घड़ी में मनुष्य का जन्म हुआ हो वह याद रख कर उसी के अनुसार गणित करें तो गलती नहीं होती।

मैंने कहा : जिस प्रकार तुमने कहा है, उसके अनुसार ज्योतिष्य विद्‌या यदि सही है तो यह विद्‌या बहुत ही आश्चर्यजनक है। और इससे अधिक सूक्ष्म और इससे अधिक महत्वपूर्ण कोई ज्ञान नहीं होना चाहिए। क्योंकि इससे मनुष्य के सारे हाल चाल पता चलते हैं।

तो यह गणित तुम लोग जन्मजात जानते हो कि नहीं?

उसने कहा : यह विद्या कोई भी बिना सीखे जानता हो ऐसा नहीं है।

मैंने कहा : अब हम ज़रा इस बात पर विचार करेंगे कि यह विद्या लोगों ने कैसे सीखी? और सभी के पास यह विद्या क्यों नहीं है? यह भी सोचने वाली बात है कि उन ग्रहों का शुभ होना कैसे जाना गया? उनकी चाल तेज़ है या धीमी इसका पता किस आधार पर चला? उनका स्थान आकाश में

उसीप्रकार धरती पर है इसका पता कैसे चला? क्योंकि पृथ्वी गोल होने के कारण छह बुर्ज़ ऊपर हैं और छह नीचे हैं। मेरी बुद्धि तो स्वीकार नहीं करती कि ग्रहों की सभी प्रकट तथा गुप्त बातें मनुष्य जान सकता हो।

उसने कहा : मैं तो समझता हूँ कि यदि मनुष्य यदि जानना चाहे तो जान सकता है।

मैंने कहा : जब तुम्हारा मानना है कि सभी मनुष्य ग्रहों की गणना के अनुसार जन्म लेते हैं तो जिस विद्वान

व्यक्ति ने यह गणित बनाया वह भी इसी संसार वासियों में से होगा। और वह भी अन्यों के समान ग्रहों से संबंध रख कर जन्मा होगा।

उसने कहा : यदि वह विद्वान भी मनुष्य ही है तो वह भी ग्रहों की गणना के अनुसार ही जन्मा होगा।

मैंने कहा : क्या तुम यह नहीं मानते कि ये ग्रह उस विद्वान से पहले पैदा हुए होंगे जिसके विषय में तुम यह कहते हो कि उसने यह गणित खोज निकाला? तुम्हारा तो यह भी मानना है

कि वह ग्रहों से संबंध जोड़ कर उसके आधार पर वह जन्मा है।

उसने कहा : निसंदेह ये ग्रह उस विद्वान के पहले के हैं।

मैंने कहा : जब ये ग्रह उस विद्वान के पहले के हैं। तो उस विद्वान को इन ग्रहों की विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान कैसे हुआ? कि जिस पर से उसने यह ज्योतिष्य विद्या खोज निकाली। जबतक इन ग्रहों के पहले से कोई न हो, और जब तक वह उनकी

परिस्थितयों से अवगत न कराए, तबतक कैसे पता चलेगा?

हर जन्म पाने वाले का जो स्रोत हो, जो उसके जन्म का कारण हो वही समस्त परिस्थितियों से अवगत करा सकता है। जिस विद्वान ने यह गणित खोज निकाला है उसने अवश्य किसी ऐसे के पास से विद्या प्राप्त की होगी जो इन ग्रहों के निर्माण के पहले से होगा। उसने इस विद्वान को भी किसी ग्रह से संबंध रख कर पैदा किया होगा कि उसका हाल ज्योतिष्य से जाना जा

सके। महत्वपूर्ण बात यह है कि जो मनुष्यों जो ग्रहों के साथ संबंध जोड़ कर पैदा करे उसे मनुष्यों और ग्रहों दोनों के पहले से होना चाहिए अन्यथा यह कैसे संभव है? ग्रहों के साथ मनुष्य का संबंध किसने जोड़ा कि उनकी स्थिति और भविष्य ग्रहों की गणना से पता चल सके?

यदि यह माना जाय कि इस ज्योतिष्य विद्या को खोज निकालने वाला विद्वान इस संसार से पहले पैदा हुआ हो, उसकी आयु इस संसार से दस

गुना अधिक हो तो भी उसने इन ग्रहों को तो ऐसे ही अद्धर ही देखा होगा जिस स्थिति में हम देख रहे हैं। (फिर उसमें और हममें क्या अंतर रह गया?) वह कैसे गणित जान गया और हम नहीं जान सकते? क्या उसमें ऐसी शक्ति थी कि वह उन ग्रहों के पास जा कर उनकी स्थिति से अवगत हुआ हो? उनकी गति, चाल, शुभ, अशुभ आदि जान सका हो? किन ग्रहों के कारण सूर्य को ग्रहण लगता है? किन ग्रहों के कारण लड़का पैदा होता है? कौनसा ग्रह शुभ

है? कौनसा अशुभ है? किसकी गति तेज़ है किसकी धीमी है? फिर यह सब जानने के बाद दिनों की अच्छी और बुरी घड़ियों को भी ध्यान में ले। और यह भी जाने कि हर ग्रह ज़मीन के नीचे कितना समय रहता है और ऊपर कितना समय रहता है? किस समय उदय होता है? किस समय अस्त होता है? कितना समय अस्त रहता है? कितना समय उगा हुआ रहता है? ग्रहों के पास गए सिवा इन सभी बातों का पता कैसे चलेगा?

और आसमान के बारे में यहाँ ज़मीन पर बैठे बैठे कैसे पता चलेगा? इसका ज्ञान ऐसा नहीं है जो यहाँ से मिल सके, चिंतन कर के जाना जा सके। सूर्य के बारे में जानकारी कैसे मिल सकती है? सूर्य किस घर में है? चन्द्र किस मंजिल में है? कैसे पता चलेगा? वे सात ग्रह जो शुभ और अशुभ हैं वे आकाश के किस हिस्से में है? (उनमें शुभ कौनसा है, अशुभ कौनसा है? कैसे पता चले?) तो यहाँ बैठे बैठे आकाशीय बातों का ज्ञान

मिलना संभव नहीं है। इसके लिए वहाँ जाना होगा।

इस विषय में मेरा दिल कहता है कि उस विद्वान की इतनी शक्ति नहीं होगी कि वह खुद से इस विषय में शोध कर के सारी बातें जान सका हो। दूसरी संभावना यह है कि जो आकाश में ऊपर हो, वहाँ के समाचार से अवगत हो, उसके सिखाने से सीखा होगा।

उसने कहा : मेरी जानकारी में तो नहीं है कि कोई आकाश में गया हो।

मैंने कहा : शायद वह विद्वान आकाश में गया हो और तुम्हें खबर न हो।

उसने कहा : यदि कोई मुझे समाचार दे कि वह आकाश में गया था तो भी मैं स्वीकार नहीं करूँगा।

मैंने कहा : मैं भी यही मानता हूँ कि वह आकाश में नहीं गया। पर यदि हम मान भी लें कि वह आकाश में गया था तो भी क्या ये संभव है कि हर एक घर में हर एक ग्रह के साथ फिर होगा? हर एक ग्रह का जब उदय होता है तब

से जब उसका अस्त होता है तब तक उसके साथ रहा होगा? और ग्रहों की गति तो समान नहीं है। कोई ग्रह अपना चक्र तीस वर्षों में पूरा करता है, कुछ उससे कम समय में। यह तो संभव नहीं है कि इसी प्रकार सभी की चाल गिन कर शुभ अशुभ का गणित बनाया हो?

यदि हम ने मान भी लिया कि वह आकाश पर चढ़ गया और सभी ग्रहों के साथ फिरा और सभी ग्रह तारों को जांच कर उनका गणित बना सका तो भी जब तक पृथ्वी के नीचे के ग्रहों को नहीं

जांचेगा, गणित सही नहीं बैठेगा। और ऐसा करने में जितना समय आकाश के ग्रहों को जांचने में लगा होगा उतना ही समय यहाँ भी लगेगा। कारण कि ग्रह तारों की गति पृथ्वी के नीचे और ऊपर अलग अलग प्रकार की होती है। जो ग्रह तारे पृथ्वी के ऊपर हैं जब तक उनकी वास्तविकता को ज्योतिषी जाने नहीं तब तक पृथ्वी के नीचे ग्रहों की वास्तविकता को जान नहीं सकता कि रात में कौन सा तारा अस्त होता है कौन सा उदय होता है। कई बार पृथ्वी के नीचे उदय

अथवा अस्त की स्थिति रहती है। दिन में कौन सा तारा अस्त हुआ यह भी उसे जानना आवश्यक है। ऐसे कई कारणों से उस विद्‌वान का जितने दिन आकाश में रह कर ग्रहों का अभ्यास किया उतने दिन पृथ्वी के नीचे के ग्रह तारों के साथ भी रहना आवश्यक है।

फिर इस गणित का बनाने वाला एक ही होना चाहिए। (क्योंकि एक से अधिक होंगे तो गणित में अंतर आ जायगा।) वह गणित का बनाने वाला पृथ्वी के अंधकार में, समुद्र में,

आकाश में, सितारों तथा ग्रहों में जबतक वे घुमते रहे उनमें घूम आया और उनकी वास्तविकता को जान आया। इतना ही नहीं जितना समय वह पृथ्वी के ऊपर के ग्रहों में रहा उतना ही समय वह पृथ्वी के नीचे के ग्रहों में रहा यह तुम्हारे सिवा दूसरा कोई न कह सकेगा।

उसने कहा : कोई मनुष्य आकाश पर चढ़ सकता है ऐसा मैंने कब कहा ? उसने पृथ्वी और समुद्र के अंधकार में प्रवेश किया था यह भी मैंने नहीं कहा।

मैंने कहा : फिर, उस गणित बनाने वाले विद्वान ने यह विद्या कि जिस विद्या के अनुसार तम्हारे कहे अनुसार सभी जन्म पाते हैं, कैसे खोज निकाला? सितारे, ग्रह, और आकाशी वस्तुओं की विद्या तो उस विद्वान से भी पुरानी है।

उसने कहा : ये सितारों, ग्रहों, तथा आकाशी वस्तुओं की विद्या पृथ्वी वासियों ने खोज निकाली है यह कहना अब मुझे जंचता नहीं।

मैंने कहा : इस विद्या को बनाने वाला कोई ऐसा महा बुद्धिमान होना चाहिए जो आकाश और पृथ्वी की वास्तविकता से संपूर्ण रूप से अवगत रचयिता है।

उसने कहा : यदि मैं ऐसा कहूँ तो मैंने इस सृष्टि के सर्जनहार ईश्वर को स्वीकार कर लिया (और मान लिया कि इस सृष्टि को बनाने वाला है।) कि जिसके संबंध में आप की मान्यता है कि वह आकाश और पृथ्वी को बनाने वाला और चलाने वाला है।

मैंने कहा : क्या तुमने नहीं कहा कि ज्योतिष्य के नियम सच्चे हैं और उसी नियमानुसार लोग जन्म पाते हैं?

उसने कहा : इसमें शंका कहाँ है? शंका तो इसमें हैं कि वस्तुओं का कोई पैदा करने वाला है या नहीं?

मैंने कहा : तुम मुझे कह चुके हो कि कोई व्यक्ति सितारों तथा सूर्य चन्द्र के साथ साथ उदय अस्त होता रहा ऐसा सम्भव नहीं।

उसने कहा : तब आपको यह मानना ही पड़ेगा कि इस विद्या को सिखाने वाला कोई आकाशीय शिक्षक है।

मैंने कहा : यदि मैं कहूँ कि इस विद्या का कोई शिक्षक है ही नहीं तो यह असत्य है। यदि यह कहूँ कि पृथ्वी वासियों में से किसी ने इन आकाशीय वस्तुओं की विद्या खोज निकाली तो यह असंभव है। इसलिए कि पृथ्वी वासियों में से कोई भी आँख से देख कर और उन सितारों के पास जा कर भी उनकी वास्तविकता से अवगत नहीं हो

सकता। पृथ्वी वासी किसी भी तरीके से खुद अपने बूते पर यह विद्या प्राप्त नहीं कर सकते।

हमारी मान्यता के अनुसार कोई भी विद्या या ज्ञान इन्द्रियों की सहायता के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। इन ग्रहों तारों तक हमारी इन्द्रियाँ पहुँच नहीं सकतीं। क्योंकि वे दूर भी हैं, अद्धर लटके हैं और लगातार घूम रहे हैं। इन्द्रियाँ तो केवल उनके उदय और अस्त को देख सकती है किन्तु उनकी गति की गणना के रहस्य को, उनके

शुभ- अशुभ होने को, उनके अदृश्य होने तथा फिर लौट आने को जान नहीं सकतीं। जब इन महत्वपूर्ण बातों को इन्द्रियाँ जान नहीं सकतीं तो उसे अनुमान से कैसे जाना जा सकता है।

उसने कहा : यदि आप इस विद्या को सीखना चाहो तो आप किस के पास से इस विद्या को सीखना पसंद करोगे? धरती वासी के पास से या आकाश वासी के पास से ?

मैंने कहा : आकाश वासी के पास से सीखना पसंद करूँगा।

उसने कहा : तो फिर विचार करो और समझने का प्रयत्न करो। मन को साफ़ करो। जब सारे लोग ग्रहों की शुभता या अशुभता के अनुसार जन्म पाते हैं तब ये ग्रह मनुष्यों के पहले के हैं क्या आप यह मान नहीं सकते?

मैंने कहा : क्यों नहीं?

उसने कहा : तब तुम्हारी पहली मान्यता कि लोग अनादि काल से है और अनंत काल तक रहेंगे यह झूठी सिद्ध हुई। जब सितारे और अन्य ग्रह मनुष्यों के पहले से हैं तब मनुष्य की

उत्पत्ति सितारों और ग्रहों के बाद हुई है। जब सितारों और ग्रहों का अस्तित्व मनुष्यों के पहले से है तो पृथ्वी का भी अस्तित्व मनुष्यों से पहले से होना चाहिए।

मैंने कहा : निसंदेह। पृथ्वी जिसे ईश्वर ने बिछौने के समान बनाई है, मनुष्यों के पहले से न होती तो मनुष्य तथा अन्य प्राणी कहाँ रहते? यदि तुम कहो कि हवा में रहते तो यह अशक्य है क्योंकि ऐसी स्थिति में इन्हें पंखों की

आवश्यकता होती जो इनके पास नहीं है।

उसने कहा : अरे ऐसी स्थिति में केवल पंखों से क्या होता? जीवन निर्वाह के लिए असंख्य वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है।

मैंने कहा : फिर क्या ? अभी भी तारों, ग्रहों और पृथ्वी की उत्पत्ति के पश्चात ही मनुष्य उत्पन्न हुआ है इस संबंध में कोई शंका रह जाती है?

उसने कहा : कोई शंका नहीं रहती। मुझे तो इस बात का विश्वास है।

मैंने कहा : अभी मैं तुम्हें और ऐसी दलीलें सुनाऊंगा कि जिसको सुनकर तुम्हारे ज्ञान में वृद्धि होगी और तुम्हार विश्वास और पक्का होगा।

उसने कहा : इतनी दलीलों से मेरे मन का समाधान हो गया है।

मैंने कहा : जहां सूर्य चन्द्र तारे आदि घुमते हैं वह आकाश है। क्या तुम जानते नहीं?

उसने कहा : क्यों नहीं। अवश्य जानता हूँ।

मैंने कहा : फिर, क्या वह (आकाश) उन सितारों और ग्रहों की उत्पत्ति का मौलिक स्रोत नहीं?

उसने कहा : सचमुच है।

मैंने कहा : तो, मैं यह समझता हूँ कि ये सितारे और ये ग्रह कि जिनकी गति के अनुसार तुम्हारे कथनानुसार मनुष्य जन्म लेते हैं, वे इस आकाश की उत्पत्ति के बाद उत्पन्न होना चाहिए। क्योंकि ग्रह आकाश ही में घुमते हैं।

उसने कहा : आप की बात इतनी स्पष्ट और सच्ची है कि इसका इनकार नहीं किया जा सकता। सच है जिस आकाश में ये सितारे और ग्रह घुमते हैं वह आकाश उनकी उत्पत्ति का स्रोत होना चाहिए। यह आकाश इन ग्रह, सितारों के लिए ही बनाया गया सिद्ध होता है। क्योंकि यदि आकाश न होता तो सितारे कहाँ घूमते ?

मैंने कहा : तो अब तुमने मान लिया कि सितारे, ग्रह कि जिनकी शुभ, अशुभता अनुसार (पृथ्वी पर रहने

वाला) मनुष्य जन्म पाता है उन सितारों और ग्रहों का उत्पन्नकर्ता वही है कि जिसने पृथ्वी को पैदा किया है क्योंकि पृथ्वी को पैदा न करता तो किसी भी प्रकार की उत्पत्ति सम्भव नहीं थी।

उसने कहा : मुझे यह बात माने बिना छुटकारा नहीं।

मैंने कहा : तो क्या तुम्हारी बुद्धि यह नहीं कहती कि आकाश को उत्पन्न करने की शक्ति उसी में होनी चाहिए जिसमें पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र और ग्रहों

तारों को उत्पन्न करने की शक्ति है। फिर आकाश में जो कुछ है वह न होता तो पृथ्वी और पृथ्वी में की सारी सृष्टि नष्ट हो जाती।

उसने कहा : अब मैं साक्ष्य देता हूँ कि सचमुच (इन सभी वस्तुओं का) रचयिता एक ही है। मेरी समझ में आ जाय ऐसी दलीलें आप ने दी हैं और उन दलीलों ने मेरी दलीलों का खंडन कर दिया है।

सितारे और ग्रह आकाश में हैं अतः उस संबंध की विद्या का शिक्षक पृथ्वी

वासियों में से कोई हो अब मैं यह मान नहीं सकता। फिर पृथ्वी के नीचे की वास्तविकता को भी वही मनुष्य जान सकता है जो आकाश की वास्तविकता को जानता है। किन्तु पृथ्वी वासियों ने यह ज्ञान किस तरह संपादित किया यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है। यहाँ तक कि सभी मनुष्यों का गणित, सभी की शोधें, सूक्ष्मता और सत्यता की द्रष्टि से समान निकली। मैं इस संबंध में कुछ जानता हूँ। न जानता होता तो कह देता कि सब कुछ झूठ है। किन्तु मैं जानता

हूँ कि जो समीकरण और नियम इस संबंध में मैं जानता हूँ वे सत्य हैं। ये बातें आप के ज्ञान में कैसे आ सकीं?

मैंने कहा : तुम्हारे हाथों में जो हलीला है उसके द्वारा, और वैद्यकी जो तुम्हारा पुश्तैनी व्यवसाय है उसके द्वारा, यदि मैं सिद्ध कर दूं, कि यह हलीला और इस प्रकार की अन्य दवाओं (जड़ी बूटियों) के दृष्टांत, आकाशीय दृष्टांत के अनुरूप हैं तो क्या तुम सत्य को अंगीकार करने तथा अपने अंतःकरण के साथ न्याय करने का वचन देते हो?

उसने कहा : आप सिद्ध कर दिखाइए।

मैंने कहा : अच्छा बताओ, क्या मनुष्य पर ऐसा समय भी बीता है जब वह ज्ञान और उसके लाभ इस हलीले के समान (अथवा हलीले के लाभ) नहीं जानता था?

उसने कहा : बे शक। (अर्थात कोई ऐसा समय होगा जब लोग दवाओं-औषधि के गुण अवगुण नहीं जानते होंगे।

मैंने कहा : फिर लोगों को इसका ज्ञान कैसे हुआ?

उसने कहा : अनुभव से !! तथा लंबे समय तक प्रयोग और परिक्षण करते रहने से यह ज्ञान मिला।

मैंने कहा : मेरा प्रश्न ऐसा है कि जब लोग दवाओं के गुण दोष जानते ही नहीं थे तब उन्हें दवाओं का अनुभव कर के देखने का विचार ही कैसे आया? दवाएं देखने में तो हानिकारक दिखाई देती हैं (अर्थात दवाएं देखने में कुरूप, स्वाद में कड़वी, मन में अरुचि पैदा

करने वाली होती हैं, पीते समय उबकी आती है) इन सबके बावजूद उसे यह कैसे सूझा कि दवाओं में शरीर के लिए लाभ छिपे हैं? जिस वस्तु को वे जानते नहीं थे, जिसकी उन्हें ज़रा भी कल्पना न थी, उस वस्तु को खोजने का उसका प्रयोग व परिक्षण करने का विचार ही कैसे सूझा? (अज्ञात वस्तु की इच्छा असंभव है) फिर दवाएं भी ऐसी थी कि इन्द्रियाँ भी उनके गुण दोष बताने में असमर्थ होती हैं।

उसने कहा : अनुभव के द्वारा ही लोग ज्ञान संपादित कर पाए। यही उसका उत्तर है। (यद्यपि अत्यंत दुर्बल उत्तर था किन्तु इमाम अ.स. उसे अन्य रीति से समझाने लगे)

मैंने कहा : ठीक !! यह बताओ चिकित्सा विज्ञान किसने खोज निकाला ? विभिन्न जड़ी बूटियाँ जिनमें कई पूर्व के देशों में पैदा होतीं हैं और कई पश्चिम के देशों में। उनके गुण और उनकी विशेषताओं का वर्णन किसने किया ? जिसने चिकित्सा विज्ञान

बनाया वह विद्वान व्यक्ति इन शहरों में रहने वालों में से एक होगा। यह कहे सिवा कोई चारा है?

उसने कहा : बेशक !! ऐसा ही होना चाहिए। और फिर यह आवश्यक है कि जिसने चिकित्सा विज्ञान बनाया वह बड़ा विद्वान होना चाहिए और दूसरे विद्वान उसकी मान्यता से एकमत होने चाहिए और उसकी शोधों पर गहन विचार किया होना चाहिए। (वर्ना चिकित्सा विज्ञान इतनी सरलता से कैसे स्वीकार किया जायगा?)

मैंने कहा : यदि तुम इन्साफ करना चाहते हो और अपने वचन का पालन करने को तैयार हो तो बोलो उस विद्वान ने चिकित्सा विज्ञान को कैसे जाना? थोड़ी देर के लिए मान लो कि उसने अपने शहर की दवाओं को आजमा कर देखा। जैसे उसने फारस की ज़ाफरान (केसर) के गुण दोषों को जाना। किन्तु उससे तुम कह सकते हो कि उसने किस तरह संपूर्ण पृथ्वी की सतह पर उगने वाली सारी वनस्पतियों को, जड़ी बूटियों को, चख चख कर

उनका परिक्षण कर जाना है? क्या तुम्हारी बुद्धि यह स्वीकार करती है कि कई वैद्यों ने फारस देश के हर हर पौधे को वृक्ष को हर वनस्पति की जांच की होगी यहाँ तक कि उन्होंने अपनी इन्द्रियों के द्वारा जान कर पता कर लिया होगा कि इन दवाओं में से किसी भी दवा का कोई अंश या भाग उन वनस्पतियों में रह नहीं गया है जो उनकी इन्द्रियों द्वारा जान नहीं जा सका?

यदि यह मान भी लिया जाय कि उसने बहुत खोज बीन के बाद उस पौधे के खोज भी निकाला और उसने फारस के हर झाड़ पौधे का परिक्षण कर लिया किन्तु उसने यह कैसे जाना कि किसी विशेष दवा में भारत का हलीला, रोम की मस्तगी, तिब्बत की कस्तूरी, चीन की दारचीनी, तुर्की के बेदास्तर का खुसिया, मिस्र की अफीम, यमन का एलिया और आर्मिनिया का बुरक आदि भिन्न भिन्न दवाएं जो भिन्न भिन्न और दूर दूर के देशों में उत्पन्न होती

है, मिलाई नहीं जाएगी, तब तक दवा तय्यार नहीं हो सकेगी? वह यह कैसे जान पाया कि इन दवाओं में से कोई दवा जब तक किसी और दवा के साथ मिलाई न जाए तो फायदा नहीं करती? या उसे दवाओं के पैदा होने के स्थानों के बारे में कैसे पता चला?

दवाएं कोई एक प्रकार की तो होती नहीं। वे तो अलग अलग प्रकार की और अलग अलग रंगों की होती है। भिन्न भिन्न देशों में उत्पन्न होती है। कई वनस्पतियों की जड़ें काम आती हैं,

कईयों की छाल, कईयों के फल, कईयों के निचोड़, कईयों का रस, कईयों की गोंद, कईयों का तेल, कईयों का आसव निकाल कर पकाया जाता है, कईयों का आसव निकाला जाता है किन्तु पकाया नहीं जाता। इस प्रकार दवाएं भिन्न भिन्न प्रकार से उपयोग की जाती हैं। भिन्न भिन्न भाषाओं में उनके भिन्न भिन्न नाम हैं। एक दवा दूसरी दवा के बिना कोई काम नहीं आती। अर्थात दोनों दवाओं के मिश्रण के बिना दवा नहीं बनती।

कई दवाओं में हिंसक प्राणियों और साधारण पक्षियों के पित्त डाले जाते हैं। इन सभी की विशेषता उस वैद्य को कैसे पता चली ? फिर भिन्न भिन्न देशों की प्रजा के बीच शत्रुता होती है। आचार विचार भिन्न होते हैं, कई विषयों में मतभेद होते हैं। लोग आपस में युद्ध करते हैं। एक दूसरे को क़त्ल करते हैं, बंदी भी बना लेते हैं। ऐसी कठिन स्थितियां होने के बावजूद उस वैद्य को भिन्न भिन्न देशों की दवाओं के गुण दोष जानने के अवसर कैसे

मिले? क्या तुम यह कह सकते हो कि वह इन सारे देशों में भ्रमण कर चुका होगा। वह सारे देशों की सारी भाषाएँ सीख चुका होगा, सारी दिशाओं में जा पाया होगा, पूर्व तथा पश्चिम के देशों में पैदा होने वाली सारी दवाओं को निडरता से स्वस्थ स्थिति में परिक्षण कर चुका होगा। क्या वह कभी बीमार नहीं हुआ होगा? हमेंशा स्वस्थ ही रहा होगा? उसपर कभी आघात नहीं हुआ होगा? वह सदा जीवित ही रहा होगा? उसे हमेंशा रास्ते मिले ही गए होंगे? वह

कभी रास्ता नहीं भूला होगा? सदा कुशल मंगल ही में रहा? कभी इस काम से तंग नहीं आया होगा ?

उस वैद्य ने जब तक उन भिन्न भिन्न गुणों की, भिन्न भिन्न रंगों की, और भिन्न भिन्न नामों की दवाओं को उनके पैदा होने के मौसम में, उनके पैदा होने के स्थान में खोज निकाला और जैसी वे दवाएं थीं वैसी ही उन्हें समझ लिया और फिर एक के झाड़ का, उसके फल का, उसके पत्तों, जड़ों और छाल सहित वर्णन किया तब तक उसे

बीमारी रास्ता भूलना आदि कठिनाईयां नहीं आईं? (क्या इतना बड़ा काम किसी एक व्यक्ति का हो सकता है? एक ही व्यक्ति उसे प्राप्त जीवन में इतनी अधिक खोज बीन और परिक्षण कर सकता है? विशेषकर जब एक ही दवा में बीस बीस गुण और विशेषताएं एकत्रित हों। उसे कैसे अलग अलग कर के अनुभव कर सकता है?)

उस वैद्य कि चिकित्सा शास्त्र रचने के लिए संसार के सभी पौधों को

उनकी जड़ी बूटियों का बार बार परिक्षण किये बिना कोई पर्याय नहीं था।

यदि हम मान भी लें कि वह हर एक झाड़ वृक्ष पौधे को हर एक जड़ी बूटी का परिक्षण कर पाया था फिर भी उसकी इन्द्रियों ने कैसे बताया कि इस विशेष दवा में यह विशेष गुण हैं। (कारण कि इन्द्रियाँ गुण दोषों का पता नहीं लगा सकतीं) हर एक झाड़ भिन्न प्रकार का होता है। कोई खारा, कोई खट्टा, कोई कड़वा होता है। तब उसने

हर एक दवा की विशेषताओं का पृथक्करण कैसे किया होगा?

यदि तुम यह कहो कि वह वैद्य शहर शहर घूमता रहा और लोगों से पूछ पूछ कर पता करता रहा तो भी, वह जिस वस्तु को देख नहीं सकता, और उसकी इन्द्रियों में से कोई इन्द्रीय उसे बता नहीं सकती, उसका अनुभव उसने कैसे लिया? भाषा भिन्न, लोग भिन्न, देश भिन्न, प्रकृति भिन्न इतनी भिन्नताओं के बीच एक विशेष पौधे की वास्तविकता एक विशेष व्यक्ति से ही

पूछना चाहिए यह उसने कैसे जाना? (और यदि उस व्यक्ति ने कुछ बताया तो वह सच ही बताया इसका विश्वास उसे कैसे हुआ?)

यदि हम मान लें कि वह इतना सब कुछ कर पाया तो भी वह दवाओं के लाभ और उसके हानिकारक होने को, उसकी रोगनिवारक शक्ति को, स्वस्थ व्यक्ति में नए रोग पैदा करने की शक्ति को, उस दवा में निहित ठंडक व उष्मता को, कड़वाहट को, नरमी व कठोरता को कैसे जान पाया ?

यदि तुम कहो कि वह इन सारी बातों को अपने तर्क व अनुमान से जान पाया तो यह असंभव है। क्योंकि तर्क या अनुमान इन्द्रियों के बताने के बाद या मन को सुझाने के बाद किया जा सकता है, किन्तु जो वस्तु पूर्णतः अपरिचित हो उसके संबंध में तर्क या अनुमान नहीं किया जा सकता।

यदि हम कहें कि वह वैद्य अपने व्यक्तिगत अनुभव से ये सारी बातें जान पाया तो भी यह बात असत्य ठहरती है। क्योंकि जब उसने यह शास्त्र रचा तब

उसने सारी दवाओं का अनुभव किया होगा। अनुभव से पूर्व दवा हानिकारक है या लाभ कारी इसकी उसे कोई जानकारी नहीं थी। ऐसी स्थिति में अनुभवों के बीच ही उसे मर जाना चाहिए था क्योंकि अनगिनत दवाएं ज़हरीली होती है।

यदि हम माने कि वह हर शहर में गया होगा, हर वर्ग में गया होगा, उनकी भाषा सीखी होगी, उन लोगों पर दवाओं का परिक्षण किया होगा, कभी यह व्यक्ति मरा होगा कभी वह व्यक्ति

मरा होगा, इसी प्रकार होता रहा होगा। तब भी जब तक अनेक लोगों की जान का भोग न ले ले एक भी दवा की पूरी जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता था। ऐसी स्थिति में उस शहर वाले उसकी बात नहीं मानते क्योंकि वह तो उन लोगों की जानें ले रहा था।

चलो हम यह भी मान लेते हैं कि शहर वालों ने उसे माफ किया, उसकी बातें मानीं, और उसे प्रयोग और परिक्षण करने से नहीं रोका, किन्तु उसे विभिन्न दवाओं के मिश्रण का प्रमाण

कैसे पता चला? कैसे पता चला कि कौनसी दवा किस रोग पर किस प्रमाण में और किस वज़न में मिलानी है?

यदि हमने यह भी मान लिया कि उसने ये सारी बातें स्वयं खोज निकाली तो भी समस्या यह है कि कई दवाएं ऐसी होती हैं कि उनके उपयोग के समय यदि वे प्रमाण से बढ़ जाएँ तो रोगी मर भी सकता है और यदि प्रमाण से कम हो जाय तो प्रभावहीन हो जाती है।

यदि हम यह भी मान लेते हैं कि उसने इन सारी बातों का ज्ञान प्राप्त कर

लिया, वह पूर्व तथा पश्चिम के देशों में भ्रमण भी कर आया, उसे इतनी लंबी आयु भी मिल गई कि वह एक एक देश में भ्रमण कर हर एक पेड़ पौधे की खोजबीन कर पाया किन्तु फिर भी समस्या यह है कि उसे हर दवा के प्रभाव को समझने का अवसर कैसे मिला? जैसे हिंसक जानवरों के पित्त, समुद्र में रहने वाले प्राणियों के पित्त आदि की प्रभावकारिता उसे कैसे पता चली?

यदि हम कहें कि उस वैद्य ने सभी स्थानों पर घूम घूम कर सारी खोजबीन की, तो कई दवाएं ऐसी हैं जिनमें जब तक प्राणियों के पित्त आदि न मिलाए जाएँ तब तक वे लाभकारी नहीं होतीं। धरती पर रहने वाले पशु, हवा में उड़ने वाले पक्षी, पानी में रहने वाले प्राणियों को जांचे बिना यह कार्य संपूर्ण होना संभव नहीं था। इसके लिए आवश्यक था कि प्रत्येक प्राणी को मार कर उसके पित्त को जांचे कि किस प्राणी का पित्त उपयोगी है और किसका

निर्उपयोगी। तुम्हारे कथनानुसार यदि उसने हर प्रकार के पेड़ पौधों को जांचा था तो उसी प्रकार हर प्रकार के प्राणियों को भी जांचे बिना उसका कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था। यदि वह ऐसे करता तो कई प्राणी तो इस धरती की सतह से लुप्त हो जाते।

चलो हम यह भी मान लेते हैं कि उसने धरती के सारे प्राणियों को जांचा किन्तु वह पानी में रहने वाले प्राणियों को कैसे जांच सकता था? जैसे उसने हर एक वनस्पति को जांचा वैसे ही

उसने सारे समुद्र के प्राणियों को जांचना चाहिए था, यह कार्य उसने कैसे किया?

इनमें से तुम्हें किसी बात का पता न हो तो कोई बात नहीं, किन्तु तुम्हें यह तो मानना ही पड़ेगा कि समुद्र के प्राणी समुद्र में ही रहते हैं। तो क्या तुम्हारी इन्द्रियाँ और तुम्हारी बुद्धि तुम्हें यह सुझाती हैं कि ये सारी बातें परिक्षण और अनुभव से प्राप्त हो सकती है?

उसने कहा : आपने तो मुझे उलझन में डाल दिया। मैं आप को क्या उत्तर दूं मुझे समझ में नहीं आ रहा है।

मैंने कहा : मैंने जितना वर्णन किया है उससे अधिक स्पष्ट मैं अब कर देता हूँ। तुम जानते हो कि जिन वनस्पतियों और पित्तों की दवाई बनाई जाती है उन्हें एक दूसरे के साथ उचित प्रमाण में जब तक नहीं मिलाया जाता, प्रभावकारी दवा नहीं बन सकती।

उसने कहा : सच है।

मैंने कहा : फिर बताओ, उस वैद्य को उन दवाओं के प्रमाण और वज़न किस ने बताया? उसने किस तरह वज़न तय किया? (किस दवा में

कितनी मात्रा, आदि) तुम्हारा व्यवसाय चिकित्सक का होने की कारण इसकी उपयोगिता को तुम अच्छी तरह समझ सकते हो।

दवा के किसी मिश्रण में विशेष पत्तियाँ या फल निश्चित प्रमाण में डालते हो, किसी और दवा में कम प्रमाण में डालते हो, किसी दवा में अधिक प्रमाण में डालते हो यहाँ तक कि विशेष दवा तय्यार हो जाती है। जब वह दवा एक विशिष्ट प्रमाण में जुलाब के रोगी को देते हो तो उसका जुलाब बंद

हो जाता है। और जब वही दवा किसी कब्ज के रोगी को देते हो तो उसे जुलाब होने लगते हैं। अब बताओ कि उस वैद्य की समझ शक्ति ने अथवा इन्द्रियों ने ये कैसे जान लिया कि यह विशेष दवा विशेष रोगी पर विशेष प्रभाव दिखाएगी।

पिए जाने वाली दवा अधिक संभव था कि पैरों की ओर उतर आती किन्तु वह नीचे उतरने की बजाय ऊपर चढ़ कर सिरदर्द को ठीक करेगी यह बात उसने कैसे पहचान लिया? पीने वाली दवाईयां (तरल दवा) अपनी गति की

तेज़ी के कारण अधिक संभव था कि दिमाग पर चढ़ जाती किन्तु वह दिमाग पर चढ़ने की बजाय पैर दर्द को ठीक करेगी यह उसने कैसे जान लिया?

इसी प्रकार हर एक दवा अमुक अमुक अवयवों को लाभ पहुँचाने के लिए पिलाई जाती है, उस वैद्य को यह कैसे पता चला कि वह दवा केवल उसी अवयव पर असर डालेगी और अन्य अवयवों पर हानिकारक प्रभाव नहीं डालेगी। ये सारी बातें किस इन्द्रीय ने उसे सुझाई?

सभी दवाएं सर्वप्रथम अमाशय में जाती है वहाँ से वे वितरित होती है। उस वैद्य ने यह कैसे जान लिया कि इस दवा का प्रभाव केवल मस्तिष्क पर होगा हाथ पैर पर नहीं होगा। क्या ये सारी बातें उसकी इन्द्रियों ने उसे सुझाई?

जो दवा शरीर के ऊपर के भाग के लिए है वह नीचे नहीं उतरती और जो दवा शरीर के निचले भाग के लिए है वह ऊपर क्यों नहीं चढती? उस वैद्य ने कैसे जान लिया कि अमुक दवा केवल कान पर असर करेगी, आँख पर नहीं।

अमुक दवा कान अपर तो प्रभावकारी होती है पर उससे आँख का दर्द नहीं जाएगा।

हम देखते हैं कि सारी दवाएं जिन जिन अवयवों के लिए निर्धारित की गई हैं उन्हीं अवयवों को लाभ पहुँचाती हैं। उस वैद्‌य को यह विशेषता का कैसे पता चला? दवा पीने के बाद तो दिखाई नहीं देती कि कहाँ गई? शरीर के भीतर के अंग तो छिपे हैं। दवाएं तो नसों में फिरती हैं। उसके ऊपर मांस है, उसपर चमडी, कान उसे सुन नहीं सकते,

आँख उसे देख नहीं सकती, नाक सूंघ नहीं सकती, जीभ चख नहीं सकती, स्पर्श से जाना नहीं जा सकता।

उसने कहा : आपका कथन सत्य है। परंतु हम समझते हैं कि जिस वैद्य ने यह दवा खोज निकाली है और उसे निर्धारित किया है, वह वैद्य जब किसी रोगी को दवा पिलाता था और यदि वह रोगी मर जाता तो वह उस मरीज़ का पेट चीर कर देख लेता कि किस किस रास्तों से वह दवा गई है और कहाँ

उसका संग्रह हुआ है। फिर उसे याद रखता ।

मैंने कहा : जब दवा पी जाती है तो वह नसों में चली जाती है और रक्त के साथ मिल कर एक हो जाती है क्या तुम नहीं जानते?

उसने कहा : क्यों नहीं जानता?

मैंने कहा : क्या तुम जानते नहीं कि जब मनुष्य मर जाता है तब उसका श्वास बंद हो जाता है और इससे उसका रक्त ठंडा हो कर जम जाता है?

तो उस वैद्य ने जो दवा मरने वाले को पिलाई थी वह रक्त में मिल गई थी वह जमे हुए रक्त में उसने कैसे पहचानी? वह तो रक्त में मिल जाने के बाद अलग रंग की भी नहीं रह गई थी।

उसने कहा : आप ने तो मेरी बोलती ही बंद कर दी। आपने ऐसी दलीलें दीं है कि उनका उत्तर देना मेरे बस में नहीं है।

मैंने कहा : तो कहो !! लाभकारी दवाएं कहाँ से और कैसे जानी गईं? किन किन दवाओं का मिश्रण करना है?

कौनसी दवाएं कहाँ पैदा होती हैं? अमुक की जड़ें, अमुक की पत्तियाँ लाभकारी हैं यह कहाँ से सीखा? अमुक दवाई निश्चित मात्रा में दी जाएगी तो ही प्रभावकारी होगी वर्ना व्यर्थ जायगी, यह सब ज्ञान कहाँ से आया?

उसने कहा : मुझमें आपके प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता नहीं है। आपने मुझे इस विषय में निरुत्तर कर दिया। इन्द्रियों से, अनुमान से, समझ से या बुद्धि से किसी से भी इसका समाधान नहीं हो सकता। हमें यह तो मानना ही

पड़ेगा कि किसी ने तो वैद्यक शास्त्र रचा है। वैद्यक शास्त्र खुद से बन गया हो, या किसी ने उसका अनुभव परिक्षण करने से पूर्व अपने आप उसका उद्भव हो गया होगा यह तो माना नहीं जा सकता। अब आप ही बताओ कि लोगों ने उन दवाओं को जिनमें उनके लिए लाभ हैं कैसे खोज निकाली? उसे शास्त्र का रूप कैसे दिया?

मैंने कहा : वैद्यक शास्त्र का निर्माता कौन है? किसने इन भिन्न भिन्न वनस्पतियों, जड़ी बूटियों, और

झाड़ पत्तियों को बनाया है? किसने इस शरीर को बनाया है? किसने इन नसों को बनाया है जिनमें दवाएं फिरती हैं और दर्द तक पहुंचती है, यह तुम आसानी से समझ सको इसलिए तुम्हें दलील के रूप में एक दृष्टांत सुनाता हूँ।

उसने कहा : यदि आप दलील दृष्टांत के माध्यम से कहोगे तो ज़रूर मान लूँगा।

मैंने कहा : एक माली व्यक्ति ने एक विशाल बगीचा बनाया हो जिसकी रक्षा के लिए उसकी चारों ओर दीवारे

बना दी हो। हानिकारक वस्तुओं से बगीचे को बचाया हो। संक्षेप में बगीचे के पोषण और उसकी रक्षा की सारी सामग्री तैयार कर रखी हो। उस व्यक्ति के संबंध में मैं तुम से पूछता हूँ – क्या वह बगीचे के किसी झाड़ से कि वह बगीचे के किस हिस्से में लगा है, अनभिज्ञ होगा? (नहीं, क्योंकि उस बगीचे को लगाने वाले उस माली ने खुद अपने हाथों से उन पौधों को रोपा है। उसी ने उनकी रक्षा तथा उनके पोषण का इंतज़ाम किया है।) लो। अब बगीचा

तय्यार हो गया, उसमें के सारे झाड़ उग निकले, फल फलादि लगे, पके, सब्जी भाजी अपनी पुर बहार में आ गई। घूमते फिरते तुम भी वहाँ निकल आए। रमणीय बगीचे को देख कर मन ललचाया। तुम उस माली के पास गए और कोई फल या सब्जी मांगी। तुमने उसका नाम बताया तो वह माली, तुम्हारी मांगी हुई फल या सब्जी, चाहे वह बगीचे के नज़दीक वाले हिस्से में बोई हो या दूर वाले हिस्से में बोई हो, सीधा नहीं जायगा? वह ले आएगा।

खाली नहीं आएगा। और जाते समय रास्ते मे उगे हुए फलों और सब्जियों की ओर ध्यान ही नहीं देगा। सीधा उन मांगे गए फलों या सब्जियों के पास जा कर पहुंचेगा। क्यों सच है या नहीं?

उसने कहा : बेशक।

मैंने कहा : किन्तु यदि वह माली तुम्हारी मांगी गई वस्तु खुद न ला दे और तुमसे कहे कि जाओ और ले लो। तो क्या तुम यह समझते हो कि तुम उस वस्तु तक अचूक सीधे पहुँच सकते हो? न दार्यीं ओर जाओगे न बाईं,

बल्कि इच्छित फल तक पहुँच कर उसे तोड़ लोगे?

उसने कहा : बगीचे के किस हिस्से में वह फल लगा है यह न जानने के कारण कैसे उस फल तक सीधा पहुँच पाऊंगा?

मैंने कहा : तब तुम इच्छित फल या सब्जी की तलाश में पूरे बगीचे में घूमोंगे। एक एक झाड़ और सब्जी को जांचते जाओगे। शायद तुम उस वस्तु तक पहुँचो तो, वही तुम्हारी इच्छित फल या सब्जी है या नहीं तुम अपनी

इन्द्रियों से जांच करोगे इसके सिवा तुम उस तक नहीं पहुँच सकोगे। और न मिले तो खाली वापस आओगे। क्यों। सच है या नहीं?

उसने कहा : सच है। मुझ से तो यह होगा ही नहीं। क्योंकि वह वृक्ष बगीचे के किस हिस्से में लगाया गया है, कहाँ उगा है और उसमें कैसे फल लगे हैं यह मैं जानता ही नहीं।

मैंने कहा : जब तुम्हारी इन्द्रियाँ यह नहीं बता सकती तब तुम्हारी बुद्धि को तुम्हें बताना चाहिए कि जिसने इस

संसार रुपी विशाल बगीचे को जो पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है, जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार के झाड़, पौधे, सब्जी भाजी, तरह तरह की वनस्पति उगी हुई है, रोपी है उसी विद्वान ने ही यह शास्त्र सिखाया होना चाहिए। (वही या इलहाम के द्वारा उस ईश्वर ने मानवता को आवश्यक विद्याएं सिखाई यह इमाम अ.स. यहाँ सिद्ध कर रहे हैं।)

(जैसा कि इमाम अ.स. के साथ वाद विवाद करने वाले वैद्य की मान्यता है कि वैद्यक शास्त्र किसी एक

ही वैद्य ने रचा है और उसी आधार पर इमाम अ.स. उसके साथ संवाद कर रहे हैं। फिर भी आधुनिक युग का कोई पाठक यहाँ यूं आपत्ति कर सकता है कि वैद्यक शास्त्र किसी एक ही व्यक्ति की रचना नहीं है। वह तो भिन्न भिन्न समय के भिन्न भिन्न वैद्यों की शोधों के योगदान का परिणाम है। वैद्यक शास्त्र समय समय पर सुधारों के कारण बढ़ता गया। किसी एक व्यक्ति ने एक सीमा तक शोध कीया, उसके बाद आने वाले ने अपने अनुभव और प्रयोगों के

द्वारा उसकी रचना को आगे बढ़ाया जो उसकी सत्यता के कारण स्वीकारा गया। फिर तीसरे ने उसमें और विशेषताएँ बढ़ाईं। इस प्रकार धीरे धीरे उसका विधान बनता गया। दिन प्रतिदिन उसमें और सुधार होते जाते हैं। नए प्रयोग, नए अध्याय खुलते जाते हैं। इसी प्रकार हर विद्या प्रगति करती जाती है। मैं भी इससे सम्मत हूँ। किन्तु इस से इमाम अ.स. के दृष्टिकोण को कोई हानि नहीं पहुँचती। इमाम अ.स. का यह सिद्धांत कि सारी विद्याएं ईश्वर ने, इस संसार

के रचयिता ने खुद सिखाई है यह सत्य है। विद्याएं समय के साथ प्रगति करती रही हैं किन्तु मनुष्य की उत्पत्ति के तुरंत बाद का समय अज्ञानता का समय था। यह तो हमें मानना ही पड़ेगा। उस अज्ञानता के समय में मनुष्य को यदि कोई समस्या खड़ी हो जाए जो उसने कभी देखा या सोचा नहीं था, तो उस समस्या का निवारण कैसे होता जब तक ईश्वर की तरफ से मनुष्य को मार्गदर्शन न मिले। यह मार्गदर्शन किसी भी रूप में हो सकता है।

मनुष्य की उत्पत्ति के तुरंत बाद के अज्ञानता के समय में, अपनी समस्याएँ सुलझाने के उपाय अथवा अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के उपाय मनुष्य खुद से खोज सका होगा यह असंभव है। क्योंकि ऊपर के संवाद में इमाम अ.स. सिद्ध कर चुके हैं कि कभी न जानी गई वस्तु की इच्छा करना असंभव है।

कल्पना करो कि मनुष्य की उत्पत्ति के तुरंत बाद किसी व्यक्ति को कोई रोग हो गया। यह पहला रोग था।

इससे पहले रोग क्या होता है संसार ने कभी नहीं देखा था। इस रोग को दूर करने का साधन (औषध) अमुक वनस्पति या जड़ी बूटी में छिपा है, जब तक कोई इस बात की शिक्षा न दे, इस रहस्य से अवगत न कराए तब तक मनुष्य का ध्यान वनस्पतियों की ओर गया होगा यह मानना असंभव है।

ऐसे समय में यदि कोई उसे बता सकता था वह सिवा सर्जनहार के कोई न था। इमाम अ.स. इसी बात को स्पष्ट कर रहे हैं कि सारी विद्याएं प्रथमतः

अल्लाह के द्वारा ही सिखाई गई है। इसमें सूक्ष्म रहस्य यह है कि जगत में जितनी भी विद्याएं हैं उसका सिखाने वाला अल्लाह (रचयिता) ही सिद्ध होता है क्योंकि उसीके सिवा कोई संपूर्ण सत्यता के साथ इन विद्याओं की शिक्षा देने में समर्थ नहीं था।

उपरोक्त बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण देना आवश्यक प्रतीत होता है। मानलो एक व्यक्ति भाषा अथवा लिपि पढ़ने में अत्यधिक प्रवीण है। और यह प्रवीणता

उसने किसी की सहायता के बिना प्राप्त की है। इतना ही नहीं उसने दूसरी लिपियाँ भी खोज निकाली है। किन्तु यह सारी वृद्धि वह किसी के पास से वर्णाक्षर के प्राथमिक ज्ञान के प्राप्त किये बिना नहीं कर सकता। यद्यपि उसने दूसरे के पास से वर्णाक्षरों से अधिक कुछ नहीं सीखा किन्तु आरंभ में उसे दूसरे के पास से वर्णाक्षर तो सीखना ही होगा।

इसी प्रकार विद्याएं चाहे जितनी भी प्रगति कर लें, नई नई शोध उसमें चार चाँद लगा रही हों किन्तु उस

विद्याओं के प्राथमिक ज्ञान मनुष्य ने प्रथमतः अल्लाह ही से प्राप्त किया है। इमाम अ.स. यही समझाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि समस्त विद्याओं का मौलिक शिक्षक अल्लाह ही है। (मोमिन)

(हाजीनाजी निवेदन करते है कि जनाब मोमिन ने जो स्पष्टीकरण दिया है वह सही और उचित है। सारी बातें सिखाने वाला यदि अल्लाह न होता तो मनुष्य कुछ भी न कर पाता ये सारी बातें ठीक। किन्तु भिन्न भिन्न विशेषताओं, भिन्न भिन्न रूप रंग वाले

पेड़ पौधे किसने पैदा किये? अल्लाह ही ने तो पैदा किये। यदि अल्लाह ने इतनी विशेषताओं वाली वनस्पतियां पैदा न की होतीं तो कोई भी दवा कैसे बन सकती थी? और उसमें भी अल्लाह की हजारों मस्लेहत भरी हुई है। उसने अलग अलग वस्तुओं में अलग अलग विशेषताएं दी है कि जिससे ईश्वर का अनंत सामर्थ्य सिद्ध हो। ये वस्तुएँ मनुष्य की रोज़ी का साधन बनें। कोई बोए, कोई काटे, कोई जमा करे, कोई शोध करे, कोई खरीदे, कोई बेचे, कोई साफ़ करे,

कोई कूटे, कोई मिलाए इस प्रकार हज़ारों लोगों का निर्वाह हो। उस मालिक की उत्तम कलात्मकता तो ऐसी प्रकट है कि कोई भी न्यायी उसका स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता।

जबान जो दो तोले का मांस का टुकड़ा है, उसमें कोई भी कलात्मकता प्रकट रूप से दिखाई नहीं देती किन्तु उस मांस के टुकड़े में अल्लाह ने कितनी शक्ति और सामर्थ्य प्रदान किया है कि मनुष्य विभिन्न भाषाएँ बोलता है, सुंदर कर्णप्रिय ध्वनियाँ निकालता है। इसमें

ज़रा भी संदेह नहीं, इनकार की गुंजाईश भी नहीं।- हाजीनाजी)

उसी प्रकार तुम अपनी बुद्धि से समझ सकते हो कि उसी ने दवा के नाम, जहां जहां वे दवाएं पैदा होती है उन स्थानों के नाम भी उसीने बताए हैं। जिस प्रकार बगीचे को रोपने वाला अपने बगीचे मे स्थित वस्तुएँ और उनके स्थल जानता है उसी प्रकार इस महान बगीचे को रोपने वाला भी जानता है।

उसी प्रकार जिसने इस संसार रुपी विशाल बगीचे को रोपा है, इसे बनाया

है, वह कोई और हो, और जिसने इस बगीचे में के पेड़ पौधों और उनके गुण दोष और वज़न माप सिखाया वह कोई और हो यह मानना बुद्धि को स्वीकार नहीं।

उसने कहा : आप जो कह रहे हो वह सत्य है।

मैंने कहा : यदि इस शरीर के अंदर के अवयव, मांस, रक्त शिराएं, रक्त, आदि जो कुछ भी शरीर में हैं, और जिन रक्त वाहिनियों में दवा दौड़ती फिरती है और सर तक या पैर तक

पहुँच जाती है, उसको पैदा करने वाला, जड़ी बूटियों को पैदा करने वाले से भिन्न होता तो क्या मनुष्य के शरीर को, दूसरे की पैदा की हुई दवाओं के सही माप तौल से अवगत होता? क्या वह जानता होता कि कौनसी पत्ती या कौनसी जड़ी बूटी किस बीमारी पर लाभ प्रद होगी? नसों पर कौनसी दवा प्रभावकारी होगी?

उसने कहा : (यदि इन दोनों को पैदा करने वाले भिन्न हों तो) कैसे जान सकेंगे? जबकि यह शास्त्र इन्द्रियों

द्वारा जाना नहीं जा सकता इसलिए वे बिलकुल भी समझ नहीं सकता। वही समझ सकता है जिसने इस बगीचे को रोपा है और उसमें के पेड़ पौधों और जड़ी बूटियों से अवगत हो।

मैंने कहा : तब क्या इन दोनों का पैदा करने वाला एक ही होना चाहिए और है यह मानने में कोई आपत्ति है? यदि एक ने दवा पैदा की होती और दूसरे ने मनुष्यों के शरीर और उनकी बीमारियों को, तो दवाओं को पैदा करने वाले को यह पता न चल पाता कि

मनुष्यों के शरीर के किस रोग के लिए कौनसी दवा लाभकारी है। उसी प्रकार शरीरों को पैदा करने वाला भी दवाओं की विशेषताओं से अनभिज्ञ रहता।

किन्तु यदि शरीरों और दवाओं को पैदा करने वाला एक ही हो; और उसे अपनी ही पैदा की हुई दवा को अपने ही बनाए हुए शरीरों पर अपने ही बनाए हुए रोगों को दूर करने के लिए उपयोग करना हो तो उसके लिए बहुत आसान होगा क्योंकि वह शरीर की भी बारीकियों से अवगत है, दवाओं की विशेषताओं

से, उनके प्रमाण से, उनके उगने के स्थान आदि से तथा रोगों की भी बारीकियों से पूर्णतः अवगत होगा।

उसने कहा : सचमुच !! यदि शरीरों का, पवन-वायु का, और दवाओं का पैदा करने वाला एक ही न होता और भिन्न भिन्न होते तो आप ने जो वर्णन किया है उसकी जानकारी किसी को न होती। (शरीर को पैदा करने वाले को दवा की जानकारी न होती और दवा को पैदा करने वाले को शरीर की जानकारी न होती।)

मैंने कहा : उस वैद्य ने (जिसके बारे में तुम्हारी मान्यता है कि उसी ने वैद्यक शास्त्र रचा है) इन सारी बातों की शिक्षा दी, पूर्व और पश्चिम की विभिन्न वनस्पतियों और जड़ी बूटियों की जानकारी दी और वैद्यक शास्त्र रचा वही इस पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए बगीचे का मालिक है। उसी ने इन शरीरों को बनाया है, उसीने इस वैद्य को (जो कोई पैगम्बर होगा जैसे हज़रत लुकमान या हज़रत दाऊद अ.स.) हर एक वनस्पति के गुण दोष बताए, उस

वनस्पति के उगने के स्थान का पता बताया, फल, तेल, पत्तियाँ, लकडियाँ, छाल, रस, आदि का ज्ञान दिया है। उसी ने उसके वज़न, माप, प्रमाण आदि बताए। किस रोग के लिए कौनसी दवा कारगर होगी यह भी उसी ने बताया। क्योंकि वही सारे पशु पक्षियों का निर्माता है इसलिए वह जानता है कि किस पशु या पक्षी के पित्त की क्या विशेषता है और उसे किस दवा में किस प्रमाण मे मिलाने से क्या लाभ होते हैं। यदि पशु पक्षियों का निर्माता कोई और

होता तो वह पित्त में निहित लाभ हानि यह न जान पाता, यह भी न जान पाता कि कौनसा पित्त मिलाना है कौनसा नहीं।

क्योंकि सभी का पैदा करने वाला एक ही है इसलिए वह उनके पित्तों के लाभ बता पाया और उनके नाम सिखा पाया। ताकि वह वैद्य उसे जाने और जिसमे उसे लाभ न हो उसे छोड़ दे। वहीं से उस वैद्य को कौनसा हिंसक प्राणी, कौनसा जानवर, कौनसा पक्षी लाभकारी है और कौनसे जानवरों में

लाभ नहीं है यह पता चला। यदि स्वयं वस्तुओं व प्राणियों तथा मनुष्यों का रचयिता उस वैद्‌य को यह शिक्षा न देता तो उस वैद्‌य को कुछ भी पता न चलता। (इससे यह सिद्ध होता है कि जिसे तुम वैद्‌य कहते हो वास्तव में वह नबी या पैगम्बर था। और जिसने तुम्हारे उस वैद्‌य को शिक्षा प्रदान की वह और कोई नहीं इस विश्व का रचयिता अल्लाह था।)

उसने कहा : सत्य है। यहाँ सारी इन्द्रियाँ और अनुभव बेकार हैं। (अर्थात

ये बातें ऐसी है कि जब तक इस विश्व का रचयिता खुद इन बातों की शिक्षा न दे तब तक मात्र इन्द्रियों तथा अनुभव से इन्हें जाना नहीं जा सकता।)

मैंने कहा : जब तुम्हारे अंतःकरण ने, तुम्हारे दिल ने, सत्य को यहाँ तक स्वीकार कर लिया हैं तो आओ हम दोनों मिल कर विचार करें और समझे कि इस बगीचे को रोपने वाला, पशु पक्षियों तथा मनुष्यों को पैदा करने वाला एक ही है जिसने सारी वस्तुएँ मनुष्यों के लाभ के लिए उत्पन्न की है। ये सारी

वस्तुएं क्या उसने दूसरे की भूमि पर बनाई होगी कि दूसरा चाहे तब उसके कामों में रुकावट डाल सके? क्या हम यह मान सकते हैं?

उसने कहा : जिस ज़मीन पर यह उपवन बनाया गया है जिसमें पेड़ पौधे रोपे गए हैं उस भूमि का मालिक वही होना चाहिए जिसने यह सारी वस्तुएँ उत्पन्न की है। इस भूमि पर उसी का स्वामित्व और उसी का प्रभुत्व होना चाहिए।

मैंने कहा : तब मैं यह समझता हूँ कि यह भूमि भी उसी मालिक की होगी क्योंकि इन सारी वस्तुओं का निकट का संबंध है।

उसने कहा : बेशक।

मैंने कहा : क्या तुम जानते नहीं कि पानी के बिना यह बगीचा और उसमें जो कुछ है जीवित नहीं रह सकता?

उसने कहा : जीवित नहीं रह सकता यह मैं क्यों नहीं जानता?

मैंने कहा : तो क्या तुम यह समझते हो कि इस बगीचे को पैदा करने वाला कोई और है और पानी को पैदा करने वाला कोई और है ? जिसके पास जब चाहे पानी रोकने और जारी करने की शक्ति है? यदि ऐसा हो तो इस उपवन का भविष्य ही अँधेरे में होगा।

उसने कहा : इस बगीचे का और इसमें जो कुछ भी है उन सब का और इन पेड़ पौधों का पैदा करने वाला भिन्न हों यह माना नहीं जा सकता। उसीप्रकार

पानी का पैदा करने वाला मालिक भी उसके सिवा कोई और हो यह भी माना जासके ऐसा नहीं है। मुझे तो विश्वास है कि वही पानी का भी पैदा करने वाला वही है जिसने ज़मीन को पैदा किया है और जिसकी ज़मीन और पहाड़ों में यह बहता रहता है, उसी ने इस जगत रुपी उपवन को लगाया है उसीने इस उपवन के अंदर की सारी वस्तुओं को पैदा किया है।

यदि यह पानी इस उपवन के रचयिता का न होता तो इस बगीचे में

जो कुछ है सारा नष्ट हो जाता। सारी वस्तुएँ नियमानुसार और अच्छी स्थिति में रहे इसलिए उसने पानी को सबसे पहले बनाया होगा यहाँ तक मैं कह सकता हूँ।

मैंने कहा : देखो यह पानी जो बह कर इस बगीचे में आता है, बगीचे को तृप्त करने के लिए जितने पानी की आवश्यकता हो उससे अतिरिक्त पानी का संग्रह आवश्यक है। ताकि आवश्यकता के समय पानी उपलब्ध कराया जा सके और पानी की आपूर्ति

की कमी से यह बगीचा नष्ट न हो जाय।

उसने कहा : बेशक नष्ट न हो जाय। किन्तु इसका कोई रोकने वाला न हो और निरंतर ऐसा ही चला आया है यह तो नहीं कहा जा सकता।

मैंने कहा : तुमने अभी यह बात स्वीकार की कि यदि पानी का बड़ा संग्रह न हो तो बगीचा नष्ट न हो जायगा? क्या यह सच नहीं है?

उसने कहा : अब तुम्हें यह बात भी स्वीकार करनी होगी कि वह संग्रह

अर्थात समुद्र, का पैदा करने वाला वही है जिसने इस सारे बगीचे को और जो कुछ भी इसमें है, पैदा किया है। उसी ने इस बगीचे की नहरों के लिए समुद्रों को संग्रह के रूप में बनाया है और समुद्र में मनुष्यों के लिए लाभ रखे हैं।

उसने कहा : आपने जिस प्रकार दूसरी बातें मुझ से मनवाई है वैसे ही इसे भी पूरी पूरी समझाओ।

मैंने कहा : संसार की आवश्यकता और उपयोग से बचा हुआ पानी समुद्रों में चला जाता है क्या तुम जानते नहीं?

उसने कहा : बेशक जानता हूँ।

मैंने कहा : फिर, जिस समय अतिरिक्त वर्षा होती है उस समय समुद्र का पानी बढ़ गया हो अथवा समुद्र की जो सीमा है उस सीमा से कुछ बढ़ गया हो ऐसा तुमने कभी देखा है? या अधिक गर्मी के कारण या वर्षा की कमी के कारण या अकाल की स्थिति में समुद्र का पानी अपनी निर्धारित सतह से कम हो गया हो ऐसा तुमने कभी देखा है?

उसने कहा : नहीं

मैंने कहा : फिर यह पानी और बगीचे का बनाने वाला एक ही है। बारिश की अधिकता से बढ़े नहीं, और सूखे की स्थिति में कम न हो ऐसी सीमा उसीने बाँधी है। ऐसा तुम्हारी बुद्धि तुम्हें सुझाती नहीं है? मेरे इस वर्णन की दलील ऐसी है कि इन समुद्रों में पहाड़ों जैसी बड़ी बड़ी लहरें आतीं हैं। यदि इन लहरों को रोका न जाय और इन्हें एक निश्चित सीमा से आगे न बढ़ने का आदेश न हो तो ये लहरें संपूर्ण संसार को घेर लें। परंतु तुम देखते हो

कि उन्हें जहां रुकने का आदेश है वहाँ जा कर रुक जाती है। उनका जोश और उफान खत्म हो जाता है।

उसने कहा : होता तो वैसा ही है जैसा आपने फरमाया। मैंने भी यही देखा है। आपने ऐसी ऐसी दलीलें प्रस्तुत की है कि जिनका मैं इनकार नहीं कर सकता।

मैंने कहा : अभी मैं ऐसी बातें करूँगा कि जिससे तुम आसानी से समझ सकोगे कि संपूर्ण विश्व की सांकल की कड़ियाँ आपस में इस प्रकार

जुड़ी हुई हैं कि या सारी वस्तुएँ एक ही सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, महाबुद्धिमान ने निर्मित की हुई है।

सभी बगीचे और वादियाँ सामान्यतः नहरों के पानी से तृप्त नहीं होतीं, क्या यह तुम नहीं जानते? इस संसार में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां अस्तित्व रखती है और कई ऐसे जंगली प्राणी हैं जिन्हें नदी नालों का पानी नहीं मिलता उन्हें बादलों से पानी मिलता है।

उसने कहा : सत्य है। ऐसा ही होता है।

मैंने कहा : तो तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारी वे इन्द्रियाँ कि जिनके बारे में तुम्हारा ख़याल था कि सारी वस्तुएँ उन्हीं के द्‌वारा जानी जा सकती है, तुम्हें यह नहीं बताती कि ये बादल, जहां नहरों का पानी नहीं पहुँच पाता किन्तु वहाँ वनस्पतियां उगती है ऐसे शहरों पर पानी लेकर फिरता है, वह बादल यदि इस विश्वरूपी बगीचे के मालिक के सिवा किसी और की संपत्ति होता तो बादलों का मालिक जब चाहता बगीचे के अंदर के लोगों से पानी को

रोक लेता और इस कारण बगीचे वाले सदा भय में रहते। जिस पानी पर इस बगीचे का जीवन निर्भर है यदि वह नहीं मिला तो वह नष्ट हो जायगा यही भय सदा बना रहता।

उसने कहा : आपने जो कहा वह सच है। जिसने इस उपवन को, इस पृथ्वी को और इस पृथ्वी पर की समस्त रचना को, और उनके लिए पानी के संग्रह को, विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों को पैदा किया है वह कोई और हो और आकाश और बादलों का

निर्माता कोई और हो यह बात बुद्धि में नहीं आती। बल्कि इन सभी का निर्माता एक ही होना चाहिए ताकि वह जब चाहे अपने उपवन को सींच सके। प्राणियों और वनस्पतियों को जीवित रखने के लिए जितना चाहे पानी बहा सके; जब बरसाना चाहे बरसा सके; परंतु मुझे संतोष हो और मेरे मन की शंका दूर हो जाय ऐसी कोई दलील यदि आप दे सकें तो मुझे खुशी होगी।

मैंने कहा : इंशाअल्लाह, मैं तुम्हारे इस हलीले के द्वारा, इसका जो संबंध

इस जगत के उपवन के साथ है उसके द्‌वारा अभी सिद्ध किये देता हूँ। तब तुम्हें विश्वास हो जाएगा कि यह योजना किसी महान विद्‌वान, सर्वज्ञ, रचयिता के द्‌वारा रची गई है।

उसने कहा : मेरी शंका दूर होजाय ऐसी बात आप इस हलीला के द्‌वारा कैसे कहोगे?

मैंने कहा : इसके उत्पादन की मजबूती, उसमें निहित योजना और युक्ति, उसकी जड़ों और डालियों के संबंध, एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर

आधार तुमको दिखाऊंगा और उसका आकाशी तत्वों के साथ संयोजन सिद्ध करूँगा।

उसने कहा : यदि आप ऐसा कर पाएं तो मुझे शंका नहीं रहेगी।

मैंने कहा : क्या तुम जानते नहीं कि हलीला ज़मीन में उगते हैं। उनकी जड़ें एक मज़बूत जड़ के साथ जुडी हुई होती हैं। जड़ का संबंध तने के साथ और तने का संबंध डालियों के साथ होता है। डालियों का संबंध छोटी डालियों के साथ और उनमें मोतियों के समान

कलियाँ और पत्तियाँ गुंथी होतीं हैं। इन सभी के समग्र वस्त्र के समान पत्ते होते हैं। इन सभी का संबंध छिलके के साथ होता है जो उन्हें (फल या फल्लियों को) मौसम की गरमी या सर्दी से बचाता है।

उसने कहा : हलीला के संबंध में तो मैं समझा कि उसकी छाल, जड़, पत्ते, ज़मीन पर उसके उगने के स्थान आदि सभी का एक दूसरे के साथ निकट का संबंध है। इसके लिए तो मैं गवाही देता हूँ कि इन सभी का रचयिता एक ही है। इन सभी वस्तुओं के निर्माण में

उसके सिवा किसी का हाथ नहीं है। क्योंकि उसकी बनावट मज़बूत, अजोड़, और अटूट है। रचना में एक सामंजस्य, एक ही युक्ति दृष्टिगोचर होती है।

मैंने कहा : यदि मै तुम्हें सभी रचना में एक ही प्रकार, एक ही युक्ति, एक जैसी योजना, अनुपम पांडित्य, विलक्षण विवेक दिखाऊँ, और एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आधार सिद्ध कर दूं तो ....?

उसने कहा : तो मुझे उसके एक ईश्वर होने में कोई शंका नहीं रहेगी।

मैंने कहा : तो फिर मैं जो कह रहा हूँ उसे ध्यान से सुनों और विचार करो।

तुम्हारे इस हलीला का संबंध मिट्टी से है। मिट्टी का संबंध गर्मी और सर्दी से है। ठंडी और गर्मी का संबंध हवा के साथ है। हवा का संबंध सख्त हवा के साथ है। सख्त हवा के संबंध बादलों के साथ है। बादलों का संबंध बारिश के साथ है। बारिश का संबंध ऋतुओं के साथ है। मौसम का संबंध सूर्य और चंद्र के साथ है। सूर्य और चंद्र का संबंध आकाश की गति के साथ है। खुद

आकाश का संबंध आकाश और धरती के बीच के अंतर के साथ है। क्या तुम जानते नहीं?

ये सब एक अद्‌भूत परंतु स्पष्ट और खुली रचना है। इस रचना का महान पांडित्य, अनुपम युक्ति के द्‌वारा उद्‌भव हुआ है। ये सब धरती और आकाश के बीच है और ये एक दूसरे की सहायता के बिना कायम नहीं रह सकती।

नियम यह है कि कोई वस्तु अपने निश्चित समय से पीछे नहीं रह सकती।

यदि वह पीछे रह जाय तो सारा ब्रह्मांड नष्ट हो जाय।

उसने कहा : निसंदेह (एकेश्वरवाद की) ये स्पष्ट निशानियाँ और स्पष्ट दलील है। अटूट रचना में, सृष्टि की बनावट में, बुद्धिमत्ता और अनुपम युक्ति के चिन्ह प्रकट है। एक का दूसरे के साथ संबंध सिद्ध होता है। परंतु जिसका वर्णन आप ने छोड़ दिया है उसका कोई संबंध सृष्टि के साथ न हो क्या यह संभव है?

मैंने कहा : मैंने क्या छोड़ दिया?

उसने कहा : मनुष्य।

मैंने कहा : क्या तुम जानते नहीं कि (उपरोक्त) सभी वस्तुओं का संबंध मनुष्य के साथ है। मनुष्य के लिए ही यह सृष्टि बनाने वाले ने यह नियत किया है कि सृष्टि में की कोई भी वस्तु अपने निर्धारित समय से पीछे न रह जाय। यदि ऐसा न हो तो सारा ब्रह्मांड नष्ट हो जायगा। यह तुम्हारा हलीला भी जिसमें तुम्हारे अनुसार मनुष्यों के लिए कई लाभ हैं, यह भी नष्ट हो जायगा।

उसने कहा : जिस प्रकार आरम्भ में आपने सारी बातों का सविस्तर वर्णन किया, उसी प्रकार अब भी सविस्तर वर्णन करने की कृपा करें।

मैंने कहा : इस हलीला के द्वारा ही मैं तुम्हें यह सिद्ध कर देता हूँ, और ऐसा सिद्ध कर देता हूँ कि तुम खुद इस बात की गवाही दोगे कि इस सृष्टि की सारी रचनाएँ मनुष्य के लिए ही एक सूत्र, एक नियम में चलाई जा रही है। मनुष्य के लिए ही सारी रचना हुई है।

अल्लाह ने आकाश को ऊंची छत बनाया है। यदि इसे ऊंचा न बनाया जाता तो लोगों के सिरों पर होने से लोग परेशान हो जाते। सूर्य निकटता के कारण इन्हें जला डालता। इसी के लिए टूटते हुए सितारों और दूसरे सितारों को पैदा किया गया है। जिन के द्‌वारा लोग समुद्र में रास्ते तलाश करते हैं। उसने ऐसे ग्रह भी पैदा किये हैं कि जिसपर से ज्योतिष शास्त्र का गणित पता चलता है। इससे इन्द्रियों का इस संबंध में नाकाम होना और किसी कर्ता-शिक्षक का

अस्तित्व सिद्ध होता है। उस शिक्षक ने अपने शिष्यों अर्थात बन्दों को ज्योतिष्य शास्त्र सिखाया। यह शास्त्र बुद्धि से नहीं जाना जा सकता। इन्द्रियों से भी नहीं जाना जा सकता। तब उस शिक्षक के सिखाए बिना कैसे सीखा जा सकता है? अनुमान यहाँ चल नहीं पाते। बुद्धि उसके मार्गदर्शन के बिना वहाँ तक नहीं पहुँच पाती। जिसने उन्हें ऐसी कलात्मकता और बुद्धिमत्ता से बनाया है वही महान शक्तिशाली और संपूर्ण सामर्थ्यवान है।

उसमें अल्लाह ने एक प्रकाशित दीपक (सूर्य) और दैदिप्त्मान चन्द्र बनाया जो आकाश में तैरते फिरते हैं। वे बहुत तेज़ी से फिरते रहते हैं। वह दोनों का उदय करता है कभी अस्त करता है। उन्हीं के आधार पर दिन, महीने और वर्ष की गणना होती है। वही चार मौसम जैसे गर्मी, सर्दी, खरीफ और रबी के कारण रूप है। दोनों के काम के समय अलग अलग है। उनका स्रोत रात और दिन है। उनमें का यदि एक भी संसार पर हमेंशा रहता (अर्थात यदि हमेंशा रात

रहती या दिन रहता) तो मनुष्य जी नहीं सकता।

इसीलिए इन वस्तुओं के निर्माता महाज्ञानी ने दिन को प्रकाशमान बनाया और रात को विश्राम करने के लिए बनाया। उनमें ठंडी और गर्मी डाली। दोनों की विशेषताएं एक दूसरे के विरुद्ध हैं। यदि दोनों में से एक हमेंशा रहता तो पेड़ पौधे नहीं उगते, फल फलादि पैदा नहीं होते, सारी पृथ्वी नष्ट हो जाती क्योंकि सृष्टि का संबंध तेज़ी से चलने वाली हवा के साथ है जो चारों ओर

फैली हुई है। हवा जब ठंडी होती है तो साँसों को ठंडक पहुँचाती है, जब वह गर्म होती है तो शरीर में पोषण करने वाले तत्व उत्पन्न करती है। शरीर और खाने पीने तथा अन्य उपयोग की वस्तुओं को होने वाले नुक्सान को रोकती है। हवा में जब नमी आती है तो वस्तुओं की प्रकृति में तरी पैदा करती है। जब सूखी हवा चलती है तो उस नमी को चूस लेती है। उसी के कारण बिखरी चीज़ें जमा हो जाती है। घिरे हुए

बादल आकाश के अंतर में बिखर जाते हैं।

जिस प्रकार वह सर्वज्ञ रचयिता चाहे उसीप्रकार बादलों को विभिन्न हिस्सों में बाँट देता है। तब तुम देखते हो कि उसमें से निर्धारित रोज़ी निश्चित समय तक बरसती है। यदि यह निश्चित समय पर न बरसती तो सारी सृष्टि और जन जीवन नष्ट हो जाता। इसीलिए वह महान परमेश्वर निश्चित समय तक वर्षा को उस धरती पर बरसाता है कि जिसपर उसने मनुष्य को

निर्मित किया है। जिस धरती को उसने मनुष्य के लिए बिछाई, पोषण करने वाली बनाई है। उसने धरती को समग्र मनुष्य के साथ पलट जाने से बचाने के लिए पहाड़ों की मेखें लगाई। पहाड़ों में से ऐसे झरने बहाए हैं जो ज़मीन पर बहते रहते हैं और वनस्पतियों को उगाते हैं, जिसके बिना सृष्टि जी नहीं सकती, यह जगत जीवित नहीं रह सकता और सृष्टि की प्रगति नहीं हो सकती।

उसने समुद्रों की रचना की। जिसके अंदर लोग जहाज़ों में बैठ कर यात्रा

करते हैं। व्यापार व्यवसाय चलता रहता है। समुद्रों के भीतर से लोग शृंगार की वस्तुएँ (मूंगे, मोती) आदि निकालते हैं, ताज़ा मांस निकालते हैं और खाते है।

इसपर से यह सिद्ध होता है कि खुश्की, तरी, आकाश, धरती और जो कुछ भी इसके भीतर है सभी का निर्माता एक ही है जो जीवित, कायम, सर्वज्ञ, महा बुद्धिमान और संपूर्ण सामर्थ्यवान है। यदि इन वस्तुओं के निर्माणकर्ता भिन्न होते तो वस्तुएँ एक नियम व एक नीति से चल न पाती।

अतः हमें मानना होगा कि इन सारी वस्तुओं का निर्माता एक ही है।

आकाश का उदाहरण इस धरती जैसा है कि जिसमें से लोग अनाज, अंगूर, ताज़ा वनस्पति, ज़यतून का तेल, खजूरों के झाड़, हरे भरे बगीचे, मेवे, हरी भरी स्पष्ट और योजनापूर्वक बनाई गई कलियाँ और फलों की रचना की है। जिससे मानव तथा प्राणी लाभान्वित होते हैं। मनुष्य प्राणियों पर सवारी करता है, उनके बालों से ऊनी वस्त्र तैयार करता है। तुम देखो ये सारी

रचना मनुष्य मात्र के लाभ तथा उसकी प्रगति के लिए बनाई गई है।

इसी प्रकार यदि तुम्हें अन्य बातों से अनभिज्ञ रहना हो तो रहो किन्तु इस बात से अनभिज्ञ न रहना कि पृथ्वी पर दो प्रकार की वस्तुएँ हैं। एक तो जो पैदा होती है और दूसरी वह जो उगती है। (अर्थात मनुष्य व प्राणी जो अपनी माता के गर्भ से जन्म पाते हैं, दूसरा प्रकार वनस्पति का है जो उगती है।) इसमें से एक खाने वाला और दूसरा खूराक है।

फिर वे गवाह जिनके द्वारा तुम्हारी बुद्धि तुम्हें बताती है कि वही मनुष्यों को भी बनाने वाला है। वे साक्ष्य हैं मनुष्यों के शरीरों की बनावट, उसमें खाने की इच्छा होना, खाई हुई वस्तुएँ हज़म हों इसलिए अन्य पदार्थों का होना, हजम हुआ खूराक शरीर के सारे हिस्सों में पहुंचे इसलिए रक्त शिराओं तथा अन्य नसों का खुला होना, अवांछित खूराक शरीर के बाहर फेंका जाय इसके लिए आँतों का होना आदि।

(यह स्पष्ट करता है कि जो मनुष्यों तथा प्राणियों का रचयिता है उसी ने मनुष्यों तथा प्राणियों के भोजन के रूप में वनस्पतियों की रचना की है। इसीलिए उसने मनुष्यों तथा प्राणियों के शरीरों की रचना इस प्रकार की तथा उन्हें ऐसे अवयव प्रदान किये कि वे वनस्पतियों का उपयोग अपने खाद्य के रूप में कर सकें। यदि इन खाई जाने वाली वस्तुओं का रचयिता कोई और, तथा मनुष्यों तथा प्राणियों का रचयिता कोई और होता तो वह अपनी बनाई

वस्तुओं को दूसरे के बनाए हुए प्राणियों तथा मनुष्यों को खाने न देता। यदि शरीरों के बनाने वाला उन्हें जबरन खिलाता तो दोनों बनाने वाले में झगडा होता। अतः यही सिद्ध होता है कि सारी वस्तुओं का बनाने वाला एक ही है। सारी वस्तुओ का एक दूसरे पर आधार, एक दूसरे से निकट संबंध, संसार का एक नियमानुसार, एक नीति से चलना एक ईश्वर, एक रचयिता को सिद्ध करता है।)

यह सुनकर उसने कहा : आप ने ऐसा वर्णन किया कि जिससे ये सभी वस्तुएँ एक ही योजनाकार, महाविद्वान, उच्चकक्षा के ज्ञान के स्वामी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ रचयिता की रचना है ये किसी भी प्रकार के संदेह के परे सिद्ध हो गया।

अब मैं अपनी आस्था प्रकट करता हूँ कि रचयिता एक है, मैं उसकी स्तुति और प्रशंसा करता हूँ। किन्तु मेरे मन में घातक और ज़हरीले पदार्थों के प्रति शंका रह जाती है कि क्या इन ज़हरीले पदार्थों

को भी उसी दयानिधान ईश्वर ने निर्माण किया है या किसी दूसरे ने? कारण कि ये केवल हानि ही पहुँचाते हैं कोई लाभकारी तो हैं नहीं। वे तो उनके संपर्क में आने वाले की जान भी ले लेते हैं। शायद उन्हें किसी दूसरे ने पैदा किया हो?

मैंने कहा : ये ज़हरीले पदार्थ भी अल्लाह के सिवा किसी और के द्‌वारा रचे हुए नहीं हैं। क्या तुम अभी समझे नहीं?

उसने कहा : अभी तक मेरी समझ में यह बात नहीं आई। सभी प्राणी उसी के बंदे हैं। वह खुद अपने बन्दों के लिए हानिकारक वस्तुएँ और पदार्थ पैदा करे यह उसको शोभा नहीं देता।

मैंने कहा : मैं तुमको ऐसी वस्तु दिखाऊंगा कि जिससे तुम यह बात समझ सकोगे और वह मैं तुम्हारे इस हलीले और वैद्यक शास्त्र के द्वारा ही समझाऊंगा।

उसने कहा : समझाओ।

मैंने कहा : क्या तुम ऐसी किसी वनस्पति का नाम जानते हो जो हानिकारक न हो ?

उसने कहा : हाँ।

मैंने कहा : कौनसी?

उसने कहा : यह भोजन।

मैंने कहा : क्या भोजन खाने वाले का रंग बदलता नहीं? क्या भोजन बीमारियाँ पैदा नहीं करता? क्या इसी भोजन के कारण जुज़ाम, कोढ़, बदहज़मी, जुलाब, और दूसरे बहुतसे रोग पैदा नहीं होते?

उसने कहा : हाँ ! वह तो होते हैं।

मैंने कहा : तो तुम्हारी इस बात का खंडन हो गया।

उसने कहा : जी हाँ ! होगया।

मैंने कहा : तब, जिसमे कोई लाभ न हो ऐसी कोई बूटी तुम जानते हो?

उसने कहा : ____________________

(मूल पुस्तक में यह लिखना रह गया)

मैंने कहा : तो क्या यह बूटी उन दवाओं में नहीं डाली जाती जिनसे कोढ़, जुज़ाम आदि बीमारियों का इलाज किया जाता है। यह दवा मिलाने से रोग दूर

होता है, दर्द कम होता है। तुम तो अच्छी तरह जानते होंगे क्योंकि लंबे समय से लोगों का इलाज कर रहे हो।

उसने कहा : सच है।

मैंने कहा : जो दवा सभी प्रकार के ज़हर के प्रभाव को दूर करने का अचूक इलाज है उस दवा का नाम लो। क्या वह तिरयाक नहीं है?

उसने कहा : हाँ। तिरयाक सभी दवाओं के ऊपर की दवा है। सांप काटा हो, बिच्छू या और किसी ज़हरीले कीड़े ने डंक मारा हो, या किसी ने ज़हर खा

लिया हो तब तिरयाक की आवश्यकता पड़ती है।

मैंने कहा : क्या तुम जानते नहीं कि तिरयाक, जिन दवाओं को जला कर भस्म बनाई जाती है उसके साथ बड़े ज़हरीले सांपों के मांस के साथ पका कर छान कर बनाई जाती है। (इसप्रकार जिसे तुम हानिकारक कहते हो उसमें ऐसे बड़े लाभ हैं)

उसने कहा : आपने कहा वह सत्य है। जब तक इसप्रकार तैयार न किया जाय तिरयाक कोई फायदा नहीं कर

सकता। ज़हर का नाश नहीं कर सकता। मेरे इस संदेह का भी समाधान हो गया। अब मैं सच्चे हृदय से कहता हूँ। “ला इलाहा इल्लल्लाहो वह्दहू ला शरीक लहू” अर्थात “नहीं है कोई उपासना के योग्य सिवा अल्लाह के जो मात्र एक है” मैं गवाही देता हूँ कि उसी ने प्राणघातक ज़हरीले पदार्थ, कीड़े, प्राणी, और सभी प्रकार की वनस्पतियों की रचना उसीने की है।

वही उन्हें बोने वाला है, वही उगाने वाला है, वही शरीरों का पैदा

करने वाला है, वही हवाओं को बादलों का चलाने वाला है। मैं गवाही देता हूँ कि मनुष्य के शरीरों में जो रोग उत्पन्न होते हैं उनका पैदा करने वाला भी वही है जैसे की ज़हरीले तत्व जो शरीर के अंगों, हड्डियों, नसों में फिरते हैं। वही रोगों को नष्ट करने वाली दवाओं को पैदा करने वाला है। आत्मा को पहचानने वाला, रक्त की गति को जानने वाला है। वही जानता है कि रक्त का कितना हिस्सा किस रक्त वाहिनी में गया। क्योंकि उनका अवयवों तथा स्नायुओं के

साथ संबंध है। वही जानता है कि ठण्ड और गर्मी में कौनसी वस्तु उनके लिए लाभदायक हैं। वही हर अवयव को उसकी अंदर की स्थिति के साथ जानता है।

सचमुच वही है जिसने इन सितारों को और ग्रहों को और उनके गणित को बनाया है। वही उनको जानता है। सितारों की स्थिति के अनुसार जिन लोगों की जन्मतिथि का गणित किया जाता है उनके शुभ-अशुभ का बताने वाला वही है।

मैं इसकी भी गवाही देता हूँ कि संपूर्ण सृष्टि में एक ही युक्ति, एक ही योजना, और एक ही कार्यनीति कार्यान्वित है। जो कुछ धरती और आकाश के बीच है, जो कुछ इन दोनों के भीतर है, सभी का दूसरे के साथ संबंध है।

अब आप बताईये कि आप ने ईश्वर के संबंध में यह क्यों कहा कि वही आदि, वही अंत, वही सूक्ष्म, वही प्रकट है?

मैंने कहा : वही अव्वल है। उसकी कोई अवस्था नहीं कही जा सकती। वही आखिर है इसलिए कि उसकी कोई सीमा नहीं है। उसके समान दूसरा कोई नहीं है। उसने सारी वस्तुओं को बिना किसी प्रतिमान या प्रतिदर्श के पैदा किया। किसी भी प्रकार का प्रयत्न किये बिना पैदा किया। किसी भी प्रकार का प्रथमतः चिंतन किये बिना पैदा किया।

वह ऐसा है कि उसकी कोई अवस्था नहीं। बल्कि अवस्था निर्मित वस्तुओं की होती है। (जितनी भी

अवस्थाएँ हैं वे निर्मित वस्तुओं की विशेषताएँ होती हैं जैसे- गर्मी, सर्दी, कोमलता, कठोरता, कड़वाहट, मिठास, रंग आदि।)

वही सबसे पहला है। ऐसा कि जिसका कोई आरम्भ नहीं। न उसके समान कोई है। न उसके बराबर कोई है। न उसका विरोधी कोई है। आँखों से देखा नहीं जा सकता, हाथों से उसे स्पर्श नहीं किया जा सकता, वह अपनी पैदा की हुई वस्तुओं के द्वारा पहचाना जाता है।

उसने कहा : अब उसकी शक्ति के विषय में बताओ। उसे आपने “कवी” अर्थात शक्तिमान क्यों कहा?

मैंने कहा : उस उपास्य (मआबूद) को सर्वशक्तिमान इसलिए कहा जाता है कि उसने बड़ी बड़ी रचनाओं का निर्माण किया है। जैसे कि धरती कि उसके ऊपर पहाड़ रेती और झाड़ आदि हैं। उसके ऊपर चैतन्य सृष्टि अर्थात मनुष्य प्राणी आदि। पवन के कांधों के ऊपर चलने वाला बादल कि जो बहुत अधिक पानी ले कर यहाँ वहाँ फिरता रहता है। सूर्य

चन्द्र की दिव्यता और उनके प्रकाश की दिव्यता कि जिसकी सीमा तक हमारी नज़रें नहीं पहुँच सकती। सदा गतिमान रहने वाले तारे, आकाश का फिरना, आकाश का धरती की छत के रूप में स्थित होना। अनंत अंतरिक्ष वाला आकाश जो हमारे सिरों पर है। इसके उपरान्त बिछी हुई ज़मीन कि जिसके ऊपर सृष्टि का भारी बोझ है। इतना भारी बोझ होने के बावजूद वह स्थिर है। ज़रा भी डगमगाती नहीं। कभी कभार जब उसका एक कोना हिलता है (भूकम्प

आता है) परंतु शेष हिस्सा स्थिर रहता है। कभी एक भाग धंसता है किन्तु शेष भाग निर्विघ्न रहता है।

यह सब उसी ने पैदा किया है। अपने कार्यों द्वारा वह अपना सामर्थ्य दिखाता है। अपने कार्यों द्वारा वह अपने परिचय की ओर हमारा मार्गदर्शन करता है। इसीलिए वह “कवी” (सर्वशक्तिमान) कहलाया। जो शक्ति हम सृष्टि में देखते हैं उन शक्तियों के कारण उसे “कवी” नहीं कहा जाता। यदि उसकी शक्ति शुष्टि की शक्ति के समान होती तो

समरूपता या समदृश्यता हो जाती। यदि ऐसा होता तो शक्ति के बढ़ने की संभावना भी हो जाती। जिसमें बढ़ने की संभावना हो वह वस्तु अपूर्ण होती है। और जो वस्तु अपूर्ण हो वह दूसरों पर आधारित और निर्बल होती है।

उस अल्लाह के समान कोई नहीं। वह किसी और जैसा नहीं। वह ऐसा है, वह वैसा है अल्लाह के संबंध में यह कहा नहीं जा सकता। उसने ऐसी शक्तिशाली वस्तुएँ निर्माण की है इसलिए उसे हमने शक्तिमान कहा है।

इसी प्रकार हम उसे “अज़ीम” व “कबीर” कहते हैं। अल्लाह के इन नामों के साथ किसी की भी तुलना नहीं की जा सकती। (हम किसी वृक्ष को बड़ा इसलिए कहते हैं कि वह लम्बाई और चौड़ाई में बड़ा होता है। किसी शक्तिशाली पहलवान व्यक्ति को हम उसकी शक्ति के कारण शक्तिशाली कहते हैं। किन्तु अल्लाह के संबंध में ऐसा नहीं है।)

उसने कहा : अल्लाह ने खुद को “समीअ” (सुनने वाला) “बसीर” (देखने

वाला) और “आलिम” (जानने वाला) कहा है। इस संबंध में आपका क्या मत है?

मैंने कहा : अल्लाह के ये नाम इसलिए पड़े हैं कि उसके आगे आँखों द्वारा दिखाई देने वाली कोई भी वस्तु छिपी नहीं है। चाहे वह छोटी हो या बड़ी, सूक्ष्म हो या स्पष्ट। हम उसे बसीर कहते हैं इसका यह अर्थ नहीं कि वह आँखों से देखता है।

हम उसे समीअ इसलिए कहते हैं कि कोई भी तीन व्यक्ति आपस में

कानाफूसी नहीं करते पर वह चौथा सुनने वाला होता है। उसी प्रकार पांच व्यक्ति आपस में बात नहीं करते पर वह छठा सुनने वाला होता है। इसीप्रकार कम या अधिक लोग अपस में बात नहीं करते पर वह सुनने वाला होता है। चाहे कितनी भी छिपी हो वह भेद की बातें सुनता है। चिकने पत्थर पर चींटी के चलने की आवाज़, हवा में उड़ने वाले पक्षियों की आवाज़ वह सुनता है।

उसके आगे कोई वस्तु छिपी नहीं है। लोग जिसे आँखों के द्वारा देखते हैं

वह बिना आँखों के देखता है। जो बातें कानों द्वारा सुनी जाती है वह बिना कान के सुन लेता है। ऐसी बातें जो किसी इन्द्रीय से भी जानी नहीं जा सकती वह जानता है। इसलिए उसे आलिम कहा जाता है। कोई भी वस्तु उससे छिपी नहीं है।

आकाश या धरती में किसी वस्तु का अस्तित्व हो या न हो यदि होता तो कैसा होता वह जानता है। लोग जिस प्रकार जानते हैं वैसा वह जानता है इसलिए हम उसे अलीम नहीं कहते।

सचमुच वह अत्यंत मानवंत और सम्मान का अधिकारी है। उसके गुण उसके अस्तित्व से अलग नहीं है। (जो उसकी ज़ात है वही उसके गुण है।) जिसने सृष्टि के कृत्यों से खुद को पवित्र बताया है। यदि ऐसा न होता तो उसके और उसकी सृष्टि के बीच समानता मानी जाती और उसके और उसकी सृष्टि के बीच कोई अंतर न रहता।

उसने कहा : आपने सत्य कहा। मैं समझ गया। पर मुझे इस प्रकार समझाओ कि मैं लोगों के प्रश्नों का

उत्तर दे सकूं। अतः आप मुझे शिक्षा दो ताकि मैं याद कर लूं और किसी अवज्ञाकारी, विरोधी या संदेह में पड़े व्यक्ति को समझा सकूं। सत्य शोधकों के आगे प्रमाण से सिद्ध कर सकूं। किसी आस्तिक के सामने वर्णन करूँ तो उसकी आस्था में वृद्धि हो।

आप मुझे बताओ कि उसे "लतीफ़" (सूक्ष्म) क्यों कहा गया? इतना तो मैं जानता हूँ कि यह गुण, उसने जो सूक्ष्म रचना की है, इस कारण है। किन्तु मै

आशा करता हूँ कि आप विस्तार से वर्णन कर के मुझे समझाएंगे।

मैंने कहा : उसे “लतीफ़” इसलिए कहा गया कि उसने बड़ी बारीकी तथा सूक्ष्मता के साथ सृष्टि की रचना की है। और फिर इसलिए कि वह अपनी पैदा की हुई हर सूक्ष्म वस्तु को जानता है। मच्छर हो या कोई कीटक या उससे भी छोटे शरीर वाला कोई जंतु। इतना छोटा कि कोई आँख उसे न देख सके। उस जंतु के इतने छोटे होने के कारण उसके नाक कान होंगे या नहीं यह बुद्धि भी

नहीं जान सकती। उसके छोटे होने के कारण उसमें नर कौन हैं मादा कौन है पता नहीं चल पाता। नया बालक कौन है बूढा बाप कौन है पता नहीं चलता। (किन्तु वह सर्जनहार इन सब बातों को जानता है इसलिए उसे "लतीफ़" कहा जाता है।)

तो जब ऐसे प्राणियों के छोटे होने के बावजूद उनमें हमने ऐसी बारीकियां देखी, उनके इतने सूक्ष्म शरीर में बुद्धि का एक स्थान है, उनमें कामवासना है, वे मौत से भागते हैं, अपने बच्चों

से प्रेम करते हैं, एक दूसरे को पहचानते हैं, एक दूसरे को अपनी बात समझाते हैं, अपनी संतान को पहचानते हैं, उन्हें भोजन और पानी पहुँचाते हैं तब हमने जाना कि उनका पैदा करने वाला भी सूक्ष्म है। और ये जीव जंतु सारी सृष्टि में नदियों समुद्रों में, आकाश में, जंगलों पहाड़ों में, मैदानों में यहांतक कि हमारे अपने घरों में भी रहते हैं। इसलिए हमने उसे “लतीफ़” कहा। जैसे शक्तिशाली वस्तुओं को पैदा करने के कारण हमने उसे “कवी” कहा।

उसने कहा : आपने जो कहा वह स्पष्ट है किन्तु जो नाम अल्लाह के हैं वे नाम मनुष्य कैसे रखते हैं?

मैंने कहा : अल्लाह ने मनुष्यों को इन नामों को रखने की छूट दी है। और उन्हें बख्श दिया है। देखो कोई व्यक्ति किसी वस्तु को “वाहिद” (एक) कहता है और अल्लाह को भी “वाहिद” (एक) कहता है। किसी को “कवी” (शक्तिमान) कहता है और अल्लाह को भी “कवी” (शक्तिमान) कहता है, किसी व्यक्ति को “सानेअ” (कारीगर)

कहता है ईश्वर को भी “सानेअ” (कारीगर) कहता है क्योंकि अल्लाह ने इस सृष्टि की कारीगरी की है। किसी को “राजिक” (अन्नदाता) कहता है और अल्लाह को भी “राजिक” (अन्नदाता) कहता है। किसी को कहता है कि वह “बसीर” (देखने वाला), “समीअ” (सुनने वाला), “अलीम” (जानने वाला) है, और अल्लाह को भी “बसीर” (देखने वाला), “समीअ” (सुनने वाला), “अलीम” (जानने वाला) कहता है आदि।

जो व्यक्ति किसी मनुष्य को “वाहिद” (एक) कहता है तो इसका अर्थ उसका नाम है पर उसके जैसा दूसरा मौजूद होता है। किन्तु जब ईश्वर को “वाहिद” कहता है तो यह उसका नाम है किन्तु उस जैसा कोई होता नहीं है। इसीप्रकार “एक” का अर्थ “एक” नहीं, और नाम व्यक्तियों को पहचानने के लिए बनाए गए हैं। उदा। जब हम किसी व्यक्ति को अकेला देखते हैं तो उसे ‘एक” कहते हैं। किन्तु तुम जानते हो मनुष्य वास्तव में “एक” नहीं है। उसके

भिन्न भिन्न अवयव हैं। उसके शरीर के हिस्से एक समान अथवा बराबर नहीं है। उसमें मांस और रक्त है, स्नायु और हड्डियां हैं, नाखून और बाल हैं, सफेदी पर कालिमा है। (मनुष्य में इतनी सारी विविधता और वस्तुएँ हैं इसलिए उसे सही अर्थों में "एक" नहीं कहा जा सकता।) यही स्थिति समस्त सृष्टि की है। मनुष्य केवल कहने के लिए एक है, नाम, अर्थ और बनावट इन तीनों में एक नहीं है। किन्तु जब वही अल्लाह के लिए कहा जाता है तो इसका अर्थ यह

होता है कि वह ऐसा “एक” है कि उस जैसा कोई भी एक नहीं है। क्योंकि उसमें (उपरोक्त वर्णित) भिन्न भिन्न वस्तुएँ नहीं है।

इसीप्रकार वह मुबारक और पवित्र अल्लाह समीअ, बसीर, कवी, हकीम और अज़ीज़ है। फ तआलल्लाहो अह्सनुल खालेकीन।

उसने कहा : अब उसके कथन को कि वह “रऊफ’ व “रहीम’ है, उसकी “रज़ा’ (प्रसन्नता), “मुहब्बत” (प्रेम),

“गज़ब” (क्रोध) और नाराजी को समझाओ।

मैंने कहा : हम में जो दया उत्पन्न होती है उसका अर्थ महेरबानी और बख्शीश है। और अल्लाह की रहमत (दया) उसे कहते हैं कि वह अपने बन्दों को सवाब (पुण्य) देता है।

मनुष्यों की दया के दो अर्थ हैं। एक तो यह कि कोई व्यक्ति दयनीय संकट में दिखाई देता है तो अंतःकरण में दया उत्पन्न होती है। दूसरा प्रकार की दया संकट में पड़े व्यक्ति की

सहायता करने के बाद उत्पन्न होती है। (अर्थात एक तो वह दया है जो संकट में पड़े व्यक्ति को देख कर उत्पन्न होती है और दूसरी यह है कि उस संकट को दूर करना, पीड़ित व्यक्ति की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना, निर्वस्त्र व्यक्ति को वस्त्र पहनाना आदि। पहली दया अनुभूति है और दूसरी दया अनुभूति का परिणाम।) कई बार लोग कहते हैं कि देखो उस व्यक्ति के रहम को तो इसका अर्थ वह कृत्य है जो

उसने दया की अनुभूति के कारण किया था।

अब अल्लाह में यह गुण जो कहा जाता है (जैसे कहा जाता है कि अल्लाह ने रहम किया या अल्लाह रहीम है) वह उन कार्यों के कारण कहा जाता है जो हम करते हैं। (जैसे हम किसी पीड़ित व्यक्ति की मदद करें, या किसी हिंसक प्राणी के मुंह से किसी को बचा लें तो कहा जायगा कि देखो फलां व्यक्ति पर अल्लाह ने कैसा रहम किया कि उसकी

सहायता के लिए उस व्यक्ति को भेज दिया।)

परंतु वह दया जो अंतःकरण में अनुभूति के रूप में होती है वह अल्लाह में नहीं है। (क्योंकि उसको अंतःकरण ही नहीं है। उसी प्रकार उसका न शरीर है न शरीर के अवयव।) जैसे उसने अपने संबंध में फरमाया है कि तो सचमुच वह रहमान व रहीम है किन्तु मन में जो करुणा उत्पन्न होती है और वह दया कही जाती है वैसा दयालु नहीं है। क्रोध तो हम को तब आता है जब हमारे

स्वभाव में एक प्रकार का परिवर्तन पैदा होता है। कभी इस स्थिति में हमारा सारा शरीर या उसके सारे अवयव कांपने लगते हैं। रंग बदल जाता है, इसके बाद (जिस पर क्रोध आया हो उसे) दंड देते हैं तो यह क्रोध कहलाता है। यह बात लोग सामान्यतः अच्छी तरह जानते हैं। क्रोध दो अर्थों में उपयोग किया जाता है। एक तो यह कि क्रोध मन में उत्पन्न होता है। परंतु यह क्रोध ईश्वर में नहीं है क्योंकि उसको मन ही नहीं है। इसी प्रकार प्रसन्नता, नाराज़ी,

रहमत आदि के अर्थ है। वह अवर्णनीय है उस जैसा कोई नहीं।

उसने कहा : मुझे उसके इरादे के बारे में बताओ।

मैंने कहा : हमारे इरादे का अर्थ ऐसा है कि प्रथम वह इरादा मन में आता है फिर उसके अनुसार काम होता है। किन्तु अल्लाह तआला के इरादे का अर्थ काम कर देने का होता है। जब वह किसी वस्तु को कहता है कि होजा तो वह हो जाती है। उसमें कोई श्रम नहीं लगता, उसके ऊपर उसका कोई प्रभाव

नहीं होता। (मनुष्य को इरादा करने के पश्चात काम करने में शारीरिक या अध्यात्मिक परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है। उसका प्रभाव होता है। थकन लगती है। ऐसा कुछ अल्लाह के साथ नहीं है। उसे कोई काम हाथों, पैरों से नहीं करना पड़ता। उसके हाथ पैर है ही नहीं। उसका इरादा ही उसका कृत्य है।)

उसने कहा : आपने बहुत ही अच्छा वर्णन किया। आपका हेतु पूरा हो गया। (अर्थात आप ने मुझे एकेश्वरवादी बना लिया) एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए

इतना पर्याप्त है। अल्लाह का लाख लाख धन्यवाद कि उसने हमें मार्गदर्शन कर के पथभ्रष्टता से बाहर निकाला और उसे उसी की बनाई हुई सृष्टि के समकक्ष मानने से बचा लिया। हम उसकी अद्‌भूत रचना, शक्ति, सामर्थ्य और वैभव में किसी प्रकार की शंका करें इससे हमारी रक्षा की। सचमुच वह, उसके समान कोई दूसरा होने से, उसका तुल्य, भागीदार अथवा विरोधी होने से पवित्र है। महान है।

अल हम्दो लिल्लाह